

# पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग



## प्रस्तावना

‘विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनात् धर्मम् ततः सुखं ।’

विनम्रता अपने साथ-साथ सहिष्णुता और सहअस्तित्व की भावना भी लाती है जिससे व्यक्ति समाज की एक मजबूत इकाई बनता है तथा व्यक्तिगत और सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होता है. विनयशीलता सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त करती है तथा विद्यार्जन का उद्देश्य विनयशीलता का गुण विकसित करना होता है.

इसी आशय को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा हमारे अंचल के राजभाषा विभाग को हिन्दी में “पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग” विषय पर पुस्तक प्रकाशन का उत्तरदायित्व सौंपा गया है.

यह सर्वविदित है कि आज के इस तकनीकी युग में हमारे जीवन में हर पल परिवर्तन हो रहे हैं. प्रत्येक कारोबार के साथ साथ बैंकिंग क्षेत्र भी इन परिवर्तनों के दौर से अछूता नहीं रहा. बैंकिंग सेवाओं में आमूल-चूल परिवर्तन देखने को मिले हैं.

अतः “पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग”जैसे वृहद विषय पर प्रकाशित इस पुस्तक में विषय से संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है. मैं अपने अंचल के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं.

आप सभी को “नव-वर्ष 2021” की हार्दिक शुभकामनाएं.

(के.सत्यनारायणन)

फील्ड महाप्रबंधक

## **पुणे अंचल द्वारा प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण संबंधी मूल विचार**

हर्ष का विषय है कि हमारे द्वारा ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’ विषय पर पुणे अंचल में कार्यरत् राजभाषा अधिकारियों द्वारा तैयार की गई पुस्तक का प्रस्तुतिकरण किया गया है. इस पुस्तक में सम्मिलित किए जाने वाले विषयों की पृष्ठभूमि पुणे अंचल के फील्ड महाप्रबंधक माननीय श्री के.सत्यनारायणन जी द्वारा दिए गए अमूल्य मार्गदर्शन पर आधारित है.

उक्त विषयों को पुणे अंचल के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत् तत्कालीन राजभाषा अधिकारियों में आबंटित किया गया तथा दलीय समेकित कार्य को पुस्तक के रूप में तैयार किया गया. प्रस्तुत पुस्तक के संस्करण में विषय की पाठ्य-सामग्री को सात भागों में विभाजित किया गया है.

**प्रथम: भाग** में प्रारंभिक बैंकिंग इतिहास, बैंकिंग उत्पादों का उल्लेख करते हुए परंपरागत बैंकिंग की अवधारणा, बैंकिंग उत्पाद-कई ग्राहक, व्यक्ति आधारित सेवाएं, ग्राहक आधारित सेवाएं तथा आवश्यकता आधारित और गुणवत्तापूर्ण बैंकिंग उत्पादों पर सविस्तार वर्णन किया गया है.

**द्वितीय: भाग** में वर्तमान एवं भविष्य की प्रचलित भुगतान तकनीकें, शाखा बैंकिंग, ई-बैंकिंग एवं फिनटैक विषय को सम्मिलित करते हुए ओपन बैंकिंग, डोर स्टेप तथा वास्तविक बैंकिंग का समावेश किया गया है.

**तृतीय: भाग** में डिजिटल बैंकिंग, बैंकिंग संहवर्णात्मकता (पोर्टेबिलिटी) तथा बैंकिंग मेरी जेब में अध्याय में शाखा अवधारणा से बैंक अवधारणा तक के सफर का वर्णन है. इसके अलावा बैंकिंग उद्योग, मोबाईल बैंकिंग आदि विषयों का सविस्तार वर्णन किया गया है.

**चतुर्थः भाग** में कृषि आधारित बैंकिंग अध्याय में अनुबंधित व सह-व्युत्पत्ति (Co-Origination) कृषि/ खाद्य प्रसंस्करण/ वाणिज्यिक फसल उत्पादन हेतु वित्तीय सेवाएं (इसमें न्यूनतम समर्थन मूल्य, बैरियर मुक्त गतिविधियां/ बिचौलिया-आढतिया मुक्त बाजार/ मैगा खाद्य बाजार का निर्माण/ बगीचे से सीधे उपभोक्ता के द्वार तक पहुंच सुविधा/ फसल ऋण, तकनीकी व्यवहार्यता, सिंचाई, वृक्षारोपण एवं बागवानी फसल का महत्व, विपणन और अन्य बुनियादी ढांचे की आवश्यकताएं, लिफ्ट सिंचाई आदि विषयों को सम्मिलित किया गया है.

**पंचमः भाग** में जोखिम प्रबंधन विषय का प्रस्तुतिकरण किया गया है. इस अध्याय में बैलेस-शीट प्रबंधन से जोखिम प्रबंधन सिद्धांतों, बैसिल 3 तथा समग्र जोखिम-प्रबंधन प्रशासन, नियामक मामलों और मुद्दा-प्रबंधन प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है.

**षष्ठः भाग** में आर्टिफिसियल इंटैलीजेंस अध्याय एवं डाटा एल्गोरिद्म प्रणाली को शामिल किया गया है जिसमें तकनीकी सुसज्जित विशेषज्ञ युवा स्टॉफ पर विशेष आलेख प्रस्तुत किया गया है.

**पुस्तक के अंतिम सप्तमः भाग** में भविष्य की बैंकिंग में मानव संसाधन का महत्व एवं एचआरएम रणनीतियों का वर्णन किया गया. इसके अलावा इस अध्याय में त्रिकी और विपणन में दक्ष कार्मिकों के वर्गीकरण और मूल्यांकन की समीक्षा प्रस्तुत की गई है.

आशा है कि पुस्तक का यह संस्करण बैंककर्मियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा वे अपने बहुमूल्य विचारों और सुझावों से हमें अवश्य अवगत करायेंगे.

**राजीव तिवारी**  
**मुख्य प्रबंधक(राजभाषा)पुणे**



## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

क्रम	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
भाग -1	<b>प्रारंभिक बैंकिंग इतिहास एवं परंपरागत बैंकिंग की अवधारणा</b>	7
	भारत में बैंकिंग का सूत्रपात	13
	भारतीय बैंकिंग प्रणाली का संक्षिप्त इतिहास	14
	भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में आधुनिक विकास:	15
	भारतीय बैंकिंग प्रणाली का इतिहास	19
	हमारे देश में वर्तमान बैंकिंग	22
	विभिन्न प्रकार के वाणिज्यिक बैंक	23
भाग -2	<b>वर्तमान एवं भविष्य की प्रचलित भुगतान तकनीकें एवं ई-बैंकिंग</b>	25
	ई बैंकिंग के लाभ	27
	भविष्य की बैंकिंग	30
	डोर स्टेप बैंकिंग-	32
	फिनटेक	34
	शाखा बैंकिंग के लाभ	37
	<b>डिजिटल बैंकिंग, बैंकिंग संहवर्णात्मकता, मोबाइल बैंकिंग</b>	40
भाग -3	प्रमुख डिजिटल बैंकिंग सुविधाएँ, प्रौद्योगिकियाँ और सेवाएँ	42
	मोबाइल बैंकिंग सुविधा	59
	मोबाइल बैंकिंग का भविष्य:	65
	भविष्य के बैंकिंग उत्पाद	66
	बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी	80
	पाकेट एवं फिंगर बैंकिंग	82
	<b>कृषि आधारित बैंकिंग-प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र अनुबंधित व सह-व्युत्पत्ति कृषि</b>	85
भाग -4	कृषि ऋण	85
	सूक्ष्म (माइक्रो) और लघु उद्यम	89
	खादी ग्राम उद्योग क्षेत्र (किवीआइ)	91
	अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिए राज्य प्रायोजित संगठन	93
	अनुबंधित कृषि	94
	खाद्य प्रसंस्करण	99

## 'पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग'

	बिचौलिया-आढतिया मुक्त बाजार	107
	फसल ऋण	109
	उर्वरक फसल उत्पादन	116
	वृक्षारोपण एवं बागवानी फसल हेतु वित्तपोषण	123
	विपणन और अन्य बुनियादी ढांचे की आवश्यकताएं	131
	वृक्षारोपण / बागवानी योजनाओं के लिए जांच सूची	133
	लिफ्ट सिंचाई योजना	138
	लिफ्ट सिंचाई परियोजनाओं के लिए चेक-लिस्ट	151
	<b>जोखिम प्रबंधन</b>	154
	जोखिम प्रबंधन सिद्धांत	156
	बैंकों में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता	159
	जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया	162
	जोखिम प्रबंधन की योजना	166
	जोखिम प्रबंधन के प्रयोग के आधारभूत नियम	168
	बैंकों में जोखिम प्रबंधन क्या है?	169
	बैंकिंग क्षेत्र में जोखिमों का वर्गीकरण	172
	अवशिष्ट जोखिम और नियंत्रण प्रभावशीलता में पारदर्शिता	179
	<b>आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डाटा एल्गोरिथम</b>	192
	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व्यवसाय आयोजना	194
	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अधिक प्रभावी मानव संसाधन कार्य	199
	डाटा एल्गोरिथम प्रणाली	203
	डाटा एल्गोरिथम के गुण	205
	<b>भविष्य की बैंकिंग हेतु मानव संसाधन विकास</b>	206
	भविष्य की बैंकिंग में मानव संसाधन विकास	206
	मानव संसाधन प्रबंध के प्रबन्धकीय कार्य	209
	मानव संसाधन प्रबन्ध की नई भूमिका	212
	वर्तमान में मानव संसाधन प्रबन्ध के कार्य	216
	तकनीकी एवं मार्केटिंग में दक्ष स्टाफ की भूमिका	219
	मानव संसाधन प्रबंध के क्रियात्मक कार्य	222

भाग -5

भाग -6

भाग -7

### भाग (एक)- प्रारंभिक बैंकिंग इतिहास एवं परंपरागत बैंकिंग की अवधारणा

भारत वर्ष में बैंकिंग व्यवसाय की प्रथा अति प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है. तब से लेकर अब तक इसके स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है. वर्तमान में किसी भी देश की वित्तीय व्यवस्था और सामाजिक आर्थिक निर्माण में बैंकों का अपना विशिष्ट स्थान है.

इस विशिष्ट स्थान को पाने के लिये बैंकों ने निरन्तर परिवर्तनशील व्यवस्था का एक लम्बा सफर तय किया है. वर्तमान में बैंकिंग व्यवस्था का जो आधुनिक स्वरूप अपने चरम पर पहुंचा हुआ सा लगता है, वह विकास के रथ पर सवार दृढ़ इच्छाशक्ति, चुनौतियों के दमन और विश्वास आधारित भावनाओं का मिला-जुला मिश्रण है. विगत वर्षों में भारत में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकों की स्थापना ने देश के चहुंमुखी विकास की संभावनाओं को जीवंत किया है.

वर्तमान में आधुनिक बैंकिंग का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है. परम्परागत बैंकिंग के स्थान पर अब सामाजिक-आर्थिक बैंकिंग अपना विशिष्ट स्थान ग्रहण कर चुकी है. समाज निरन्तर अभिनव आर्थिक क्रियाओं के साथ नये आयामों की ओर अग्रसर हो रहा है. ग्राहकों के नये-नये वर्गों के उदय के परिणामस्वरूप बैंकों से न केवल अपेक्षाएं ही बढ़ी है अपितु अपेक्षाओं का स्वरूप भी बदल गया है. अपनी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये बैंक अपने आधारभूत सिद्धांतों में नवीन रूपों का मिश्रण कर रहे हैं, जिससे बैंकों की कार्यप्रणाली में भी निरन्तर परिवर्तन आ रहा है.

आज बैंक अपने परम्परागत कार्य-जमाओं के संग्रहण में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इसे बहुपयोगी सिद्ध करने की ओर प्रवृत्त है. भारत वर्ष में बैंकिंग व्यवसाय की प्रथा अति प्राचीनकाल से ही किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है. तब से लेकर अब तक इसके स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है. वर्तमान में किसी भी देश की वित्तीय व्यवस्था और सामाजिक आर्थिक निर्माण में बैंकों का अपना विशिष्ट स्थान है. इस विशिष्ट स्थान को पाने के लिये बैंकों ने निरन्तर परिवर्तनशील व्यवस्था का एक लम्बा सफर तय किया है. वर्तमान में बैंकिंग व्यवस्था का जो आधुनिक स्वरूप अपने चरम पर पहुंचा हुआ सा लगता है, वह विकास के रथ पर सवार दृढ़ इच्छाशक्ति, चुनौतियों के दमन और विश्वास आधारित भावनाओं का मिला-जुला मिश्रण है.



विगत वर्षों में भारत में शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकों की स्थापना ने देश के चहुंमुखी विकास की संभावनाओं को जीवंत किया है। वर्तमान में आधुनिक बैंकिंग का स्वरूप बहुत व्यापक हो गया है। परंपरागत बैंकिंग के स्थान पर अब सामाजिक और आर्थिक बैंकिंग ने अपनी विशिष्ट स्थान बना लिया है। समाज निरंतर अभिनव आर्थिक क्रियाओं के साथ नए आयामों की ओर अग्रसर है।

ग्राहकों के नये-नये वर्गों के उदय के परिणास्वरूप बैंकों से न केवल अपेक्षाएं ही बढ़ी है अपितु अपेक्षाओं का स्वरूप भी बदल गया है। अपनी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिये बैंक अपने आधारभूत सिद्धांतों में नवीन रूपों का मिश्रण कर रहे हैं, जिससे बैंकों की कार्यप्रणाली में भी निरन्तर परिवर्तन आ रहा है। आज बैंक अपने परम्परागत कार्य-जमाओं के संग्रहण में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इसे बहुपयोगी सिद्ध करने की ओर प्रवृत्त है। जमा खातों के विभाजन में अब जमा राशि की अवधि के स्थान पर जमाकर्ता की आवश्यकता के आधार के महत्व दिया जाने लगा है।

इसी प्रकार बैंकों द्वारा ऋण देने में ग्राहक की आवश्यकतानुसार ऋण की मात्रा तथा ऋण देने के लिये चुने गये वर्ग व क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इन सभी परिवर्तनों के कारण भारत में बैंकिंग व्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप से निकलकर आधुनिक परिवेश में ढलती हुई प्रतीत हो रही है। देश के आर्थिक विकास में योगदान देने वाले प्रमुख क्षेत्रों जैसे- कृषि, उद्योग, व्यापार आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न बैंक स्थापित किये गये हैं जो अपने मार्गदर्शी सिद्धांतों में निरन्तर नवीनता का सम्मिश्रण कर रहे हैं। व्यापारिक बैंक अपने कार्यों एवं उद्देश्यों की प्रकृति के अनुसार लाभ अर्जित करने वाले संगठन होते हैं। अन्य व्यावसायिक संस्थाओं के समान इनका प्रमुख उद्देश्य विभिन्न क्रियाओं के निष्पादन के माध्यम से लाभार्जन कर अंशधारियों में वितरण करना होता है।

व्यापारिक बैंक अपने प्रमुख एवं आधारभूत व्ययों के अन्तर्गत जन-साधारण की बचतों में जमाओं के रूप में संग्रहीत कर व्यावसायिक एवं औद्योगिक संस्थाओं तथा व्यक्तियों को उत्पादक कार्यों हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। इस रूप में बैंकिंग संस्थाएँ ऋणी तथा ऋणदाता दोनों ही रूपों में कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त बैंकिंग संस्थाएँ औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा निर्गमित विभिन्न प्रतिभूतियों में भी विनियोग कर उन्हें न केवल सामान्य अंश पूँजी प्रदान करती हैं अपितु लाभांश एवं व्याज प्राप्त कर अपने कुल लाभों में भी वृद्धि करती हैं।

बैंकिंग संस्थाओं में जन-विश्वास निहित होता है तथा इसी आधार पर वे विशाल मात्रा में आर्थिक साधनों को संग्रहीत करने में सफलता प्राप्त करती है, अतः उन्हें पूँजी कोषों का विभिन्न क्षेत्रों एवं माध्यमों में विनियोग करते समय पूर्ण सतर्कता एवं सावधानी बरतनी पड़ती है. इसके अतिरिक्त उन्हें दूरदर्शिता एवं स्वविवेक का भी प्रयोग करना पड़ता है तथा कुछ निश्चित सिद्धान्तों की अनुपालना करनी पड़ती है. इन्हीं सिद्धान्तों को ‘व्यापारिक बैंकिंग सिद्धान्त’ की संज्ञा दी जाती है. बैंकों के आर्थिक साधनों का अधिकांश भाग समाज में विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों एवं संस्थाओं से बैंक जमाओं के रूप में प्राप्त किया जाता है. ये जमाएँ विभिन्न शर्तों के अन्तर्गत एवं विभिन्न समयावधि के लिए स्वीकार की जाती हैं, जिन्हें (अनुबन्धीय उत्तरदायित्व) के आधार पर जमाकर्ताओं द्वारा माँग किये जाने पर लौटाना पड़ता है. यदि ये संस्थाएँ इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में असफल रहती हैं तो इनकी साख एवं प्रतिष्ठा विपरीत रूप से प्रभावित होती है. अतएव बैंकों द्वारा जन-विश्वास को अर्जित करने के लिए व्यवसाय संचालन में बहुत सावधानी आवश्यकता होती है. उन्हें अपने ग्राहकों द्वारा उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिए आर्थिक साधनों का विनियोग ऐसी तरल संपत्तियों में करना पड़ता है जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर शीघ्रतापूर्वक नकदी में परिवर्तित किया जा सके. इस प्रकार बैंकों को अपने साधनों की तरलता पर विशेष ध्यान देना पड़ता है.

विनियोगों की तरलता के अतिरिक्त बैंकों को अपने कोषों का विनियोग करते समय उनकी लाभदायकता के सम्बन्ध में पूर्ण सतर्कता एवं सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि उन्हें अपनी क्रियाओं के संचालन के सन्दर्भ में अनेक प्रकार के व्यय करने पड़ते हैं तथा जमाकर्ताओं को जमा-राशि पर व्याज का भुगतान भी करना पड़ता है. इसके अतिरिक्त अंशधारियों (Shareholders) को लाभांश भी वितरित करना पड़ता है. अतः इन सभी दृष्टिकोणों से बैंकों को अपनी स्थिति तरल बनाये रखने के साथ-साथ विनियोगों की लाभदायकता के सम्बन्ध में भी विशेष ध्यान देना पड़ता है. किन्तु उल्लेखनीय है कि अधिकतम लाभ अर्जित करने हेतु बैंकिंग संस्थाएँ अनावश्यक जोखिम वहन नहीं कर सकती हैं. उन्हें तरलता एवं लाभदायकता के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करना आवश्यक होता है. लाभ अर्जित करने के दृष्टिकोण से कोषों का विनियोग करते समय उन्हें इस तथ्य पर सक्रिय एवं पैनी दृष्टि रखनी पड़ती है कि वे जन-साधारण से धरोहर के रूप में प्राप्त वित्तीय कोषों में व्यवहार कर रहे हैं. अतः तरलता एवं लाभदायकता के अतिरिक्त बैंकिंग संस्थाओं को अपने साधनों की सुरक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान देना पड़ता है. सुरक्षा के अभाव में उनकी साख एवं प्रतिष्ठा विपरीत रूप से प्रभावित हो सकती है. इसके अतिरिक्त उनमें निहित जन-विश्वास भी समाप्त हो जाता है.

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि वित्तीय कोषों के विनियोग की प्रक्रिया में उन्हें विनियोगों की तरलता, लाभदायक तथा सुरक्षा पर समान रूप से ध्यान देना पड़ता है। सुरक्षा की दृष्टि से बैंक अपने कोषों का विनियोग किसी एक ही व्यवसाय एवं क्षेत्र में न करके अलग-अलग क्षेत्र एवं व्यवसाय में करते हैं। इस प्रकार विनियोगों में विविधता एवं नवीन दिशाओं के माध्यम से वे जोखिम की मात्रा को सीमित करते हैं।

उपरोक्त बैंकिंग सिद्धान्तों से स्पष्ट होता है कि बैंकों को अपने साधनों का विनियोग सावधानी, दूरदर्शिता एवं स्वविवेक से करना पड़ता है। फाइनेंशियल इंडस्ट्री बदलती रहती है, क्योंकि इसमें नए प्रोडक्ट्स और सेवाएं आती रहती हैं। जैसे कि अब डिजिटल बैंकिंग अपने पैर फैला रही है तो एक नया बैंकिंग सिस्टम "नियो बैंक" उभर कर सामने आया है। नियो बैंक ने अभी परंपरागत बैंकिंग को नहीं पछाड़ा है, मगर निवेशकों और कई उद्योगों ने इस नई बैंकिंग प्रणाली में रुचि दिखाई है। एक ग्राहक के रूप में कोरोनोवायरस महामारी के बीच अपने दिन-प्रतिदिन की जरूरतों के लिए अच्छी मोबाइल और ऑनलाइन बैंकिंग सर्विस ऑप्शन के लिए आप नियो बैंक का विकल्प चुन सकते हैं जो आपको तकनीकी रूप से आगे भी रखेगा। क्या है नियो बैंक सिस्टम और इसके फायदे आइये जानते हैं।

### **क्या होते हैं नियो बैंक**

आसान शब्दों में कहें तो नियो बैंक बिना किसी फिजिकल ब्रांच वाले डिजिटल बैंक हैं। ये केवल ऑनलाइन मौजूद हैं। विश्व स्तर पर इसका यही मतलब है। हालाँकि भारत में नियमों के अनुसार 100 प्रतिशत डिजिटल बैंकों की अनुमति नहीं है, इसलिए इन नियो बैंकों को फिनटेक कंपनियों के रूप में भी जाना जा सकता है। ये कंपनियां ट्रेडिशनल बैंकों के साथ टाई-अप करके बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करती हैं और एक टेक्नोलॉजी आधारित बैंकिंग सिस्टम चलाती हैं, जो तेज, कस्टमर फ्रेंडली और कम लागत वाला होता है।

भारत में, Niyo, Open, Razorpay X, Yelo, InstantPay जैसे स्टार्टअप हैं, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ) और अन्य मशीन लर्निंग विधियों का उपयोग करके बेहतर बैंकिंग सॉल्यूशन पेश करने के लिए पारंपरिक बैंकों के साथ साझेदारी कर रहे हैं। नियो बैंक मोबाइल फर्स्ट दृष्टिकोण अपनाते हैं, यानी ये सभी सेवाएं मोबाइल के जरिए देते हैं और डिजिटल ऑपरेटिंग मॉडल पर जोर देते हैं। एसबीआई



## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

कुछेक उन पारंपरिक बैंकों में है जिनके पास ऐसा ही सिस्टम है. एसबीआई के पास YONO सिस्टम है, जो पूरी तरह से ऑनलाइन ऑपरेट करता है और नियो बैंक मॉडल के काफी समान है. इससे किसी ग्राहक के बैंक ब्रांच जाने की संभावना लगभग खत्म हो जाती है. ऐसे डिजिटल बैंक अक्सर किसी स्थापित इकाई की सब्सिडरी के रूप में ऑपरेट करते हैं. दरअसल भारतीय रिज़र्व बैंक के नियमों का पालन करने के लिए नियो बैंकों को देश में किसी पारंपरिक बैंक के साथ भागीदार बनना पड़ता है. इन बैंकों खाता में खुलवाना है या नहीं ये पूरी तरह से आप निर्भर करता है. वैसे नियो बैंक तकनीकी समझ रखने वालों ग्राहकों के लिए हैं. यदि आप इन तकनीक आधारित, तेज़ और नए जमाने के बैंकिंग मॉडल को पसंद करते हैं तो आप बतौर टेस्टिंग खाता खोल कर छोटे लेन-देन शुरू कर सकते हैं. पहले बताया गया है कि ये बैंक किसी मौजूदा पारंपरिक कमर्शियल बैंक के साथ भागीदारी में ऑपरेट करते हैं, जो आरबीआई की निगरानी में होते हैं. ये नियो बैंकों को परंपरागत बैंकों का समर्थन मिलता है, बदले में ये उन्हें अत्याधुनिक तकनीकी जानकारी, बल्क ट्रांजेक्शन प्रोसेस करना, सिस्टम में विफलताओं की पहचान करना, भुगतान शेड्यूल को स्वचालित करना जैसी सुविधाएं देते हैं.

भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने यह कहा है कि भविष्य के बैंक इस समय के बैंकों से बिल्कुल अलग होंगे और इन अलग क्षेत्र के बैंकों का नियमन करना नियामक के लिए चुनौतीपूर्ण काम होगा. आर्थिक समाचार पत्र मिंट के सालाना बैंकिंग कार्यक्रम में दास ने कहा कि ऐसी स्थिति में भारत में काम करने वाली वित्तीय फर्मों के समाधान के लिए निकट भविष्य में एकीकृत ढांचे की उम्मीद की जा सकती है, जिससे वित्तीय व्यवस्था में लचीलापन आ सके. इस समय फाइनेंशियल टेक्नोलॉजी कंपनयां मौजूदा बैंकों के सामने चुनौतियां पेश कर रही हैं, लेकिन तमाम बड़ी तकनीकी कंपनियां या बिगटेक्स हैं, जो वित्तीय सेवा उद्योग में व्यापक रूप से प्रवेश कर रही हैं. कुछ बिगटेक्स अपने डेटा नेटवर्क गतिविधियों पर निर्भर हैं, वहीं कुछ पेमेंट्स, धन प्रबंधन, बीमा और कर्ज देने की गतिविधियों में संयुक्त उद्यम बना रही हैं. श्री दास ने कहा, 'इस समय वित्तीय सेवाएं उनके वैश्विक कारोबार का छोटा हिस्सा हैं. लेकिन उनके आकार और पहुंच को देखते हुए वित्तीय सेवा में उनके प्रवेश से वित्तीय क्षेत्र में तेज बदलाव लाने की क्षमता है. इन फर्मों के प्रवेश से तमाम लाभों की संभावना है और वे कम लागत पर बड़ी संख्या में लोगों को बुनियादी वित्तीय सेवाएं मुहैया करा सकती हैं.'

लेकिन फिनटेक और विगटेक्स का आगमन बैंकों और इसके साथ ही बैंकिंग नियामक के लिए चुनौती है। प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए बैंक नई तकनीक और कारोबार को अपना रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ बैंकिंग नियामक नवोन्मेष को प्रोत्साहित करने और उसी अनुपात में निरीक्षण व नियामकीय ढांचा बनाने में संतुलन स्थापित करने में लगे हैं।

श्री दास का मतलब था कि, 'इसका मतलब यह है कि बैंकिंग का भविष्य पिछली व्यवस्था की निरंतरता नहीं रहने जा रही है। ढांचे और कारोबारी मॉडल के हिसाब से आगामी वर्षों में हम बहुत अलग तरह का बैंकिंग सेक्टर देखेंगे।' बैंकों की अलग अलग श्रेणियां हो सकती हैं। पहली श्रेणी बड़े भारतीय बैंकों की हो सकती है, जिनकी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मौजूदगी होगी, जिसके लिए सरकारी क्षेत्रों के विलय की प्रक्रिया पहले से चल रही है। दूसरे सेगमेंट में मझोले आकार के बैंक और तीसरे सेगमेंट में छोटे निजी क्षेत्र के बैंक, लघु वित्त बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और सहकारी बैंक हो सकते हैं। चौथी श्रेणी डिजिटल प्लेयर्स की हो सकती है, जो सीधे ग्राहकों के सेवा प्रदाता के रूप में या बैंकों के माध्यम से उनके एजेंट या सहयोगी के रूप में काम कर सकते हैं।

हर स्थिति में परंपरागत बैंकिंग व्यवस्था नई पीढ़ी की बैंकिंग के लिए राह बनाएगी, जिसमें डिजिटलीकरण व आधुनिकीकरण पर ध्यान होगा, जिसमें परंपरागत बैंक शाखाओं की लगातार समीक्षा की जरूरत होगी। गवर्नर ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) जल्द ही एक सहायक इकाई स्थापित करने पर फैसला करेगा, जिसका ध्यान अन्य देशों के लिए यूनीफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) मॉडल पर होगा, जो भारत की भुगतान व्यवस्था की वैश्विक पहुंच बढ़ाएगा। खुदरा भुगतान के लिए एक नई इकाई से प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और खुदरा भुगतान क्षेत्र में आगे और नवोन्मेष होगा, जिसके लिए मसौदा दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। श्री दास ने कहा, 'इसकी वजह से गैर निष्पादित संपत्ति (एनपीए) उच्च स्तर पर बनी हुई है और कर्ज की वृद्धि दर प्रभावित हो रही है।' बैंकों ने अपना ध्यान बड़े बुनियादी ढांचा क्षेत्र और औद्योगिक कर्ज से अपना ध्यान हटाकर खुदरा कर्ज पर केंद्रित कर दिया है, लेकिन विविधीकरण की इस रणनीति की अपनी सीमाएं हैं।



### भारत में बैंकिंग का सूत्रपात

भारत के आधुनिक बैंकिंग की शुरुआत ब्रिटिश राज में हुई. 19वीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 3 बैंकों की शुरुआत की –

- बैंक ऑफ बंगाल 1806 में,
- बैंक ऑफ बॉम्बे 1840 में और
- बैंक ऑफ मद्रास 1843 में.

लेकिन बाद में इन तीनों बैंको का विलय एक नये बैंक 'इंपीरियल बैंक' में कर दिया गया जिसे सन 1955 में 'भारतीय स्टेट बैंक' में विलय कर दिया गया. इलाहाबाद बैंक भारत का पहला निजी बैंक था. भारतीय रिजर्व बैंक सन 1935 में स्थापित किया गया था और बाद में पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक और इंडियन बैंक स्थापित हुए.

भारत में प्रारम्भ में बैंकों की शाखायें और उनका कारोबार वाणिज्यिक केन्द्रों तक ही सीमित होती थी. बैंक अपनी सेवायें केवल वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को ही उपलब्ध कराते थे.

स्वतन्त्रता से पूर्व देश के केन्द्रीय बैंक के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक ही सक्रिय था. जबकि सबसे प्रमुख बैंक इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया था. उस समय भारत में तीन तरह के बैंक कार्यरत थे –

- भारतीय अनुसूचित बैंक,
- गैर अनुसूचित बैंक और
- विदेशी अनुसूचित बैंक.

स्वतन्त्रता के उपरान्त भारतीय रिजर्व बैंक को केन्द्रीय बैंक का दर्जा बरकरार रखा गया. उसे 'बैंकों का बैंक' भी घोषित किया गया. सभी प्रकार की मौद्रिक नीतियों को तय करने और उसे अन्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं द्वारा लागू कराने का दायित्व भी उसे सौंपा गया. इस कार्य में भारतीय रिजर्व बैंक की नियंत्रण तथा नियमन शक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

### भारतीय बैंकिंग प्रणाली का संक्षिप्त इतिहास

देश की बैंकिंग प्रणाली देश का अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास का आधार है. यह देश के वित्तीय क्षेत्र का सबसे प्रमुख हिस्सा है क्योंकि यह देश के वित्तीय क्षेत्र के 70% से अधिक धनराशि के प्रवाह के लिए जिम्मेदार है. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय स्थिरता और लाभप्रदता में सुधार के लिए, भारत सरकार ने श्री एम नरसिंहम की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की. एम नरसिंहम समिति ने देश में बैंकिंग प्रणाली को सुधारने के लिए कई सिफारिश की. जिनमे से कुछ प्रमुख है-

- सिफारिशों का प्रमुख जोर बैंकों को प्रतिस्पर्धी और मजबूत बनाने और वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के लिए अनुकूल बनाना था.समिति ने बैंकों के और अधिक राष्ट्रीयकरण न करने का सुझाव दिया.
- विदेशी बैंकों को भारत में या तो शाखाओं या सहायक कंपनियों के रूप में कार्यालय खोलने की अनुमति दी गयी.
- बैंकों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए, समिति ने सुझाव दिया कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी क्षेत्र के बैंकों को सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समान रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए.
- इस बात पर बल दिया गया कि बैंकों को बैंकिंग के रूढ़िवादी और पारंपरिक प्रणाली को छोड़ने और मर्चेन्ट बैंकिंग और अंडरराइटिंग, रिटेल बैंकिंग जैसे प्रगतिशील कार्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

विदेशी बैंकों और भारतीय बैंकों ने इन और अन्य नए प्रकार के वित्तीय सेवाओं में संयुक्त उद्यम स्थापित करने की अनुमति दी गयी. 10 प्राइवेट बैंकों को बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आरबीआई से लाइसेंस मिला.

ये ग्लोबल ट्रस्ट बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी एस बैंक, बैंक ऑफ पंजाब, इंडसइंड बैंक, सेंच्युरियन बैंक, आईडीबीआई बैंक, टाइम्स बैंक और डेवलपमेंट क्रेडिट बैंक थे. भारत सरकार ने समिति की सभी प्रमुख सिफारिशों को स्वीकार कर लिया.

### भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में आधुनिक विकास:

कोटक महिंद्रा बैंक और यस बैंक को वर्ष 2003 और 2004 में सिस्टम में प्रवेश के लिए आरबीआई से लाइसेंस मिला. 2014 में, भारतीय रिजर्व बैंक ने आईडीएफसी और बंधन फाइनेंशियल सर्विसेज को सैद्धांतिक रूप से बैंकों की स्थापना के लिए अनुमोदित किया. आज, भारतीय बैंकिंग उद्योग सबसे अधिक विकासशील उत्कृष्ट उद्योगों में से एक है. किसी भी देश की बैंकिंग प्रणाली को प्रभावी होना चाहिए क्योंकि यह देश के आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाता है.

### भारतीय बैंकिंग प्रणाली का इतिहास –

बैंकिंग बहुत लंबे समय से हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है. और हाल के दिनों में, प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में क्रांति आई है. अब हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहाँ विभिन्न बैंकिंग सुविधाएँ बस एक क्लिक की दूरी पर हैं, लेकिन यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ. भारतीय बैंकिंग प्रणाली का इतिहास बहुत से चरण से गुजरा हुआ है और तब से लगातार विकसित हो रहा है. भारतीय आवादी का अधिकांश भाग अपनी लेन-देन संबंधी गतिविधियों के सुचारू संचालन के लिए बैंकों पर निर्भर है. बैंकिंग है और हमेशा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होगा. बैंकिंग क्षेत्र में बहुत परिवर्तन देखा गया है. बैंकों को भारत के स्वतंत्र होने से पहले ही बैंकों ने लंबे समय तक हमारा साथ दिया था. बैंकिंग के इतिहास को मुख्य रूप से 3 चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

- स्वतंत्रता से पहले का चरण – 1947 से पहले
- द्वितीय चरण – 1947 से 1991
- तृतीय चरण – 1991 और उसके बाद

### स्वतंत्रता पूर्व अवस्था में भारतीय बैंकिंग का इतिहास

प्री इंडिपेंडेंस स्टेज ने कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को देखा है. इस चरण ने 600 से अधिक बैंकों की उपस्थिति को चिह्नित किया. भारत में बैंकिंग प्रणाली 1770 में बैंक ऑफ हिंदुस्तान की स्थापना के साथ शुरू हुई, लेकिन 1832 तक यह बंद हो गई. इस चरण में 3 प्रमुख बैंकों –

## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक ऑफ मद्रास के गठजोड़ को भी देखा गया. उन्हें समामेलित किया गया और इंपीरियल बैंक कहा गया, जिसे 1955 में SBI ने अपने अधिकार में ले लिया. इस अवधि में नीचे सूचीबद्ध कुछ बैंक स्थापित किए गए थे –

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
इलाहाबाद बैंक	1865
पंजाब नेशनल बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
बैंक ऑफ बड़ौदा	1908
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911

इस चरण में एक बड़ी घटना बैंक का राष्ट्रीयकरण थी. 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया था. राष्ट्रीयकरण के साथ, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का गठन 2 अक्टूबर 1975 को किया गया था.

### राष्ट्रीयकरण और इसके प्रभाव

- बैंकों के राष्ट्रीयकरण से भारत में बैंकिंग प्रणाली की दक्षता में वृद्धि हुई.
- इससे बैंकों में भी जनता का विश्वास बढ़ा.
- लघुउद्योगों और कृषि जैसे क्षेत्रों में जो अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे थे-, उन्हें बढ़ावा मिला.
- इससे धन में वृद्धि हुई और इस प्रकार भारत के आर्थिक विकास में वृद्धि हुई.
- बैंकों के राष्ट्रीयकरण से भी बैंकों की पैठ बढ़ी.
- लाभ का मकसद सेवा के मकसद से बदल गया.
- यह मुख्य रूप से भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में देखा गया था.
- बैंकों के राष्ट्रीयकरण ने आवश्यक वस्तुओं की कमी को दूर करके लागत को स्थिर करने में मदद की.
- इसने सरकार को राजस्व के रूप में बैंकों के सभी बड़े लाभ प्राप्त करने में मदद की.
- इसने प्रतिस्पर्धा को हटाने और बैंकों की कार्य क्षमता बढ़ाने में मदद की.



### भारत में बैंकों का इतिहास – 1991 के बाद

1991 के बाद के वर्षों में आर्थिक नीतियों के उदारीकरण के साथ बैंकों के विकास की प्रक्रिया में जबरदस्त वृद्धि देखी गई। यह चरण कई मायनों में विस्तार, समेकन और वेतन वृद्धि के बारे में था। RBI ने 10 निजी संस्थाओं को लाइसेंस दिए, जिनमें – ICICI, Axis Bank, HDFC, DCB, Indusind Bank शामिल हैं। ये मुख्य तीन चरण थे जिन्हें परिभाषित किया गया है।

**आधुनिक चरण:** यह “नई पीढ़ी” तकनीक के जानकार बैंकों का चरण है। इस चरण को “सुधार का चरण” कहा जा सकता है। वर्तमान में, भारत में बैंकिंग आम तौर पर आपूर्ति, उत्पाद रेंज और पहुंच के मामले में काफी परिपक्व है, हालांकि ग्रामीण भारत में पहुंच अभी भी निजी क्षेत्र और विदेशी बैंकों के लिए एक चुनौती बनी हुई है।

### भारतीय बैंकिंग प्रणाली का इतिहास

भारत में बैंकों को अनुसूचित और गैर-अनुसूचित बैंकों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

#### अनुसूचित बैंक

भारत में अनुसूचित बैंक उन बैंकों का गठन करते हैं, जिन्हें भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में शामिल किया गया है। इन बैंकों को दो मुख्य शर्तें पूरी करनी चाहिए:

- पेड-अप कैपिटल और कलेक्टेड फंड्स की कीमत 5 लाख रुपये से कम नहीं होनी चाहिए
- बैंक की कोई भी गतिविधि ग्राहकों के हितों के लिए हानिकारक या प्रतिकूल नहीं होनी चाहिए।

इसमें वाणिज्यिक बैंक और सहकारी बैंक शामिल हैं। वाणिज्यिक बैंक अनुसूचित और गैर-अनुसूचित दोनों वाणिज्यिक बैंक हैं, जिन्होंने बैंकिंग विनियम अधिनियम 1949 को विनियमित किया है। वाणिज्यिक बैंक लाभ आधार 'पर काम करते हैं और अग्रिमों / ऋणों के उद्देश्य से जमा स्वीकार करने के व्यवसाय में लगे हुए हैं।



अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के चार प्रकार हैं:

➤ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	➤ विदेशी बैंक
➤ निजी क्षेत्र के बैंक	➤ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

### गैर- अनुसूचित बैंक

भारत में गैर अनुसूचित बैंकों का अर्थ है – ‘बैंकिंग विनियम अधिनियम 1949 (1949 का 10) की धारा 5 में परिभाषित एक बैंकिंग कंपनी, जो अधिसूचित नहीं है. भारतीय रिजर्व बैंक देश का केंद्रीय बैंक है और भारत में सभी बैंकों को RBI द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करना आवश्यक है.

भारत में बैंकों को भी एक अलग तरीके से वर्गीकृत किया जा सकता है:

### सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक:

ये सरकार के बैंक होते हैं. भारत में 19 राष्ट्रीयकृत बैंक सहित 21 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक थे तथा भारतीय स्टेट बैंक और उसके 5 सहयोगी बैंकों ने मिलकर स्टेट बैंक समूह कहलाता था.

### निजी क्षेत्र के बैंक:

निजी बैंक निजी व्यक्तियों / संस्थानों के स्वामित्व में हैं. ये कंपनी अधिनियम 1956 के तहत लिमिटेड कंपनी के रूप में पंजीकृत हैं. सरकार के पास निजी बैंकों में हिस्सेदारी नहीं है, लेकिन निजी बैंकों को RBI द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना चाहिए.

**क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (आरआरबी):** पहले ये 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक थे जो 27 राज्य सहकारी बैंकों द्वारा प्रायोजित थे. विलय के कारण 31 मार्च 2013 तक इनकी संख्या 196 से घटकर 64 हो गई. आरआरबी को नाबार्ड द्वारा विनियमित किया जाता है.

**विदेशी बैंक:** ये बैंक भारत से बाहर शामिल हैं और भारत में भी शाखाएं संचालित कर रहे हैं. कुछ विदेशी बैंक भारत में अपने प्रतिनिधि कार्यालय भी रख रहे हैं. मई 2020 तक, भारत में 45 विदेशी बैंक चालू हैं.

**विकास बैंक:** इनमें 1948 में स्थापित भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI), 1982 में स्थापित एक्सपोर्ट-इंपोर्ट बैंक ऑफ इंडिया (EXIM Bank), 1982 में स्थापित नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) और स्मॉल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक शामिल हैं. 2 अप्रैल 1990 को भारत (SIDBI) की स्थापना हुई

### भारतीय बैंकिंग प्रणाली का इतिहास

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र भारतीय वित्तीय प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है. हाल के वर्षों में शहरी और साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय को बढ़ावा देने में बैंकिंग क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. इसके बिना, भारत को एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था नहीं माना जा सकता है. पिछले तीन दशकों से, भारत की बैंकिंग प्रणाली की क्रेडिट के लिए कई उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हैं. 2000 के दशक में लगातार गिरावट के बाद 2011 से एनपीए की वृद्धि हुई है. भारत में बैंकिंग प्रणाली, एक उपाय, क्रमिक, सावधानी और स्थिर प्रक्रिया के माध्यम से, एक बड़े परिवर्तन से गुजरी है. प्राचीन दुनिया के मंदिरों से बैंकों ने एक लंबा सफर तय किया है, लेकिन उनकी मूल व्यवसाय प्रथाओं में बदलाव नहीं हुआ है. यहां तक कि अगर भविष्य बैंकों को आपके सड़क के कोने और इंटरनेट पर पूरी तरह से बंद कर देता है, या आपने दुनिया भर में ऋण के लिए खरीदारी की है, तो बैंक इस प्राथमिक कार्य को करने के लिए मौजूद रहेंगे.

### बैंकों का राष्ट्रीयकरण

भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण स्वतन्त्रता के उपरान्त सन् 1949 में किया गया. इसके कुछ वर्षों के उपरान्त सन् 1955 ई. में इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया का भी राष्ट्रीयकरण किया गया और उसका नाम बदल करके भारतीय स्टेट बैंक रखा गया. आगे चलकर वर्ष 1959 में भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम बनाकर आठ क्षेत्रीय बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया. वर्तमान में ये आठों बैंक भारतीय स्टेट बैंक समूह के बैंक कहे गए. देश के प्रमुख चौदह बैंकों का राष्ट्रीयकरण 19 जुलाई सन् 1969 ई. को किया गया. ये सभी वाणिज्यिक बैंक थे. इसी तरह 15 अप्रैल सन 1980 को निजी क्षेत्र के छः और बैंक राष्ट्रीयकृत किये गये.

### निजी व सहकारी क्षेत्र के बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक ने जनवरी 1993 में तेरह नये घरेलू बैंकों को बैंकिंग गतिविधियां शुरू करने की अनुमति दी. इनमें प्रमुख हैं यू.टी.आई., इण्डस इण्डिया, आई.सी.आई.सी.आई., ग्लोबल ट्रस्ट, एचडीएफसी तथा आई.डी.बी.आई.. बैंकों के साथ अमेरिकी, यूरोपीय तथा एशियायी देशों की बैंकें भी भारत में अपनी शाखायें खोलकर कारोबार कर रही हैं. इनकी शाखायें महानगरों तथा प्रमुख शहरों तक ही सीमित हैं. देश में ग्रामीण बैंकों का बड़ा संजाल फैलाया गया है. देश में लघु बैंकिंग कारोबार में इन ग्रामीण बैंकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

### भारत में बैंकिंग क्षेत्र में आधुनिक सुधार

भारत में बैंकिंग क्षेत्र में समय-समय पर सुधार किए जाते रहे हैं. इसके लिए सरकार ने समय-समय पर कई समितियां बनाई जिनकी रिपोर्ट में उन 14 बड़े व्यापारिक बैंकों को राष्ट्रीयकरण किया गया जिनके पास 60 करोड़ रुपये थे तथा 1980 में उन 6 बैंकों को राष्ट्रीयकरण किया गया जिनके पास 200 करोड़ रुपये थे. उसके बाद भारत में बैंकों का महत्व और बढ़ा तथा इन बैंकों की शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में भी खोली गई.

सन् 1991 में इन बैंकों में सुधार की आवश्यकता महसूस की गई. इसके लिए भारत सरकार ने अगस्त 1991 में श्री एम. नरसिंहम की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की तथा बाद में सन् 1998 में भी बैंकिंग प्रणाली सुधार कमेटी इन्हीं की अध्यक्षता में नियुक्त की गई.

वित्तीय प्रणाली की समीक्षा के लिए एम. नरसिंहम ने 1991 में निम्नलिखित सिफारिशें की-

- इस समिति ने तरलता अनुपात में कमी करने की सिफारिश की जिसमें कानूनी तरलता अनुपात (SLR) को अगले पांच वर्षों में 38.5 प्रतिशत से कम करके 28 प्रतिशत कर देने की सिफारिश की.
- इस समिति ने निर्देशित ऋण कार्यक्रमों को समाप्त करने की सिफारिश की.
- इस समिति के अनुसार ब्याज दरों का निर्धारण बाजार की शक्तियों के द्वारा होना चाहिए. ब्याज दरों के निर्धारण में रिजर्व बैंक का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए.

## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

- इस समिति ने बैंकों की लेखा प्रणाली में भी सुधार करने की बात की.
- इस समिति ने बैंकों के ऋणों की समय पर वसूली के लिए विशेष ट्रिब्यूनल की स्थापना पर जोर दिया.
- नरसिंहम समिति ने बैंकों के पुनर्निर्माण पर भी जोर दिया. इस समिति के अनुसार 3 या 4 अन्तर्राष्ट्रीय बैंक, 8 या 10 राष्ट्रीय बैंक तथा कुछ स्थानीय बैंक एवं कुछ ग्रामीण बैंक एक देश के अन्दर होने चाहिए.
- इस समिति ने शाखा लाइसेंसिंग की समाप्ति की सिफारिश की.
- इस समिति ने बैंकों पर दोहरे नियंत्रण को समाप्त करने की सिफारिश की.

पहले बैंकों पर वित्त मंत्रालय तथा रिजर्व बैंक का नियंत्रण होता था. नरसिंहम कमेटी ने सुझाया कि बैंकों पर केवल रिजर्व बैंक का नियंत्रण होना चाहिए. 1998 में गठित नरसिंहम समिति की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित हैं:

- सुदृढ़ वाणिज्यिक बैंकों आपस में विलय अधिकतम आर्थिक और वाणिज्यिक माहौल पैदा करेगा और इससे उद्योगों का विकास होगा.
- सुदृढ़ वाणिज्यिक बैंकों का विलय कमजोर वाणिज्यिक बैंकों के साथ नहीं किया जाना चाहिए.
- देश के बड़े बैंकों को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाना चाहिए.
- जोखिम भरी आस्तियों से पूंजी के अनुपात को सन् 2000 तक 9 प्रतिशत तथा सन् 2002 तक 10 प्रतिशत के स्तर पर लाया जाना चाहिए.
- सरकारी प्रतिभूतियों द्वारा कवर किए गए असुविधाजनक हो चुके ऋणों को गैर निष्पादनीय अस्ति माना जाए.
- रुपये 2,00,000 लाख से कम के ऋणों पर ब्याज नियंत्रण का अधिकार बैंकों को दिया जाए.



### हमारे देश में वर्तमान बैंकिंग

भारत में बैंकिंग बहुत सुविधाजनक है. कोई भी (व्यक्ति, समूह या जो भी हो) आसानी से लेनदेन की प्रक्रिया कर सकता है, जब भी किसी को आवश्यकता हो. बैंकों द्वारा भारत में दी जाने वाली आम सेवाएँ इस प्रकार हैं :

#### **बैंक जमा खाते:**

यह बैंकिंग क्षेत्र की सबसे आम सेवा है. कोई भी व्यक्ति बैंक खाता खोल सकता है जो कि बचत खाता, चालू खाता या जमा खाता कुछ भी हो सकता है.

#### **ऋण खाते:**

आप विभिन्न प्रकार के ऋणों के लिए किसी भी बैंक का रुख कर सकते हैं. यह आवास ऋण, कार ऋण, व्यक्तिगत ऋण, शेयर के विरुद्ध ऋण और शैक्षिक ऋण या कोई भी ऋण हो सकता है.

#### **धन हस्तांतरण:**

बैंक विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में पैसा स्थानांतरण करने के लिए ड्राफ्ट, धनादेश या चेक जारी कर सकते हैं.

#### **क्रेडिट और डेबिट कार्ड:**

सभी बैंक अपने ग्राहकों को क्रेडिट कार्ड की पेशकश करते हैं. जो कि उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिये या पैसे उधार लेने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है.

#### **लाकर्स :**

अधिकांश बैंकों के पास लाकर्स सुविधा उपलब्ध होती है जिसमें ग्राहक अपने महत्वपूर्ण दस्तावेज या कीमती गहने सुरक्षित रख सकता है.



### अनिवासी भारतीयों के लिए बैंकिंग सेवा

अनिवासी भारतीयों या एनआरआई लगभग सभी भारतीय बैंकों में खाता खोल सकते हैं। अनिवासी भारतीय तीन प्रकार के खाते खोल सकते हैं:

- अनिवासी खाता (साधारण) - NRO
- अनिवासी (बाह्य) रुपया खाते - NRE
- अनिवासी (विदेशी मुद्रा) खाता - FCNR

### विभिन्न प्रकार के वाणिज्यिक बैंक

भारत की वाणिज्यिक बैंकिंग इन श्रेणियों में रख सकते हैं-

#### **केन्द्रीय बैंक -**

भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक है जो कि भारत सरकार के अधीन है। इसे केन्द्रीय मंडल के द्वारा शासित किया जाता है, जिसे एक गवर्नर नियंत्रित करता है जिसे केन्द्र सरकार नियुक्त करती है। यह देश के भीतर की सभी बैंकों को संचालन के लिए दिशा निर्देश जारी करती है।

#### **सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक -**

भारतीय स्टेट बैंक और उसके सहयोगी बैंकों को 'स्टेट बैंक समूह' कहा जाता है। राष्ट्रीयकृत बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक जो कि मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्रायोजित हैं।

#### **निजी क्षेत्र के बैंक**

पुरानी पीढ़ी के निजी बैंक, नई पीढ़ी के निजी बैंक, भारत में सक्रिय विदेशी बैंक, अनुसूचित सहकारी बैंक, गैर अनुसूचित बैंक

#### **सहकारी क्षेत्र -**

सहकारी बैंकिंग क्षेत्र को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं -

- राज्य सहकारी बैंक
- केन्द्रीय सहकारी बैंक
- प्राथमिक कृषि ऋण सोसायटी
- विकास बैंक / वित्तीय संस्थाएँ

### भारत में बैंकिंग क्षेत्र की संरचना

भारतीय रिजर्व बैंक हमारे देश का केंद्रीय बैंक है. यह 1 अप्रैल 1935 को RBI अधिनियम 1934 के तहत स्थापित किया गया था. यह बैंकिंग संरचना में शीर्ष स्थान रखता है. RBI विभिन्न विकासात्मक और प्रचार कार्य करता है. अब तक भारत में 26 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक हैं, जिनमें से 21 राष्ट्रीयकृत बैंक हैं और 5 भारतीय स्टेट बैंक और इसके सहयोगी बैंक हैं. भारत में कुल 92 वाणिज्यिक बैंक हैं. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भारत में कुल बैंक जमा का लगभग 75% हिस्सा रखते हैं.

### भारत में बैंकिंग क्षेत्र

भारतीय बैंकों को वाणिज्यिक बैंकों और सहकारी बैंकों में वर्गीकृत किया गया है. वाणिज्यिक बैंकों में शामिल हैं

(1) अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (SCB) और गैर-अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक को आगे निजी, सार्वजनिक, विदेशी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) में वर्गीकृत किया गया है; तथा

(2) सहकारी बैंक जिनमें शहरी और ग्रामीण सहकारी बैंक शामिल हैं. 18 वीं शताब्दी में भारतीय बैंकिंग उद्योग की नींव है और तब से इसका विविध विकास अनुभव रहा है. भारत में प्रारंभिक बैंक मुख्य रूप से व्यापारियों के बैंक थे जो केवल वित्तपोषण गतिविधियों में लगे हुए थे. स्वतंत्रता-पूर्व युग में बैंकिंग उद्योग प्रेसीडेंसी बैंकों के साथ विकसित हुआ, जो कि इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया में और बाद में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में बदल गए.

उद्योग के शुरुआती दिनों में निजी स्वामित्व का बहुमत और अत्यधिक अस्थिर काम का माहौल देखा गया. सार्वजनिक स्वामित्व और जवाबदेही के प्रति प्रमुख कदम 1969 और 1980 में राष्ट्रीयकरण के साथ किए गए जिसने भारत में बैंकिंग का चेहरा बदल दिया. हाल के समय में उद्योग ने एक प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में निजी और विदेशी खिलाड़ियों के महत्व को पहचान लिया है और अधिक उदारीकरण की ओर बढ़ गया है.

### भाग (दो) वर्तमान एवं भविष्य की प्रचलित भुगतान तकनीकें

#### ई-वालेट

अर्थ है एक आभासी ई-बटुआ जिसके माध्यम से पैसों का लेन-देन संभव है. ऐसे बहुत से ई-वालेट बाज़ार में उपलब्ध हैं, मोबाईल में ई-वालेट ऐप डाऊनलोड कीजिए और अपना मोबाईल नंबर डालकर रजिस्ट्रेशन कीजिए. अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड अथवा नेट बैंकिंग को इससे जोड़िए बस इस तरह आपका स्मार्ट फोन आपका बटुआ बन जाएगा, जिसके माध्यम से राशि का लेन-देन आसानी से किया जा सकता है, अर्थात बगैर नकदी लेकर चले भी आपके काम पैसों की वजह से नहीं रुकेंगे.

#### आई एम पी एस

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से तत्काल भुगतान करने सुविधा इस सेवा के माध्यम से प्रदान की जाती है. मोबाईल फोन द्वारा छोटी बड़ी राशि का भुगतान करने के लिए इस सेवा का उपयोग किया जा सकता है. इस का उपयोग करने के लिए-

- ग्राहक को अपने बैंक की मोबाईल बैंकिंग ऐप (जैसे हमारा- सेंट मोबाईल) अपने फोन में डाऊनलोड करके एक्टिव करना होगा.
- बैंक शाखा से पिन और पासवर्ड प्राप्त कर एम एम आई डी तैयार करना होगा .
- किसी दूसरे व्यक्ति का एम एम आई डी और मोबाईल नंबर प्राप्त कर उसके मोबाईल में डाऊनलोड किसी भी बैंक के मोबाईल बैंकिंग पर राशि अंतरित की जा सकती है.

#### ब्लोकचैन तकनीक

यह तकनीक भविष्य की बैंकिंग के लिए सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध होगी. यह लेन देन को संभव बनाने का सबसे ज्यादा सुरक्षित तरीका है. इलेक्ट्रॉनिक करेंसी “बिटक्वाइन” द्वारा लोकप्रिय बनाई गई ब्लोकचेन एक ऐसी तकनीक है, जो रिकॉर्ड रखती है. यह हमारे बैंकिंग के परंपरागत तरीके को पूरी तरह बदलकर रख देगी. भविष्य में इसी तकनीक का सहारा लेकर मोबाईल सेवा की तरह बैंक खाता पोर्टेबिलिटी भी संभव हो सकेगी.

### बायोमेट्रिक भुगतान

ए टी एम पर फिंगरप्रिंट के माध्यम से बिना कार्ड और बिना पिन के ही नकदी निकाली जा सकेगी. इसके लिए केवल आपका आधार कार्ड आपके बैंक खाते से लिंक होना आवश्यक है. ए टी एम पर पैसे निकालने के लिए केवल अपना आधार क्रमांक डालना होगा और पिन की जगह फिंगरप्रिंट इस्तेमाल करना होगा.

आनेवाले समय में बहुत से बैंक यह सेवा शुरू करेंगे, इसके लिए ए टी एम को आधुनिक बनाए जाने पर बैंकों द्वारा कार्य किया जा रहा है ताकि वे नियमित कार्ड एवं पिन आधारित सेवाओं के साथ बायोमेट्रिक लेन-देन की सुविधा भी उपलब्ध करा सकें. ग्राहकों के लिए यह एक बहुत बड़ी सेवा होगी, कार्ड हमेशा साथ रखने और पिन याद रखने की जरूरत नहीं रहेगी.

### ई – खाता

भविष्य में बैंक खाता खोलने के लिए बैंक जाने और कई तरह के दस्तावेज़ भरने की भी आवश्यकता शायद ना हो. ई-के वाय सी का इस्तेमाल कर बैंक खाता खोलने में लगाने वाला समय बचाया जा सकेगा. अपने मोबाईल से सेल्फी लीजीए और बैंक खाता खोलें. भविष्य में यह सुविधा भी उपलब्ध होगी कि किसी भी बैंक का ऐफ डाउनलोड कर और सेल्फी लेकर उसमें खाता खोल सकेंगे. ऐप पर अपने आधार कार्ड की तस्वीर लेकर डालना होगा और मोबाईल में ही कुछ सवालों के जवाब देकर आपका खाता खोल दिया जाएगी. बाकी की औपचारिकतायें बैंक कर्मचारी को घर बुलाकर अथवा बैंक जाकर पूरी की जा सकेंगी. इस बीच अगर आपको भुगतान की आवश्यकता पड़ती है तो आप प्रक्रिया पूर्ण होने से पहले भी अपने बैंक खाते के जरिये 10000/- तक भिजवा सकते हैं.

### ई बैंकिंग एवं डोर स्टेप बैंकिंग

ई बैंकिंग को कई नामों से जाना जाता है, जैसे वर्चुअल बैंकिंग, ऑनलाईन बैंकिंग या इन्टरनेट बैंकिंग. विभिन्न बैंक उत्पादों और सेवाओं को ईलेक्ट्रॉनिक और टेलिकम्युनिकेशन माध्यमों का प्रयोग कर ग्राहकों तक पहुंचाना ही सामान्य शब्दों में ई-बैंकिंग है. ई-बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक अपने खाते की जानकारी ले सकता है, खाते में लेन-देन कर सकता है. इसका माध्यम कंप्यूटर, मोबाईल फोन या टेबलेट हो सकता है.



ई सेवाओं में बैंक, ग्राहकों को उनके खाते में लेन- देन के लिए अधिकृत करता है. ग्राहक अपने खाते की रकम को दूसरे के खाते में अंतरित कर सकता है. बिल का भुगतान कर सकता है, ऑन लाईन खरीद आदि कर सकता है. इस स्तर पर सुरक्षा के कड़े प्रावधान किए गए हैं जैसे यूजर आई डी, पासवर्ड, ओ टी पी, ग्रीड कार्ड आदि.

आजकल विकसित देशों में लगभग 80 % तक लेन –देन ई बैंकिंग की माध्यम से किया जाता है. हमारे देश में भी जो परंपरावादी बैंकिंग संस्थाएं हैं, उन्होंने परंपरागत बैंकिंग के साथ-साथ ई बैंकिंग पर बहुत ज़ोर दिया है, बैंकों के साथ-साथ सरकार द्वारा भी इस पर ज़ोर दिये जाने के कारण हमारे देश में हाल ही के वर्षों में 30 से 40 प्रतिशत तक का लेन –देन ई माध्यमों से होने लगा है. भारत में ई बैंकिंग की शुरुआत आई सी आई सी आई बैंक ने 1990 के दशक में की थी और आज अधिकांश नए निजी बैंकों का लेन-देन अधिकांशतः ई माध्यम से ही होता है.

### ई बैंकिंग के लाभ

ई बैंकिंग के महत्वपूर्ण और प्रभावी होने के कई कारण या लाभ हैं, जो निम्नलिखित हैं\_

#### **कम लागत खर्च-**

खर्च की कटौती में बैंक और ग्राहक दोनों के ही दृष्टिकोण से लाभदायक है. ग्राहक यदि शाखा में जाकर एक लेन -देन या राशि का स्थानांतरण करता है और इसी बैंकिंग कार्य को घर पर रहकर ई बैंकिंग से करता है या डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा से इस कार्य को घर बैठे करता है तो तुलनात्मक रूप से घर बैठे यह कार्य करना ज्यादा सुविधाजनक है, अतिरिक्त खर्च भी नहीं होता और समय की बचत भी होती है. इसे ही बैंक के दृष्टिकोण से देखें तो यदि ग्राहक अपने ई बैंकिंग माध्यमों से लेन देन करता है तो बैंक के मानव संसाधन का काफी बचाव होता है और उन्हें अन्य कार्यों में लगाकर व्यवसाय वृद्धि और उत्पादकता वृद्धि की जा सकती है. इस तरह ई बैंकिंग, ग्राहक और बैंक दोनों के लिए लाभदायक है.



### गलती होने की संभावना का कम होना-

ग्राहक जब स्वयं लेन-देन करते हैं तो बेहद सावधान रहते हैं ,अतः गलती होने की संभावना कम होती है.बैंक शाखाओं में ही यदि सारे लेन-देन का निष्पादन होगा तो अधिक कार्य दबाव के कारण गलतियों की संभावना बनी रहती है अथवा समय पर कार्य निष्पादन ना होने की वजह से काफी नुकसान भी हो सकता है. ग्राहक जब स्वयं अपने खातों की देख-रेख करते हैं तो उन्हें अपने खातों की पूर्ण जानकारी होती है, और खाते में यदि कोई चार्ज लगाया जाता है या अवैध निकासी होती है तो ग्राहकों को तुरंत पता लग जाता है और इसका जल्दी निराकरण किया जा सकता है.

### कागजी कामों से छुटकारा –

आपने गो- ग्रीन तो सुना ही होगा, उसके कार्यान्वयन में भी ई बैंकिंग का महत्वपूर्ण योगदान है. ई बैंकिंग माध्यमों से कार्य करने पर कागज का इस्तेमाल नहीं होता है. उदाहरण के तौर पर कोई ग्राहक बैंक में आकर लेन-देन करता है तो उसे फॉर्म,चेक आदि भरना पड़ता है ,पास बुक या स्टेटमेंट की शकल में भी कागज का काफी उपयोग होता है.वहीं यदि यह लेन-देन ई बैंकिंग के माध्यम से किया जाता है तो ऑनलाईन ही सबकुछ देखा जा सकता है और कागजों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती है. यह भी एक बहुत बड़ा लाभ है कि कागजों का प्रयोग कम होता है, यह पृथ्वी के पर्यावरण संतुलन में भी सहायक होता है.

### सुविधाजनक-

इसके प्रयोग में बैंक की शाखाओं की तरह निर्धारित समय की पाबंदी नहीं है और यह वर्ष के प्रत्येक दिन 24 घंटे खुला है अर्थात कभी भी इसका प्रयोग कर अपना काम किया जा सकता है. जहां भी चाहें, जब भी चाहें बैंकिंग सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं.उन्हें किसी पंक्ति में खड़े होने ,कोई आवेदन भरने ,किसी कागज या कलम की जरूरत नहीं होती है. जब जिस खाते में जितना पैसा मंगवाना है ,भेजना है लेन-देन कर सकते हैं पहले से कोई योजना बनाने या खाते में पैसा जमा करके रखने की कोई आवश्यकता नहीं होती.

कई जरूरी काम चुटकियों में हो जाते हैं. राशि को बिना वजह खातों में पड़े रहने देने की आवश्यकता भी नहीं होती, जो ई बैंकिंग का बहुत बड़ा लाभ है. कई बार किसी ऋण खाते में पैसे तुरंत जमा करने की आवश्यकता पड़ती है और यदि उस दिन या अगले दिन बैंक की छुट्टी हो तो पैसे जमा नहीं हो पाते और खाता एन.पी.ए. भी हो सकता है. वहीं यदि ई बैंकिंग माध्यमों का प्रयोग किया जाये तो छुट्टियों के दिन या सुबह-शाम, रात्रि में कभी भी बैंक लेन-देन का निष्पादन किया जा सकता है.

### भौगोलिक सीमाओं का प्रतिबंध समाप्त-

ग्राहक, दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर लेन-देन कर सकता है. बैंक शाखा के शहर में ही उपस्थित रहना आवश्यक नहीं है. यह भी ई बैंकिंग का एक बहुत बड़ा लाभ है. यदि ग्राहक कहीं जा रहा होता है, या पहले से शहर से कहीं बाहर है और उसे तुरंत किसी लेन-देन का निष्पादन करना है तो वह मोबाईल या अन्य ईलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के माध्यम से रास्ते में या कहीं से भी लेन-देन का निष्पादन कर लेता है और आवश्यक बैंकिंग कार्य के साथ-साथ अन्य कार्य भी समय की बचत के साथ हो जाता है. कोई भी कार्य रूकता नहीं है और इस तरह समय की बचत के साथ दोहरा लाभ हो जाता है.

### ज्यादा उत्पादकता, कम लागत -

बैंक के दृष्टिकोण से भी यह कम लागत में ज्यादा उत्पादकता में सहायक है. उदाहरण के लिए यदि कोई ग्राहक अपने खाते से आर टी जी एस करने शाखा पहुंचता है, उसके लिए पंक्ति में खड़ा होता है फिर फॉर्म भरता है, बैंक कर्मचारी उसे प्राप्त करता है फिर उस लेन-देन को कंप्यूटर में प्रविष्ट करता है, फिर दूसरे अधिकारी उसे अधिकृत करते हैं तब जाकर यह लेन-देन पूरा होता है. इतना ही नहीं इन दस्तावेजों को बैंक को कम से कम 10 वर्षों तक सम्हालकर रखना पड़ता है. इस तरह कई बैंक कर्मचारियों से लेकर कागज, गोदाम बिजली आदि सभी का उपयोग होता है, जबकि यही लेन-देन ग्राहक अपने स्तर पर ई बैंकिंग माध्यमों का उपयोग कर स्वयं बिना बैंक जाये ही सम्पन्न कर लेता है तो सभी चीजों की बचत हो जाती है. ई बैंकिंग की ज्यादा प्रसिद्ध सुविधाओं में ए टी एम, टेली बैंकिंग, ई सी एस, स्मार्ट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर, मोबाईल बैंकिंग, इन्टरनेट बैंकिंग, डोर स्टेप बैंकिंग आदि प्रमुख हैं.

### भविष्य की बैंकिंग

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, जिसमें हर व्यक्ति अपनी किसी आवश्यकता के लिए सबसे पहले किसी आई.टी. उपकरण का ही सहारा लेता है. वर्ष 2013 में स्मार्ट फोन इस्तेमाल करने वालों की संख्या भारत में लगभग 7 करोड़ 60 लाख थी जो अब बढ़कर वर्ष 2020 में लगभग 70 करोड़ हो गई है और एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2025 में यह संख्या बढ़कर लगभग 97 करोड़ हो जाएगी. इस तरह यह कहा जा सकता है कि आज के समय में सूचना प्रौद्योगिकी, इंसान की सबसे अनिवार्य आवश्यकता हो गई है.

आज यदि बैंकिंग सेवा या अन्य किसी सेवा की जरूरत पड़ती है तो सभी अपने पॉकेट में हाथ डालकर सबसे पहले अपना स्मार्ट फोन निकालते हैं और उसपर वांछित “की” दबाने के बाद उनका काम हो जाता है. आधुनिक समय में यदि बैंकिंग की बात हो तो वही बैंक अग्रणी हो सकता है जिनकी पॉकेट बैंकिंग सबसे अच्छी और सुविधाजनक हो. यानि यदि कोई ग्राहक बैंकिंग सुविधाओं का लाभ लेने की सोचता है तो उनकी अपेक्षा रहती है कि वह स्मार्ट फोन निकाले और उनको उनकी वांछित सेवा मिल जाये.

पॉकेट बैंकिंग की जब बात की जाती है तो इसके अंतर्गत जितनी भी ई बैंकिंग सुविधाएं हैं जैसे मोबाईल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, बैंक खातों से जुड़े मोबाईल ऐप्स वगैरह सभी सम्मिलित हैं. भ्रूंडलीकरण के दौर में वैसे भी व्यक्ति देश विदेश घूमता रहता है तब हर बार जरूरत के समय वह अपनी बैंक शाखा वाले शहर में ही मौजूद रहे यह भी संभव नहीं है, ऐसी परिस्थिति में भी पॉकेट बैंकिंग उसके लिए बहुत सुविधाजनक है.

दूसरी तरफ यदि बैंक के दृष्टिकोण से सोचा जाये तो बैंक के लिए भी लागत खर्च और मानव संसाधन दोनों ही स्रोतों की बचत होती है यदि अधिक से अधिक बैंकिंग सेवाओं का निष्पादन पॉकेट बैंकिंग से हो. इस तरह बैंक के लाभ अर्जन की क्षमता भी बढ़ जाती है.

बैंक की दृष्टि से पॉकेट बैंकिंग अधिक उत्पादकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और ग्राहक तथा बैंक दोनों के लिए लाभकारी है. यदि पॉकेट बैंकिंग सुविधा को दूरदर्शिता के दृष्टिकोण से देखा जाये तो इसका योगदान देश के सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) को बढ़ाने में भी है, क्योंकि इससे लागत खर्च कम, मानव संसाधन की बचत, समय का सदुपयोग, ग्राहकों का समय बचने से अधिक व्यवसाय कर पाना इत्यादि अनेक लाभ हैं. उच्च कोटि का बैंक बनने के लिए और



आधुनिक बैंकिंग के प्रतिस्पर्धी बाज़ार में बैंक को सक्षम बनाए रखने के लिए किसी भी बैंक की पॉकेट बैंकिंग की सुविधा तगड़ी होनी चाहिए. उसमें सभी अत्याधुनिक सुविधाओं का समागम होना चाहिए और बहुत ही तीव्र रूप से काम करनेवाकला होना चाहिए. इसलिए बैंकों को अपनी तकनीकी क्षमताओं का सम्पूर्ण सदुपयोग कर एक बहुत ही सक्षम पॉकेट बैंकिंग वाला बैंक बनाने की जरूरत है.

ई बैंकिंग की जो भी सुविधाएं बैंक द्वारा दी जाती हैं वह बहुत ही सुगम, सहज और सुरक्षित होनी चाहिए. ग्राहकों को बैंक की पॉकेट बैंकिंग सुविधा पर पूरा विश्वास होना जरूरी है, और इसका पूर्ण रूप से सुरक्षित होना भी अत्यंत आवश्यक है, तभी पॉकेट बैंकिंग सफल हो सकती है.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया बैंक, पहला बैंक था जिसने इंटरनेट बैंकिंग दुहरी सुरक्षा वाला बनाया था, जिसमें पासवर्ड के साथ-साथ ग्रीन कार्ड की भी अनिवार्यता थी और दोनों का सटीक प्रयोग करने के बाद ही ग्राहक लेन-देन कर सकते थे, जो बहुत ही सुरक्षित लेन-देन होता था. बाद में डिजिटल हस्ताक्षर, ओ टी पी आदि का प्रावधान आया जिससे सुरक्षित लेन-देन में और अधिक आसानी हुई और ग्रीन कार्ड की महत्ता कम हो गई.

हम कह सकते हैं कि सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का इंटरनेट बैंकिंग बहुत ही सुरक्षित लेन-देन में सक्षम था, सक्षम है और ग्राहकों को इसपर पूर्ण विश्वास भी है. पॉकेट बैंकिंग के माध्यम से आज के समय में ग्राहक अपना आधे से अधिक बैंकिंग कार्य निष्पादित कर लेते हैं, और समय, यात्रा, खर्च आदि की बचत के साथ सुरक्षित लेन-देन भी हो जाता है.

किसी भी बैंक का चाहे वो सार्वजनिक क्षेत्र का हो अथवा निजी क्षेत्र का आधुनिक बैंकिंग में टिकने के लिए मजबूत ई – बैंकिंग चैनलों का होना अत्यंत आवश्यक है. बैंक को सदैव अपने ई माध्यम सुविधाओं को बाज़ार और ग्राहक की आवश्यकता के अनुरूप और सुरक्षा के दृष्टिकोण से अपडेट करते रहने की परम आवश्यकता है, जिसमें पीछे होने पर अन्य बैंक आगे निकल जाएंगे और जिस बैंक की ई माध्यम सुविधायें अपडेटेड नहीं हैं वह पीछे छूट जाएगा.



पॉकेट बैंकिंग की बात आने पर साईबर खतरे की बात होना अत्यंत आवश्यक है, जिसके लिए एक अच्छे बैंक के पास सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित ई माध्यम बैंकिंग का होना आवश्यक है। ई माध्यम द्वारा बैंकिंग या अन्य सुविधाओं की बात आते ही सबसे पहले डेटा की सुरक्षा की अनिवार्यता देखी जाती है। एक अच्छे बैंक को डाटा कंट्रोल होना, डेटा सुरक्षित रखना और इस बात का भरोसा उनके ग्राहकों को दिलाना बहुत जरूरी है तभी उस बैंक का ई-बैंकिंग या पॉकेट-बैंकिंग सफल हो सकता है और वह बैंक एक अग्रणी बैंक बन सकता है।

आज के भारत में डिजिटাইजेशन देश का सबसे बड़ा मुद्दा बन गया है। देश के प्रधानमंत्री जी डिजिटाइजेशन क्रान्ति की शुरुआत की है और अपनी कई योजनाओं, प्रयासों में डिजिटाइजेशन पर अत्यधिक ज़ोर दिया है।

डिजिटाइजेशन के बिना दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना मुश्किल है, जिसका आभास प्रधानमंत्रीजी ने देश को कराया है। पॉकेट बैंकिंग डिजिटाइजेशन का एक बड़ा और अनिवार्य हिस्सा है, जिसकी सफलता से देश के आर्थिक विकास की सफलता जुड़ी है।

इस तरह हम पाते हैं कि पॉकेट बैंकिंग देश के विकास के लिए आवश्यक है, और सभी बैंकों को इसपर पूर्ण रूप से तबज्जो देकर इसे पूर्ण रूप से प्रभावी बनाकर देश के विकास में योगदान देना चाहिए।

### डोर स्टेप बैंकिंग-

यह एक ऐसी सुविधा है, जिसमें ग्राहक बैंक के पास नहीं बल्कि बैंक (बैंक के अधिकृत कर्मचारी) ग्राहक के पास आते हैं। इसके अंतर्गत ग्राहकों को घर पर रकम पहुंचाने, घर से जमाराशि को बैंक लाने, चैक या ड्राफ्ट की होम डिलीवरी जैसी कई सुविधाएं ग्राहकों को दी जाती हैं।

हाल ही के वर्षों में भारतीय स्टेट बैंक ने बहुत ज़ोर –शोर से डोर स्टेप बैंकिंग की सुविधाएं ग्राहकों तक पहुंचाई हैं। अन्य बैंक भी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का अनुकरण कर रहे हैं।

### डोर स्टेप बैंकिंग के फायदे

दिव्याङ्ग एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए लाभदायक – डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है. अपनी शारीरिक विवशताओं के कारण वे बैंकिंग सुविधाओं का लाभ लेने में बहुत कठिनाईयों का सामना करते हैं. लेकिन डोर स्टेप बैंकिंग की सुविधा होने के कारण उनकी शारीरिक विवशता का उन्हें आभास भी नहीं होता है और उनका कार्य घर बैठे हो जाता है. कई बार उन्हें राशि या लेन –देन की तत्काल आवश्यकता होती है और मात्र एक टेलीफोन कॉल से उनका कार्य हो जाता है, बैंक जाने और समय खर्च करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती .

### टैक्स आदि का समय पर भुगतान

यदि कोई व्यवसायी ग्राहक जी एस टी चालान आदि जमा करना चाहता है और समय का अभाव है तो डोर स्टेप बैंकिंग इसमें भी सहायक है. यदि किसी ग्राहक को जमा राशि पर टैक्स नहीं लगना है, जिसके लिए उन्हें फॉर्म 15 जी या 15 एच देना पड़ता है और वह बैंक जाने में असमर्थ है तो भी उन्हें यह सुविधा डोर स्टेप बैंकिंग से मिल जाती है.

### कोरोना जैसी महामारी के समय में भी लाभदायक

कोरोना जैसी महामारी के समय दिव्याङ्ग, वरिष्ठ नागरिक एवं अन्य बीमार, असमर्थ या गर्भवती महिलाओं के लिए भी जिन्हें घर से बाहर निकलने पर संक्रमण का ज्यादा खतरा है उनके लिए डोर स्टेप बैंकिंग बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ है.

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने डीजिटাইज़ेशन को बहुत महत्व देते हुए पूरे भारत में डिजिटल क्रान्ति की शुरुआत की है. ई-बैंकिंग एवम डोर स्टेप बैंकिंग डीजिटাইज़ेशन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसके बिना डीजिटাইज़ेशन सार्थक नहीं हो सकता है. अगली पीढ़ी के बैंकों और जो बैंक अगली पीढ़ीयों तक अच्छी तरह चलना चाहते हैं उनके लिए ई बैंकिंग और डोर स्टेप बैंकिंग को सुदृढ़ करने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है. विकसित बैंकिंग व्यवस्था का अर्थ ही ई बैंकिंग और डोर स्टेप बैंकिंग है, और विकसित बैंकिंग व्यवस्था के बिना विकसित देश की कल्पना भी मुश्किल है.

### फिनटैक

बैंकिंग को ऋण देने या जमा राशि के निवेश, जनता से धन लेने, मांग पर चुकाने या अन्यथा चेक, ड्राफ्ट, आदेश या अन्यथा द्वारा वापस लेने के उद्देश्य के रूप में परिभाषित किया गया है। यह परिभाषा भारतीय बैंकिंग विनियमन अधिनियम (1949) में दी गई है। इस परिभाषा से, हम यह कह सकते हैं कि एक बैंक की दो मुख्य विशेषताएं हैं

- 1) बैंक धन की जमा राशि स्वीकार करता है जो चेक द्वारा निकासी योग्य है,
- 2) बैंक ऋण के लिए जमा राशि का उपयोग करता है। बैंक के रूप में पहचाने जाने के लिए संस्था को जमा राशि का उपयोग आम जनता को ऋण देने के लिए करना चाहिए।

### **शाखा बैंकिंग / मैनुअल बैंकिंग**

शाखा बैंकिंग एक एकल बैंक को संदर्भित करता है जो किसी शहर या विभिन्न स्थानों या शहरों से बाहर विभिन्न शाखाओं के माध्यम से संचालित होता है। यह अपने ग्राहकों को सेवा का सामना करने के लिए एक विस्तृत सरणी प्रदान करता है। बैंक शाखा को बैंक के सबसे महत्वपूर्ण चैनल के रूप में माना जाता है और ग्राहक के दृष्टिकोण से आमतौर पर सबसे पसंदीदा चैनल है।

बैंक शाखा को बैंक के चेहरे के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि ग्राहक व्यक्तिगत रूप से दौरा कर सकता है और बैंक शाखा के अधिकारियों से मिल सकता है और बातचीत कर सकता है और बैंक द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं का लाभ उठा सकता है।

### शाखा बैंकिंग अवधारणा

वास्तव में, बैंक शाखा एक बैंक का बिक्री और सेवा चैनल है और बैंक शाखा के कर्मचारी आमतौर पर बैंक के उत्पादों की बिक्री और सेवा दोनों के लिए जिम्मेदार होते हैं।

शाखा बैंकिंग के संदर्भ में बिक्री बैंक के किसी भी डिपॉजिट, उत्पाद, सोना, खुदरा या अन्य अनुमोदित संगठनों, जैसे जीवन बीमा, सामान्य बीमा और म्यूचुअल फंड के अन्य निवेश उत्पादों की हो सकती है।

बैंक शाखा के जमा उत्पादों के सबसे आम उदाहरण बचत बैंक खाते, चालू खाते, सावधि जमा खाते और आवर्ती जमा खाते हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा जारी नो योर कस्टमर (KYC) दिशानिर्देशों को पूरा करने के लिए इनमें से किसी भी खाते को खोलने के इच्छुक ग्राहकों या संभावनाओं को एक खाता खोलना फ़ॉर्म भरना होगा और निर्दिष्ट दस्तावेज़ जमा करने होंगे।

बैंक के परिसंपत्ति उत्पादों के उदाहरणों में व्यक्तिगत ऋण, गृह ऋण, कार ऋण और क्रेडिट कार्ड शामिल हैं। जब कोई ग्राहक बैंक के किसी भी ऋण उत्पाद के लिए शाखा से संपर्क करता है, तो शाखा कर्मचारी ग्राहक के संपर्क विवरण को नीचे ले जाता है और उत्पन्न लीड का रिकॉर्ड अनुवर्ती कार्रवाई के लिए बैंक के पास रखा जाता है।

अधिकांश बैंकों में, ग्राहक संपर्क में शामिल होने वाले फ्रंट ऑफिस की गतिविधियाँ, उदाहरण के लिए, नकद प्राप्ति और भुगतान, डीडी या लॉकर जारी करने के लिए बैंकों की शाखाओं में संचालित की जाती हैं।

बैंक ऑफिस की गतिविधियाँ, जैसे क्लियरिंग और खाता खोलना, शाखा से अलग स्थान पर केंद्रीकृत किया जा सकता है। ड्राफ्ट और अन्य उपकरणों के भुगतान को केंद्रीकृत करने जैसी गतिविधियाँ, जो स्थानीय क्षेत्र से संबंधित हैं, को एक केंद्र में रखा जा सकता है।

संचालन की दक्षता हासिल करने और लागतों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से कुछ अन्य गतिविधियाँ जो केंद्रों में आम हैं, एक अन्य स्थान पर की जा सकती हैं।



### बैंक शाखाओं में दी जाने वाली सेवाएँ

बैंक शाखाओं द्वारा ग्राहकों को कई सेवाएं दी जाती हैं. निम्नलिखित सूची में अधिकतर शाखाओं द्वारा दी जाने वाली मुख्य सेवाएँ शामिल हैं:

- खाता खोलना
- नकद प्राप्ति की रसीद
- नकद भुगतान
- पुस्तक समस्या की जाँच करें
- चेक का भुगतान रोकें
- सावधि जमा और समय से पहले निकासी बंद करना
- डीडी और बैंकर चेक जारी करना
- सुरक्षित जमा लॉकर
- विदेशी मुद्रा सेवाएं
- सोने का खुदरा
- डीमैट सेवाएं
- क्लियरिंग चेक की स्वीकृति
- चेक बुक, डेबिट कार्ड, पिन और पासवर्ड जैसे वितरण
- प्रश्नों और शिकायतों की स्वीकृति
- निवेश सेवाएं
- स्थायी निर्देश
- खुदरा ऋण उत्पाद

बैंक की प्रत्येक शाखा को एक जिम्मेदार व्यक्ति द्वारा प्रबंधित किया जाएगा जिसे शाखा प्रबंधक कहा जाता है जो अधिकारियों, क्लर्कों और उप-कर्मचारियों द्वारा सहायता प्रदान करेगा. इंग्लैंड और भारत में, इस प्रकार की शाखा बैंकिंग प्रणाली चलन में है.

इस प्रकार शाखा बैंकिंग एक प्रणाली है जिसमें एक बैंक अपनी बैंकिंग गतिविधियों को दो या अधिक स्थानों पर प्रस्तुत करता है. विभिन्न शाखाओं के कामकाज पर प्रधान कार्यालय का समग्र नियंत्रण होता है.

## **शाखा बैंकिंग के लाभ:**

शाखा बैंकिंग प्रणाली के निम्नलिखित लाभ हैं:

### **बड़े पैमाने पर संचालन की अर्थव्यवस्थाएं:**

शाखा बैंकिंग बड़े पैमाने पर संचालन के फायदे और अर्थव्यवस्था का आनंद लेती है। शाखा बैंकिंग प्रणाली के तहत बड़े पैमाने पर संचालन के माध्यम से अर्थव्यवस्थाओं को बनाए रखा जा सकता है और व्यापक भौगोलिक कवरेज से बैंकिंग प्रणाली में जनता का विश्वास बढ़ता है।

### **कैश रिजर्व की अर्थव्यवस्था:**

शाखा बैंकिंग प्रणाली के तहत एक विशेष शाखा बड़ी मात्रा में भंडार रखे बिना काम कर सकती है। आवश्यकता के समय में, संसाधनों को एक शाखा से दूसरी शाखा में स्थानांतरित किया जा सकता है। एक .unit बैंक के लिए दूसरी यूनिट बैंक पर आकर्षित करना आसान नहीं है।

### **पूंजी का उचित उपयोग:**

शाखा बैंकिंग प्रणाली के तहत पूंजी का उचित उपयोग होता है। चूंकि संसाधन एक शाखा से दूसरी शाखा में स्थानांतरित किए जाते हैं। तो लाभदायक शाखाओं में निवेश करके पूंजी का सही उपयोग किया जा सकता है।

### **लागत की अर्थव्यवस्था:**

शाखा बैंकिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर धनराशि के प्रेषण को अधिक आसानी के साथ और इकाई बैंकिंग की तुलना में कम लागत पर, अंतर-कार्यालय ऋणग्रस्तता के लिए अधिक आसानी से समायोजित किया जा सकता है।

### **जोखिम फैलाने वाली अर्थव्यवस्था:**

भौगोलिक रूप से जोखिमों का प्रसार शाखा बैंकिंग प्रणाली का एक और प्रमुख लाभ है। शाखा बैंकिंग में, एक शाखा से होने वाले नुकसान को लाभकारी शाखाओं द्वारा अर्जित मुनाफे से ऑफसेट किया जा सकता है जो इकाई बैंकिंग के मामले में संभव नहीं है।

### ग्रेटर सेफ्टी और लिक्विडिटी:

ब्रांच बैंकिंग विविध प्रतिभूतियों और विविध निवेशों के चयन के लिए एक व्यापक गुंजाइश भी प्रदान करता है, ताकि सुरक्षा और तरलता का एक उच्च स्तर बनाए रखा जा सके।

### संतुलित आर्थिक विकास:

शाखा बैंकिंग के तहत, देश के सभी शहरों, कस्बों और यहां तक कि पिछड़े क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं। इस प्रकार, देश की अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास को प्राप्त करने में शाखा बैंकिंग बहुत सहायक है।

### भारतीय रिजर्व बैंक के पर्यवेक्षण के लिए सुविधाजनक:

शाखा बैंकिंग की एक प्रणाली के तहत यह केंद्रीय बैंक या सरकार के लिए बैंकों की गतिविधियों को विनियमित करने और पर्यवेक्षण करने के लिए अधिक सुविधाजनक है, क्योंकि नियंत्रण केवल अधिक प्रभावी और आसान हो जाता है क्योंकि केवल मुख्य कार्यालय होना है। उद्देश्य के लिए निपटा।

### कार्मिक को प्रशिक्षित करने का प्रावधान:

अंत में, शाखा बैंकिंग कर्मियों के लिए सबसे अच्छा प्रशिक्षण मैदान प्रदान करता है। एक व्यक्ति को एक छोटी शाखा में प्रशिक्षित किया जा सकता है जहां काम का दबाव कम होता है और उसे बाद में एक सक्रिय शाखा में स्थानांतरित किया जा सकता है।

### शाखा बैंकिंग के दोष या अवगुण:

शाखा बैंकिंग आमतौर पर निम्नलिखित सीमाओं से ग्रस्त है:

#### कुप्रबंधन का खतरा:

शाखा बैंकिंग प्रणाली के तहत प्रबंधन, पर्यवेक्षण और नियंत्रण के संबंध में बहुत सी कठिनाइयाँ हैं, कई शाखाएँ अनुचित विस्तार से कुप्रबंधन का खतरा पैदा करती हैं।

#### निर्णय लेने में देरी:

शाखा बैंकिंग की प्रणाली भी लालफीताशाही से ग्रस्त है और शाखा प्रबंधकों के अपर्याप्त अधिकार के कारण देरी हो रही है। आमतौर पर, बड़े क्रेडिट के लिए आवेदन शाखा प्रबंधक द्वारा मुख्य कार्यालय को भेजा जाना होता है। यह देरी का कारण बनता है और शाखा प्रबंधकों को बहुत कम पहल देता है।

#### व्यक्तिगत संपर्क का अभाव:

एक बड़ा बैंक अपने व्यवहार में अधिक से अधिक अवैयक्तिक हो जाता है। महाप्रबंधकों का स्थानीय लोगों या विभिन्न शाखाओं के कर्मचारियों के साथ शायद ही कोई व्यक्तिगत संपर्क हो।

#### उच्च परिचालन और रखरखाव खर्च:

शाखा बैंकिंग बहुत महंगी है, क्योंकि बहुत अधिक शाखाओं के खुलने से शाखाओं की स्थापना और रखरखाव शुल्क अधिक हो जाते हैं और परिणामस्वरूप, मुनाफा कम हो सकता है।

#### कुछ बैंकों के हाथों में एकाधिकार शक्ति निर्मित होना:

शाखा बैंकिंग कभी-कभी कुछ ही बैंकों के हाथों में एकाधिकार शक्ति का निर्माण करता है। कुछ बड़े बैंकों के हाथ में ऐसी एकाधिकार शक्ति समुदाय के लिए खतरे का एक स्रोत है जिसका लक्ष्य समाज का एक समाजवादी पैटर्न है।

#### क्षेत्रीय असंतुलन:

शाखा बैंकिंग क्षेत्रीय असंतुलन को प्रोत्साहित करता है। आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों के वित्तीय संसाधन औद्योगिक और व्यावसायिक केंद्रों में स्थानांतरित हो जाते हैं। जिसके कारण पिछड़े क्षेत्रों की उपेक्षा जारी है और वे पिछड़े हुए हैं।



### भाग (तीन) डिजिटल बैंकिंग, बैंकिंग संहारणात्मकता, मोबाईल बैंकिंग

#### **बैंकिंग सेवाओं का लाभ लेना इंटरनेट के माध्यम से स्मार्ट उपकरणों का विकास**

अब आपके ग्राहक को चेक जमा करने या ऋण सुविधा के बारे में चर्चा करने के लिए बैंक शाखा के सामने कतार में नहीं लगना चाहिए. डिजिटल बैंकिंग के साथ, आप फोन या कंप्यूटर के माध्यम से इन सभी सेवाओं की पेशकश कर रहे हैं. यहां तक कि वीडियो कॉल / वॉयस कॉल की सुविधा जब एकीकृत आपके ग्राहक को उनकी सुविधा में ग्राहक सहायता का आनंद लेने में मदद कर सकती है.

#### **किसी भी समय बैंकिंग सेवाओं को बंद करना**

बैंकिंग में विस्तार की जरूरत है, क्योंकि कभी भी धन की आवश्यकता उत्पन्न हो सकती है, जब बैंक की लुट्टी हो या रात हो तो इसे बंद नहीं किया जा सकता है. हो सकता है कि आप अपने ग्राहक को पेरिस जाने के लिए फंड ट्रांसफर के लिए इंतजार न करें, वह इसे वहां से कर सकता है. यह डिजिटल बैंकिंग की शक्ति है और कहीं भी बैंकिंग.

#### **ग्राहक के लिए स्वयं बैंकिंग सेवाएं प्राप्त करने की सुविधा**

क्या आपके कर्मचारी हर संभावित ग्राहक को बैंक खाता खोलने की एक ही प्रक्रिया बताते हुए ऊब चुके हैं, जो आपकी शाखा में है? स्वचालित रूप से Do It Yourself सेवाओं को स्वचालित और सक्षम करना आपके ग्राहक को जल्दी और आसानी से संलग्न करने में मदद करता है.

#### **ग्राहक की अवधारणा पर अधिक व्यक्तिगत सेवाएं**

आपके ग्राहकों के लिए समय महत्वपूर्ण है, और इसलिए ये सेवाएं हैं, डिजिटली प्रेमी ग्राहक उन संगठनों की तलाश करते हैं जो अपने समय पर सहज डिजिटल सेवाएं प्रदान करते हैं.

### ओपेन बैंकिंग, ओपेन एपीआई, ओपेन डेटा के साथ पॉवर सेवाएँ

ओपन बैंकिंग की शक्ति का दोहन, एकीकृत, विस्तार, और अपने ग्राहक को बैंकिंग की शक्ति का अनुभव करने दें. अन्य तृतीय पक्षों के लिए अपने API को खोलें और अपने साथ बैंकिंग के बेहतरीन अनुभव प्रदान करें

### सुरक्षित बैंकिंग

डिजिटल बैंकिंग बिल्कुल सुरक्षित है यदि आप और आपका बैंक अपने सॉफ्टवेयर को अपडेट रखते हैं, तो लूपहोल्स को ठीक करें सुरक्षा उपायों को स्थापित करें, और एक ग्राहक के रूप में आप अपना पासवर्ड और ओटीपी रखते हैं, कभी किसी के साथ साझा नहीं करते हैं और न ही इसे लिखते हैं.

### डिजिटल बैंकिंग कैसे काम करता है?

बैंकिंग सॉफ्टवेयर में डिजिटल बैंकिंग सुविधा को मोबाइल ऐप या बैंक की वेबसाइट के माध्यम से सक्षम करने के लिए सुविधायुक्त बनाया गया है. एक बार केवाईसी मान्य होने के बाद अनुरोध स्वीकार किया जाता है और सफल उपयोगकर्ता साइनअप प्रदान करने के लिए संसाधित किया जाता है या वैध क्रेडेंशियल उसे ईमेल / पोस्ट / एसएमएस के माध्यम से भेजे जाते हैं. क्रेडेंशियल्स को याद रखने की आवश्यकता है और कभी भी किसी के साथ साझा नहीं किया जाना चाहिए. एक बार साइनअप या क्रेडेंशियल प्राप्त होने के बाद, उपयोगकर्ता मोबाइल ऐप या बैंक की वेबसाइट के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकता है. आज, सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास डिजिटल बैंकिंग सेवाएं वे हैं जो किसी भी उपकरण के माध्यम से अपने ग्राहकों के लिए घर्षण रहित वित्तीय जीवन प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए नवाचार, सुविधा और मानव-केंद्रितता को संतुलित करती हैं.

बैंकों को तेजी से और सुविधाजनक डिजिटल उत्पादों के साथ किसी भी जीवन की स्थिति का जवाब देने में सक्षम होने की आवश्यकता है - COVID-19 संकट के दौरान डिजिटल ऋण तक पहुंच के साथ ग्राहकों को उनके दिन-प्रतिदिन के वित्त का प्रबंधन करने में भी सहायता प्राप्त होती है. यह बैंकों के लिए "हम-भी" ऑनलाइन स्थान पर खड़े होने का एक चुनौतीपूर्ण समय है. लेकिन भेदभाव संभव है यदि आप अपने उत्पादों को शिल्प और निजीकृत कर सकते हैं और असाधारण डिजिटल अनुभवों के साथ उनका समर्थन कर सकते हैं.

### प्रमुख डिजिटल बैंकिंग सुविधाएँ, प्रौद्योगिकियाँ और सेवाएँ

#### सरल स्व-पंजीकरण

एक डिजिटल सेल्फ-ऑनबोर्डिंग प्रक्रिया ग्राहक को डिवाइस की परवाह किए बिना अपने दम पर बैंक सेवाओं (जैसे खाता खोलना) के लिए पंजीकरण करने की अनुमति देती है। हालांकि, विशेष रूप से एक नया ग्राहक लाते समय, बैंक को ग्राहकों की जानकारी एकत्र और सत्यापित करनी चाहिए, दस्तावेजों को सत्यापित करना चाहिए, कानूनी पहलुओं को सुनिश्चित करना चाहिए और नियमों का पालन करते हुए उचित परिश्रम करना चाहिए। यह सब 4-5 सरल चरणों में डिजिटल रूप से पूरा किया जाना चाहिए। अपर्याप्त मार्गदर्शन के साथ एक लंबी प्रक्रिया के कारण समय लेने वाली ऑनबोर्डिंग हो सकती है जिसके परिणामस्वरूप एक असंतोषजनक डिजिटल बैंकिंग सेवा हो सकती है।

निर्बाध स्व-पंजीकरण प्रक्रिया प्रदान करना बैंक का एक असाधारण पहला प्रभाव बनाने और डिजिटली-प्रेमी ग्राहकों को जीतने का मौका है। मशीन-लर्निंग-आधारित ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (ओसीआर) और विश्वसनीय रिमोट आईडी सत्यापन सेवाएँ जैसे समय की बचत करने वाले उपकरण ग्राहकों को उनकी सुविधा से प्रसन्न करते हुए ऑनबोर्डिंग प्रक्रिया के कुछ हिस्सों को स्वचालित करने में मदद करते हैं।

#### पाँच मिनट के भीतर रिमोट खाता खोलना

यह डिजिटल बैंकिंग सेवा न केवल आपके ग्राहकों के लिए जीवन आसान बनाती है। यह ग्राहकों के लिए बैंकों के बीच स्विच करने का एक मापदंड भी हो सकता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, उत्तरदाताओं (बैंकों और वित्तीय संस्थानों) के 68% लोग 2020 में डिजिटल खाता खोलने को लागू करने पर काम कर रहे हैं। इसके अलावा, 35% का कहना है कि यह एक सर्वोच्च प्राथमिकता है क्योंकि वे ग्राहकों को खोने का जोखिम उठाते हैं। फिर भी, बहुत से लोग पूरी तरह से ऑनलाइन बैंक खाता खोलने के लिए संघर्ष करते हैं। डिजिटल खाता खोलना अक्सर स्व-पंजीकरण के बाद तत्काल कदम है, ग्राहक डेटा को कैप्चर करने से लेकर खाते का प्रकार चुनने तक एंड टू एंड प्रक्रिया को सभी चरणों को सरल करते पूरी तरह से सिंक्रनाइज़ करने की आवश्यकता है।

### तत्काल ऋण आवेदन

ऋण एक मुख्य बैंकिंग सेवा है, इसलिए डिजिटल ऋण आवेदन को एक स्वचालित और सरल प्रक्रिया में बदलना आवश्यक है. व्यक्तिगत ऋण आवेदनों को अनुमोदन के समय और 24 घंटे से कम समय में प्राप्त करने के साथ पसंद के ग्राहक उपकरण पर कुछ क्लिक के भीतर किया जाना चाहिए. डिजिटल ऋण देने की रणनीति विकसित करते समय, मुख्य विशेषताओं पर विचार करें:

- कोर बैंकिंग प्रणाली एकीकरण, आपके सिस्टम पर पहले से मौजूद जानकारी प्रदान करने के लिए क्लाइंट की आवश्यकता को समाप्त करता है
- ओमनी-चैनल उधार अनुभव
- ग्राहक के लिए मोबाइल ऐप या वेब छोड़ने के बिना दस्तावेजों को पकड़ने का अवसर
- किसी भी बिंदु पर ऋण आवेदन को बचाने और बाद में इसे फिर से खोलने की क्षमता
- eSignatures की उपलब्धता
- वीडियो चैट के माध्यम से दूरस्थ परामर्श

### तत्काल पी2पी भुगतान

पी 2 पी (पियर 2 पियर) यह एक सरल भुगतान समाधान है जो आज के बैंकिंग वातावरण में पनप रहा है. पी 2 पी प्रयोगकर्ताओं को किसी भी उपकरण से तुरंत पैसे भेजने की अनुमति देता है. लिंक किए गए बैंक खाते, क्रेडिट / डेबिट कार्ड या वॉलेट संग्रहित-मूल्य खाते का उपयोग करके, उपयोगकर्ता अपने फोन या कंप्यूटर से एक या दो टैप में मित्रों और परिवार को आराम से धन हस्तांतरित कर सकते हैं. जब ग्राहक सुविधा और सरलता की बात आती है, तो पी 2 पी एक कठिन-से-हरा कार्यक्षमता है जो एक तेजी से बढ़ते मोबाइल-पहले समाज के साथ फिट बैठता है जहां वित्तीय सेवाओं को वास्तविक समय में होने की उम्मीद है. पी 2 पी ट्रांसफर को उच्च सुरक्षा और धोखाधड़ी के खिलाफ उचित सुरक्षा, जैसे बायोमेट्रिक्स, पिन या ओटीपी (वन टाइम पासवर्ड) द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए.



### परिष्कृत थोक भुगतान

थोक भुगतान मुख्य रूप से बैंकों के एसएमई और कॉर्पोरेट ग्राहकों द्वारा उपयोग किया जाता है, जिससे वे एक बार में एक ही खाते से कई लाभार्थियों को मनी ट्रांसफर कर सकते हैं। ये भुगतान व्यापार लेनदेन के लिए बेहद सुविधाजनक हैं, जैसे वेतन भुगतान, ठेकेदारों, आपूर्तिकर्ताओं, लाभांश, और यहां तक कि सरकारी लेनदेन जैसे पेंशन भुगतान और नकद सहायता संवितरण के लिए। सुनिश्चित करें कि आपकी थोक भुगतान क्षमता उच्च स्तर की सुरक्षा, सेटिंग्स और विकल्पों की एक अच्छी संख्या और डेटा फ़ाइलों का आसान अपलोड प्रदान करती है।

### स्वचालित बिल भुगतान

बिल भुगतान व्यवसाय और व्यक्तिगत बैंकिंग ग्राहकों दोनों के लिए एक आवर्ती मासिक गतिविधि है और एक ऐसा आधार है जहां स्वचालन पहले से ही सुविधा ला रहा है। कोई भी आधुनिक डिजिटल बैंकिंग सेवा ग्राहकों को बिलर्स को सीधे उनके खातों / कार्डों से जोड़ने और सभी बिलों को केंद्रीय रूप से या तो मैन्युअल रूप से या निर्धारित समय पर स्वचालन से भुगतान करने की अनुमति देती है। अपने ग्राहकों को एक व्यापक प्रशासन सुविधाओं के साथ सशक्त बनाएं जैसे कि तेज़ पहुंच, बिलों पर नियंत्रण, अन्य प्रणालियों के साथ सहज एकीकरण, वास्तविक समय अवलोकन और रिपोर्ट जनरेशन।

### फीचर-रिच कार्ड प्रबंधन

ग्राहक हमेशा अपने वित्तीय जीवन के अधिक नियंत्रण की मांग करते हैं और कार्ड प्रबंधन कोई अपवाद नहीं है। आप अपने ग्राहकों को सशक्त बनाने के लिए उपयोग में आसान सुविधाओं के साथ डिजिटल कार्ड प्रबंधन को बढ़ा सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप कार्ड उपयोगकर्ताओं को आसानी से खरीद सीमा के लिए अलर्ट सेट करने में सक्षम कर सकते हैं। या आप नियमित पिन परिवर्तन के साथ कार्ड सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ग्राहकों को संकेत दे सकते हैं।

डिजिटल कार्ड प्रबंधन को बेहतर बनाने वाले विभिन्न प्रकार के फीचर बढ़ रहे हैं. यहाँ कुछ अन्य प्रमुख क्षमताएं हैं:

- लॉक और अनलॉक विकल्प
- स्वचालित भुगतान सेट अप करें
- नए कार्ड के लिए आसानी से ऑनलाइन आवेदन करना
- अनुरोध क्रेडिट सीमा ऑनलाइन बढ़ जाती है
- लेन-देन की सीमा निर्धारित करना
- देश द्वारा कार्ड लेनदेन को बंद करना

### मोबाइल संपर्क रहित व्यापारी भुगतान

मोबाइल संपर्क रहित भुगतान एक गर्म डिजिटल बैंकिंग सेवा है और COVID-19 के प्रकोप ने उन्हें और भी तेज कर दिया है. रिटेलर्स ऐसे उपाय विकसित कर रहे हैं जो सतहों के साथ भौतिक संपर्क और नकदी के उपयोग को सीमित करते हैं. मोबाइल संपर्क रहित भुगतान ग्राहकों को बस भुगतान करने के लिए पीओएस टर्मिनल अपने स्मार्टफोन को टैप करने की अनुमति देता है. यह ग्राहकों और व्यापारियों दोनों के लिए एक तेज सुविधाजनक और सुरक्षित भुगतान समाधान है. सबसे आम प्रौद्योगिकियां जो बिजली के संपर्क रहित भुगतान नियर फील्ड कम्युनिकेशन (एनएफसी) और क्यूआर कोड हैं.

मोबाइल डिवाइस संपर्क रहित भुगतान का समर्थन करने के लिए कई सुरक्षा उपाय प्रदान करते हैं, जैसे कि एक अद्वितीय कोड जो डिवाइस को वास्तविक साबित करता है, कार्ड डेटा के बजाय टोकन का उपयोग, और बायोमेट्रिक तकनीक. मोबाइल भुगतान का बढ़ता उपयोग बैंकों को मूल्य-वर्धित सेवाओं, जैसे वफादारी योजनाओं, स्कैनिंग कूपन-इन, जीपीएस अलर्ट, और बहुत कुछ के साथ अपनी पेशकश को विस्तारित करने का अवसर प्रदान करता है.

### उच्चतम स्तर की सुरक्षा

डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को सुरक्षा के साथ सुविधा को संतुलित करना चाहिए. बैंकों को अपने इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग समाधानों, पर्स और अन्य डिजिटल चैनलों में सुरक्षा के निर्माण के लिए अत्याधुनिक तकनीक और उद्योग सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करने की आवश्यकता है. इनमें विशेषताएं और उपाय शामिल हैं:

- बायोमेट्रिक्स
- बैंड प्रमाणीकरण से बाहर प्रवेश सूचनाएं, एटीएम निकासी अलर्ट
- डिवाइस प्रबंधन
- कार्ड टोकन
- डेटा एन्क्रिप्शन
- दो तरीकों से प्रमाणीकरण
- ओटीपी के माध्यम से लेनदेन की पुष्टि
- धोखाधड़ी का पता लगाने की प्रणाली
- eSignatures और PKI

### सभी प्रकार की अधिसूचनाएँ

अलर्ट और सूचनाएं ग्राहकों को उनकी वित्तीय गतिविधियों में शीर्ष पर रहने में सक्षम बनाती हैं. सूचनाएं न केवल ग्राहकों को खाते की जानकारी देती हैं, जब उन्हें इसकी आवश्यकता होती है, लेकिन धोखाधड़ी और चोरी के खिलाफ भी. ग्राहकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी रियल-टाइम बैंकिंग अलर्ट हैं जो मोबाइल के माध्यम से उन्हें सूचित करते हैं जब उनके खाते की शेष राशि एक निर्धारित राशि से अधिक हो जाती है. ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग सूचना के अन्य प्रकारों में शामिल हैं:

- वापसी की पुष्टि
- अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन सूचनाएं
- खरीद चेतावनी
- ओवरड्राफ्ट संरक्षण नोटिस
- भुगतान अनुस्मारक
- जमा पुष्टिकरण
- नई बैंक सेवाओं की सूचनाएं आदि.

### बैंकेश्योरेंस (डिजिटल बीमा)

परिवर्तित वित्तीय सेवाओं की एक नई लहर उठ रही है. कई बैंक एक पारिस्थितिकी तंत्र एग्रीगेटर का रास्ता अपना रहे हैं, जो अतिरिक्त वित्तीय और गैर-वित्तीय सेवाओं के साथ बैंकिंग का पूरक है. डिजिटल बीमा एक मूल्य वर्धित समाधान है जो आपको भीड़ से अलग करने में मदद कर सकता है. आसानी से उपलब्ध होने की पेशकश, व्यक्तिगत डिजिटल बीमा ग्राहकों की संतुष्टि को बढ़ाता है और बैंक के लिए नए राजस्व पैदा करते हुए ग्राहक स्वास्थ्य और धन प्रबंधन में सुधार करता है. एक अच्छे डिजिटल बैंकेश्योरेंस समाधान में विभिन्न बीमा उत्पादों को खरीदने और मोबाइल या वेब के माध्यम से प्रबंधन के दावों के लिए सहज पहुंच के विकल्प शामिल हैं.

### व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन

बैंक चुनते समय, ग्राहक निश्चित रूप से उस बैंक की ओर झुकेंगे जो उन्हें अपने धन लक्ष्यों को बेहतर ढंग से पूरा करने और स्वस्थ वित्तीय निर्णय लेने में मदद कर सकता है. यह वह जगह है जहां पीएफएम कार्यात्मकता प्रतियोगियों से अधिक बैंकों के लिए एक अंतर बिंदु के रूप में आती है. पीएफएम उन सभी डिजिटल उपकरणों को शामिल करता है जो ग्राहकों को अपने वित्तीय जीवन का प्रबंधन करने की अनुमति देते हैं. एक उन्नत पीएफएम समाधान में बजट, लेनदेन प्रकार द्वारा व्यापारी वर्गीकरण, खर्च और बचत लक्ष्य, खाता शेष का एक वास्तविक समय दृश्य और खर्च करने की आदतों पर दृश्य चार्ट जैसी विशेषताएं शामिल हैं.

### डिजिटल लॉयल्टी प्रोग्राम

ग्राहक पैसे बचाने, पुरस्कृत महसूस करने या किसी विशेष समुदाय के सदस्य होने के लिए वफादारी कार्ड और कूपन चाहते हैं. कई लोग पुरस्कार पाने के आधार पर कुछ वॉलेट या कार्ड प्रसाद भी लेते हैं. डिजिटल लॉयल्टी स्ट्रेटेजी आपके बैंक के लिए एक शक्तिशाली प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हो सकता है जिससे आपको ग्राहकों को बनाए रखने और ब्रांड की वफादारी बनाने में मदद मिलेगी.



एक सफल डिजिटल लॉयल्टी प्रोग्राम बनाने के लिए, आपको कई मद्दों पर विचार करने की आवश्यकता है:

- ओमनीखेल पहुंच
- पुरस्कार की व्यापक विविधता अंक वाउचर, कैशबैक, आदि
- व्यक्तिगत ऑफ़र
- प्रस्तावों और सौदों के वास्तविक समय अद्यतन
- उपयोगकर्ताओं को नए सौदों के बारे में बताने के लिए अधिसूचना
- सही जगह पर ग्राहक तक पहुंचने के लिए स्थान जागरूकता

### उन्नत सेटिंग्स

ग्राहकों को अपने इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग, वॉलेट या किसी अन्य डिजिटल बैंकिंग अनुभव पर अधिक नियंत्रण देने के लिए, आप अधिक उन्नत प्रबंधन सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं. उदाहरण के लिए, आप ग्राहकों को अपने पासवर्ड, कार्ड पिन, लेन-देन इतिहास देखने, अंतिम लॉगिन विवरण प्रदर्शित करने, या यह तय करने की अनुमति दे सकते हैं कि वे अपने मोबाइल वॉलेट या बैंकिंग ऐप की होम स्क्रीन में क्या देखना चाहते हैं. सुनिश्चित करें कि प्रत्येक गतिविधि सहज, सुविधाजनक है, और यह ग्राहकों को लचीलापन और परिष्कृत नियंत्रण प्रदान करता है.

### स्मार्ट चैटबॉट

हाल के वर्षों में, बैंकिंग में चैटबोट्स बड़ी हुई मांग और गोद लेने का आनंद ले रहे हैं, ग्राहकों को निर्बाध स्वयं सेवा के साथ सशक्त बना रहे हैं. Chatbots में सामान्य अनुरोधों का जवाब देने, ग्राहक सेवा की लागत कम करने और किसी भी चैनल के माध्यम से ग्राहकों को संलग्न करने और प्रसन्न करने की क्षमता है - आपकी वेबसाइट, मोबाइल बैंकिंग ऐप, फेसबुक मैसेंजर, आदि. इसके अलावा, एक चैटबॉट एक व्यक्तिगत वित्तीय सहायक के रूप में कार्य कर सकता है जो ग्राहकों को एक संतुलन की जाँच या ऋण जांच करने जैसी गतिविधियों को करने में मदद करता है.

जब भी मानव सहायता की आवश्यकता होती है, तो चैटबोट आसानी से बैंक एजेंट से बातचीत को रूट कर सकता है जो वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ग्राहक के मामले को आसानी से जारी रख सकता है.

हमारे ग्राहक फोकस, उद्योग-अग्रणी प्रौद्योगिकी समाधान और डिजिटल ड्राइविंग के 10 वर्षों के अनुभव को मिलाकर, हमने डिजिवेव डिजिटल बैंकिंग प्लेटफॉर्म बनाया है, जो वित्तीय संस्थानों को अगली पीढ़ी के ओमनी-चैनल ग्राहक अनुभव प्रदान करने में सक्षम बनाता है. माइक्रोसर्विसेज और एपीआई के नेतृत्व में, डिजिवेव विन्यास योग्य डिजिटल बैंकिंग क्षमताओं के साथ आता है, जैसे ऑनबोर्डिंग और उत्पत्ति, बहु-कारक प्रमाणीकरण, पहचान प्रबंधन, प्रपत्र, वर्कफ्लो, भुगतान, एकीकरण, और डिजिटल समाधानों का निर्माण - मोबाइल वॉलेट, एजेंसी बैंकिंग, इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग, और बहुत कुछ.

किसी भी कोर बैंकिंग प्रणाली के साथ आसानी से एकीकृत, हमारे समाधान वित्तीय संगठनों को आज बाजार में तेजी लाने, तेजी से आरओआई प्राप्त करने और कल डिजिटल क्रांति के शीर्ष पर रहने में मदद करते हैं.

### डोरस्टेप बैंकिंग सेवाएँ

देश भर के चुने हुए सेवा केंद्रों पर चयनित सेवा प्रदाताओं द्वारा तैनात डोरस्टेप बैंकिंग एजेंटों द्वारा सेवाएं प्रदान की जाएंगी. नाममात्र शुल्क पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के ग्राहकों द्वारा सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है. सेवाओं से सभी ग्राहकों, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों को लाभ होगा, जिन्हें इन सेवाओं का लाभ उठाने में आसानी होगी.

### **डोर स्टेप बैंकिंग के मुख्य आकर्षण :**

ईज़ रिफार्म्स भाग के रूप में, कॉल सेंटर, वेब पोर्टल या मोबाइल ऐप के सार्वभौमिक स्पर्श बिंदुओं के माध्यम से ग्राहकों को उनके दरवाजे पर बैंकिंग सेवाओं की सुविधा प्रदान करने के लिए डोरस्टेप बैंकिंग सेवा की परिकल्पना की गई है. ग्राहक इन चैनलों के माध्यम से अपने सेवा अनुरोध को ट्रैक भी कर सकते हैं.

## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

- वर्तमान में केवल गैर-वित्तीय सेवाओं पर निगोशिऐबल इंस्ट्रुमेंट्स (चेक / डिमांड ड्राफ्ट / पे ऑर्डर, इत्यादि) लेने के लिए, नई चेक बुक अपेक्षित पर्ची, खाता विवरण के लिए अनुरोध, गैर-व्यक्तिगत चेक की डिलीवरी बुक, प्री-पेड इंस्ट्रुमेंट / गिफ्ट कार्ड की डिलीवरी और अन्य ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं। वित्तीय सेवाओं को अक्टूबर 2020 से उपलब्ध कराया जाएगा।
- जबकि कुछ साल पहले भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा डोरस्टेप बैंकिंग निर्धारित की गई थी, सार्वजनिक क्षेत्र के ऋणदाता पहले अपने सभी ग्राहकों के लिए इसे संभालने के लिए एक आम सेवा प्रदाता नियुक्त करने के लिए एक साथ आए थे।
- शुरू में, दरवाजे की बैंकिंग सुविधा वरिष्ठ नागरिकों और विकलांगों के लिए उपलब्ध होने का निर्णय लिया गया था, जिन्हें शाखाओं का दौरा करना मुश्किल था।
- अब, महामारी के बीच, 70 या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक और अलग-अलग-अलग लोग लॉकडाउन के बावजूद पूरे भारत में दरवाजे पर बैंकिंग का लाभ उठा सकते हैं, आरबीआई ने पहले अधिसूचित किया था। केंद्रीय बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार, बैंकों को नकदी और उपकरणों को चुनने और डिमांड ड्राफ्ट को छोड़ने की पेशकश करनी चाहिए।

आप अपने मोबाइल नंबर से जुड़े अपने खाते के खिलाफ सूचीबद्ध 18 पीएसयू बैंकों में से किसी के लिए भी डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। अधिकृत डोर स्टेप बैंकिंग एजेंट को फोटो आईडी कार्ड और ड्रेस कोड प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, सफल सेवा अनुरोध आरंभ होने के बाद ग्राहक के लिए एक सामान्य सेवा कोड तैयार किया जाएगा और डोर स्टेप बैंकिंग एजेंट को सौंपा जाएगा। इंस्ट्रुमेंट्स को सौंपने से पहले, ग्राहक DSB एजेंट के साथ सर्विस कोड की जांच कर सकता है। एक बार डोर स्टेप बैंकिंग एजेंट उपकरणों को इकट्ठा करने के बाद, वह अपने डिवाइस / मोबाइल ऐप में "डॉक्युलेटेड कोलक्टेड" आइकन पर क्लिक करेगा और रखा गया सभी सेवा अनुरोध स्वचालित रूप से नामित बैंक शाखा पोर्टल पर प्रवाहित हो जाएगा।

डोर स्टेप बैंकिंग PSB एलायंस द्वारा की गई एक ऐसी पहल है जिसके माध्यम से ग्राहक अपने डोर स्टेप पर प्रमुख बैंकिंग लेनदेन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं. इसे विभिन्न वित्तीय सेवाओं की पेशकश के लिए देश भर के प्रमुख 100 केंद्रों में डोर स्टेप बैंकिंग DSBएजेंटों द्वारा लागू किया जाएगा.

वर्तमान में, गैर – वित्तीय सेवाओं के तहत डोर स्टेप बैंकिंग प्रस्तुत की जा रही -

- परक्राम्य प्रलेख जैसे चेकबुक, ड्राफ्ट आदि
- 15G/15H फार्मों का एकत्र करना
- आयक/जीएसटी चालान एकत्र करना
- राज्यों के सरकारी इंस्ट्रक्शन्स
- एसीएटी स्टेटमेंट ऑफ डिलिवरी
- गैर-सरकारी चेक बुक
- भुगतान आदेश, की वितरण अवधि की डिपॉजिट रसीद
- टीडीएस / फार्म 16 में वितरण
- पीएडी इंस्ट्रूमेंट / कार्ड की गिफ्ट प्री डिलिवरी.

(अ) आप एकल PAY-in-SLIP का उपयोग करके संग्रह के लिए एक बार में कई उपकरण जमा कर सकते हैं. हालांकि, इस तरह के किसी भी उपकरण को सौंपने से पहले, कृपया सुनिश्चित करें कि सभी उपकरण क्रॉसड ए / सी PAYEE) हैं, ड्रेव बैंक / शाखा आपके होम ब्रांच से अलग है. स्थानांतरण जाँच गृह शाखा के भीतर के मामले में, एक अलग PAY-in-SLIP का उपयोग किया जाना है.

(आ) उपयोग के लिए आप ब्लैंक पे-इन-स्लिप रख सकते हैं. आपकी जरूरत के मामले में, डोर स्टेप बैंकिंग एजेंट आपको बिना किसी खर्च के समान प्रदान कर सकते हैं. हालाँकि, डोर स्टेप बैंकिंग एजेंटों द्वारा प्रदान किए गए पे इन स्लिप का उपयोग बैंक के किसी भी खाते (SB/CA/CC/OD) में संग्रह के लिए किया जा सकता है.



- (इ) आम तौर पर, आपको परिचालन सुविधा और सुरक्षा के लिए मुहरबंद ENVELOP में पे-इन-स्लिप के साथ इंस्ट्रूमेंट (ओं) को सौंपना चाहिए. आप लिख सकते हैं कोई साधन नहीं, आपके बैंक शाखा का नाम और आपका नाम लिफाफे के सामने. संयुक्त खाते का ग्राहक, जिसका मोबाइल नंबर खाता से जुड़ा हुआ है, डीएसबी सुविधा का लाभ उठा सकता है बशर्ते खाता संचालन अधिदेश "या तो या उत्तरजीवी" / "कोई एक या उत्तरजीवी" हो.
- (ई) एक बार जब एजेंट निर्दिष्ट बैंक शाखा के साथ इंस्ट्रूमेंट्स जमा कर लेता है, तो डोर स्टेप बैंकिंग सिस्टम ग्राहक की सेवा संहिता को मान्य करेगा और एक संदेश "कंप्लीटेड" को ट्रिगर करेगा, जिसे मोबाइल ऐप के माध्यम से ग्राहक को विधिवत सूचित किया जाएगा. ऐसा करने के लिए मोबाइल ऐप में एक विकल्प होगा. यह आपके द्वारा लॉग इन करने पर ग्राहक को हर बार खाता लाने में समय बचाने में मदद करेगा.
- (उ) पोस्ट सेवा के मामले में, ग्राहक से दस्तावेज़ लेने से पहले ऑर्डर रद्द करना संभव है. प्री-सर्विस के मामले में, बैंक उपयोगकर्ता के अनुरोध को पूरा करने से पहले ऑर्डर रद्द करना संभव है.
- (ऊ) ग्राहक एक चालू या पूर्ण सेवा अनुरोध पर विवाद शिकायत उठा सकते हैं. ग्राहक को चैनल में दिए गए विकल्प का चयन करके विवाद शुरू करना होगा. ग्राहक संबंधित बैंक से सीधे शिकायत भी कर सकता है. ग्राहक अनुरोध शुरू होने के बाद भी किसी भी सेवा अनुरोध को रद्द कर सकता है.
- (ऋ) पोस्ट सेवा के मामले में, एजेंट द्वारा ग्राहक से दस्तावेज़ लेने के बाद सेवा को रद्द करने के लिए अनुरोध संभव नहीं है. प्री-सर्विस के मामले में, बैंक उपयोगकर्ता द्वारा अनुरोध पूरा करने के बाद सेवा रद्द करने का अनुरोध संभव नहीं है.
- (ऌ) ग्राहक को ऑर्डर विवरण स्क्रीन (लैंडिंग पृष्ठ में लाइव ऑर्डर ट्रैकिंग के लिए) पर जाने की आवश्यकता है. ग्राहक को केवल मोबाइल ऐप डीएसबी चैनल या कॉल सेंटर के माध्यम से ऑर्डर रद्द करने की आवश्यकता है. कारणों का पता लगाया जाएगा, और ग्राहक को सूचना के तहत आवश्यक कार्रवाई की जाएगी.

- (एँ) ग्राहक सेवा अनुरोध आईडी कोड आदि का उल्लेख करते हुए मोबाइल ऐप में उपलब्ध विकल्प का चयन करके पंजीकरण कर सकता है. एक बार जब ग्राहक एप्लिकेशन में विवाद / शिकायत दर्ज करता है, तो आपको एक विवाद आईडी आवंटित किया जाएगा. इस आईडी से आप प्रतिक्रिया ट्रैक कर सकते हैं. विवाद समाधान सेवा प्रदाता बैंक के ग्राहक सेवा कार्यकारी द्वारा किया जाएगा जैसा भी मामला हो.
- (ऐ) ऐसे किसी भी संचार में, ग्राहक को आगे की कार्रवाई करने के लिए सेवा अनुरोध आईडी कोड का उल्लेख करना होगा. ग्राहक यंत्रों को जमा कर सकता है. डीडी / पीओ; नई चेक बुक अपेक्षित पर्ची; 15 जी / 15 एच फॉर्म; कर चुनौती; अद्यतन निर्देश के लिए स्टैंडिंग इंस्ट्रक्शन रिक्वेस्ट इत्यादि कृपया सेवाओं की सूची को सूचीबद्ध करें.
- (ए) फोटो के साथ एजेंट की साख मोबाइल ऐप / ग्राहक के वेब पोर्टल में दिखाई देगी. ग्राहक को एजेंट के नाम वाला एक एसएमएस मिलेगा. ग्राहक एजेंट का नाम और फोटो दिखाते हुए आईडी कार्ड की मांग कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त प्रत्येक सेवा के लिए एक आजीवन प्रामाणिक कोड ग्राहक को भेजा जाएगा जिसे उसे सेवा शुरू करने के लिए एजेंट को बताना होगा. एजेंट डीएसबी और सर्विस प्रोवाइडर लोगो के साथ समान ड्रेस कोड का पालन करेंगे; उनकी Ready पहचान के लिए.

### वर्तमान बैंकिंग

- (अ) आधुनिक तकनीक तेजी से कंप्यूटर फ्राइलों के साथ कागज की जगह ले रही है, स्वचालित टेलर मशीनों (एटीएम) के साथ बैंक टेलर और सर्वर रैक के साथ फ्राइल अलमारियाँ, और बैंक भी रजिस्टर में लेनदेन को मैन्युअल रूप से रिकॉर्ड करने और उन्हें मिलान करने के पुराने दिनों से एक लंबा सफर तय कर चुके हैं. दिन के आखिर में. बैंक शाखाओं, बैंकों और ग्राहकों के बीच इंटरफेस, परिचालन-केंद्रित होने से लेकर सर्विसिंग क्लाइंट तक में भी काफी बदलाव आया है.
- (आ) ग्राहक अब कई बैंकिंग ऑपरेशन कर सकते हैं जैसे कि फंड ट्रांसफर, डिपॉजिट अकाउंट खोलना, चेक बुक ऑर्डर करना और ड्राफ्ट डिमांड करना, यूटिलिटी बिल

का भुगतान करना, लोन के लिए आवेदन करना, और बिना ब्रांच विजिट किए अकाउंट स्टेटमेंट हासिल करना. हम अधिक से अधिक लोगों को वैकल्पिक वितरण चैनलों में स्थानांतरित करते हुए देख रहे हैं, जो वर्तमान में लगभग 30-40 % ग्राहकों के खाते में हैं. अगले कुछ वर्षों में यह 70-80% तक जाने की संभावना है.

- (इ) एटीएम वैकल्पिक बैंकिंग सर्वर में सबसे पुराना है और ग्राहकों के बीच स्वीकृति का सर्वोच्च स्तर प्राप्त करता है. भारत में एटीएम की संख्या पिछले तीन वर्षों में दोगुनी हो गई है. "आज, एटीएम नकद निकासी से अधिक प्रदान करता है. फिक्स्ड डिपॉजिट, चेक बुक अनुरोधों और बैलेंस पूछताछ के अलावा, बैंकिंग सेवाओं को भी बढ़ाया जाता है," जो बैंकों को अपने एटीएम नेटवर्क बनाने में मदद करता है.
- (ई) भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के क्रेडिट और डेबिट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर और मोबाइल बैंकिंग जैसे पेपरलेस भुगतान की आदत को बढ़ाने के प्रयासों के कारण बैंकिंग में भी बदलाव देखा गया है. मोबाइल फोन को इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के एक बड़े प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है क्योंकि लागत कम होती है. पिछले कुछ वर्षों में मोबाइल लेनदेन में वृद्धि हुई है, लेकिन मोबाइल बैंकिंग सेवाओं का उपयोग काफी कम है. मोबाइल फोन का उपयोग करते हुए किए गए अधिकांश लेनदेन प्रकृति में गैरवित्तीय हैं.

### लागत लाभ

- प्रौद्योगिकी न केवल ग्राहकों के लिए बैंकिंग को सुविधाजनक बना रही है, बल्कि इसने बैंकों को अपने व्यवसायों का तेजी से विस्तार करने और लागत में कमी लाने की भी अनुमति दी है. एटीएम, ऑनलाइन और मोबाइल फोन के बाद एक शाखा में ग्राहक की सेवा करने की लागत सबसे अधिक है. जब कोई ग्राहक पैसे निकालने के लिए एक शाखा में जाता है, तो बैंक की लागत 200 रुपये से अधिक हो सकती है जबकि एटीएम लेनदेन में लगभग 20 रुपये या उससे भी कम खर्च होंगे.
- प्रौद्योगिकी-आधारित बैंकिंग ने बैंक शाखाओं की स्थापना के लिए आवश्यक स्थान को भी कम कर दिया है. "पहले, एक शाखा के लिए आवश्यक भौतिक अवसंरचना

औसतन, 4000 से 5000 वर्ग फुट थी. अब हम 500 से 1000 वर्ग फुट के औसत के साथ काम कर रहे हैं.

- हालांकि, आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली अभी भी महानगरों और बड़े शहरों टियर। और II स्थानों में केंद्रित है. भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी औपचारिक बैंकिंग चैनलों तक पहुंच नहीं रखता है.
- ऑनलाइन बैंकों और फ़िनटेक मोबाइल ऐप्स के इस युग में, रूटीन बैंकिंग लेनदेन को हमारे फोन पर एक बटन के टैप पर शेड्यूल और निष्पादित किया जा सकता है. तो यह अजीब लग सकता है कि किसी को भी ब्रिक-एंड-मोटर बैंक की आवश्यकता होगी. लैंडलाइन फोन और रोलोडेक्स के रास्ते में जाने वाले पारंपरिक ब्रिक-एंड-मोटर बैंक नहीं हैं?
- इतने सारे तकनीकी और आर्थिक रुझानों से इसके खिलाफ अस्तर लग रहा है, क्या ब्रिक-एंड-मोटर बैंक अभी भी एक भविष्य है?
- "ऑनलाइन बैंकिंग और मोबाइल ऐप जैसे सुविधाजनक विकल्पों की बढ़ती अपील के बावजूद, पारंपरिक "वास्तविक जीवन में" ईट-एंड-मोर बैंकिंग के लिए अभी भी एक भूमिका है. आपकी वित्तीय जरूरतों और लक्ष्यों के आधार पर, कई परिस्थितियाँ हैं जहाँ आपको अभी भी अपने साथ एक ब्रिक-एंड-मोटर बैंक के साथ वास्तविक-विश्व संबंध बनाए रखना चाहिए.

यहां छह कारण बताए गए हैं जिनकी एक बैंकर के लिए जानना आवश्यक है-

### समस्याओं को हल करने के लिए व्यक्तिगत स्पर्श

जब आपका वित्तीय जीवन सुचारू रूप से चल रहा हो, तो मोबाइल ऐप्स और ऑनलाइन बैंकिंग अद्भुत हो सकती है. लेकिन उन अवसरों के बारे में क्या है जहां आप एक समस्या का सामना करते हैं? चाहे वह आपके खाते का फर्जी शुल्क हो, खो गया डेबिट कार्ड, संभावित पहचान की चोरी या आपके खाते या ऋण आवेदन के बारे में जटिल प्रश्न, सामान्य ऑनलाइन चैटबॉट और ग्राहक सेवा मेनु पर्याप्त नहीं हो सकते हैं. कभीकभी आप स्थानीय बैंक शाखा में जाकर वास्तविक व्यक्ति से बात करके समय और वृद्धि को बचा सकते हैं. आपके स्थानीय बैंक



या क्रेडिट यूनियन के साथ वास्तविक जीवन का संबंध होने से कुछ आश्चर्यजनक समाधान हो सकते हैं। यह एक खाता सारांश स्क्रीन पर केवल एक नाम से अधिक होने का भुगतान कर सकता है। यदि आपके स्थानीय बैंकर आपको अच्छी तरह से जानते हैं और आपके पास व्यक्तिगत संबंध हैं, तो वे (नियमों और सीमाओं के भीतर) आपके लिए बेहतर सौदा प्रदान कर सकते हैं, शुल्क माफ कर सकते हैं या आपको कुछ अतिरिक्त सहायता दे सकते हैं।

### जटिल वित्तीय विषयों पर सलाह

यह सच है कि आपके दैनिक बैंकिंग लेनदेन और रूटीन बैंकिंग के बहुत सारे काम ऑनलाइन संभाले जा सकते हैं। लेकिन क्या होगा यदि आपके पास अधिक जटिल स्थिति है? यदि आप अपने वित्त के साथ अधिक जटिल परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं, तो अपनी स्थानीय बैंक शाखा में जाना और व्यक्तिगत बैंकर या ऋण अधिकारी के साथ बात करना अक्सर एक अच्छा पहला कदम होता है।

कुछ बैंक आपकी स्थिति के आधार पर सामान्य वित्तीय सलाह या वित्तीय नियोजन सेवाएं प्रदान करते हैं। बैंक कर्मचारी, भले ही वे व्यापक वित्तीय नियोजन सेवाओं की पेशकश नहीं कर सकते, वित्तीय सलाहकारों या अन्य पेशेवरों के लिए रेफरल या सिफारिशें करने में सक्षम हो सकते हैं, और पैसे और बजट के बारे में आपके सवालों के जवाब देने में मदद कर सकते हैं। आपके पैसे के बारे में आपकी सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण बातचीत बैंक में शुरू होनी चाहिए। और बहुत सारे लोग अभी भी बंद दरवाजे के पीछे, वास्तविक व्यक्ति के साथ वास्तविक जीवन में उन वार्तालापों को करने में सबसे अधिक आरामदायक महसूस करते हैं।

### अन्य वित्तीय समाधान के लिए इन-पर्सन सुझाव

एक ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंक भी आपके वित्त के अन्य पहलुओं के लिए मदद पाने के लिए एक अच्छी जगह हो सकती है। कभी-कभी, बस आपके साथ व्यक्तिगत रूप से बात करके और

आपके खाते को देखकर, बैंक कर्मचारी आपको कैसे बचाने या आपके वित्तीय जीवन को आसान बनाने में मदद करने के लिए संभावित समाधानों को नोटिस करेंगे। यदि आप अक्सर अपने व्यक्तिगत चेकिंग खाते को ओवरड्राइव कर रहे हैं, तो वे ओवरड्राफ्ट सुरक्षा के लिए कुछ विकल्पों की सिफारिश कर सकते हैं। यदि आप विभिन्न अन्य बैंकों को क्रेडिट कार्ड के ब्याज में बहुत अधिक पैसा दे रहे हैं, तो आपके बैंक शाखा के कर्मचारी आपको कैसे बचाने के लिए ऋण समेकन ऋण की पेशकश करने में सक्षम हो सकते हैं।

यदि आप एटीएम शुल्क, रखरखाव शुल्क या अन्य शुल्क के साथ लगातार कम हो रहे हैं, तो आपका ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंक कर्मचारी आपके बैंकिंग संबंधों की कुल तस्वीर को देखने में सक्षम हो सकता है और कुछ शुल्क से बचने में आपकी मदद करने के लिए कुछ विकल्पों का पता लगा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि ग्राहक सीधे डिपॉजिट के लिए साइन अप करते हैं तो 42% बैंक अपनी एटीएम फीस माफ करेंगे। आपके वित्तीय जीवन में क्या चल रहा है, इसके आधार पर, कभी-कभी आप बैंक में वास्तविक जीवन में बातचीत करके सबसे प्रभावी और तत्काल सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

### नकद और विदेशी मुद्रा

अभी बाजार पर बहुत सारे पेचीदा नए भुगतान ऐप और अन्य फिनटेक समाधान हैं, लेकिन अगर आपको त्वरित नकदी की आवश्यकता है, तो कभी-कभी आप बैंक जाने की सुविधा और विश्वसनीयता को दोहरा नहीं सकते हैं। मोबाइल एप्लिकेशन नकद वितरित नहीं कर सकते। आपके द्वारा अपने बैंकिंग करने के आधार पर, ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंकिंग संबंध रखने से आपको शुल्क-मुक्त एटीएम के व्यापक नेटवर्क तक पहुंच मिल सकती है, जहां आप विशेषाधिकार के लिए भुगतान किए बिना नकद प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन क्या होगा अगर आपको अपने दैनिक एटीएम से अधिक नकदी तक पहुंच की आवश्यकता हो तो निकासी की सीमा प्रदान कर सकते हैं? उदाहरण के लिए, यदि आप एक निजी पार्टी विक्रेता से नकदी के साथ कार खरीदना चाहते हैं तो क्या होगा? यह एक और अवसर है जब एक ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंक अतिरिक्त सुविधा प्रदान कर सकता है। एक बैंक ग्राहक के रूप में, आप अपने बैंक की नीतियों के आधार पर, एक्सचेंज के लिए कम या कोई शुल्क नहीं ले सकते।

### बैंक सेवाएँ का विशेष

ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंक विभिन्न आवश्यकताओं के लिए विशेष सेवाएं प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी इच्छा की डुप्लीकेट या अपने घर में डीड जमा करने के लिए एक सुरक्षित डिपॉजिट बॉक्स चाहते हैं, तो आप इस सेवा के लिए ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंक में साइन अप कर सकते हैं। यदि आप सिक्कों के एक बड़े जार में कैश करना चाहते हैं, तो कई बैंक आपके लिए ऐसा कर सकते हैं। (किराने की दुकान पर लाइन में खड़े होने के बिना।)

यदि आपको वायर ट्रांसफर भेजने की आवश्यकता है, तो वास्तविक समय में कैशियर का चेक प्राप्त करें (इसके बजाय अपने ऑनलाइन बैंक से आने के लिए कुछ दिनों का इंतजार करने के लिए) या जटिल लेनदेन से निपटें, इसे अक्सर सिर्फ बहुत ही कुशलता से हैंडल किया जा सकता है बैंक और व्यक्ति की स्थिति को समझाते हुए। यदि आपको कानूनी दस्तावेज नोटरी करने के लिए नोटरी पब्लिक की सेवाओं की आवश्यकता है, तो आप इसे अपने स्थानीय बैंक शाखा में प्राप्त कर सकते हैं।

### व्यापार बैंकिंग संबंध

छोटे व्यवसाय के मालिकों के पास अक्सर जटिल और अनुकूलन योग्य आवश्यकताएं होती हैं जो अधिक शामिल बैंकिंग संबंधों की मांग करती हैं। चाहे आपको व्यवसाय ऋण, नकद प्रबंधन सेवाओं, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार या अन्य वित्तीय सेवाओं के साथ सहायता की आवश्यकता हो, वास्तविक जीवन में बैंकर के साथ काम करना अभी भी एक मूल्यवान तरीका है कि कोई आपके व्यवसाय की चुनौतियों को समझे और एक बड़े-चित्र के आधार पर समाधान पेश करे।

उदाहरण के लिए, यदि आप एक छोटे व्यवसाय के स्वामी हैं, जो अक्सर बैंक में रुक रहा है और अपने छोटे व्यवसाय के लिए बड़ी मात्रा में नकदी जमा कर रहा है, तो आपका बैंकर व्यवसाय बैंकिंग नकदी प्रबंधन सेवाओं की सिफारिश करने में सक्षम हो सकता है जो आपको समय और धन बचाने में मदद कर सकते हैं।

### मोबाइल बैंकिंग सुविधा :-

मोबाइल बैंकिंग एक की सुविधा सभी ग्राहकों को दी जा सकती है. इसके लिए ग्राहक एक को मोबाइल बैंकिंग सेवा हेतु निबंधन कराना होता है. यह सेवा चेकी केवाईसी पूरा करने वाले ग्राहकों एवं नो फ्रिल्स (जिसका खाता वित्त न्यूनतम राशि से खोला जाता है तथा उसे केवाईसी में रियायत के दी जाती है) ग्राहकों को दी जा सकती है. मामले में केवल ट्रांजैक्शन की सीमा का फर्क होता है. केवाईसी का अनुपालन इल करने वाले ग्राहकों के लिए ट्रांजैक्शन की सीमा अधिक होती है .इस बारे में बैंकों में नियम अलग-अलग हैं. यह सुविधा बड़े कम कारोबारियों को भी दी जा सकती है. बड़े कारोबारियों को यह सुविधा मुहैया कराने के नए बाद ही मोबाइल बैंकिंग ट्रांजैक्शन में बढ़ोतरी हुई है क्योंकि से बड़े कारोबारियों को आम ग्राहक से ज्यादा वित्तीय लेन-देन करने की दरकार होती है.

### मोबाइल बैंकिंग की आवश्यकता :-

एक आकलन के मुताबिक लगभग 130 करोड़ आबादी की बैंकिंग जरूरतों को बैंक शाखा के द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता है क्योंकि देश के कोने-कोने में बैंक शाखा खोलना और वहाँ बैंकिंग कार्यकलापों र के सुचारु रूप से संचालन को सुनिश्चित करना एक महँगी एवं अव्यावहारिक प्रक्रिया है. अस्तु, मोबाइल बैंकिंग को वित्तीय समावेशन की संकल्पना को पूरा करने के एक विकल्प के रूप में देखा जा रहा है. इसके अतिरिक्त मोबाइल बैंकिंग किसी भी शाखा में किये जा रहे बैंकिंग कार्य के संचालन से 10 गुना सस्ती भी है.

मोबाइल का इस्तेमाल करने के मामले में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है और मई 2016 के आंकड़ों के मुताबिक यहाँ मोबाइल के 1,033.20 मिलियन उपभोक्ता थे और हर महीने लगभग 1.1 मिलियन ग्राहक इसके उपभोक्ता बन रहे हैं. जाहिर है इसकी मदद से आसानी से वित्तीय इसलिए भी जरूरी है क्योंकि देश की 60 प्रतिशत आबादी भी भी बैंकिंग सुविधाओं से महरूम है. आज देश भर में लगभग 1,02,000 से भी अधिक बैंक शाखाएँ हैं, जाहिर है इनकी मदद से 130 करोड़ आबादी की बैंकिंग जरूरतों को पूरा करने में कम से कम 25 से 30 वर्ष का समय होगा. आज की तारीख में मोबाइल बैंकिंग के जरिये पैसों का भुगतान, पैसों का अंतरण, बिलों का भुगतान आदि कार्य किए जा रहे हैं.



### बैंकों में मोबाइल बैंकिंग की स्थिति:-

लगभग तीन साल पहले तक एचडीएफसी बैंक की शाखाओं में 40 से 50 प्रतिशत टूजेक्शन होते थे, जो घटकर आज 25 प्रतिशत रह गये हैं। आज एचडीएफसी बैंक में 4 मिलियन से भी ज्यादा मोबाइल बैंकिंग ट्रांजैक्शन की मदद से अधिकांश ग्राहकों की जरूरतों से घर बैठे पूरा किया जा रहा है। स्टेट बैंक का भी लगभग 75 प्रतिशत बैंकिंग कार्यकलाप वैकल्पिक चैनल के माध्यम से हो रहा है। भारतीय स्टेट बैंक ने मोबाइल बैंकिंग का अपना पहला उत्पाद स्टेट 2009 में बाजार में उतारा था। इसकी अपार सफलता के बाद स्टेट बैंक ने अपना अन्य उत्पाद मोबी केश ईजी लांच किया। इस उत्पाद की मदद से बैलेस इंकवारी, मिनी स्टेटमेंट, पैसों का अंतरण, मोबाइल टॉप-अप, डीटीएच रिचार्ज, बिल भुगतान आदि सुविधाओं का उपयोग हो रहा है। इसके अलावा स्टेट बैंक के एक दर्जन से भी अधिक ऐप्स हैं, जो ग्राहकों की विविध जरूरतों को पूरा करते हैं। एक्सिस और आईसीआईसीआई बैंक भी मोबाइल बैंकिंग के महत्व को समझकर मोबाइल बैंकिंग के जरिये ट्रांजैक्शन को बढ़ाने की दिशा में ज़ोर-शोर से काम कर रहे हैं। अब तो दूसरे बैंक भी मोबाइल बैंकिंग के ट्रांजैक्शन को खाएँ बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं।

### मोबाइल बैंकिंग के लाभ –

शुरुआती दौर में मोबाइल बैंकिंग के जरिये सिर्फ एसएमएस यानि गैर वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा किया जा रहा था, जैसे एटीएम से निकासी पर एसएमएस अलर्ट, क्रेडिट और डेबिट कार्ड के उपयोग पर एसएमएस अलर्ट आदि। आज के दौर में मोबाइल बैंकिंग के जरिये चेक बुक हेतु आवेदन देना, आवर्ती व सावधि खाता खोलने के लिए रिक्वेस्ट करना, पैसों का अंतरण, पेंशन स्लिप मुहैया कराना, ऋण खातों का प्रबंधन, शिकायत दर्ज कराना, पैसों का नकद प्रबंधन, डेबिट एवं क्रेडिट स्टेटमेंट आदि सुविधाएँ ग्राहकों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। हिंदी भाषी देश होने के कारण कुछ बैंकों ने हिंदी में मोबाइल बैंकिंग की सुविधा मुहैया कराई है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल बैंकिंग के लिए प्रवेश करना आसान हो गया है। बैंकों के द्वारा मोबाइल बैंकिंग में वर्चुअल कार्ड की सुविधा भी दी जा रही है। इतना ही नहीं अच्छे ग्राहकों को खुद से निश्चित सीमा तक क्रेडिट लिमिट बनाने की सुविधा भी दी जा रही है, ताकि जरूरत पड़ने पर ग्राहक अपनी छोटी-मोटी जरूरतों को पूरा कर सकें। मोबाइल नेटवर्क की सहायता से पैसों का अंतरण या पॉइंट ऑफ सेल पर इसे डेबिट एवं क्रेडिट कार्ड की तरह इस्तेमाल भी किया जा सकता है। अब आईएमटी (मोबाइल की मदद से) एटीएम से पैसों की नकद निकासी भी की जा रही है।

### सामाजिकता एवं बाजार विस्तार में योगदान

मोबाइल बैंकिंग ने बैंकिंग के संदर्भ में पूरे विश्व को एक गाँव बना दिया है. अब ग्राहक किसी भी समय विश्व के किसी भी कोने से अपनी बैंकिंग जरूरतों को पूरा कर सकते हैं, जिससे ग्राहकों का बहुमूल्य समय बच रहा है और खाली समय का उपयोग ग्राहक अपने परिवार व दोस्तों के साथ समय बिताने में कर रहे हैं. आज मोबाइल बैंकिंग की वजह से ऑनलाइन बाजार के दायरे में गुणात्मक बढ़ोतरी हुई है. अब 24 घंटे 365 दिन घूमते-फिरते देश के किसी भी कोने से विविध उत्पादों को खरीदना आसान हो गया है. वह भी जाँच-परख करके किफ़ायती कीमत पर और नहीं पसंद आने पर मोबाइल से ही अपने ऑर्डर को रद्द करने की सुविधा के साथ. इन सारे कार्यों के लिए किसी बाजार या दुकान जाने की कोई जरूरत नहीं है. सभी तरह की सुविधा सिर्फ मोबाइल की एक क्लिक पर हाजिर है.

### मोबाइल बैंकिंग की सीमाएँ व समस्याएँ:-

इसमें दो राय नहीं है कि हमारे देश में मोबाइल उपभोक्ताओं की एक बड़ी संख्या है, लेकिन मोबाइल बैंकिंग के लिए स्मार्ट फोन का होना जरूरी है. एक अनुमान के मुताबिक कुल मोबाइल उपभोक्ताओं के सिर्फ 20 प्रतिशत के पास ही स्मार्ट फोन है. स्मार्ट फोन के अभाव में संपूर्णता में मोबाइल बैंकिंग ट्रांज़ैक्शन की सुविधा का लाभ नहीं उठाया जा सकता है. सस्ते स्मार्ट फोन बाजार में जरूर उपलब्ध हैं, लेकिन इससे मोबाइल बैंकिंग के विविध कार्यकलापों को अमलीजामा पहनाने में जोखिम बना रहता है. इधर, सामान्य मोबाइल में बैंकिंग एप्स डाउनलोड नहीं किये जा सकते हैं. डाउनलोड होने पर भी ऐप सुचारु रूप से कार्य नहीं करते हैं. स्पष्ट है, अनुकूल बैंकिंग सॉफ्टवेयर या ऐप के अभाव में ग्राहक को हर बैंकिंग ट्रांज़ैक्शन के बाद एसएमएस का इंतजार करना पड़ता, जिससे वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में परेशानी होती है. टीआरआर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के मे नियमों के अनुसार भले ही ग्राहक एक साथ 9 मोबाइल सिम नंबर ले सकते हैं, लेकिन रिज़र्व बैंक के निर्देशानुसार सिर्फ एक ही सिम नंबर पर मोबाइल बैंकिंग की सुविधा उन्हें दी जा सकती है. गौरतलब है कि मोबाइल बैंकिंग के जरिये पहले 50,000 रुपये तक भुगतान की सुविधा ग्राहकों को प्रति माह उपलब्ध कराई जा रही थी. अब इस सीमा को हटा दिया गया है. सभी बैंक मामले में सुविधा एवं जोखिम के अनुसार निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं. जानकारों के मुताबिक मोबाइल बैंकिंग की वर्तमान स्थिति वैसी ही है, जैसा क्रेडिट कार्ड का 20 साल पहले और एटीएम का 15 साल पहले था. बावजूद इसके, जल्द ही इस क्षेत्र में क्रांति आने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है.

### मोबाइल बैंकिंग से जोखिम:-

भले ही सूचना एवं प्रौद्योगिकी की मदद से बैंकिंग इंडस्ट्री में क्रांति का सूत्रपात हुआ है, लेकिन इसके साथ-साथ सुरक्षा से संबंधित अनेक जोखिमों का भी जन्म हुआ है। इस संबंध में मोबाइल बैंकिंग के भी अपने जोखिम हैं। चूंकि मोबाइल बैंकिंग के जरिये वित्तीय ट्रांजैक्शन संपन्न होता है, अस्तु इस बाबत विशेष सावधानी बरतना अत्यंत आवश्यक है यथा - मोबाइल बैंकिंग के लिए चिह्नित मोबाइल हैंड सेट सावधानी से उपयोग किया जाए, सर्विस प्रोवाइडर से मोबाइल हैंड सेट का सत्यापन कराकर मोबाइल बैंकिंग की सुविधा का उपयोग किया जाए, ओटीपी का इस्तेमाल करना सुनिश्चित किया जाए आदि।

वर्तमान में अधिकांश मोबाइलों में डेटा की सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। मोबाइल तकनीक एवं उस पर लोड की गई एप्लीकेशंस के संबंध में उपभोक्ता जागरूक नहीं है। मोबाइल यूजर की जानकारी के बिना कब उनके महत्वपूर्ण डेटा एवं पासवर्ड दूसरे के पास चले जाते हैं इसका उन्हें एहसास तक नहीं होता है। ऐसे में मोबाइल बैंकिंग के ट्रांजैक्शन में धोखाधड़ी एवं फर्जीवाड़ा की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

जोखिम ऐप की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है। इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराने वाली अधिकांश कंपनियां अपने मोबाइल ऐप की सुरक्षा पर भारी-भरकम राशि खर्च कर रही हैं। ऐप से जुड़े खतरे को कम करने के लिए ऐप निर्माता इसके जरिए होने वाले ट्रांजैक्शन की सीमा को नियंत्रित करते हैं। इस आलोक में बड़ी रकम के लेन-देन को अधिकृत करने के लिए किसी कोड या कार्ड रीडर की जरूरत को आवश्यक बनाया जाता है।

बेशक, अगर सभी तरह के सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर ट्रांजैक्शन किया जाए तो स्मार्टफोन के जरिए किया गया लेन-देन एक स्टैंडर्ड कंप्यूटर से होने वाले लेन-देन से अधिक सुरक्षित होगा, वैसे इसके कुछ अपवाद भी हैं। इस संबंध में सबसे जरूरी है कि आप अपने बैंक का आधिकारिक ऐप ही प्रयोग करें और समय-समय पर उसे अद्यतन भी करते रहें। साथ ही, इसके उपयोग से पहले यह सुनिश्चित किया जाए कि इंटरनेट बैंक के मोबाइल ऐप की सुरक्षा विधिमान्य हो। ग्राहकों को अपने बैंक की वेबसाइट पर जाकर यह भी पता लगाना चाहिए मोबाइल ऐप को लेकर उनके बैंक ने क्या उपाय किये हैं और क्या वे भरोसेमंद हैं।



**यूपीआई से मोबाइल बैंकिंग को लाभ :-**

अंतरण का सबसे सरल तरीका यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) का प्रयोग प्रारंभ हो गया है इसे मोबाइल बैंकिंग का अद्यतन संस्करण कह सकते हैं. इसके तहत मोबाइल ऐप के जरिये पैसे का अंतरण करना संवाद भेजने जितना आसान है. यूपीआई से नकद ट्रांजैक्शन में कमी आने और डिजिटल भुगतान को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है. एक अनुमान के अनुसार भारत में जीडीपी का लगभग 12 प्रतिशत नकद लेन-देन होता है. नेशनल पेमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) के मुताबिक वर्तमान में लगभग 44 बैंक इस नई प्रणाली से जुड़ गये हैं. फिलहाल, एनपीसीआई ने इसके उपयोग की अनुमति सिर्फ उन वित्तीय संस्थानों को दी है जो कम से कम एक हजार ग्राहकों, पांच हजार ट्रांजैक्शन और 90 प्रतिशत सफलता के स्तर के साथ इसकी शुरुआत कर सकें. एनपीसीआई के इस पैमाने पर महज 44 वित्तीय संस्थान ही फिलहाल खरे उतर सके हैं.

इस नई सुविधा का लाभ उठाने के लिए ग्राहकों को सबसे पहले निबंधन कराना होगा और इसके लिए स्मार्टफोन पर यूपीआई ऐप डाउनलोड कर उसमें अपना नाम, ई-मेल और बैंक में रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर दर्ज कराना होगा. इसके बाद एक ओटीपी (वन टाइम पासवर्ड) मिलेगा, जिसे सविट करते ही निबंधन की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी. फिर एक पासवर्ड बनाना होगा, जिसकी जरूरत हर बार ऐप में लॉग-इन करने के वक्त होगी. फिर पैसे का अंतरण हेतु एक वर्चुअल आईडी बनानी होगी.



इस नई प्रणाली में खातों का इतिहास, खाते शेष की इंकारी, शिकायत या विवाद का निबंधन आदि सुविधाएं ग्राहकों को मिल सकेगी. आने वाले दिनों में यूपीआई ऐप को आधार से भी जोड़ने की योजना है. ऐसा होने पर एम-f -पिन सत्यापन की जरूरत नहीं होगी. यूपीआई से रियल टाइम अंतरण संभव हो जाएगा. इस ऐप के जरिये यूजर्स यूनिक वर्चुअल एड्रेस, मोबाइल नंबर या आधार नंबर के जरिए पैसों का अंतरण कर सकेंगे. इसके तहत किये गये ट्रांजैक्शन के लिए किसी भी पक्ष को बैंक अकाउंट या क्रेडिट-डेबिट की विवरणी नहीं देनी पड़ेगी. साथ ही, इसमें किसी को भुगतान स्मरण कराने या आग्रह को भेजने का भी विकल्प मिलेगा. कहा जा रहा है कि इस सुविधा की वजह से खुदरा दुकानदारों के बीच यह प्रणाली लोकप्रिय हो सकती है.

यूपीआई की प्रक्रिया ई-वॉलेट से भी सरल है. ई-वॉलेट में यूजर रजिस्ट्रेशन के बाद अपने बैंक ऐप के जरिये भुगतान कर सकते हैं. हालाँकि, इसके तहत यूजर को खाते या एमएमआईडी (मोबाइल मनी आइडेंटिफायर) नंबर, आईएफएससी (इंडियन फाइनेंशियल सिस्टम कोड) आदि जानकारियां देनी पड़ती थीं, जबकि यूपीआई में ऐसे बंधन नहीं हैं.

यूपीआई के जरिये किसी से पैसे मंगवाने के लिए रिक्वेस्ट भी भेजा जा सकेगा. इसके लिए ग्राहक “कलेक्ट मनी” पर क्लिक करने के बाद जिससे पैसे मँगवाने हैं उसको वर्चुअल आईडी और मँगवाई जाने वाली राशि का विवरण देगा. ऐसा करने से जिससे पैसे मँगवाने हैं को “कलेक्ट रिक्वेस्ट हेज इनिशिएटेड बाय (...)” का मेसेज मिलेगा. रिक्वेस्ट “एक्सेप्ट” करने पर ऐप उसे एम- पिन के जरिए सत्यापन के लिए एनपीसीआई को निर्देशित करेगा, जिसके बाद पैसे का अंतरण हो जाएगा. इतना ही नहीं रिक्वेस्ट कलेक्ट करने के लिए “रिक्वेस्ट वैलिडिटी” के जरिये दिन और समय को तय करने का विकल्प भी इसमें उपलब्ध रहेगा.

### मोबाइल बैंकिंग का भविष्य:-

सेवा क्षेत्र के विकास में संचार क्रांति का योगदान तकरीबन 20 प्रतिशत है. देश के दूर-दराज के गाँवों में आज मोबाइल की पहुंच है. रोजगार का एक बेहतर विकल्प बनकर यह पूरे देश में उभरा है. आज इसे स्वरोजगार का एक बड़ा स्रोत माना जाता है. मोबाइल व सिम की खरीद-फरोख्त ने गाँव के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया है. वर्तमान में अपनी आमदनी का 60 प्रतिशत आय वे इसी से अर्जित कर रहे हैं. निश्चित तौर पर पर्याप्त संख्या में मोबाइल की उपलब्धता की वजह से ही मोबाइल बैंकिंग की उपयोगिता व लोकप्रियता में लगातार इजाफा हो रहा है और इसे भविष्य की बैंकिंग बताया जा रहा है. किसी भी नये विकल्प की उपयोगिता व लोकप्रियता को अविलंब सफलता की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता है. अमेरिका और यूरोप में मोबाइल बैंकिंग की उपयोगिता साबित हो चुकी है और वहाँ यह बैंकिंग की हर जरूरत को पूरा कर रहा है. इन देशों में आजकल मोबाइल में एनएफसी (नियर फील्ड कम्यूनिकेशन) की चिप लगाई जाती है, जिससे मोबाइल वर्चुअल क्रेडिट कार्ड की तरह काम करता है.

साथ ही, पाइंट ऑफ सेल में इसका उपयोग डेबिट और क्रेडिट कार्ड की तरह किया जाता है. मोबाइल बैंकिंग के जरिये वहाँ सीटीएस (चेक टून्केशन सिस्टम) के तहत चेकों के समाशोधन का कार्य भी किया जा रहा है.

### जब में बैंक:-

मोबाइल बैंकिंग की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए आशा है कि इसके जरिये भारत में भी संपूर्ण बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकेगी. कहा जा रहा है कि आगामी 5 सालों में इसके जरिये ऋण को स्वीकृत करने की सुविधा भारत में शुरू हो जाएगी. लब्बोलुबाव के रूप में कहा जा सकता है कि बदलते समय के साथ मोबाइल बैंकिंग नई परिस्थितियों के साथ लगातार तालमेल बैठा रहा है. बदलाव जरूर समय की मांग है, लेकिन जब इससे सभी का भला होता है तो किसी भी नई तकनीक को सभी आगे बढ़कर अपनाते हैं और मोबाइल बैंकिंग वैसा ही करिश्माई तकनीक है, जिससे बैंक एवं ग्राहक दोनों का भला होना निश्चित है.

### भविष्य के बैंकिंग उत्पाद

देश की बैंकिंग प्रणाली देश की अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास का आधार है. यह देश के वित्तीय क्षेत्र का सबसे प्रमुख हिस्सा है क्योंकि यह देश के वित्तीय क्षेत्र के 70% से अधिक धनराशि के प्रवाह का प्रतिनिधित्व करता है.

देश में बैंकिंग प्रणाली के तीन प्राथमिक कार्य हैं.

1. भुगतान प्रणाली का संचालन
2. जमाकर्ता और लोगों की बचत का रक्षक
3. व्यक्ति और कंपनियों को ऋण जारी करना

भारत में बैंकिंग प्रणाली को दो चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है.

1. पूर्व – स्वतंत्रता चरण (1786 – 1947)
2. स्वतंत्रता चरण के बाद (1947 से आज तक)

स्वतंत्रता अवधि के बाद, बैंकिंग प्रणाली को फिर से तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है.

1. पूर्व राष्ट्रीयकरण अवधि (1947 – 1969)
2. राष्ट्रीयकरण अवधि (1969 – 1991)
3. उदारीकरण अवधि (1991 से आज तक)

**पूर्व – स्वतंत्रता चरण – (1786 – 1947)**

भारत में बैंकिंग प्रणाली का उद्गम 1786 में बैंक ऑफ कलकत्ता की स्थापना के साथ हुआ. 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के चार्टर के तहत प्रेसीडेंसी बैंकों, बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक ऑफ मद्रास की स्थापना की गयी. 1935 में, प्रेसीडेंसी बैंकों का विलय कर दिया गया और इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया नामक एक नया बैंक बनाया गया. इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया बाद में भारतीय स्टेट बैंक बना. 1865 में इलाहाबाद में पहली भारतीय स्वामित्ववाली इलाहाबाद बैंक की स्थापना हुई थी. 1895 में, पंजाब नैशनल बैंक स्थापित किया गया था. बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना 1906 में मुंबई में हुई थी. 1906 और 1913 के बीच कैनरा बैंक, इंडियन बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा और बैंक ऑफ मैसूर वाणिज्यिक बैंक स्थापित किए गए. भारतीय केंद्रीय बैंक, आरबीआई हिल्टन-यंग आयोग की सिफारिश पर 1935 में स्थापित किया गया था. उस समय, बैंकिंग प्रणाली केवल शहरी क्षेत्र तक सीमित रही तथा ग्रामीण और कृषि क्षेत्र की जरूरत पूरी तरह से उपेक्षित थी.

**स्वतंत्रता चरण के बाद – (1947 से अब तक)**

स्वतंत्रता के समय, संपूर्ण बैंकिंग क्षेत्र निजी स्वामित्व में था. देश की ग्रामीण आबादी को अपनी आवश्यकताओं के लिए छोटे उधारदाताओं पर निर्भर होना पड़ता था. इन मुद्दों को हल करने और अर्थव्यवस्था का बेहतर विकास करने के लिए भारत सरकार ने 1949 में भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया. 1955 में इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण हुआ उसे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का नाम दिया गया. 1949 में बैंकिंग विनियमन अधिनियम (Banking Regulation Act, 1949) लागू किया गया.



राष्ट्रीयकरण अवधि (1969 से 1991) – 1969 में, भारत सरकार ने 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जिनकी जमा-पूंजी 50 करोड़ से अधिक थी. नीचे बैंकों की सूची प्रस्तुत है.

1. इलाहाबाद बैंक
2. बैंक ऑफ इंडिया
3. पंजाब नैशनल बैंक
4. बैंक ऑफ बड़ौदा
5. बैंक ऑफ महाराष्ट्र
6. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
7. कैनरा बैंक
8. देना बैंक
9. इंडियन ओवरसीज बैंक
10. इंडियन बैंक
11. संयुक्त बैंक
12. सिंडिकेट बैंक
13. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
14. यूको बैंक

राष्ट्रीयकरण के बाद भारतीय बैंकिंग प्रणाली बेहद विकसित हुई लेकिन समाज के ग्रामीण, कमजोर वर्ग और कृषि को अभी भी सिस्टम के तहत कवर नहीं किया गया था. इन मुद्दों को हल करने के लिए, 1974 में नरसिंहम समिति ने क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) की

स्थापना की सिफारिश की थी. 2 अक्टूबर 1975 को, आरआरबी को ग्रामीण और कृषि विकास के लिए ऋण की मात्रा बढ़ाने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था.

वर्ष 1980 में छह और बैंकों को राष्ट्रीयकृत किया गया. राष्ट्रीयकरण के दूसरी लहर के साथ, प्राथमिकता क्षेत्र ऋण देने का लक्ष्य भी 40% तक बढ़ाया गया.

1. आंध्र बैंक
2. कारपोरेशन बैंक
3. न्यू बैंक ऑफ इंडिया
4. ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
5. पंजाब एंड सिंध बैंक
6. विजया बैंक

### उदारीकरण चरण (1990 से अब तक)

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय स्थिरता और लाभप्रदता में सुधार के लिए, भारत सरकार ने श्री एम नरसिंहम की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की. एम नरसिंहम समिति ने देश में बैंकिंग प्रणाली को सुधारने के लिए कई सिफारिश की. जिनमें से कुछ प्रमुख हैं –

- सिफारिशों का प्रमुख जोर बैंकों को प्रतिस्पर्धी और मजबूत बनाने और वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के लिए अनुकूल बनाना था. समिति ने बैंकों को और अधिक राष्ट्रीयकरण न करने का सुझाव दिया.
- विदेशी बैंकों को भारत में या तो शाखाओं या सहायक कंपनियों के रूप में कार्यालय खोलने की अनुमति दी गयी.

- बैंकों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए, समिति ने सुझाव दिया कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी क्षेत्र के बैंकों को सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समान रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए.
- इस बात पर बल दिया गया कि बैंकों को रूढ़िवादी और पारंपरिक प्रणाली को छोड़ने और मर्चेंट बैंकिंग और अंडरराइटिंग, रिटेल बैंकिंग जैसे प्रगतिशील कार्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.
- अब, विदेशी बैंकों और भारतीय बैंकों ने इन और अन्य नए प्रकार के वित्तीय सेवाओं में संयुक्त उद्यम स्थापित करने की अनुमति दी गयी.
- 10 प्राइवेट बैंकों को बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए आरबीआई से लाइसेंस मिला. यह ग्लोबल ट्रस्ट बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी एस बैंक, बैंक ऑफ पंजाब, इंडसइंड बैंक, सेंचुरियन बैंक, आईडीबीआई बैंक, टाइम्स बैंक और डेवलपमेंट क्रेडिट बैंक थे. भारत सरकार ने समिति की सभी प्रमुख सिफारिशों को स्वीकार कर लिया.

### भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में आधुनिक विकास –

कोटक महिंद्रा बैंक और येस बैंक को वर्ष 2003 और 2004 में सिस्टम में प्रवेश के लिए आरबीआई से लाइसेंस मिला. 2014 में, भारतीय रिजर्व बैंक ने आईडीएफसी और बंधन फाइनेंशियल सर्विसेस को सैद्धांतिक रूप से बैंकों की स्थापना के लिए अनुमोदित किया. आज, भारतीय बैंकिंग उद्योग सबसे अधिक विकासशील उत्कृष्ट उद्योगों में से एक है. किसी भी देश की बैंकिंग प्रणाली को प्रभावी होना चाहिए क्योंकि यह देश के आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है.

## **विविध बैंकिंग उत्पाद –**

### **अग्रिम –**

बैंक लाभ उन्मुख व्यवसाय संगठन है. इसलिए उन्हें जनता के लिए एक ऋण अग्रिम करना होगा और लाभ के रूप में उनसे ब्याज उत्पन्न करना होगा. कुछ नकदी भंडार रखने के बाद, बैंक जरूरतमन्द उधारकर्ताओं को अल्पकालिक, मध्यम अवधि और दीर्घकालिक ऋण प्रदान करती है.

### **ओवरड्राफ्ट –**

कभी-कभी, बैंक अपने ग्राहकों को ओवरड्राफ्ट सुविधा प्रदान करता है, जिसके माध्यम से उन्हें अपनी जमा राशि से अधिक निकालने की अनुमति होती है. ओवरड्रन राशि पर ग्राहकों से ब्याज वसूला जाता है.

### **डिस्काउंटिंग ऑफ बिल्स –**

यह आधुनिक बैंकों द्वारा उधार देने का एक और लोकप्रिय प्रकार है. इस पद्धति के माध्यम से, बिल के एक धारक को बैंक द्वारा यह छूट मिल सकती है, विनिमय के बिल में, देनदार लेनदार द्वारा उस पर खींचे गए बिल को स्वीकार करता है (यानि, बिलधारक) और राशि का भुगतान करने के लिए सहमत होता है, परिपक्वता पर उल्लेख किया गया है. कुछ सीमांत कटौती (कमीशन के रूप में) करने के बाद, बैंक धारक को बिल के मूल्य का भुगतान करता है. जब एक्सचेंज का बिल परिपक्व होता है, तो बैंक को उस पार्टी से भुगतान मिलता है, जिसने बिल स्वीकार किया था.

### **आवास ऋण –**

घर / फ्लैट खरीदने हेतु, प्लॉट या कन्स्ट्रक्शन / रिनोवेशन के लिए आवास ऋण लेते हैं. कई वार आवास ऋण मकान को बढ़ाने या रिपेयर करने के लिए भी लिया जाता है. आवास ऋण की अवधि और ब्याज दर पर भी लोन अमाउंट निर्भर करता है. इसके अलावा बैंक लोन के लिए उम्र की ऊपरी सीमा भी फिक्स करते हैं. आवास ऋण की प्रक्रिया शुरू करने से पहले



इस बात का ध्यान देना पड़ता है कि ग्राहक की कमाई कितनी है और उस हिसाब से बैंक कितना लोन दे सकता है. आवास ऋण लेने की क्षमता उसे चुकाने की क्षमता पर निर्भर करती है. यह ग्राहक की मासिक कमाई, खर्च और परिजनों की कमाई, संपत्ति, देनदारी, आय में स्थिरता जैसे मसलों पर निर्भर करती है. बैंक सबसे पहले यह देखता है कि ग्राहक समय पर आवास ऋण चुका पाएंगे या नहीं. आमतौर पर कोई बैंक या कर्ज देनेवाली कंपनी यह देखती है कि ग्राहक की मासिक आमदनी की 50 फीसदी आवास ऋण की किस्त के रूप में दे पाएंगे या नहीं. किसी मकान या फ्लैट की कीमत का 10 – 20 फीसदी तक डाउन पेमेंट करना पड़ता है. इसके बाद प्रॉपर्टी की वैल्यू का 80 - 90 फीसदी तक लोन मिल जाता है. इसमें रजिस्ट्रेशन, ट्रान्सफर और स्टैम्प ड्यूटी जैसे चार्ज भी शामिल होते हैं.

### वाहन ऋण –

पहले कार खरीदना किसी के लिए भी बहुत बड़ी बात होती थी, क्योंकि इसके लिए एकमुश्त रकम खर्च करनी पड़ती थी, लेकिन अब कार लोन आसानी से उपलब्ध होने की वजह से यह बहुत आसान हो गया है. इससे आपका बजट भी नहीं बिगड़ता और सुविधा भी मिल जाती है.

बैंक और नॉन बैंकिंग फ़ाइनेंस कंपनी कार लोन आसान मासिक किश्त पर दे देती हैं. बैंक नयी और सेकंड दोनों कार पर लोन देती हैं. इन दोनों कार पर ब्याज दरें अलग होती है. कार लोन की रकम पर कर्ज देनेवाले बैंक मार्जिनल कॉस्ट ऑफ फंड्स (एमसीएलआर) के अलावा कुछ एक्सट्रा रकम भी चार्ज करती है. आमतौर पर यह रेट फ़िक्स्ड होते हैं. इससे लोन चुकाना आसान होता है. कार की कीमत का 80 – 90 फीसदी तक फ़ाइनेंस हो जाता है. कुछ बैंक हालांकि 100 फीसदी तक भी फ़ाइनेंस कार देते हैं. यह एक्स शोरूम प्राइस या ऑन रोड प्राइस हो सकता है. एक्स शोरूम प्राइस किसी डीलर को कार खरीदने के बदले चुकाई जानेवाली रकम है. जब आप रजिस्ट्रेशन चार्ज, इन्शुरेंस, रोड टैक्स आदि चुकाने के बाद कार सड़क पर चलाने के लिए लाते हैं तो यह ऑन रोड प्राइस होता है. जब किसी सेकंड हैंड कार के लिए लोन लेने जाते हैं तो दोबारा रजिस्ट्रेशन में आनेवाले खर्च कवर नहीं होते. नई कार लेने की जगह सेकंड हैंड कार लोन पर लेना महंगा सौदा है. ज़्यादातर बैंक इस पर अधिक ब्याज चार्ज करते हैं.

### सेविंग अकाउंट / बचत खाता –

सेविंग अकाउंट जिसे हम बचत खाता भी कहते हैं। यह बैंक में एक ऐसा अकाउंट होता है जहाँ पर अपने बचाए हुए पैसे को थोड़ा थोड़ा करके जमा कर सकते हैं। यह खाता एक आम आदमी के लिए बेहद फायदेमंद होता है, जहाँ पर आप अपने कमाए हुए पैसे से खर्च चला कर बचे हुए पैसे को सेविंग अकाउंट में जमा कर सकते हैं और सालाना इस पर ब्याज भी पा सकते हैं। ज्यादातर सेविंग अकाउंट में ब्याज दर 3% से 4% के बीच होता है। सेविंग अकाउंट आम लोगों के लिए बनाया गया है जो अपने बचाए गए पैसे को सेव करके रखना चाहते हैं, जिसमें उन्हें कुछ ब्याज मिले और जरूरत पड़ने पर कभी भी निकाल सकें। सेविंग अकाउंट एक आम इंसान जो सैलरी पर काम करता है या जॉब करता है या विद्यार्थियों के लिए सही माना जाता है। सेविंग अकाउंट में मिनिमम बैलेन्स कम लगता है। बचत खाते (सेविंग्स अकाउंट), खुदरा वित्तीय संस्थाओं द्वारा बनाये रखे जाने वाले खातों को कहते हैं जो ब्याज तो प्रदान करते हैं लेकिन जिन्हें सीधे तौर पर धन के रूप में (उदाहरण के लिए, एक चेक लिखकर) इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। इन खातों में ग्राहक अपने अतिरिक्त धन के कुछ हिस्से को अलग रखने के साथ-साथ थोड़ा ब्याज (मॉनेटरी रिटर्न) भी कमा सकते हैं।

जमा कराते समय पास-बुक प्रस्तुत करना अनिवार्य नहीं है, किन्तु उसके पश्चात् यथाशीघ्र पास-बुक बैंक के पास भेजी जानी चाहिए ताकि उसमें प्रविष्टियाँ की जा सकें। किसी भी स्थिति में, प्रतिवर्ष जून एवं दिसम्बर के प्रारंभ में ब्याज की प्रविष्टि के लिए पास-बुक बैंक अवश्य भेजी जानी चाहिए। जब पास-बुक वापस लौटायी जाए तो जमाकर्ता को उसकी प्रविष्टियों की जाँच सावधानीपूर्वक कर लेनी चाहिए और भूल-चूक पाई जाने पर बैंक का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए। यदि ग्राहक ऐसा नहीं करता है तो उसके कारण हुई हानि के लिए बैंकर का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। इसी प्रकार पास-बुक में ऐसी प्रविष्टियों के लिए बैंक उत्तरदायी नहीं होता जिन पर बैंक के अधिकृत अधिकारी के हस्ताक्षर न हों। जमाकर्ता से अपनी पास-बुक सुरक्षित रखनी चाहिए।

### करंट अकाउंट / चालु खाता –

करंट अकाउंट जिसे हम चालु खाता भी कहते हैं। जैसा की आपको नाम से ही पता चल रहा है करंट का मतलब होता है अभी फिलहाल जो चल रहा है, अगर आप ऐसा खाता चाहते हैं जहाँ पर पैसे का लेन-देन रोजाना हर समय होता है तो इसके लिए आप करंट अकाउंट का

इस्तेमाल कर सकते हैं। यह अकाउंट किसी कंपनी, पब्लिक इंटरप्राइजेज़, बिजिनेसमेन के लिए होता है जहां पर पैसे का लेन देन यानि ट्रान्सएक्शन एक बड़े पैमाने पे होता है ऐसे लोग करंट अकाउंट यानि चालु खाता का इस्तेमाल करते हैं। करंट अकाउंट बिजिनेस करने वाले के लिए बनाया गया है यानि व्यापारियों के लिए बनाया गया है जिसमें पैसे का लेन देन रोजाना और बड़े पैमाने पे होता है। करंट अकाउंट किसी कंपनी या बिजिनेसमेन के लिए सही माना जाता है। चालु खाते में किसी भी तरह का ब्याज नहीं मिलता। करंट अकाउंट में लेन-देन की लिमिट नहीं होती क्योंकि इसमें बड़े पैमाने में पैसे का लेन देन करना होता है। करंट अकाउंट में न्यूनतम राशि अधिक होती है। चालू खाता एक बैंक जमा होता है जिसकी निकासी जमाकर्ता कभी भी कर सकता है। जमाकर्ता को किसी भी दिन इस खाते से कितनी भी बार संचालन की छूट होती है। यह बचत खाते की तरह नहीं है जिसमें कि प्रतिदिन केवल सीमित संख्या में ही लेनदेन संभव होता है। यह खाता व्यापार, व्यवसाय से जुड़े लोगों द्वारा खोला जाता है। चालू खातों पर ब्याज नहीं दिया जाता है।

### लाभार्थी -

- चालू खाते व्यवसाय की ज़रूरतों के अनुसार बनाए जाते हैं और मुख्यतः व्यवसायियों, फर्मों, कम्पनियों, सार्वजनिक उद्यमों आदि के लिए होते हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य व्यवसाय के प्रत्येक स्तर पर धन के लेनदेन को सुविधाजनक बनाना है।
- चालू खाता 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के निवासी भारतीयों एवं अकेले व्यक्तियों / एकल स्वामित्व / साझेदारियों/ संघों / निजी व सार्वजनिक कम्पनियों /सोसाइटियों /ट्रस्टों / अविभाजित हिन्दू परिवारों आदि द्वारा खोला जा सकता है। चालू खाता या तो अकेले या संयुक्त रूप से खोला जा सकता है।
- चालू खाता खोलने के लिए बैंक 5,000 से 50,000 रुपये तक न्यूनतम जमा चाहते हैं। सामान्यतः, राष्ट्रीयकृत बैंक कम न्यूनतम जमा चाहते हैं।
- चालू खाता खोलना बेहद आसान है। आवेदन पत्र भरें और उसके साथ पहचान व पते के प्रमाण जैसे आवश्यक दस्तावेज़ संलग्न करें। अतिरिक्त रूप से आवश्यक दस्तावेज़ हर मामले में अलग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एकल स्वामित्व वाले व्यवसाय के लिए आवश्यक दस्तावेज़ प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के मामले में आवश्यक दस्तावेज़ों से अलग होंगे।



### एटीएम सुविधा –

ATM का पूर्ण रूप है Automated Teller Machine. यह एक इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस है जिसे केवल बैंक के ग्राहक ही इस्तेमाल कर सकते हैं। किसी भी अकाउंट संबंधित ट्रांसएक्शन करने के लिए इसे इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ ग्राहक अपने खाते से पैसे निकालने के साथ अपने खाते का रिपोर्ट भी देख सकते हैं। जिसके लिए एक विशेष प्रकार के प्लास्टिक कार्ड का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें ग्राहक की जानकारी पहले से ही इस कार्ड के पिछले भाग में एक मैग्नेटिक स्ट्राइप के ऊपर एनकोड होकर रहता है। इस मैग्नेटिक स्ट्राइप में एक आयडेंटिफिकेशन कोड रहता है जो की कार्ड के इस्तेमाल पर उस आयडेंटिफिकेशन कोड को बैंक के मध्यवर्ती कम्प्यूटर को मोडेम के द्वारा भेजा जाता है। तो जब यूजर अपना कार्ड एटीएम में इन्सर्ट करता है, अपना खाता देखने के लिए या पैसे निकालने के लिए तभी उस आयडेंटिफिकेशन कोड का मिलान अपनेआप होता है जिससे अगर कोड मैच हो गया तब अकाउंट ट्रांसएक्शन को प्रोसेस किया जाता है।

### बैंक गारंटी –

बैंक गारंटी को बैंक “गारंटी फीस” के बदले में देते हैं। सुरक्षा के तौर पर वह किसी चीज को गिरवी रख लेते हैं। बैंक गारंटी बैंक का वादा है कि वह कांटेक्ट के दायित्वों के पूरा नहीं होने पर देनदार की देनदारियोंको पूरा करेगा। कांटेक्ट में दी गयी शर्तों के अनुसार, विक्रेता की ओर से खरीदार को सेवा या वस्तु नहीं दिये जाने पर परफॉर्मेंस गारंटी की भूमिका आती है।

विड बॉन्ड गारंटी सुनिश्चित करती है कि प्रोजेक्ट को पाने वाला विजेता बोलीदाता अनुबंध के अनुसार इसे स्वीकार और पूरा करेगा। यह नहीं होने पर प्रोजेक्ट का स्वामी गारंटी की रकम जब्त कर सकता है। कई बार एक कंपनी दूसरी कंपनी के वित्तीय दायित्व को अपने ऊपर ले लेती है। ऐसे में अगर दूसरी कंपनी अपने वित्तीय दायित्व पूरा करने में विफल हो जाती है तो पहली कंपनी उसे पूरा करती है। इसके लिए फाइनेंशियल गारंटी ली जाती है।



### नेट बैंकिंग –

अगर आपने बैंक में नया खाता खोला है तो आप जरूर जानना चाहेंगे की नेट बैंकिंग क्या है? इंटरनेट का आविष्कार हुआ है तबसे ही यह लोगों के मुश्किल कामों को सरलता से सुलझाने में काफी मददगार साबित हुआ है.

इंटरनेट हम सबकी जिंदगी का हिस्सा बन गया है इसके बिना हमारा कोई भी कार्य पूरा नहीं होता. फिर चाहे हमें इंटरनेट के जरिये जानकारी हासिल करना हो या शॉपिंग करना हो या अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से जुड़े रहना हो, सभी काम में हम इंटरनेट की मदद जरूर लेते हैं. ठीक उसी तरह हम अब बैंकिंग की सुविधा भी अपने मोबाइल या दुसरे गैजेट्स पर इंटरनेट की मदद से पा सकते हैं और इंटरनेट के जरिये बैंकिंग को हम नेट बैंकिंग कहते हैं.

नेट बैंकिंग करते वक़्त कौन सी चीजों का ध्यान रखें?

- नेट बैंकिंग का इस्तेमाल कभी भी पब्लिक प्लेसेस जैसे साइबर कैफे में न करें इससे आपकी जानकारी लीक होने की संभावना रहती है.
- अपने पासवर्ड को बदलते रहे ताकि आपके खाते के हैक होने का डर न रहे. और अपना पासवर्ड कभी अपने जन्मदिवस, नाम, शहर का नाम के ऊपर ना रखें बल्कि एक युनिक पासवर्ड रखें जिससे आपका खाता पूरी तरह से सुरक्षित रहे.
- हमेशा अकेले में ही नेट बैंकिंग का इस्तेमाल करिए और अपने पासवर्ड किसी भी दुसरे व्यक्ति के साथ शेअर ना करें.
- एक बात का ध्यान जरूर रखें की जिस डिवाइस से आप नेट बैंकिंग कर रहे हैं उस डिवाइस में एक अच्छा anti-virus जरूर इन्स्टाल कर लें ताकि virus और malware की वजह से आपके खाते की जानकारी हैक ना हो.
- नेट बैंकिंग करते वक़्त आपको कोई भी परेशानी हो या आपको किसी भी तरह का शक हो तो तुरंत अपने बैंक के शाखा में संपर्क करें.

### लॉकर्स –

सरकारी और निजी बैंक ग्राहकों को लॉकर की सुविधा देते हैं। अच्छा होगा अगर आप बैंक की उस ब्रांच में जाएं, जहां आपका सेविंग्स अकाउंट है। वैसे यह जरूरी नहीं है। बैंक की किसी भी शाखा से संपर्क किया जा सकता है। लॉकर की संख्या सीमित होने के कारण बैंक आसानी से लॉकर अकाउंट नहीं खोलते। कई बैंक तो सीधे मना कर देते हैं। कुछ वेटिंग पीरियड के बारे में बताते हैं। ज्यादातर सरकारी बैंकों में लाकर्स के लिए प्रतीक्षा सूची बनी होती है।

### डेबिट कार्ड और क्रेडिट कार्ड –

नवम्बर में हुए नोट बंदी के बाद से लोगों के पास कैश नहीं होने की समस्या सब ने देखी है। जरूरी सामान लेना होता था लेकिन उन्हें खरीदने के लिए हाथ में कैश, पैसे नहीं हुआ करते थे। कैश की समस्या से बचने के लिए सरकार ने डिजिटल भुगतान को जोर शोर से बढ़ावा दिया और लोगों ने भी इस नयी तरकीब को अपनाना शुरू किया और हर जगह cashless payment का सिलसिला बढ़ने लगा। इसका फायदा बहुत से लोगों को हुआ क्योंकि अब पोजे में कैश लेने की समस्या दूर हुयी और कहीं भी कभी भी डिजिटल भुगतान के जरिये हम आसानी से खरीदारी कर सकते हैं। डिजिटल भुगतान करने के लिए सबसे जरूरी चीज होती है बैंक में आपका खाता होना। अगर किसी व्यक्ति का बैंक में खाता नहीं है तो वो डिजिटल भुगतान नहीं कर सकता क्योंकि इस भुगतान में पैसे बैंक में बने खाते से आते हैं। जब हम अपना खाता बैंक में खुलवाते हैं तो बैंक हमें एक plastic Card देता है जिसका इस्तेमाल हम किसी भी एटीएम मशीन में कर सकते हैं। इस एटीएम कार्ड को डेबिट कार्ड भी कहते हैं।

डेबिट कार्ड के जरिये हम ऑनलाइन ट्रान्सएक्शन कर पाते हैं। इस कार्ड के अलावा एक और कार्ड है जिसका इस्तेमाल भी हम ठीक डेबिट कार्ड की तरह ऑनलाइन भुगतान करने के लिए कर सकते हैं, उसे हम क्रेडिट कार्ड कहते हैं।

इन दोनों कार्ड्स का इस्तेमाल हम एक ही काम करने के लिए करते हैं- डिजिटल भुगतान, लेकिन यहाँ पर सवाल ये उठता है की आखिर इन दोनों कार्ड के बीच में क्या अंतर है? अगर

ये दोनों एक ही काम के लिए इस्तेमाल किया जाता है तो हम दोनों का इस्तेमाल क्यों करते हैं किसी एक को क्यों नहीं?

### क्रेडिट कार्ड क्या हैं ?

आधुनिक समय में आप अगर कहीं भी कुछ खरीदने जाते हैं तो अधिकतर लोग जेब में हाथ डालते जरूर हैं, लेकिन रुपए निकालने के लिए नहीं, बल्कि पर्स में रखे हुए क्रेडिट कार्ड को निकालने के लिए. दरअसल क्रेडिट कार्ड किसी बैंक द्वारा दी गयी आपको एक विशेष प्रकार की सुविधा या ऋण है, जिसके अंतर्गत आप एक निश्चित समय में खरीदारी और कामों के लिए एक निश्चित राशि तक का भुगतान इस कार्ड की मदद से कर सकते हैं. उसके बाद एक निश्चित समय में आपको बैंक को यह राशि वापस करनी होती है. यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप इस राशि को Lumpsum में भुगतान करते हैं या Instalment में करते हैं. दूसरे शब्दों में कहें तो क्रेडिट कार्ड किसी बैंक द्वारा आपको दिया गया एक लोन है जिसका आपको भुगतान बाद में करना होता है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की इस ऋण की सीमा होती है और इसके भुगतान करने के भी समय सीमा होती है. यदि आप क्रेडिट लिमिट से अधिक खर्च करते हैं या फिर Re-Payment Time Limit तक बैंक को भुगतान नहीं करते हैं तो बैंक अपने पूर्व निर्धारित नियमों के अनुसार कार्यवाही कर सकता है और ब्याज/पेनल्टी लगाता है. अगर आप किसी बैंक से Credit Card लेना चाहते हैं तो इसके पहले आपको कुछ बातों का मालूम होना चाहिए. ये वो आवश्यक जानकारी है जो बैंक आपको क्रेडिट कार्ड देने से पहले आपके बारे में मालूम करता है. इस जानकारी के आधार पर ही बैंक यह निर्णय लेता है की आप Credit Card के लिए Eligible हैं या नहीं.

### चेक क्लीयरिंग सुविधा -

डिजिटल पेमेंट के जमाने में भी बैंक चेक की अहमियत बनी हुई है. हमें अक्सर चेक (cheque) मिलते हैं. चेक 2 तरह के होते हैं account payee cheque और bearer cheque. बेयरर चेक से भुगतान तुरंत हो जाता है, हालांकि इसे चेक जारी करने वाले व्यक्ति

की ब्रांच में कैश काउंटर पर जमा करना पड़ता है. एकाउंट पेयी चेक की प्रोसेसिंग होती है और यह पैसा जिसके नाम से चेक जारी किया गया है, उसके खाते में आता है.

चेक की प्रोसेसिंग में लगने वाला समय इस बात से तय होता है कि चेक को क्लीयरिंग के लिए कहां जमा किया गया है-

### 1. सेम ब्रांच क्लीयरिंग -

अगर जिस ब्रांच ने चेक जारी किया है, उसमें ही चेक डिपॉजिट के लिए लगाया जाए तो ऐसे चेक के क्लीयर होने में बहुत कम समय लगता है. आमतौर पर 1 दिन में ये चेक क्लीयर हो जाता है और पैसे आपके खाते में आ जाते हैं.

### 2. लोकल क्लीयरिंग -

चेक जारी करने वाली ब्रांच और जिस ब्रांच में चेक जमा किया गया है, अगर दोनों एक ही शहर में हैं, तो इसे लोकल क्लीयरिंग कहते हैं. इसके लिए चेक जारी करने वाला बैंक और चेक जिस बैंक में जमा किया गया है, वो अलग अलग हो सकते हैं. लोकल क्लीयरिंग के लिए बैंक आपके चेक को आरबीआई के क्लीयरिंग हाउस में भेजा जाता है. यहां शहर के सभी बैंकों के चेक क्लीयर होते हैं. आमतौर पर लोकल क्लीयरिंग में 3 दिन का समय लगता है. यानी तीसरे दिन आपके खाते में पैसा आ जाता है.

### 3. आउटस्टेशन क्लीयरिंग -

जब आप किसी दूसरे शहर की ब्रांच द्वारा जारी किया गया चेक जमा कराते हैं, तो उसे आउटस्टेशन क्लीयरिंग कहते हैं. इसकी क्लीयरिंग प्रक्रिया लोकल क्लीयरिंग की तरह ही होती है, बस समय थोड़ा ज्यादा लगता है क्योंकि आपका चेक दूसरे शहर की क्लीयरिंग हाउस में भेजा जाता है. आमतौर पर ये चेक एक हफ्ते में क्लीयर होता है. हालांकि इसमें थोड़ा अधिक समय भी लग सकता है.

### 4. हाई वैल्यू क्लीयरिंग -

1 लाख रुपये या उससे ज्यादा के चेक को हाईवैल्यू कहा जाता है. हाई वैल्यू क्लीयरिंग (एचवीसी) से पहले चेक जारी करने वाले को एलर्ट भेजा जाता है. आमतौर पर ये अलर्ट एमएमएस के जरिए भेजा जाता है, लेकिन बहुत बड़ी राशि होने पर ग्राहक को फोन करके बताया जाता है. सहमति मिलने पर ही ऐसे चेक क्लियर किए जाते हैं.



### बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी

ग्राहकों को बैंक से मिलनेवाली ग्राहक सेवा में लगातार होनेवाली शिकायतों को दूर करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक खाते की पोर्टेबिलिटी अर्थात अपने बैंक खाते को बदलकर दूसरे बैंक में अपने उसी खाते को बनाए रखना को अनुमत करने पर विचार कर रही है। अक्सर ग्राहकों को अपने बैंक से बहुत सी शिकायतें रहती हैं और वे हमेशा अपने बैंक की बुराई और अन्य बैंकों की तारीफ़ करते हैं, वे अपने बैंक को ,उसकी सेवाओं को अक्सर कोसते हुए पाये जाते हैं और तुलना करते हुए दूसरे बैंक की ग्राहक सेवा की तारीफ़ों के पुल बांधते हैं, उन सब के लिए यह एक बहुत बड़ी सुविधा सिद्ध हो सकती है। जैसे कोई व्यक्ति अपने मोबाईल नंबर को बदले बिना मोबाईल सेवा प्रदाता कंपनी को बदल सकता है, ठीक उसी तरह बैंक खाते को बदलकर दूसरे बैंक में परिचालित किया जा सकेगा।

रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर ने देश के बैंकों से बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी की बेहतर और व्यावहारिक संभावनाओं पर कार्य करने को कहा है, भारतीय रिजर्व बैंक ने कहा है कि बैंक खातों में आधार लिंकिंग बढ़ने के बाद और प्रौद्योगिकी विकास तथा तकनीकी के निरंतर सुदृढ होने के कारण बैंक तथा स्टोक होल्डर्स को बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी को हकीकत में साकार करने के बारे में गंभीरता से विचार करना चाहिए और इसके लिए तैयार रहना चाहिए।

### **बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी क्या है ?**

सरल शब्दों में बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी का अर्थ यह है कि कोई ग्राहक अपने खाता नंबर को बदले बिना अपने बैंक खाते को किसी दूसरे बैंक में ट्रांसफर करवा सकता है ,उसे दूसरे बैंक में नया खाता खोलने की आवश्यकता नहीं है। यह यूनिक आधार कार्ड नंबर और नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से ही संभव हो सकता है।

हर बैंक का खाता नंबर प्रदाय करने का एक अपना सिस्टम है। यदि कोई ग्राहक उसी शहर में अथवा शहर के बाहर कहीं शिफ्ट करता है और अपने नजदीकी बैंक में खाता चाहता है तो उसे नया खाता खोलना पड़ता है। इसमें बहुत सारा दस्तावेजीकरण आवश्यक है और ग्राहक को आयकर आदि विभिन्न जगहों पर अपना नया खाता नंबर अपडेट कराना पड़ता है। परंतु बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी के आ जाने के बाद उसे इस समस्या से नहीं जूझना पड़ेगा। उसे उसी

बैंक की दूसरी शाखा अथवा दूसरे बैंक की किसी शाखा में खाता अंतरित करने पर भी वही खाता नंबर दिया जाएगा. सभी संबन्धित कार्रवाईयों के डिजिटल, ऑनलाईन और पेपरलेस हो जाने पर यह प्रक्रिया ज्यादा आसान, सुलभ और सही तरीके से संभव हो सकेगी. ऐसा कर सकने के लिए बैंकों को मिलकर एक शेयर्ड पेमेंट सिस्टम को विकसित करना पड़ेगा और अपने क्लियरिंग सिस्टम को भी बदलना होगा. तकनीकी रूप से समृद्ध और नई बैंकिंग प्रौद्योगिकी से सुसज्जित निजी क्षेत्र के बैंकों के साथ प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए और ग्राहकों को अपने साथ जोड़े रखने के लिए सार्वजनिक क्षेत्रके बैंको को भी नई तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा.

साथ ही किसी बैंक के असंतुष्ट ग्राहक को अपने साथ बनाए रखने के लिए निश्चित ही बैंक को उस पिछले बैंक से ज्यादा बेहतर और ज्यादा तीव्र सेवा उपलब्ध करानी होगी. इससे निश्चित ही बैंकों में आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, बैंकों को अब निश्चित ही ग्राहक सेवा और ग्राहक संतुष्टि पर अधिक ध्यान देना होगा.

एयरटेल और पेट्टीएम जैसे डिजिटल बैंकों के आ जाने के बाद , जो तकनीक और मोबाईल ऐप के जरिये ग्राहकों को आधुनिक और बेहतर बैंकिंग सेवाएँ तत्काल सुलभ करायेंगे, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को भी अपनी सेवाओं को अत्याधुनिक और तकनीक आधारित बनाने के लिए बाध्य होना होगा. बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी निस्संदेह इस संबंध में ग्राहकों के लिए निश्चित रूप से बहुत ही अधिक फायदेमंद सिद्ध होगी, जिससे वे बिना संकोच अपनी आवश्यकता के अनुरूप बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराने वाले बैंक में अपना खाता अंतरित करा सकें.

बैंक अकाउंट पोर्टेबिलिटी के लिए एक नीति बनाना और उसको कार्यान्वित करना इतना आसान भी नहीं है. इसके लिए सबसे पहले सभी बैंक खातों को आधार से लिंक हो जाना अनिवार्य होगा. अभी आधार कार्ड धारकों की काफी बड़ी संख्या ऐसी है, जिन्होंने अपना आधार कार्ड बैंक खाते से लिंक नहीं कराया है. जब तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं होती तबतक आधार कार्ड आधारित सत्यापन संभव नहीं , जो कि इसकी मूलभूत आवश्यकता है.

इसके अलावा सभी बैंकों को भी एक समान कोर बैंकिंग सोल्युशन प्लेटफॉर्म पर कार्य करना होगा ताकि इंटरबैंक कनेक्टिविटी संभव हो सके. साथ ही के वाय सी के लिए एक प्रामाणिक केंद्रीकृत एजेंसी का होना आवश्यक है , जो सभी के वाय सी की निगरानी करेगी. यह ग्राहक द्वारा बैंक स्विच करते समय दूसरे बैंक द्वारा के वाय सी की प्रामाणिकता के सत्यापन को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक होगा.

### पॉकेट एवं फिंगरप्रिंट बैंकिंग

आईसीआईसीआई बैंक ने सर्वप्रथम ‘पॉकेट्स’ डिजिटल बैंकिंग सेवा शुरू की है. इस सेवा के जरिये लोग तत्काल पैसा किसी ई-मेल आईडी, मोबाइल नंबर, फेसबुक के दोस्तों व बैंक खाते में भेज सकेंगे.

आईसीआईसीआई बैंक ने बयान में कहा कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह आईसीआईसीआई बैंक का ग्राहक नहीं है, गूगल प्लेस्टोर से ई-वॉलेट डाउनलोड कर सकता है, किसी भी बैंक खाते से इसमें राशि डालकर तत्काल लेन-देन शुरू कर सकता है. यह वॉलेट वर्चुअल वीजा कार्ड का इस्तेमाल करता है, जिससे प्रयोगकर्ता देश में किसी भी वेबसाइट या मोबाइल एप्लिकेशन पर लेनदेन कर सकते हैं.

मोबाइल ऐप के प्रयोग ने ऑनलाईन बैंकिंग को और अधिक सरल बना दिया है, विशेषकर तब फिंगरप्रिंट को पासवर्ड के तौर पर इस्तेमाल किया जाये. परंतु अक्सर पूछा जाता है कि क्या यह सुरक्षित है? जी हाँ, यह नियमित पासवर्ड की तुलना में कहीं ज्यादा सुरक्षित है. क्योंकि पासवर्ड को अनुमानित किया जा सकता है अथवा हैक किया जा सकता है और आपकी धनराशि को इसके माध्यम, से चुराया जा सकता है, परंतु फिंगरप्रिंट को चुराना या हैक करना संभव नहीं है.

हर किसी के एक विशिष्ट फिंगरप्रिंट होते हैं, जिनकी नकल नहीं की जा सकती है, या जिन्हें चुराया नहीं जा सकता है. फिंगरप्रिंट के माध्यम से भुगतान का एक विशेष फायदा यह है कि आपको हर बार पासवर्ड याद रखने की या उसे बार-बार बदलने की जरूरत नहीं है, और अलग-अलग खातों के लिए अलगा अलग बहुत सारे पास वर्ड बनाने की भी जरूरत नहीं है. लोगों से छुपाकर पास वर्ड प्रविष्ट करने या कोई धोखे से पासवर्ड देख लेगा, इससे डरने की भी आवश्यकता नहीं है. भीड़ भरे क्षेत्र में भी आप मजे से लेन-देन कर सकते हैं, क्योंकि फिंगरप्रिंट चुराये जाने की कोई संभावना नहीं है. ईसा तरह से फिंगर प्रिंट के माध्यम से लेन-देन सर्वाधिक सुरक्षित सिद्ध होता है.

## **पॉकेट क्या है?**

यह एक वीजा पावर्ड ई-वालेट है, जिसे किसी भी बैंक का ग्राहक मोबाईल रिचार्ज करने के लिए, राशि अंतरित करने के लिए, खरीदारी कर भुगतान करने के लिए, बिलों का भुगतान करने के लिए और भी बहुत से उपयोगों में लाया जा सकता है. पॉकेट वालेट को एक प्लास्टिक शॉपिंग कार्ड के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है जिसे किसी वेबसाईट या रिटेल स्टोर पर शॉपिंग हेतु प्रयोग किया जा सकती है.

लगभग तीन वर्ष पूर्व पहला मोबाईल बैंकिंग ऐप बाज़ार में आया था, तब से अबतक लगातार तरक्की करते हुए मोबाईल बैंकिंग ऐप अत्यंत विशिष्ट हो चुके हैं और तरह-तरह की सुविधाएं ग्राहकों को उपलब्ध करा रहे हैं, ग्राहकों से फीडबैक और उनकी आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त कर इसमें निरंतर सुधार किया जा रहा है.

सर्वप्रथम 2014 में मोबाईल बनाने वाली कंपनी एप्पल ने अपने एस 5 मॉडल में होम बटन के साथ फिंगरप्रिंट स्कैनर के होने की घोषणा की थी और तत्पश्चात सभी iOS ऑपरेटिंग पद्धतियों में फिंगरप्रिंट के माध्यम से ही अधिप्रमाणन किए जाने की भी घोषणा की थी. यह तकनीक उपयोगकर्ताओं को सुविधाजनक तरीके से अपने फोन के सुरक्षा फीचर तक पहुँच प्रदान करती है.

पासवर्ड की तरह इसे कभी भी भूलना संभव नहीं है और सदैव यह आपके साथ ही रहते हैं. अपने मोबाईल बैंकिंग ऐप से केवल एक स्कैन दूर ही होते हैं, जिसमें कोई दूसरा आपकी अनुमति के बिना झांक भी नहीं सकता.



यह काफी सुरक्षित भी है, क्योंकि आपके फिंगरप्रिंट डेटा को कंप्यूटर या एप्पल मोबाईल फोन के एक सुरक्षित भाग (एंक्लेव- चिप पर सुरक्षा का एक तरीका) पर सुरक्षित किया जाता है.इसे अत्याधुनिक सुरक्षा पद्धति से सुरक्षित किया जाता है.

इसे किसी भी इंजीनीयर या हैकर द्वारा बदला या चुराया नहीं जा सकता है.इस डेटा को iCloud या ऑय किसी दूसरी जगह पर भी स्टोर नहीं किया जाता है की, जिसे वहाँ से चुरा लिया जाये.अर्थात यदि आप का फोना गुम भी हो जाये तो फिंगरप्रिंट प्रमाणन का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता.

फिलहाल इसे निम्नलिखित मोबाईल फोन के जरिये इस्तेमाल किया जा सकता है

- आईफोन (iPhone) 5S
- आईफोन/iPhone 6
- आईफोन/iPhone 6 Plus
- आईपैड/iPad 2
- आईपैड/iPad mini 3

एप्पल मोबाईल के आईफोन/iPhone 6 के बाद के सभी मॉडल में यह सुविधा उपलब्ध है. इसे एप्प स्टोर से या गूगल प्ले से mHPB app for iOS से डाऊनलोड कर प्रयोग किया जा सकता है. एन्ड्रॉईड मोबाईल फोन में यह सुविधा उपलब्ध होने में अभी थोड़ा समय एन्ड्रॉईड मोबाईल फोन में इसे आने में थोड़ा समय लगेगा परंतु आनेवाले समय में निश्चित रूप से यह मोबाईल बैंकिंग के क्षेत्र में क्रांतिकारी सिद्ध होगा.

**भाग (चार) कृषि आधारित बैंकिंग-प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, अनुबंधित व सह-व्युत्पत्ति कृषि**

**कृषि ऋण**

**प्रत्यक्ष वित्त**

1.1 अलग-अलग किसानों [(स्वयं सहायता समूहों या संयुक्त देयता समूहों अर्थात् अलग-अलग किसानों के समूहों सहित) बशर्ते बैंक ऐसे वित्त का अलग से ब्योरा रखते हों को कृषि तथा उससे संबद्ध कार्यकलापों (डेरी उद्योग, मत्स्य पालन, सुअर पालन, मुर्गी पालन, मधु-मक्खी पालन आदि) के लिए वित्त.

1.1.1 फसल उगाने के लिए अल्पावधि ऋण अर्थात् फसल ऋण. इसमें पारंपरिक / गैर-पारंपरिक बागान एवं फलोद्यान शामिल होंगे.

1.1.2 12 माह की अनधिक अवधि के लिए कृषि उपज (गोदाम रसीदों सहित) को गिरवी / दृष्टिबंधक रखकर 10 लाख रुपए तक के अग्रिम, भले ही, किसानों को फसल उगाने के लिए फसल ऋण दिए गए हों या नहीं.

1.1.3 कृषि और उससे संबद्ध कार्यकलापों से संबंधित उत्पादन और निवेश आवश्यकताओं हेतु वित्त पोषण के लिए कार्यशील पूंजी और मीयादी ऋण.

1.1.4 कृषि प्रयोजन हेतु जमीन खरीदने के लिए छोटे और सीमांत किसानों को ऋण .

1.1.5 गैर संस्थागत उधारदाताओं के प्रति ऋणग्रस्त आपदाग्रस्त किसानों को उचित संपार्श्विक अथवा सामूहिक जमानत पर ऋण.

1.1.6 ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तियों, स्वयं सहायता समूहों और को-आपरेटिवों द्वारा फसल काटने से पूर्व और फसल काटने के बाद किए गए कार्यकलापों जैसे छिड़काव, निराई (वीडिंग), फसल कटाई, श्रेणीकरण (ग्रेडिंग), छंट्टाई, प्रसंस्करण तथा परिवहन के लिए ऋण.

1.1.7 कृषि और संबद्ध कार्यकलापों हेतु प्रदत्त ऋण भले ही उधारकर्ता इकाई निर्यात कार्यों में सक्रिय है या नहीं. तथापि, आरआरबी द्वारा कृषि और संबद्ध कार्यकलापों हेतु प्रदान निर्यात ऋण को "कृषि क्षेत्र को निर्यात ऋण" शीर्ष के अंतर्गत अलग से रिपोर्ट किया जाए.

1.2 अन्य (जैसे कंपनियां, भागीदारी फर्मों तथा संस्थानों) को कृषि और उससे संबद्ध कार्यकलापों (डेरी उद्योग, मत्स्य पालन, सुअर पालन, मुर्गी पालन, मधु-मक्खी पालन आदि) के लिए ऋण

1.2.1 फसल काटने से पूर्व और फसल काटने के बाद किए गए कार्यकलापों जैसे छिड़काव, निराई (वीडिंग), फसल कटाई, श्रेणीकरण (ग्रेडिंग), छंटाई तथा परिवहन के लिए ऋण.

1.2.2 उपर्युक्त 1.1.1, 1.1.2, 1.1.3 और 1.2.1 में सूचीबद्ध प्रयोजनों के लिए प्रति उधारकर्ता एक करोड़ रुपए की कुल राशि तक वित्त पोषण.

1.2.3 कृषि और उससे संबद्ध कार्यकलापों के लिए प्रति उधारकर्ता को एक करोड़ रुपए की कुल राशि से अधिक एक-तिहाई ऋण.

### अप्रत्यक्ष वित्त

1.3 कृषि एवं उससे संबद्ध कार्यकलापों हेतु वित्त

1.3.1 कृषि और उससे संबद्ध कार्यकलापों के लिए प्रति उधारकर्ता एक करोड़ रुपए की कुल राशि के अलावा उपर्युक्त 1.2 में आनेवाली संस्थाओं को दो-तिहाई ऋण.

1.3.2 उपर्युक्त 1.1.6 के अलावा संयंत्र और मशीनरी में 10 करोड़ रुपए तक के निवेश वाली खाद्य और कृषि आधारित प्रसंस्करण इकाइयों को ऋण. डेरी खंड के अंतर्गत दिया जानेवाला ऋण जिससे प्रमुख रूप से छोटे / सीमांत / कृषकों / अत्यंत लघु इकाइयों को लाभ मिल सकता है, से डेरी कारोबार का विकास हो पाएगा.

1.3.3 (i) उर्वरक, कीटनाशक दवाइयों, बीजों आदि की खरीद और वितरण हेतु उधार.

(ii) पशु खाद्य, मुर्गी आहार आदि जैसे संबद्ध कार्यकलापों के लिए निविष्टियों की खरीद एवं संवितरण के लिए 40 लाख रुपए तक के स्वीकृत ऋण.

1.3.4 एग्री क्लिनिक और एग्री बिजनेस की स्थापना के लिए वित्त.

1.3.5 कृषि मशीनरी और औज़ारों के वितरण हेतु किराया खरीद योजना के लिए वित्त.

1.3.6 प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस), कृषक सेवा समितियों (एफएसएस) तथा बड़े आकारवाली आदिवासी बहु -उद्देशीय समितियों (एलएएमपीएस) के माध्यम से किसानों को ऋण.

1.3.7 सदस्यों के उत्पादनों का निपटान करने के लिए किसानों की सहकारी समितियों को ऋण.

1.3.8 सहकारिता प्रणाली के माध्यम से किसानों को अप्रत्यक्ष वित्त (बांडों और डिबेंचरों के निर्गमों में अभिदान से भिन्न).

1.3.9 भंडारण सुविधाओं का निर्माण और उन्हें चलाने कृषि उत्पाद / उत्पादनों के भंडारण के लिए बनाई गई कोल्ड स्टोरेज इकाइयों, (भंडारघर, बाज़ार प्रांगण, गोदाम और साइलो) चाहे वे कहीं भी स्थित हों, सहित के लिए ऋण. यदि स्टोरेज इकाई को लघु उद्योग इकाई / व्यष्टि या लघु उद्यम के रूप में पंजीकृत किया गया हो, तो ऐसी इकाइयों को दिए गए ऋण को लघु उद्यम क्षेत्र को ऋण के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाएगा.

1.3.10 कस्टम सेवा इकाइयों को अग्रिम, जिनका प्रबंध व्यक्तियों, संस्थाओं या ऐसे संगठनों द्वारा किया जाता है, जिनके पास ट्रैक्टरों, बुलडोज़रों, कुआं खोदने के उपकरणों, श्रेषर, कंबाइनस आदि का दस्ता है और वे किसानों का काम ठेके पर करते हों.

1.3.11 द्रव सिंचाई / छिड़काव सिंचाई प्रणाली / कृषि - मशीनों के विक्रेताओं को निम्नलिखित शर्तों पर दिया गया वित्त, चाहे वे कहीं भी कार्यरत हों –



(क) विक्रेता केवल ऐसी वस्तुओं का कारोबार करता हो अथवा यदि वह अन्य वस्तुओं का कारोबार करता हो तो ऐसी वस्तुओं के लिए अलग और स्पष्ट अभिलेख रखता हो.

(ख) प्रत्येक विक्रेता के लिए निर्धारित उच्चतम सीमा 30 लाख रुपए तक का पालन किया जाए.

1.3.12 किसानों को ऋण देने, निविष्टियों की आपूर्ति करने तथा अलग-अलग किसानों / स्वयं सहायता समूहों / संयुक्त देयता समूहों से उत्पादन खरीदने हेतु आढतियों (ग्रामीण अर्धशहरी क्षेत्रों के बाज़ारों / मण्डियों में कार्यरत कमीशन एजेंट) को ऋण.

1.3.13 सामान्य क्रेडिट कार्ड (जीसीसी) अंतर्गत सामान्य प्रयोजनों के लिए ऋण के अंतर्गत क्रेडिट का बकाया.

1.3.14 एनजीओ /एमएफआई को आगे अलग-अलग किसानों या उनके एसएचजी/जेएलजी को उधार देने के लिए प्रदत्त ऋण.

1.3.15 ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में "नो-फ्रिल्स" खातों की जमानत पर प्रदान 25,000 रुपए (प्रति खाता) तक के ओवरड्राफ्ट.

1.4 कृषि को प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष वित्त के रूप में वर्गीकरण हेतु पात्र ऋण.

1.4.1 किसान क्रेडिट कार्ड के अंतर्गत दिए गए क्रेडिट को कृषि के लिए प्रत्यक्ष वित्त के रूप में माना जाएगा.

1.5 कृषि के लिए प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष वित्त के रूप में वर्गीकरण के लिए अपात्र ऋण.

1.5.1 स्वर्ण आभूषणों की जमानत पर व्यक्तियों को या अन्य संस्थाओं को आगे ऋण देने के प्रयोजन हेतु एनबीएफसी को मंजूर किए गए ऋण, एनबीएफसी द्वारा आरंभ की गई जमानती आस्तियों में बैंकों द्वारा किए गए निवेश, जहाँ अंतर्निहित आस्तियां स्वर्ण आभूषणों की जमानत पर ऋण तथा एनबीएफसी से स्वर्ण ऋण संविभाग का क्रय / विक्रय-पत्र हों.

## **सूक्ष्म (माइक्रो) और लघु उद्यम**

### **प्रत्यक्ष वित्त**

#### **2.1.1 विनिर्माण उद्यम**

##### **(क) व्यष्टि (विनिर्माण) उद्यम**

ऐसे उद्यम जो सामानों के विनिर्माण / उत्पादन, प्रसंस्करण या परिरक्षण के कार्य में लगे हैं और जिनका संयंत्र और मशीनों (लघु उद्योग मंत्रालय द्वारा दिनांक 5 अक्टूबर 2006 की उनकी अधिसूचना सं. एसओ. 1722 (ई) में उल्लिखित वस्तुओं तथा भूमि और भवन को छोड़कर मूल लागत) में निवेश 25 लाख रुपए से अधिक न हो चाहे इकाई कहीं भी स्थित हो.

##### **(ख) लघु (विनिर्माण) उद्यम**

ऐसे उद्यम जो सामानों के विनिर्माण / उत्पादन, प्रसंस्करण या परिरक्षण के कार्य में लगे हैं और जिनका संयंत्र और मशीनों [ 2.1.1 (क) में उल्लिखित वस्तुओं तथा भूमि और भवन को छोड़कर मूल लागत] में निवेश 25 लाख रुपए से अधिक हो, लेकिन 5 करोड़ रुपए से अधिक न हो, चाहे इकाई कहीं भी स्थित हो.

#### **2.1.2 सेवा उद्यम**

##### **(क) व्यष्टि (सेवा) उद्यम**

ऐसे उद्यम जो सेवाएं उपलब्ध / प्रदान करने में लगे हैं और जिनका उपस्करों (भूमि और भवन, फर्नीचर और जुड़नार तथा अन्य वस्तुएं जो प्रदान की गई सेवा से सीधे संबद्ध न हों या जैसाकि एमएसएमडी अधिनियम, 2006 में अधिसूचित किया गया हो, को छोड़कर मूल लागत) में निवेश 10 लाख रुपए से अधिक न हो, चाहे इकाई कहीं भी स्थित हो.

**(ख) लघु (सेवा) उद्यम**

ऐसे उद्यम जो सेवाएं उपलब्ध / प्रदान करने में लगे हैं और जिनका उपस्करों [भूमि और भवन, फर्नीचर और जुड़नार तथा 2.1.2 (क) में उल्लिखित ऐसी वस्तुओं को छोड़कर मूल लागत] में निवेश 10 लाख रुपए से अधिक हो, लेकिन 2 करोड़ रुपए से अधिक न हो चाहे इकाई कहीं भी स्थित हो.

(ग) (लघु और व्यष्टि (सेवा) उद्यमों में लघु सड़क तथा जल परिवहन परिचालक, छोटे कारोबार, व्यावसायिक और स्व-नियोजित व्यक्ति तथा कार्यकलापों में लगे अन्य सेवा उद्यम शामिल होंगे अर्थात् प्रबंध सेवाओं सहित परामर्श सेवाएं, जोखिम और बीमा प्रबंधन में संमिश्र ब्रोकर सेवाएं, पॉलीसीधारक के मेडिकल बीमा दावों के लिए थर्ड पार्टी प्रशासन सेवाएं) टीपीए(, सीड ग्रेडिंग सेवाएं, ट्रेनिंग - कम - इन्क्यूबेटर सेवाएं, शैक्षणिक संस्थाएं, कानूनी व्यवहार अर्थात् विधि सेवाएं, खुदरा व्यापार, चिकित्सकीय उपकरणों) बिल्कुल नए( में व्यापार, प्लेसमेंट और प्रबंध परामर्शी सेवाएं, विज्ञापन एजेंसी और प्रशिक्षण केंद्र तथा उपकरणों (भूमि और भवन और फर्नीचर, फिटिंग्स और ऐसी अन्य मदें जो दी गई सेवाओं से सीधे जुड़ी न हो, या एमएसएमइडी अधिनियम, 2006 के अंतर्गत अधिसूचित मदों को छोड़कर मूल लागत) (अर्थात् क्रमशः 10 लाख रुपए और 2 करोड़ रुपए से अधिक न हो) में निवेश के संबंध में लघु और व्यष्टि (सेवा) उद्यम की परिभाषा के अनुरूप हो.

(घ) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा व्यष्टि और लघु उद्यमों (एमएसई) (उत्पादन एवं सेवाएं) को प्रदान ऋण, प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकरण हेतु पात्र हैं बशर्ते ऐसे उद्यम एमएसएमइडी अधिनियम, 2006 में निहित एमएसई क्षेत्र की परिभाषा पूरी करता हो भले ही उधारकर्ता इकाई निर्यात या अन्य में सक्रिय है या नहीं. तथापि, बैंकों द्वारा एमएसई को प्रदान निर्यात ऋण "व्यष्टि और लघु उद्योग क्षेत्र को निर्यात ऋण" शीर्ष के अंतर्गत अलग से रिपोर्ट किया जाए.

### 2.1.3 खादी ग्राम उद्योग क्षेत्र (केवीआई)

परिचालनों के आकार, अवस्थिति तथा संयंत्र और मशीनरी में मूल निवेश की राशि पर ध्यान दिए बगैर खादी-ग्राम उद्योग क्षेत्र की ईकाइयों को प्रदान सभी अग्रिम.

### अप्रत्यक्ष वित्त

2.2 लघु (विनिर्माण तथा सेवा) उद्यम क्षेत्र को अप्रत्यक्ष वित्त के अंतर्गत निम्नलिखित को दिए गए ऋण शामिल होंगे :

2.2.1 ऐसे व्यक्ति जो कारीगरों, ग्राम एवं कुटीर उद्योगों को निविष्टियों की आपूर्ति तथा उनके उत्पादनों के विपणन के कार्य में विकेंद्रित क्षेत्र की सहायता कर रहे हों.

2.2.2 विकेंद्रित क्षेत्र में उत्पादकों अर्थात् कारीगरों, ग्राम एवं कुटीर उद्योगों की 'सहकारी समितियों (को-ऑपरेटिवज) को अग्रिम.

### **व्यष्टि (माइक्रो) ऋण**

3.1 बैंकों द्वारा सीधे या स्वयं सहायता समूह / संयुक्त देयता समूह तंत्र के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रति उधारकर्ता 50,000 रुपए से अनधिक के लिए गए बहुत छोटी राशि के ऋण.

3.2 अनौपचारिक क्षेत्र से ऋण ग्रस्त गरीबों को ऋण

आपदाग्रस्त व्यक्तियों (किसानों को छोड़कर) को गैर संस्थागत उधारदाताओं से लिया गया ऋण समय से पूर्व चुकाने के लिए, उचित संपार्श्विक अथवा सामूहिक जमानत पर दिया गया ऋण प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र के अंतर्गत वर्गीकरण के लिए पात्र होगा.



## **शिक्षण**

4.1 अलग-अलग व्यक्तियों को शिक्षण के प्रयोजनार्थ भारत में अध्ययन के लिए 10 लाख रुपए तक तथा विदेश में अध्ययन के लिए 20 लाख रुपए तक स्वीकृत ऋण.

शैक्षिक संस्थाओं को दिए गए ऋण माइक्रो और लघु (सेवा) उद्यम के अंतर्गत प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र को अग्रिम के रूप में वर्गीकरण के लिए पात्र होंगे बशर्ते वे एमएसएमडी अधिनियम, 2006 के प्रावधान पूरा करते हों.

## **आवास**

5.1 अलग-अलग व्यक्तियों को प्रत्येक परिवार एक आवास इकाई खरीदने / निर्माण करने हेतु, चाहे जो भी स्थान हो, 25 लाख रुपए तक का ऋण जिसमें बैंकों द्वारा उनके अपने कर्मचारियों को प्रदान ऋण शामिल नहीं होंगे.

5.2 परिवारों को उनके क्षतिग्रस्त आवास इकाइयों की मरम्मत के लिए ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में 1 लाख रुपए और शहरी तथा महानगर क्षेत्रों में 2 लाख रुपए का दिया गया ऋण.

5.3 किसी भी सरकारी एजेंसी को आवास इकाई के निर्माण अथवा गंदी बस्तियों को हटाने और गंदी बस्तियों में रहनेवालों के पुनर्वास के लिए प्रदान वित्तीय सहायता, जिसकी अधिकतम सीमा 5 लाख रुपए प्रति आवास इकाई से अधिक न हो.

5.4 किसी गैर-सरकारी एजेंसी को, जिसे आवास इकाई के निर्माण / पुनर्निर्माण अथवा गंदी बस्तियों को हटाने और गंदी बस्तियों में रहनेवालों के पुनर्वास के लिए पुनर्वित्त प्रदान किए जाने हेतु राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी) द्वारा अनुमोदित किया गया हो, जिसके ऋण घटक की अधिकतम सीमा 10 लाख रुपए प्रति आवास इकाई होगी.

## अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिए राज्य प्रायोजित संगठन

अनुसूचित जातियों / अनुसूचित जनजातियों के लिए राज्य द्वारा प्रायोजित संगठनों को अपने हिताधिकारियों के लिए निविष्टियों की खरीद और आपूर्ति तथा / अथवा उनके उत्पादनोंके विपणन के विशिष्ट प्रयोजन के लिए स्वीकृत अग्रिम.

### कमज़ोर वर्ग

प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र के अंतर्गत कमज़ोर वर्गों में निम्नलिखित शामिल हैं :

(क) 5 एकड़ या इससे कम जोत वाले छोटे और सीमान्त किसान, भूमिहीन किसान,पट्टेदार किसान और बंटवाई पर खेती करनेवाले काशतकार.

(ख) दस्तकार, ऐसे ग्रामीण और कुटीर उद्योग जिनकी वैयक्तिक ऋण सीमा 50,000/- रु. से अधिक न हो .

(ग) स्वर्ण जयन्ती ग्रामस्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) अब राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के हिताधिकारी

(घ) अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति

(ङ) विभेदक ब्याज दर योजना (डीआरआइ) के हिताधिकारी

(च) स्वर्णजयन्ती शहरी रोजगार योजना (एसजेएसआरवाय) के हिताधिकारी

(छ) स्वच्छकारों की पुनर्वास योजना (एसआरएमएस) के हिताधिकारी

(ज) स्वयं सहायता समूहों को देय अग्रिम

(झ) आपदाग्रस्त गरीबों को अनौपचारिक क्षेत्र से लिए ऋण समय से पूर्व चुकाने हेतु उचित संपार्श्विक अथवा सामूहिक जमानत पर दिया गया ऋण.

उन राज्यों में जहां अल्पसंख्यक के रूप में अधिसूचित कोई समुदाय वास्तव में मेजोरिटी में है वहां मद (ज) केवल अन्य अधिसूचित समुदायों को कवर करेगी.ये राज्य / संघशासित क्षेत्र हैं - जम्मू और कश्मीर, पंजाब, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड और लक्षद्वीप.

### अनुबंधित कृषि

#### भूमिका

निर्वाह और वाणिज्यिक दोनों फसलों के लिए सदियों से देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की अनुबंध कृषि की व्यवस्था प्रचलित है। गन्ना, कपास, चाय, कॉफी आदि वाणिज्यिक फसलों में हमेशा से अनुबंध कृषि या कुछ अन्य रूपों को शामिल किया है। यहां तक कि कुछ फल फसलों और मत्स्य पालन के मामले में अक्सर अनुबंध कृषि समझौते किए जाते हैं, जो मुख्य रूप से इन वस्तुओं के सट्टा कारोबार से जुड़े होते हैं। आर्थिक उदारीकरण के मद्देनजर अनुबंध कृषि की अवधारणा का महत्व बढ़ रहा है, विभिन्न राष्ट्रीय या बहुराष्ट्रीय कंपनियों प्रौद्योगिकियां और पूंजी उपलब्ध कराने के द्वारा विभिन्न बागवानी उत्पादों के विपणन के लिए किसानों के साथ अनुबंध में प्रवेश कर रहे हैं।

आम तौर पर अनुबंध कृषि को पूर्व निर्धारित कीमतों पर, उत्पादन और आगे के समझौतों के अंतर्गत कृषि उत्पादों की आपूर्ति के लिए किसानों और प्रसंस्करण और/या विपणन कंपनियों के बीच एक समझौते के रूप में परिभाषित किया गया है। इस व्यापक ढांचे के भीतर, अनुबंध में किए गए प्रावधानों की गहराई और जटिलता के अनुसार संविदात्मक व्यवस्था की तीव्रता के आधार पर अनुबंध कृषि के विभिन्न प्रकार प्रचलित हैं। कुछ विपणन पहलू तक सीमित हो सकते हैं या कुछ में प्रायोजक द्वारा संसाधनों की आपूर्ति और उत्पादकों की ओर से समझौते के द्वारा फसल प्रबंधन विनिर्देशों का पालन करने के लिए विस्तारित हो सकते हैं। इस तरह की व्यवस्था का आधार किसानों की तरफ से क्रेता को मात्रा और निर्धारित गुणवत्ता के मानकों पर एक विशेष वस्तु प्रदान करने की प्रतिबद्धता और प्रायोजक की ओर से किसान के उत्पादन का समर्थन और वस्तु की खरीद करने की एक प्रतिबद्धता है।

#### अनुबंध कृषि की आवश्यकता

अनुबंध कृषि के साधनों ने कृषि क्षेत्र की निम्नलिखित चुनौतियों को संबोधित किया है -

- खंडित सम्पत्ति, बाजार के बिचौलियों की लंबी श्रृंखला।
- खरीदारों की आवश्यकताओं के बारे में निर्माता की अज्ञानता - विपणन अवधारणा
- कम कृषि मशीनीकरण

- पूंजी और संकट विक्री की अपर्याप्तता
- पैमाने की अर्थव्यवस्था, कॉर्पोरेट प्रबंधन, उच्च लेनदेन लागत, ऊर्ध्वाधर एकीकरण आदि का अभाव

### संविदात्मक व्यवस्था के कारक

संविदात्मक व्यवस्था निम्नलिखित तीन कारकों पर निर्भर करती है-

- बाजार प्रावधान- भविष्य की विक्री के नियम और शर्तें- मूल्य, गुणवत्ता, मात्रा और समय आदि
- संसाधनों का प्रावधान- जमीन तैयार करने और तकनीकी सलाह सहित चयनित आदान, विस्तार या साख (क्रेडिट)
- प्रबंधन विनिर्देश- उत्पादक द्वारा सिफारिश किए गए उत्पादन के तरीके, आदानों के प्रशासन, खेती और फसल कटाई के विनिर्देशों का पालन करने के लिए सहमत होता है.

### अनुबंध कृषि के लिए उपयुक्त फसलें

- नश्वर (जल्दी खराब होने वाली) - लंबी अवधि के लिए भंडारण नहीं किया जा सकता और तुरंत बाजार खोजने की आवश्यकता होती है.
- भारी- परिवहन करना महंगा
- बागान की फसलें- उत्पादकों (उगाने वालों) सम्पत्ति (एस्टेट) के बागान को छोड़ प्रसंस्करण करने वाले के साथ संबंध में बंद होते हैं.
- प्रसंस्करण योग्य- उत्पादकों और प्रसंस्करण करने वालों के बीच प्रसंस्करण निर्मित अंतर-निर्भरता की आवश्यकता. शोषण के लिए असुरक्षित.
- गुणवत्ता में बदलाव- गुणवत्ता में बदलाव करने के लिए उत्तरदायी फसलें
- अपरिचित- सफेद मूसली, अश्वगंधा, आदि जैसे औषधीय पौधे और खीरा जैसे नए उत्पादों के लिए बाजार



### अनुबंध कृषि के केन्द्रीकृत मॉडल के मॉडल

इस मॉडल में एक केन्द्रीकृत प्रसंस्कारक अनेक छोटे किसानों से खरीदारी करता है। यह मॉडल मुख्य रूप से पेड़ की फसलों, वार्षिक फसलों, मुर्गी पालन, डेयरी आदि में प्रयोग किया जाता है, जिनके उत्पादों को अक्सर एक उच्च स्तर के प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है। यह कोटा आवंटन और कठोर गुणवत्ता नियंत्रण के साथ लंबवत रूप से समन्वित है, उत्पादन में प्रायोजकों की भागीदारी में आदान के कम से कम प्रावधान से लेकर चरम तक की भिन्नता होती है जिसमें प्रायोजक नियंत्रण करता है।

### न्यूक्लियस एस्टेट मॉडल

यह केन्द्रीकृत मॉडल का एक संशोधित संस्करण है, जहां प्रायोजक एक केन्द्रीय संपत्ति या बागान का प्रबंधन करता है, केन्द्रीय संपत्ति का उपयोग आमतौर पर प्रसंस्करण संयंत्र के लिए उत्पादन के माध्यम से गारंटी करने के लिए किया जाता है, लेकिन कभी-कभी केवल अनुसंधान और प्रजनन प्रयाजनों के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसका अक्सर सामग्री और प्रबंधन आदानों के एक महत्वपूर्ण प्रावधान को शामिल कर पुनर्वास या स्थानांतरण योजनाओं के साथ प्रयोग किया जाता है।

### बहुभागीय मॉडल

इस मॉडल में, सांविधिक निकायों के साथ कई संगठनों की भागीदारी एक आम सुविधा है। मॉडल को केन्द्रीकृत या नाभिक एस्टेट मॉडल से, अर्थात् किसानों और सहकारी समितियों या एक वित्तीय संस्था की भागीदारी के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

### अनौपचारिक मॉडल

इसे आमतौर पर एक मौसमी आधार पर, अनौपचारिक उत्पादन अनुबंध में शामिल व्यक्तिगत उद्यमियों या छोटी कंपनियों द्वारा वर्णित किया जा सकता है। इसे अक्सर अनुसंधान और विस्तार जैसी सरकारी समर्थन सेवाओं की आवश्यकता है। अतिरिक्त अनुबंधीय विपणन के अधिक जोखिम इसकी विशेषता है।

### मध्यस्थ मॉडल

इस मॉडल में, प्रायोजक किसानों के साथ बिचौलियों को उप-कडी में शामिल करता है. इसमें प्रायोजक के उत्पादन और गुणवत्ता पर नियंत्रण खो सकते हैं और कई बार किसानों को दिए गए अग्रिम भुगतान के नष्ट होने का भी खतरा रहता है. अनचाहे बिचौलियों से किसानों को नुकसान हो सकता है.

### एक लाभदायक बाजार का मॉडल

प्रायोजक को नियोजित उत्पादन के लिए एक बाजार की पहचान करना और लंबी अवधि के मुनाफे को सुनिश्चित करना आवश्यक होगा. किसानों को वैकल्पिक गतिविधियों से मिलने वाले लाभ की तुलना में संभावित लाभ अधिक आकर्षक लगाना चाहिए. उन्हें जोखिम का स्तर स्वीकार्य लगाना चाहिए और संभावित लाभों को यथार्थवादी उपज के अनुमान के आधार पर प्रदर्शित करना चाहिए.

भौतिक और सामाजिक वातावरण फसल उत्पादन के लिए उपयुक्त होने चाहिए, उपयोगिताएं और संचार खेती और कृषि प्रसंस्करण इकाइयों दोनों के लिए अनुकूल होने चाहिए. भूमि और निरंतर उत्पादन के लिए निर्बाध कार्यकाल की उपलब्धता अनिवार्य है. आदानों की उपलब्धता और जानकारी के सूत्रों को सुनिश्चित करने की जरूरत है. सामाजिक विचारों, सांस्कृतिक दृष्टिकोण और प्रथाओं का किसानों के दायित्वों और प्रबंधन के लक्ष्यों के साथ संघर्ष नहीं होना चाहिए.

### सुधार और सरकारी समर्थन की स्थिति - अनुबंध कृषि के लिए नियामक भूमिका –मुख्य बातें

- अनुबंध कृषि की सफलता मुख्य रूप से सरकार की सहायक-सह-नियामक भूमिका पर निर्भर करती है.
- सभी हितधारकों के हितों का ध्यान रखते हुए अनुबंध और अन्य संबंधित कानूनों के लिए उपयुक्त कानूनों को अधिनियमित करने जरूरत है.
- सरकारों के नियमों के संभावित अनपेक्षित परिणाम के बारे में पता होना चाहिए और अत्यधिक विनियमन की प्रवृत्ति से बचना चाहिए.

- मॉडल एक्ट, एपीएमसीएस के साथ अनुबंध के पंजीकरण द्वारा अनुबंध कृषि के लिए सुविधा प्रदान करता है, बाजार परिसर के बाहर सीधे किसानों से अनुबंधित उपज की खरीद की अनुमति देता है और यह अधिनियम में ऐसी खरीद के लिए बाजार शुल्क से छूट का प्रावधान है.
- अब तक बाजार शुल्क की छूट को छोड़कर 16 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इस प्रावधान को लागू किया गया है.
- आन्ध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मिजोरम, नगालैंड, उड़ीसा, राजस्थान, सिक्किम, उत्तराखंड और त्रिपुरा ने अनुबंध कृषि और निवारण तंत्र विवाद के पंजीकरण के लिए एजेंसियों के पद पर नियुक्ति प्रदान की है.
- केवल 11 राज्यों ने अनुबंध समझौतों के अंतर्गत खरीद पर बाजार शुल्क की छूट दी है. कर्नाटक राज्य ने अनुबंध कृषि के अंतर्गत उत्पाद की खरीद पर केवल 30 प्रतिशत बाजार शुल्क की छूट दी है.
- आंध्र प्रदेश में एपीएमसी एक्ट का कहना है कि खरीददारों को अनुबंधित उपज के पूरे मूल्य के लिए बैंक गारंटी का प्रस्तुत करना आवश्यक है.
- प्रमुख चिंताओं में से एक यह है कि, एपीएमसी जो बाजार के दूरदराज के इलाकों में प्रमुख खिलाड़ी है, वही अनुबंध कृषि के लिए पंजीकरण प्राधिकारी है.
- मध्यस्थता प्रक्रिया में समय की बाध्यता नहीं है, जो विवाद निपटान तंत्र में देरी की आशंका उत्पन्न करता है. एपीएमसी की बजाय किसी अन्य को पंजीकरण प्राधिकरण बनाया जाना चाहिए.
- नागरिक अधिकारियों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व के साथ जिले में चाहिए या एपीएमसी स्तर पर विवाद निवारण प्राधिकरण गठन किया जाना चाहिए.

अनुबंध कृषि के संबंध में सुधारों को बढ़ावा देने के लिए राज्य मंत्रियों, कृषि विपणन के प्रभारियों की समिति की सिफारिशें-

- अनुबंध करने वाले पक्षों को प्रोत्साहित करना और पंजीकरण की प्रक्रिया को तर्कसंगत और सरल बनाना
- अनुबंध कृषि का पंजीकरण करने के लिए जिला स्तर का प्राधिकरण स्थापित किया जा सकता है और इसके अंतर्गत बाजार शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए.
- अनुबंध कृषि के अंतर्गत पंजीकरण/विवाद निपटान के लिए एपीएमसी को प्राधिकरण नहीं बनाया जाना चाहिए और विवादों को पंद्रह दिनों के भीतर निपटाया जा सकता है और अपील की डिक्री की राशि अनुबंध कृषि के अंतर्गत खरीदे गए सामान की कीमत के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए. अपील का निपटारा 15 दिनों के भीतर किया जाना चाहिए.
- अगर किसानों की उपज खरीदने के दिन ही उन्हें भुगतान किया जाता है, तो निजी प्रायोजक/संचालक (ऑपरेटर) से किसी शोधन क्षमता प्रमाणपत्र/बैंक गारंटी की मांग नहीं की जानी चाहिए.

### खाद्य प्रसंस्करण

खाद्य प्रसंस्करण का संबंध प्रागैतिहासिक काल से है जब अपरिष्कृत प्रसंस्करण में काटना, किण्वन, धूप में सुखाना, नमक में परिरक्षण और विभिन्न प्रकार से पकाना (जैसे भूनना, धुएं में पकाना, भाप में पकाना और अवॉन में बेकिंग) शामिल था. डिब्बाबंदी पद्धतियों के प्रवर्तन तक, नमक-परिरक्षण विशेष रूप से योद्धाओं और नाविकों के आहार संबंधी खाद्य पदार्थों के लिए सामान्य था.

इन तरीकों के अस्तित्व के साक्ष्य प्राचीन ग्रीक, खल्दी, मिस्र और रोमन सभ्यताओं और साथ ही साथ, यूरोप, उत्तर तथा दक्षिणी अमेरिका और एशिया के लेखन में मौजूद हैं.



ये आजमाए और जांचे गए तकनीक औद्योगिक क्रांति के आगमन तक अनिवार्यतः एक जैसे बने रहे. तैयार-आहार के उदाहरण कॉर्निश पेस्टी और हैगिस जैसे औद्योगिक क्रांति के पूर्व से ही मौजूद रहे हैं.

19वीं और 20वीं सदी में आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी बड़े पैमाने पर सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित किया गया. 1809 में एम्पर्ट निकोलस ने फ्रांसिसी फौज को आहार की आपूर्ति के लिए बैक्यूम बॉटलिंग तकनीक का आविष्कार किया और इसने पीटर ड्युरेंड द्वारा 1810 में टीन के डिब्बे बनाने और फिर डिब्बाबंदी के विकास में योगदान दिया.

हालांकि शुरू में महंगा और डिब्बों में प्रयुक्त सीसे की वजह से कुछ हद तक खतरनाक रहा, पर बाद में डिब्बाबंद माल दुनिया भर में मुख्य उत्पाद बन गया. 1862 में लुई पाश्चर द्वारा खोजा गया पास्तुरीकरण, भोजन के सूक्ष्म-जैविक परिरक्षण को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण विकास रहा है.

20वीं शताब्दी में, द्वितीय विश्व युद्ध, अंतरिक्ष दौड़ और विकसित देशों में (संयुक्त राज्य अमेरिका सहित) उपभोक्ता समाज की तरक्की ने स्प्रे शुष्कन, रस सांद्रण, हिम शुष्कन और कृत्रिम मिठास, रंजक कारकों के प्रवर्तन तथा सोडियम बेज़ोएट जैसे परिरक्षकों के विकास द्वारा खाद्य प्रसंस्करण की वृद्धि में योगदान दिया. 20वीं सदी के अंत में शुष्क तत्काल सूप, पुनर्गठित फल और जूस, स्वयं भोजन तैयार करने और MRE फुड राशन जैसे उत्पाद विकसित किए गए. पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में, 20वीं सदी के उत्तरार्ध में सुविधा के अनुसरण में वृद्धि देखी गई, खाद्य संसाधित्रों ने अपने उत्पाद विशेष रूप से कामकाजी मध्यमवर्गीय महिलाओं को बेचने पर ध्यान केंद्रित किया. जमे हुए खाद्य पदार्थों ने (अक्सर जिसका श्रेय क्लैरेंस बर्ड्सआई को दिया जाता है) गाढे रसों और "टी.वी. रात्रिभोज" की बिक्री में अपनी सफलता हासिल की. संसाधित्रों ने युद्धोत्तर जनता को आकर्षित करने के लिए गोचर समय के मूल्य का उपयोग किया और आज यही आकर्षण सुविधाजनक खाद्यपदार्थों की सफलता में योगदान दे रहा है.

### खाद्य प्रसंस्करण के लाभ

व्यक्तिगत तौर पर कच्ची सामग्रियों से आहार उत्पादन की तुलना में, खाद्य पदार्थों का बहुमात्र-उत्पादन समग्रतः बहुत सस्ता होता है. इसलिए, प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्माताओं और आपूर्तिकर्ताओं के लिए एक भारी लाभ की संभावना मौजूद रहती है. व्यक्तिगत रूप से सुविधा में लाभ देखा जा सकता है, लेकिन शायद ही कभी घर पर तैयार किए जाने वाले आहार की तुलना में, प्रसंस्कृत खाद्य का प्रयोग करने में कोई प्रत्यक्ष आर्थिक लागत लाभ पाया गया. खराब क्वालिटी की सामग्री और कभी-कभी संदिग्ध प्रसंस्करण और परिरक्षण तरीके व्यक्तिगत उपभोक्ताओं द्वारा अर्जित समग्र लाभ को बहुत कम कर देते हैं.

ज्यादा से ज्यादा लोग खाद्यान्न उपजाई और उत्पादित की जाने वाली जगहों से बहुत दूर शहरों में रहते हैं. कई परिवारों में वयस्क घर से दूर काम पर जाते हैं और इसलिए ताज़ी सामग्री के साथ खाना पकाने के लिए उनके पास कम समय रहता है. खाद्य उद्योग ऐसे उत्पादों की पेशकश करता है, जो विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करती है: छिले हुए आलू जिन्हें घर पर केवल उबालना पड़ता है से लेकर पूरी तरह से तैयार भोजन तक, जिसे बस माइक्रोवेव में गर्म करने की ज़रूरत होती है.

खाद्य प्रसंस्करण के लाभों में शामिल है जीव-विष हटाना, परिरक्षण, आसान विपणन और वितरण कार्य और खाद्य अनुकूलता में वृद्धि. इसके अलावा, यह कई खाद्य पदार्थों की मौसमी उपलब्धता को बढ़ाता है, दूरस्थ प्रदेशों में भी, खराब होने वाले बढ़िया खाद्य पदार्थों के परिवहन को सक्षम बनाता है और कई प्रकार के खाद्य पदार्थों को खराब करने वाले और रोगमूलक सूक्ष्म-जीवियों को निष्क्रिय करते हुए पदार्थों को खाने के लिए सुरक्षित रखता है. आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण तकनीकों के बिना आधुनिक सुपरमार्केट संभव नहीं होते, लंबे समय की यात्राएं संभव नहीं होतीं और सैन्य अभियान का निष्पादन काफ़ी महंगा और कठिन होता.

आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण एलर्जी, मधुमेह वाले लोगों और कुछ सामान्य खाद्य तत्वों का सेवन न कर पाने वाले लोगों के लिए जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार करता है. खाद्य प्रसंस्करण विटामिन जैसे अतिरिक्त पोषक तत्वों को भी जोड़ सकता है.

प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ अक्सर ताज़े खाद्य पदार्थों की तुलना में जल्दी खराब होने के प्रति कम अतिसंवेदनशील हैं और स्रोत से उपभोक्ता तक लंबी दूरी के परिवहन के लिए उपयुक्त हैं। ताज़ा सामग्री द्वारा, जैसे कि ताज़ी फसल और कच्चा मांस, गंभीर बीमारियां फैलाने वाले रोगमूलक सूक्ष्म-जीवियों (उदा. साल्मोनेला) को आश्रय देने की अधिक संभावना है।

### खाद्य प्रसंस्करण की कमियां

सामान्यतः ताज़े खाद्य पदार्थ में, जिसे सिवाय धोकर और रसोईघर में सरल रूप से तैयार नहीं किया गया है, खाद्य उद्योग द्वारा संसाधित उत्पाद की तुलना में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले विटामिन, तंतु और खनिज पदार्थों की अधिक मात्रा प्रत्याशित की जा सकती है। उदाहरण के लिए, गर्मी से विटामिन सी नष्ट हो जाता है और इसलिए ताज़े फलों की तुलना में डिब्बा-बंद फलों में विटामिन सी की मात्रा कम होती है।

खाद्य प्रसंस्करण खाद्य पदार्थों के पौष्टिक मूल्य को घटाता है और ऐसे खतरों को प्रवर्तित करता है, जिनका प्राकृतिक तौर पर पाए जाने वाले उत्पादों में सामना नहीं होता है। अक्सर प्रसंस्करित खाद्य पदार्थों में स्वाद और संरचना-वर्धक कारकों जैसे खाद्य योजक मिलाए जाते हैं, जिनका पोषण मूल्य कम या बिल्कुल नहीं हो सकता है, या वे अस्वास्थ्यकर हो सकते हैं। वाणिज्यिक तौर पर उपलब्ध उत्पादों के 'शेल्फ़-जीवन' को विस्तृत करने के लिए प्रसंस्करण के दौरान नाइट्राइट या सल्फ़ाइट जैसे परिरक्षकों को जोड़ा या तैयार किया जा सकता है, जिनका स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। कम लागत वाली सामग्री के उपयोग से, जो प्राकृतिक सामग्री के गुणों का अनुकरण करती हैं (उदा. अधिक महंगे प्राकृतिक संतृप्त वसा या शीत-दाब वाले तेलों की जगह सस्ते रासायनिक तौर पर गाढ़ा किए गए वनस्पति तेल) गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं सामने आई हैं, लेकिन सस्ते दाम और स्थानापन्न सामग्री के प्रभाव के बारे में उपभोक्ताओं में जागरूकता की कमी के कारण, अभी भी व्यापक रूप से इनका इस्तेमाल होता है।

प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में असंसाधित खाद्य पदार्थों की तुलना में अन्य आवश्यक पोषक तत्वों से अधिक कैलोरी अनुपात होता है, जो लक्षण "खाली कैलोरी" के रूप में संदर्भित होता है।

सुविधा और कम लागत के लिए उपभोक्ता की मांग को संतुष्ट करने के लिए उत्पादित तथाकथित जंक फूड, अक्सर बड़े पैमाने पर उत्पादित प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद होते हैं।

क्योंकि प्रसंस्कृत खाद्य सामग्री अक्सर उच्च मात्रा में उत्पादित और मूल्य वर्धित खाद्य निर्माताओं के बीच व्यापक रूप से वितरित की जाती है, व्यापक रूप से वितरित बुनियादी सामग्री का उत्पादन करने वाले 'निचले-स्तर' की विनिर्माण सुविधाओं में स्वच्छता मानकों की चूक से अंतिम उत्पादों पर गंभीर परिणाम हो सकता है।

परिरक्षक और स्वाद के लिए इन कई रसायनों को मिलाने से, बिना सहज कोशिका-मरण के ही, मानव और जंतु कोशिकाओं के तेज़ी से विकसित होने के बारे में जानकारी सामने आई है।

### खाद्य प्रसंस्करण के लिए निष्पादन प्राचल

जब खाद्य उद्योग के लिए प्रक्रियाएं परिकल्पित की जा रही हों, तो निम्न निष्पादन प्राचलों को ध्यान में रखा जा सकता है:

- स्वच्छता-उदाहरण तैयार उत्पाद में प्रति मि.ग्रा. सूक्ष्मजीवों की संख्या द्वारा मापन
- ऊर्जा खपत- उदाहरण "प्रति टन चीनी उत्पादित टन भाप" द्वारा मापन
- अपशिष्ट न्यूनतमीकरण, उदाहरण "आलू छीलने के दौरान छाल नुकसान की प्रतिशतता" द्वारा मापन
- प्रयुक्त श्रम, उदाहरण "तैयार उत्पाद के प्रति टन कार्यकारी घंटों की संख्या" द्वारा मापन
- सफाई विराम न्यूनतमीकरण, उदाहरण "सफाई विराम के बीच घंटों की संख्या" द्वारा मापन



## **आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण में रुझान**

### **लागत में कमी**

अधिकांशतः किसी भी उद्योग को चलाने वाले कारकों में है लाभ प्रोत्साहन और खाद्य उद्योग इससे अछूता नहीं है. स्वास्थ्य चिंताएं आम तौर पर संभावित लाभ के अधीनस्थ होती हैं, जिससे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग अक्सर औद्योगिक तौर पर उत्पादित सामग्रियों के उपयोग द्वारा उठने वाली प्रमुख स्वास्थ्य चिंताओं को नज़रअंदाज़ करती हैं (उदाहरण के लिए, आंशिक हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल, जोकि हृदय रोग का सुविख्यात और अच्छी तरह से शोध किया हुआ कारक है, अब भी लाभ मार्जिन को बढ़ाने के लिए प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में इस्तेमाल होता है).

उपभोक्ता दबाव के कारण संसाधित खाद्य पदार्थों में औद्योगिक तौर पर उत्पादित सामग्री के इस्तेमाल में कमी आई है, लेकिन (अक्सर मामूली) मुनाफ़े में वृद्धि की संभाव्यता ने संसाधित खाद्य पदार्थों के अत्यधिक उपभोग द्वारा उत्पन्न मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य समस्याओं को उद्योग द्वारा व्यापक स्वीकृति देने से वर्जित किया है. अक्सर लागत में कमी का बोझ किसान संभालते हैं क्योंकि वे आम तौर पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग द्वारा एकल खरीदी के प्रति झुक जाते हैं.

### **स्वास्थ्य**

अंतिम उत्पाद में वसा की कमी उदा. एक संसाधित खाद्य-पदार्थ आलू चिप्स के उत्पादन में तेल में तलने के बजाय बेकिंग का इस्तेमाल करना उत्पादों का प्राकृतिक स्वाद बनाए रखना, उदा. पहले प्रयुक्त मात्रा से कम कृत्रिम मिठास का उपयोग करते हुए.

### **स्वच्छता**

संभाव्य जोखिम और खतरों को कम करने के लिए उद्योग और सरकार द्वारा पुष्टीकृत मानकों को सख्ती से लागू करना. संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वीकृत मानक है HACCP.

### क्षमता

ऊर्जा की बढ़ती लागत ऊर्जा बचाने वाली प्रौद्योगिकी की उपयोग में वृद्धि की ओर ले जाती है[2], उदा. विद्युतीय चालकों पर फ्रीक्वेंसी कनवर्टर, फ़ैक्टरी भवनों और गर्म बर्तनों का ताप-रोधन, ऊर्जा प्रतिलाभ प्रणालियां, चीन से स्वीट्ज़रलैंड तक एकल मछली को जमाए रखना.

कारखाना स्वचालन प्रणालियां (अक्सर वितरित नियंत्रण प्रणालियां) कार्मिक लागत को कम करती हैं और अधिक स्थिर उत्पादन परिणामों की ओर ले जा सकती है.

### उद्योग

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और व्यवहारों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- डिब्बाबंदी
- मछली प्रसंस्करण
- औद्योगिक प्रतिदान
- मांस पैकिंग संयंत्र
- कसाईखाना
- चीनी उद्योग
- सब्जी पैकिंग संयंत्र

### न्यूनतम समर्थन मूल्य और खरीफ फसल सीजन 2020-21

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP), भारत में कृषि उपज के लिए न्यूनतम मूल्य की गारंटी है. MSP की घोषणा भारत सरकार द्वारा कुछ निश्चित फसलों के लिए बुवाई के मौसम की शुरुआत में की जाती है, ताकि उत्पादक यानी किसानों को इस बात की गारंटी प्रदान की जा सके कि देश में कितना भी अधिक खाद्यान्न उत्पन्न हो जाये, किसानों को उनकी फसल का एक निश्चित मूल्य मिलेगा. इस प्रकार MSP किसानों को अधिक फसल बुवाई के लिए प्रेरित करता है. खरीफ फसल सीजन 2020-21 के लिए धान सामान्य का न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) बढ़ाकर 1,868 प्रति क्विंटल कर दिया गया है. सरकार हर वर्ष बुवाई से पहले, कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) की सिफारिशों पर 22 अनिवार्य फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की घोषणा करती है.

**फसलों का विवरण जिनके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) घोषित किया जाता है**

भारत में कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) की सिफारिशों पर 'कृषि विभाग और सहयोग, भारत सरकार' द्वारा 22 फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया जाता है. इन 22 फसलों में 6 रबी फसलें, 14 खरीफ मौसम की फसलें, और दो अन्य वाणिज्यिक फसलें हैं. इनका विवरण इस प्रकार है; अनाज (7), गेहूं, धान, बाजरा, जौ, ज्वार, रागी और मक्का; जबकि दलहन की 5 फसलें इस प्रकार हैं; अरहर, चना, उड़द, मूंग, और मसूर और तिलहन की 8 फसलें शामिल हैं. ये फसलें हैं; रेपसीड / सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, तोरिया, तिल, केसर बीज, सूरजमुखी के बीज और रामतिल.

**न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSPs) कैसे तय किया जाता है**

कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) रबी और खरीफ फसलों के MSP को तय करते समय कई कारकों को ध्यान में रखता है. ये कारक हैं;

- उत्पादन लागत से कम से कम 50% अधिक मूल्य तय करना
- मांग और आपूर्ति
- इनपुट की कीमतों में बदलाव
- इनपुट-आउटपुट मूल्य समता
- जीवन यापन की लागत पर प्रभाव
- सामान्य मूल्य स्तर पर प्रभाव
- बाजार की कीमतों का रुझान
- किसानों द्वारा प्राप्त कीमतों और उनके द्वारा भुगतान की गयी कीमतों के बीच समता
- अंतर्राष्ट्रीय मूल्य स्थिति

## **बिचौलिया-आठतिया मुक्त बाजार**

मुक्त व्यापार क्षेत्र को परिवर्तित कर मुक्त व्यापार संधि का सृजन हुआ है। विश्व के दो राष्ट्रों के बीच व्यापार को और उदार बनाने के लिए मुक्त व्यापार संधि की जाती है। इसके तहत एक दूसरे के यहां से आयात-निर्यात होने वाली वस्तुओं पर सीमा शुल्क, सब्सिडी, नियामक कानून, ड्यूटी, कोटा और कर को सरल बनाया जाता है। इस संधि से दो देशों में उत्पादन लागत बाकी के देशों की तुलना में काफी सस्ती होती है। 16वीं शताब्दी में पहली बार इंग्लैंड और यूरोप के देशों के बीच मुक्त व्यापार संधि की आवश्यकता महसूस हुई थी।

आज दुनिया भर के कई देश मुक्त व्यापार संधि कर रहे हैं। यह समझौता वैश्विक मुक्त बाजार के एकीकरण में मील का पत्थर सिद्ध हो रहा है। इन समझौतों से वहां की सरकार को उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण में मदद मिलती है। सरल शब्दों में यह कारोबार पर सभी प्रतिबंधों को हटा देता है।

इस समझौते के बहुत से लाभ हैं। हाल में भारत ने 10 दक्षिण एशियाई देशों के समूह आसियान के साथ छह वर्षों की लंबी वार्ता के बाद बैंकॉक में मुक्त व्यापार समझौता किया है। इसके तहत अगले आठ वर्षों के लिए भारत और आसियान देशों के बीच होने वाली 80 प्रतिशत उत्पादों के व्यापार पर शुल्क समाप्त हो जाएगा। इससे पूर्व भी भारत के कई देशों और यूरोपियन संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौते हो चुके हैं।

यह समझौता गरीबी दूर करने, रोजगार पैदा करने और लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में काफी सहायक हो रहा है। मुक्त व्यापार संधि न सिर्फ व्यापार बल्कि दो देशों के बीच राजनैतिक संबंध के बीच कड़ी का काम भी करती है। कुल मिलाकर यह संधि व्यापार में आने वाली बाधाओं को दूर करने और दोतरफा व्यापार को सुचारू रूप से चलाने में सहायक सिद्ध होती है। इस दिशा में अमरीका-मध्य पूर्व एशिया में भी मुक्त क्षेत्र की स्थापना की गई है।

सार्क देशों और शेष दक्षिण एशिया में भी साफ्टा मुक्त व्यापार समझौता 1 जनवरी, 2006 से प्रभाव में है। इस समझौते के तहत अधिक विकसित देश- भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका अपनी उत्पाद शुल्क को घटाकर 2013 तक 0 से 5 प्रतिशत के बीच ले आएंगे। कम विकसित देश- बांग्लादेश, भूटान, मालदीव और नेपाल को भी 2018 तक ऐसा ही करना होगा। भारत और स्विट्ज़रलैंड के बीच भी प्रयास जारी हैं।



### समस्याएँ और सीमाएँ

मुक्त व्यापार क्षेत्र में कंपनियों को मानवाधिकार एवं श्रम संबंधी कानूनों से मुक्ति मिल जाती है। इसका अर्थ होता है श्रमिकों के बुनियादी अधिकारों का हनन और शोषण। वास्तव में मुक्त व्यापार क्षेत्र की अवधारणा का विकास बहुराष्ट्रीय औद्योगिक घरानों द्वारा श्रम कानूनों एवं सामाजिक और पर्यावरणिय दायित्व संबंधी कानूनों से मुक्त रहकर अपने अधिकाधिक लाभ अर्जित करने की कोशिशों का परिणाम है। इसलिए मुक्त व्यापार क्षेत्र का मानवाधिकार संगठनों, पर्यावरणवादियों एवं श्रम संगठनों द्वारा प्रायः विरोध किया जाता है।

### मेगा खाद्य बाजार (मेगा फूड पार्क)

मेगा फूड पार्क स्कीम का उद्देश्य किसानों, प्रसंस्करणकर्ताओं तथा खुदरा विक्रेताओं को एक साथ लाते हुए कृषि उत्पादन को बाजार से जोड़ने के लिए एक तंत्र उपलब्ध कराना है ताकि मूल्यवर्धन को अधिकतम, बर्बादी को न्यूनतम, किसानों की आय में वृद्धि और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर सृजित करना सुनिश्चित किया जा सके।

मेगा फूड पार्क स्कीम “क्लस्टर” दृष्टिकोण पर आधारित है और इसमें, पार्कों में सुस्थापित आपूर्ति श्रृंखला के साथ उपलब्ध औद्योगिक भूखंडों में आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण यूनिटों की स्थापना के लिए सुपरिभाषित कृषि/बागवानी जोन में अत्याधुनिक सहायक अवसंरचना के सृजन की परिकल्पना की गई है।

मेगा फूड पार्क में संग्रहण केंद्रों, प्राथमिक प्रसंस्करण केंद्रों, केंद्रीय प्रसंस्करण केंद्रों, शीत श्रृंखला और उद्यमियों द्वारा खाद्य प्रसंस्करण यूनिटों की स्थापना हेतु 25-30 पूर्ण विकसित भूखंडों समेत आपूर्ति श्रृंखला अवसंरचना शामिल होती है।

मेगा फूड पार्क परियोजना का कार्यान्वयन एक विशेष प्रयोजन उपाय (एसपीवी) द्वारा किया जाता है जो संस्थाएं अधिनियम के अंतर्गत एक पंजीकृत कॉरपोरेट निकाय होता है। राज्य सरकार, राज्य सरकार की संस्थाओं एवं सहकारिताओं को मेगा फूड पार्क परियोजना के कार्यान्वयन हेतु अलग से एसपीवी बनाने की जरूरत नहीं होती है।

स्कीम दिशानिर्देशों की शर्तों को पूरा करने के अध्यक्षीन एसपीवी को निधियां जारी की जाती है। स्कीम के अंतर्गत वित्तपोषित 37 मेगा फूड पार्कों की स्थिति जानने के लिए योजना के अंतर्गत सहायता की तलाश करने वाले प्रस्तावों को समय-समय पर जारी अभिरुचि की अभिव्यक्ति के माध्यम से आमंत्रित किया जाता है।

## **फसल ऋण**

कृषि भूमि के विकास हेतु वित्तपोषण का गहन उद्देश्य सिंचाई की सुविधा, भू-विकास एवं सुधार, मिट्टी गुणात्मकता में वृद्धि आदि के द्वारा फसल के उत्पादन में वृद्धि करना है। ऐसे निवेश पर आय की बढ़ोत्तरी निर्भर करती है :

- (अ) मौसम की फसल के अनुरूप अनुकूलनता
- (आ) फसल का चयन
- (इ) संतुलित पोषण जैसे खाद, पौधे का बचाव आदि।

अतः एक सफल कृषि उत्पादन हेतु उक्त तीनों मदों का होना आवश्यक है। कृषि भूमि पर किए गए निवेश पर उच्च प्रत्याय प्रदान करने में फसल की हायब्रिड या उच्च उत्पादन वाली किस्म अहम भूमिका अदा करते हैं, जो कि परंपरागत किस्म की तुलना में काफी अधिक होती है। हायब्रिड या उच्च उत्पादन वाली किस्म के उत्पादन की लागत परंपरागत किस्म से सामान्यतः उच्च होती है,

चूंकि परंपरागत किस्म में उत्पादन नैसर्गिक तरीके से बिना किसी अतिरिक्त रखरखाव के किया जाता है जबकि हायब्रिड या उच्च उत्पादन वाली किस्म के उत्पादन हेतु विविध प्रक्रियाएँ जैसे अधिक उत्पादन वाले बीज का प्रयोग, आवश्यकतानुसार रासायनिक खाद का प्रयोग, सिंचाई, पौधों की देखभाल आदि। सिंचाई सुविधा के विस्तार से जिसके कारण एक ही जमीन के टुकड़े पर 2 से 3 फसले ली जा सकती है एवं बड़ी संख्या में किसानों द्वारा नई तकनीक के प्रयोग से फसल/उत्पादन के वित्तपोषण की मांग में बढ़ोत्तरी हुई है। बैंक की फसल ऋण योजना अधिक आय वाली/ अधिक उत्पादन वाली फसलों की खेती के लिए किसानों को लघु अवधि पर आवश्यक ऋण प्रदान करती हैं।

### क्षेत्र का चयन :

शाखाओं को फसल ऋण प्रदान करने हेतु कोई अवरोध नहीं है किन्तु ऐसे ऋण जहां तक संभव हो अन्य विकासशील योजनाएँ जैसे कुएं का निर्माण, पंप सेट की स्थापना, कृषि सयंत्रिकरण आदि के साथ दिए जाए ताकि कृषि उत्पादन में वृद्धि हो. राज्य कृषि विभाग/जिला के विशेष फसल उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल क्षेत्र/ गाँव को विशेषतः फसल ऋण के वित्तपोषण हेतु नामित किया जाना चाहिए. इससे लाभ यह होता है कि सरकारी संस्थाएं सेवा देने एवं उत्पादन की मार्केटिंग करने में सहयोग प्रदान करती है.

नई शुरूआती फसलों और वाणिज्यिक बीज उत्पादन के लिए वित्त पोषण, जो प्रति एकड़ में काफी अधिक निवेश और प्रबंधन में विशेष तकनीकों को अपनाने के लिए कहता है, उन क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जहां प्रायोजक एजेंसी द्वारा गुणवत्ता इनपुट, तकनीकी मार्गदर्शन एवं प्रसंस्करण और उत्पादन के विपणनकी आपूर्ति के लिए संतोषजनक व्यवस्था की गई है. उपरोक्त आवश्यकता को फसल की खेती के लिए आवश्यक न्यूनतम स्थितियों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए जैसे सिंचाई, विशेष इनपुट, विशेष कार्यों के लिए श्रम अर्थात इंटर कल्चरल, निपिंग, पौध संरक्षण, इत्यादि. ऐसे विशेष फसल ऋण योजनाओं के तहत वित्तपोषण के लिए चुने गए किसानों की उपर्युक्त आवश्यकताएं होनी चाहिए. प्रत्येक गांव में किसानों के समूह को वित्त पोषित किया जाना चाहिए जो न केवल प्रभावी पर्यवेक्षण और उचित अनुवर्ती सुनिश्चित करेगा बल्कि उत्पादन, संयंत्र संरक्षण, प्रसंस्करण और उत्पादन के विपणन की व्यवस्था के लिए व्यवस्था विकसित करने में भी मदद करेगा.

### योजना का निर्माण:

जब किसी विशेष मौसम के दौरान गन्ना, तंबाकू, सूती इत्यादि जैसी विशिष्ट फसल की खेती के लिए फसल ऋण के लिए कॉम्पैक्ट क्षेत्र से कई प्रस्ताव प्राप्त किए जाते हैं या प्रस्तावों की अपेक्षा की जाती है तो एक योजनाबद्ध दृष्टिकोण की सलाह दी जाती है. जब ऐसी योजना जिला परिषद / राज्य कृषि विभाग / सहकारी, चीनी फैक्ट्री आदि जैसी बाहरी एजेंसी द्वारा प्रायोजित की जाती है, तो योजना के कार्यान्वयन में उनकी सहायता अपेक्षित है.

प्रायोजक एजेंसी विभिन्न प्रकार की ज़िम्मेदारियों को स्वीकार कर सकती है जैसे कि आवेदनों की अनुशांसा, इनपुट की समय पर और पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करना और किसानों को देय उपज की बिक्री आय से ऋण किस्तों की अंतिम वसूली सुनिश्चित करना और ऋण की चुकौती की गारंटी देना, हालांकि लाभार्थियों के पहचान की जिम्मेदारी (बैंक की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार) और व्यक्तिगत प्रस्तावों का मूल्यांकन बैंक के फील्ड कर्मचारियों का है. यह अपेक्षा की जाती है कि इस योजना के तहत शामिल किए जाने वाले किसान, इसके क्रियान्वयन के लिए विकसित व्यवस्था से सहमत होगा, जिसमें विशिष्ट एजेंसी के माध्यम से इनपुट और प्रसंस्करण / उपज की बिक्री की आपूर्ति शामिल है.

कुल सीमाओं को मंजूरी देने के लिए योजनाओं को क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से पूर्ण विवरणों के साथ आंचलिक कार्यालय / केंद्रीय कार्यालय को भेजा जाना चाहिए, जिसमें निम्नलिखित पहलुओं पर जानकारी शामिल होनी चाहिए:

- शामिल किए जाने वाले किसानों की संख्या
- भूमि धारण का औसत क्षेत्र
- विशेष फसलों के तहत क्षेत्र जिनके प्रचार हेतु योजना तैयार की गई है और अन्य फसलें
- अन्य फसलों की खेती के वित्तपोषण के लिए मौजूदा व्यवस्था
- सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता
- योजना फसल के संबंध में प्रति एकड़ खेती की औसत लागत
- औसत आय
- ऋण की चुकौती के लिए उत्पन्न होने की संभावना वाला शुद्ध अधिशेष
- आवश्यक सुविधाओं की प्रकृति
- पुनर्भुगतान की अवधि
- ऋण के लिए गारंटी / सुरक्षा
- चीनी कारखाने या किसी अन्य प्रसंस्करण / विपणन एजेंसी के माध्यम से बैंक की बकाया राशि की वसूली के लिए व्यवस्था
- आवश्यक कृषि, तकनीकी मार्गदर्शन इत्यादि की आपूर्ति के लिए आधुनिक कृषिविज्ञान-प्रथाओं और व्यवस्थाओं के लिए किसानों की संवेदनशीलता
- सहकारी समितियों से ऋण जैसे फैनर्स की अन्य प्रतिबद्धताएं आदि



यदि यह योजना चीनी कारखाने, प्रसंस्करण / विपणन एजेंसी के माध्यम से अग्रिम या वसूली की गारंटी देती है, तो ऐसी एजेंसी की पिछले तीन वर्षों की बैलेंस शीट प्रस्तुत की जानी चाहिए। एक सहकारी चीनी कारखाने के संबंध में, पुनर्भुगतान के लिए गारंटी या बैंक की देनदारियों की वसूली का वचनपत्र या दोनों को अनुमत करने वाला बोर्ड का संकल्प एवं सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार और / या राज्य सरकार, जैसा भी मामला हो, की अनुमति प्राप्त करना होगा।

### योग्यता:

जमीन की मालिकाना एवं कृषि से जुड़ी कंपनी, कृषिविद या साझेदारी फर्म में योजना के तहत वित्त पोषित होने के लिए पात्र हैं बशर्ते :-

- उधारकर्ता किसी भी वित्तपोषण एजेंसी का चूककर्ता नहीं है।
- उधारकर्ता गांव का स्थायी निवासी है और जिस भूमि पर फसलों को बैंक के ऋण के माध्यम से लगाए जाने का प्रस्ताव है, उसका मालिक है।
- किराये से लेने वाला जिस भूमि पर खेती कर रहा है, यदि यह दर्ज किया गया है, तो वह भी योग्य होगा।

### तकनीकी व्यवहार्यता

फसल ऋण की तकनीकी व्यवहार्यता की जांच की जानी चाहिए कि लगाई जाने वाली प्रस्तावित फसलों के संबंध में बैंक के वित्त की आवश्यकता है और उन्हें सफलतापूर्वक बढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण की उपलब्धता के संतोषजनक साक्ष्य (आवेदक के पास) उपलब्ध है। पर्याप्त सुनिश्चितता होनी चाहिए कि किसान अपनी मौजूदा सुविधाओं के साथ इष्टतम रिटर्न प्राप्त करने में सक्षम होगा, इस उद्देश्य के लिए, यह आवश्यक है कि शाखा को आम तौर पर क्षेत्र लगाई जाने वाली फसलें, मौसम अनुकूलता, आवश्यक इनपुट, क्षेत्र में आपूर्ति, असिंचित / सिंचित परिस्थितियों में खेती की लागत और ऐसी स्थितियों के तहत औसत उपज आदि की मूल जानकारी हो।

- i) सामान्यतः समान फसलों / किस्मों के संदर्भ में जुताई और शुद्ध आय की लागत बारिश पर निर्भर स्थितियों की तुलना में सिंचित फसलों / किस्मों के संबंध में अधिक होती है, अतः भूमि के किसी भाग या पूरी भूमि पर सिंचाई सुविधा की जांच की जानी चाहिए. कुछ फसल / किस्म केवल सिंचित परिस्थितियों में होती हैं अतः ऐसी फसलों को वित्त पोषित करने में आवश्यक सिंचाई की पर्याप्तता सुनिश्चित करना विशेष महत्व रखता है.
- ii) यदि आवेदक का अपनाया जाने वाला फसल पैटर्न, सामान्य रूप से क्षेत्र में अपनाए जाने वाले फसल पैटर्न से भिन्न है और / या जुताई और रिटर्न की उच्च लागत है तो इस बात की संतुष्टि की जाए कि इसके पूर्व क्रियान्वयन में आवेदक के पास क्षमता और अनुभव है.
- iii) निम्नलिखित पहलुओं का ध्यान रखा जाए:-
- मिट्टी और जलवायु स्थितियों की उपयुक्तता,
  - सिंचाई सुविधाएं,
  - फसल मौसम के दौरान उचित मूल्य पर पर्याप्त मात्रा और गुणवत्ता में इनपुट की उपलब्धता और
  - आवेदक के मौजूदा फसल पैटर्न और इससे रिटर्न.

यदि नई फसल / किस्म की खेती करने का प्रस्ताव है, तो यह संतुष्ट होना चाहिए कि प्रस्तावित पैकेज कृषि विभाग की सिफारिशों के अनुरूप है. नई प्रसंस्कृत फसलों / किस्मों के साथ-साथ बीज उत्पादन के लिए इस तरह के विशेष कार्यक्रमों को उचित रूप से ध्यान में रखते हुए वित्त पोषित किया जाना चाहिए.

iv) खेती की जाने वाली प्रस्तावित फसलों के लिए प्रसंस्करण और विपणन सुविधाओं की उपलब्धता और विपणन के साथ बैंक के क्रेडिट को जोड़ने की व्यवहार्यता विशेष रूप से देखी जानी चाहिए.

महत्वपूर्ण कृषि संबंधी प्रथाओं के इनपुट और मौसमी पहलुओं के उपयोग की बेहतर समझ के लिए, निम्नलिखित जानकारी उपयोगी रहेगी .

### भूमि को तैयार करना

भूमि को आम तौर पर बुवाई से पहले समतल, हल चलाकर, हैरोइंग इत्यादि से तैयार किया जाता है. ये ब्रैल के माध्यम से परंपरागत उपकरणों या यांत्रिक माध्यमों से किया जा सकता है. ट्रैक्टर विशेष अनुलग्रकों की सहायता से इन कार्यों को निष्पादित करता है. खेत का आकार छोटा और हल्की मिट्टी होने पर ट्रैक्टर के स्थान पर पावर टिलर का प्रयोग भी किया जाता है. कडक मिट्टी के लिए हल चलाया जाता है. इससे खेती की जमीन जड़ों के उचित वायुमंडलीय प्रवेश और नमी के प्रतिधारण के तैयार हो जाती है.

### खरपतवार नियंत्रण:

शोध से पता चलता है कि खरपतवार फसलों से पोषक तत्वों का भारी हिस्सा लेते हैं और खेतों में खरपतवारों की उपस्थिति के कारण उर्वरक के उपयोग की दक्षता बहुत कम हो जाती है. खरपतवार पोषक तत्वों, प्रकाश, पानी और तेज बढ़ने के लिए मुख्य फसल से प्रतिस्पर्धा करते हैं. गन्ना, गेहूं, अनाज जैसी प्रमुख फसलों के साथ पोषक तत्वों के लिए खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा मुख्य फसलों के विकास को बुरी तरह से प्रभावित करती है. इसलिए खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है. प्रभावी खरपतवार नियंत्रण के लिए गहरे हल चलाना और खरपतवारनाशक का उपयोग किया जाता है.

### सिंचाई:

सिंचाई का मुख्य उद्देश्य पौधों के विकास के लिए आवश्यक नमी की आपूर्ति करने के लिए मिट्टी को पानी प्रदान करना और छोटी अवधि के सूखे के समक्ष फसल को सुरक्षित रखना है. सिंचाई (मिट्टी) और वायुमंडल को ठंडा करने में मदद करता है, जिससे पौधे के विकास के लिए अधिक अनुकूल वातावरण पैदा होता है.

यह मिट्टी में लवण को कम करने या पतला करने में मदद करता है. जैसे-जैसे पौधे बढ़ते हैं और जड़ें मिट्टी में गहरी जाती हैं, मिट्टी की एक बड़ी गहराई में सही नमी बनाए रखना आवश्यक होता है. सिंचाई की आवश्यकता फसल एवं मिट्टी की प्रकृति पर निर्भर करती है.

### कृषि आदान:

बीज: विविध विशेषताओं और अंकुरण प्रतिशत के संबंध में प्रमाणित बीज शुद्धता के लिए गारंटीकृत है। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च एंड स्टेट रिसर्च स्टेशनों ने चावल, गेहूं, मक्का, ज्वार और बाजरा जैसे अनाज में बीजों की उच्च पैदावार वाली किस्मों की शुरुआत की है और कपास, तेल के बीज, गन्ना, दालें, सोयाबीन, सूरजमुखी और कस्तूरी की किस्मों में भी सुधार किया है।

### बीज चयन और बीज दर:

बुवाई से पहले, बीज चयन प्रक्रिया द्वारा स्वस्थ बीज का चयन करना आवश्यक है और उन्हें मिट्टी से उत्पन्न बीमारियों और बैक्टीरियल ब्लाइट से बचाने के लिए ऑर्गो-मर्कुरो फंगसाइड के साथ उनका उपचार आवश्यक है। विशेष फसल की बुवाई की विधि के अनुसार बीज की दर भिन्न-भिन्न होती है।

### कार्बनिक खाद:

मिट्टी की कार्बनिक सामग्री में पानी को अवशोषित करने, भंडारण करने, संरंधता बनाए रखने और पारगम्यता में वृद्धि करने की क्षमता होती है। कम कार्बनिक पदार्थ सामग्री वाली मिट्टी तेजी से क्षरण होती हैं। मिट्टी की कार्बनिक सामग्री को बढ़ाने के लिए जैविक खाद का उपयोग, विविध घूर्णन और अंतर-फसल प्रणाली में चमकीली फसलें लगाना आदि किया जाता है।

ये न केवल उर्वरक उपयोग में अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के तत्काल संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि संतोषजनक उच्च स्तर पर फसल पैदावार के स्थिरीकरण के लिए उर्वरता और उत्पादकता के इष्टतम स्तर पर मिट्टी को बनाए रखने के बड़े उद्देश्य में भी महत्वपूर्ण हैं। एक स्वस्थ राज्य में ऐसी समृद्ध मिट्टी का उपयोग इनपुट की प्रत्येक इकाई से बेहतर वापसी सुनिश्चित करता है।



### उर्वरक फसल उत्पादन :

उर्वरक फसल उत्पादन की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह स्थापित है कि कई कारक फसल उत्पादन के लिए उर्वरक उपयोग दक्षता को प्रभावित करते हैं। इनमें मिट्टी और इसकी प्रजनन क्षमता, फसल का इतिहास, फसल उगाने का मौसम, फसल की प्रकृति, विविधता और इसकी आदत, बुवाई का समय, पौधों की आबादी, उर्वरक, मात्रा, समय और आवेदन की विधि शामिल है। सिंचाई की विधि और आवृत्ति उर्वरक उपयोग की दक्षता को निर्धारित करती है। खरपतवार और कीट भी लागू उर्वरकों से फसलों को पोषक तत्वों की अंतिम उपलब्धता निर्धारित करते हैं।

निम्न विधियों द्वारा उर्वरक उपयोग दक्षता को बढ़ाया जा सकता है:

- गैर-सिंचित फसलों की तुलना में सिंचाई वाली फसलें उर्वरक को बेहतर प्रतिक्रिया देती हैं। सिंचित भूमि के किसान उर्वरक के द्वारा अपनी खेतों / फसल को प्राथमिकता देना चाहिए।
- उर्वरक की सीमित मात्रा के अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए क्षेत्र विशेष की सर्वोत्तम उपयुक्त फसल और उनकी किस्मों का चयन किया जाना चाहिए।
- उच्च पैदावार वाली फसल की किस्म हमेशा स्थानीय किस्मों की तुलना में उर्वरकों को बेहतर प्रतिक्रिया देते हैं, चाहे मात्रा कम हो।
- देरी की बुवाई की स्थिति में उर्वरक की क्षमता भी कम हो जाती है अतः बुवाई समय पर की जानी चाहिए।
- पौधों को नजदीक पंक्तिवार लगाने पर समान मात्रा के उर्वरक से भी बेहतर प्रभाव दिखाई देता है।
- मिट्टी परीक्षण के माध्यम से मिट्टी में पर्याप्त पोषक तत्वों की उपलब्धता के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों सहित उर्वरकों की आवश्यकता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

बहु फसल खेती में उर्वरक की अनुशांसा फसल अनुक्रम पर आधारित होना चाहिए। फार्म यार्ड खाद एवं और फॉस्फेट का प्रयोग क्रमशः गीले और शुष्क मौसमों में किया जाना चाहिए।

### उर्वरक के प्रयोग का समय और विधि

जब सभी फॉस्फेट या सभी पोटाश को बेसल ड्रेसिंग के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तो फसल की अवधि, फसल की जरूरतों और मिट्टी नमी उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए नाइट्रोजन को विभाजित खुराक (2 से 3) में प्रयोग किया जाना चाहिए. फॉस्फेट को बीज से 4 से 6 सेमी नीचे और 4 से 6 सेमी दूर रखा जाना चाहिए, जिससे इसकी फसल को अधिकतम उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके. पोटाश को या तो फॉस्फेट के साथ रखा जाना चाहिए या मिट्टी के साथ मिश्रित किया जाना चाहिए. सबसे अच्छा परिणाम प्राप्त होता है जब शीर्ष ड्रेसिंग के लिए यूरिया का उपयोग इसके एक हिस्से को नमक मिट्टी के 5 से 10 भागों के साथ मिलाकर और इसे लगभग 24 घंटे तक रखकर किया जाता है, ताकि नाइट्रोजन हानि को कम की जा सके. प्रतिकूल मिट्टी और जलवायु स्थितियों के तहत या जहां गहरे खड़े पानी के नीचे फसल उगाई जाती है, कीटाणुशोधन और कीटनाशकों (यदि आवश्यक हो) के साथ पत्ते के माध्यम से उर्वरक के उपयोग से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं.

### पौध संरक्षण

फसल को बचाने के लिए पौध संरक्षण जरूरी है जिसके बिना सभी प्रयास और निवेश बर्बाद हो जाएंगे. प्रोफेक्टिक उपायों को अपनाने के लिए फैनर्स को शिक्षित करने की आवश्यकता है. बीमारियों की पहचान करना और तदनुसार पौध संरक्षण उपायों को अपनाना आवश्यक है. प्रत्येक फसल के लिए तैयार पौध संरक्षण अनुसूची समय पर कार्रवाई करने में मदद करती है. उपयोग किए जाने वाले सभी अन्य इनपुट के अधिकतम लाभ को समझने के लिए जरूरी कीटों और बीमारियों का उचित नियंत्रण जरूरी है. फसल की खेती की सफलता मिट्टी, पानी, वायु और सूरज की रोशनी के संबंध में कुछ बुनियादी आवश्यकताओं पर निर्भर करती है. उसी प्रकार की मिट्टी पर, वर्षा और अन्य स्रोतों और जलवायु स्थितियों से पानी की उपलब्धता के आधार पर अलग-अलग मौसमों में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न फसलों को उगाया जा सकता है. जबकि खाद, उर्वरक, टिलेज ऑपरेशंस इत्यादि के उपयोग से मिट्टी में सुधार किया जा सकता है, विशेष फसल के संबंध में मौसम की स्थिति उपयुक्त मौसम में खेती की अवधि को समायोजित करके नियंत्रित की जाती है.

### आर्थिक व्यवहार्यता:

फसल ऋण प्रस्ताव की आर्थिक व्यवहार्यता की जांच फसल विशेष और खेती के लिए प्रस्तावित एकड़ के संबंध में की जानी चाहिए. विशेष फसल ऋण योजना में उस फसल विशेष के तहत किसानों के केवल सीमित एकड़ को कवर किया जा सकता है. इसलिए, योजना के तहत कुल ऋण आवश्यकता केवल उस फसल के लिए तैयार की जाएगी हालांकि, योजना के इच्छुक किसानों की पूरी फसल ऋण आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयास शाखा द्वारा किया जाना चाहिए, जब तक कि किसान अपने संसाधनों से अन्य फसलों के लिए खेती के खर्च को पूरा करने की स्थिति में न हों. निम्नलिखित पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए:

- फसल ऋण प्रस्ताव की आर्थिक व्यवहार्यता का निर्णय लेने में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि न्यूनतम इनपुट आउटपुट अनुपात 1: 1.5 है.
- प्रस्ताव में संकेतित विभिन्न फसलों की खेती की प्रस्तावित लागत तकनीकी समिति द्वारा तय वित्त के पैमाने के भीतर होना चाहिए जिसमें जिले के मुख्य बैंक शामिल हैं.
- सिंचाई के तहत क्षेत्र में मौजूदा फसल पैटर्न को प्रस्तावित फसल पैटर्न और इसके प्रबंधन के लिए संबंधित किसानों की क्षमता के बारे में विचार करने के बाद प्रत्येक मामले की योग्यता पर ऋण स्वीकृत किया जाना चाहिए.
- पिछले 2-3 वर्ष के दौरान बाजार की कीमतों के आधार पर इनपुट और अचल आय की लागत इस संबंध में सरकारी नीति को ध्यान में रखते हुए तय की जानी चाहिए.
- उत्पादन का अनुमान वास्तविक मौसम के लिए वास्तविक रूप से किया जाना चाहिए, आदर्श परिस्थितियों में नहीं.
- कृषि अधिग्रहण के अर्थशास्त्र को खराब करने में, आम तौर पर, सकल आय का 50% पुनर्भुगतान के लिए उपलब्ध होने की उम्मीद की जा सकती है, जिसमें से 2/3 को फसल ऋण के लिए और टर्म लोन के लिए 1/3 के रूप में माना जा सकता है.

## **वित्त की मात्रा और अधिकतम व्यक्तिगत ऋण**

स्वीकृत वित्त की मात्रा जिला स्तर तकनीकी समिति द्वारा तय की जानी चाहिए. एक किसान को अधिकतम व्यक्तिगत ऋण का निर्णय उसके द्वारा खेत में उगाई जाने वाले प्रस्तावित फसलों / किस्मों, एकड़ के ब्रेक अप और खेती के खर्चों के गैर-संसाधन भाग में किसान के योगदान की क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए.

आधुनिक फसल की खेती के तरीकों को अपनाने वाले मध्यम और बड़े किसानों के संबंध में फसल विशेष के लिए निर्धारित वित्त की मात्रा अलग होती है. उनके सहज उपलब्ध संसाधनों की स्थिति के कारण उत्पादन वित्त की स्वीकृति हेतु उनका छोटे किसानों से अलग विचार किया जाए. यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि वित्त-मान को भूमि अधिग्रहण के आकार से विशेष रूप से मध्यम और बड़े आकार के किसानों के मामले में उपज वाले क्षेत्रों और नकद फसल उगाने वाले क्षेत्रों में गुणन के आधार पर तय नहीं किया जाता है.

आम तौर पर, वित्त का स्तर जिला स्तर तकनीकी समिति / जिला के लीड बैंक द्वारा निर्धारित किया जाता है और सभी बैंकों द्वारा गोद लेने के लिए सुझाव दिया जाता है. वित्त के सुझाए गए मान का पालन करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए.

### **उधार देने के लिए नियम और शर्तें:**

शाखाओं को समय-समय पर जारी केंद्रीय कार्यालय के निर्देशों के अनुसार ब्याज, मार्जिन, सुरक्षा, पुनर्भुगतान अवधि, गारंटी इत्यादि से संबंधित उधार के विभिन्न नियमों और शर्तों का पालन करना चाहिए.

### **पुनर्भुगतान अवधि:**

ब्याज के साथ फसल ऋण एक वर्ष के भीतर मौसमी फसलों के संबंध में या प्रमुख फसलों की कटाई / विपणन पर जो भी पहले हो, चुकाया जा सकता है. इस हेतु बाजार में आवक और क्षेत्र विशेष की सभी प्रमुख फसलों की अधिकतम बिक्री की प्रवृत्ति का अध्ययन करना आवश्यक है.



इस जानकारी के आधार पर ऋण की चुकौती की देय तिथि तय की जानी चाहिए. किसान को उत्पादन को बढ़ाने और लाभकारी दर प्राप्त करने के लिए किसान को आवाजाही की अनुमति देने के संबंध में विचार किया जाना चाहिए.

### विपणन के साथ ऋण का जोड़:

उपज के विपणन के लिए एक अच्छी तरह से संगठित विपणन एजेंसी / प्रसंस्करण इकाई जैसे सहकारी विपणन समाज, चीनी कारखाने इत्यादि की व्यवस्था विकसित करने के प्रयास किए जाने चाहिए. इस उद्देश्य से आवश्यक दस्तावेज / त्रिपक्षीय समझौते किसानों से प्राप्त किए जाने चाहिए.

यह ऐसे किसानों और एजेंसियों के साथ नियमित संपर्कों द्वारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसान वास्तव में विपणन / प्रसंस्करण एजेंसी को उपज की आपूर्ति करते हैं और बाद में बैंक द्वारा उनके द्वारा कटौती की गई राशि को तत्काल प्रेषित किया जाता है.

### वितरण का माध्यम

ऋण की राशि एकमुश्त में वितरित नहीं की जानी चाहिए, तथापि यह खरीफ और रबी फसलों की आवश्यकताओं के अनुसार, बौए जाने के लिए प्रस्तावित फसलों के मौसमी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए हो.

### ऋण वितरण का तरीका:

केसीसी सीमा, चक्रीय नकद साख सुविधा की तरह है. नामे और जमा की संख्या में कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा. मौजूदा सीजन/वर्ष के लिए आहरण सीमा निम्नानुसार पांच डिलीवरी चैनलों के माध्यम से निर्धारित की जा सकती है.

- शाखा के माध्यम से लेन देन
- चेक सुविधा के माध्यम से लेन देन
- एटीएम / डेबिट कार्ड के माध्यम से निकासी

- विजनेस करेसपोन्डेंस और अति-छोटी शाखाओं के माध्यम से लेन देन
- शुगर मिल्स / कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग कंपनियों, आदि में पीओएस के माध्यम से लेन देन, खासकर टाई-अप अग्रिम के मामले में
- इनपुट डीलरों के पास उपलब्ध पीओएस के माध्यम से लेन देन
- कृषि इनपुट डीलरों और उनके आदेश पर मोबाइल आधारित अंतरण लेनदेन.

उपरोक्त बिंदु केवल फील्ड अधिकारियों के मार्गदर्शन के लिए हैं. सरकार / आरबीआई द्वारा समय-समय पर जारी किए गए केसीसी पर परिचालन दिशानिर्देश, विशिष्ट योजना- सेंट किसान क्रेडिट कार्ड योजना के तहत मास्टर परिपत्र में दिए गए हैं, जिनका सावधानी से पालन किया जाना चाहिए.

### **कृषि उपज के बंधक / दृष्टिबंधक के समक्ष किसानों को लघु अवधि के अग्रिम:**

कृषि उपज के बंधक/ दृष्टिबंधक के समक्ष 50 लाख रुपये तक किसानों को ऋण जिसमें किसानों के 12 महीने तक की अवधि के लिए गोदाम रसीदों सहित ऋण शामिल है चाहे ये किसानों को फसल उगाने के लिए हो या न हो, गुणवत्ता के आधार पर विचार किया जाएगा

### **कृषि ऋण संबंधी आवश्यक जांच-बिन्दु**

फसल ऋण की स्वीकृति के प्रस्तावों के मूल्यांकन में शाखा द्वारा जांच की जाने वाली अधिक महत्वपूर्ण पहलुओं को यहां दोबारा बताया गया है:

- वित्त की आवश्यकता वाली किस फसल को उगाया जाना प्रस्तावित है ? क्या प्रस्तावित फसल पैटर्न के लिए मिट्टी और जलवायु स्थितियां उपयुक्त हैं ?
- क्षेत्र में बारिश के बारे में आपके स्थानीय ज्ञान से, कृपया स्वयं को संतुष्ट करें कि प्रस्तावित फसलों को उगाया जा सकता है.

- क्या प्रस्तावित फसल पैटर्न पिछले वर्ष के दौरान आवेदक द्वारा किए गए फसल पैटर्न से अलग है ? यदि हां, तो क्या आप उसकी क्षमता और अनुभव के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के अनुभव से संतुष्ट हैं?
- क्या अपनाया जाने वाला प्रस्तावित पैकेज राज्य के कृषि विभाग की सिफारिशों के अनुरूप है?
- यदि किसी भी फसलों को नियमित रूप से पानी की आपूर्ति करने की आवश्यकता होती है जैसे केले, गन्ना, गेहूं की संकर किस्में, कपास यदि इनकी खेती का प्रस्ताव है, तो कृपया सुनिश्चित करें कि पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हैं?
- क्या उचित मात्रा और उचित मूल्य पर स्थानीय स्तर पर पर्याप्त मात्रा और सही गुणवत्तावाले इनपुट उपलब्ध है? क्या आप कीमतों से संतुष्ट है?
- एच -4 कपास जैसी विशेष फसलों के मामले में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि राज्य सरकार और / या अन्य एजेंसियों के संबंधित विभाग से आवश्यक मार्गदर्शन और तकनीकी जानकारी उपलब्ध हो. हालांकि, इसे वित्त पोषण के लिए आवश्यक शर्त के रूप में नहीं माना जाना चाहिए.
- क्या किसी भी विपणन प्रसंस्करण इकाई के माध्यम से बैंक के अग्रिम की वसूली संभव है जिसे किसान उपज की आपूर्ति कर सकता है?
- क्या प्रस्ताव में निर्दिष्ट विभिन्न फसलों के लिए प्रति एकड़ खेती की लागत जिले की तकनीकी समिति / लीड बैंक द्वारा तय वित्त मान के भीतर है?
- क्या अनुमानित आय उपज आपके क्षेत्र में आमतौर पर ऐसी फसलों के उपज एवं कीमत के समक्ष वास्तविक समझी गई है?
- क्या उत्पादन के विपणन, प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं मौजूद हैं?

## **वृक्षारोपण एवं बागवानी फसल हेतु वित्तपोषण**

### **वृक्षारोपण एवं बागवानी फसल का महत्व**

आर्थिक फसलें (फल वाली फसलों के अतिरिक्त) पौधे के किसी भाग जैसे पत्ते, बेरी, नट्स, फूल पंखुड़ियों आदि के लिए की जाती है इनमें पेय पदार्थ, नट और मसाले शामिल हैं। सुगंधित पदार्थों का उत्पादन करने वाले पौधों को वृक्षारोपण फसलों के रूप में माना जा सकता है।

इन फसलों में से अधिकांश चाय, कॉफी, काजू, काली मिर्च और इलायची निर्यात उन्मुख हैं। देश में रबर का उत्पादन आत्म संतुष्टि के स्तर पर पहुँच गया है। नारियल का बड़ा उत्पादन होने के बावजूद हम अभी भी पूरी तरह से घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं।

अतः जिनके उत्पादन में अभी भी कमी है उनका निर्यात करने तक तथा आत्मनिर्भर बनने तक उत्पादन बढ़ाने के अवसर हैं। बागवानी का शाब्दिक अर्थ बगीचे की फसलों की खेती है जिसमें आम तौर पर फल, फूल और सब्जियाँ शामिल होती हैं। हमारे देश में प्रचुर मात्रा में उगाए जाने वाले फल आम, केले, नींबू, अमरूद, सेब, पपीता, लीची, अनानास, और कस्टर्ड सेब हैं।

### **उत्पादन-**

राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में फल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके लिए निर्यात व्यापार भी खुला हुआ है और ऐसी फसलें हैं- अपने ताजे या संसाधित रूप में आम, केला और अनानास, अमरूद, सेब, पपीता, लीची, अनानास और कस्टर्ड सेब। उत्पादक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में फल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निर्यात व्यापार भी पूर्णरूपेण स्थापित है और इस तरह की वस्तुओं में आम, केला, और अनानास के ताजे फल और इनके संसाधित रूप हैं।

देश में फलों के उत्पादन में वृद्धि की बहुत संभावनाएं हैं। पोषक फल आवश्यक सुरक्षात्मक आहार, खनिज और विटामिन के महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करते हैं। इन महत्वपूर्ण पदार्थों की आवश्यकता को देखते हुए फलों के वर्तमान उत्पादन और आपूर्ति को दोगुना करने की आवश्यकता है। आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत फल की खेती सबसे अधिक आय प्रदान करने का साधन है। निर्यात उन्मुख होने वाले कुछ फल विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक स्रोत हैं।



## **वृक्षारोपण फसलों के लिए वित्त पोषण**

अधिकांश वृक्षारोपण में लगभग 4 से 7 वर्षों की गेस्टेशन अवधि होती है, जिसके परिणामस्वरूप ताजा रोपण या पुराने और गैर आर्थिक पौधाकरण के लिए सावधि ऋण सहायता की आवश्यकता होती है।

उत्तर पूर्वी और दक्षिण पश्चिमी भारत में कृषि-जलवायु विशेषताएं वृक्षारोपण वाली फसलों के सफल विकास और उत्पादन के लिए आदर्श रूप से अनुकूल हैं। अच्छी मिट्टीवाला क्षेत्र, वर्ष में अधिकांशतः एकसमान बारीश तथा उचित तापमान इसकी प्रमुख आवश्यकताएं हैं। इस तरह के क्षेत्र निश्चित रूप से हिमालय के निचले इलाकों और पश्चिमी घाटों के पहाड़ी क्षेत्रों और कुछ हद तक पूर्वी घाट के पर्वतीय क्षेत्रों तक सीमित हैं।

उत्तर और दक्षिण की जलवायु में अंतर के कारण, यह मुख्य रूप से चाय उत्तर में उगाई जा रही है, जबकि दक्षिण में व्यावसायिक स्तर पर विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती की जा रही है।

देश ने निम्नलिखित वृक्षारोपण उद्योगों का सफलतापूर्वक विकास किया है।

<b>पेय पदार्थ</b>	<b>बीज और सूखे मेवे</b>	<b>मसाले</b>	<b>अन्य</b>
चाय	नारियल	काली मिर्च	रबर
काँफ़ी	काजू	इलायची	
कोको	सुपारी	जायफल	
		दालचीनी	
		लौंग	

### आवश्यक जानकारी :

- चाय के लिए काफी ठंडे मौसम की आवश्यकता होती है, इसलिए दक्षिण में यह अधिक ऊंचाई पर उगाई जाती है, जबकि उत्तर में यह पहाड़ी क्षेत्र के साथ समतल क्षेत्र में भी उगाई जाती है।
- कॉफी को मुख्य रूप से दक्षिण में मध्यम ऊंचाई पर उगाया जाता है, जबकि इलायची तुलनात्मक रूप से थोड़ी ऊंचाई पर होती है।
- काली मिर्च, नारियल, सुपारी, काजू और कोको और ऐसी अन्य फसलें मैदानी इलाकों में कम ऊंचाई पर उगाई जाती हैं।
- त्रिपुरा, मिजोरम और असम में रबड़ होती है जबकि असम के उत्तरी कछार और मिल्कीर पहाड़ियों के साथ-साथ आंध्र प्रदेश और उड़ीसा में पूर्वी घाट की पर्वतमाला में कॉफी उगाई जा सकती है।
- दक्षिण में कम ऊंचाई का विशाल क्षेत्र है जहां नारियल, कोको और काली मिर्च की खेती को बढ़ाया जा सकता है।
- चाय को छोड़कर, अन्य सभी वस्तुओं के संबंध में छोटे बागान पर्याप्त हैं।
- छोटे किसानों द्वारा रोपण-फसलों की खेती में कम उपज वाली रोपण सामग्री के सामान्य उपयोग, खराब देखभाल और रासायनिक और अन्य इनपुट की कमी रहती है।
- आधुनिक तकनीक उच्च उपज सामग्री और वैज्ञानिक तरीके से निषेचन, पौधों की सुरक्षा आदि प्रदान करती है। यह अनुमान लगाया जाता है कि पारंपरिक तरीकों वाले क्षेत्रों में नई तकनीक अपनाने से पैदावार दोगुनी होने की संभावना है।

## **परियोजना के दृष्टिकोण की आवश्यकता**

निर्यात-उन्मुख फसलों के संबद्ध में अनियमित आपूर्ति पर निर्भर नहीं रहा जा सकता. यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि अपेक्षित मात्रा उपलब्ध है. विशेष रूप से छोटे किसानों के बीच विकास के लिए नियोजित दृष्टिकोण उद्योग की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है.

## **तकनीकी विचार**

अधिकांश वृक्षारोपण फसलों को पहाड़ी ढलानों पर उगाया जाता है. परिणामस्वरूप, 'संरक्षण और छाया के लिए वन वृद्धि की सुनिश्चितता और मृदा संरक्षण के उपायों को अपनाना पहला कार्य है, जिसमें मिट्टी के संरक्षण के साथ-साथ भूमिनिर्माण, पुनर्विकास, बैंड इत्यादि की आवश्यकता होती है, अतिरिक्त पानी की निकासी के लिए नालियां भी आवश्यक हैं.

## **पसंद का क्षेत्र**

पारंपरिक क्षेत्र में ऊँचाई की उपयुक्तता और फसल के लिए वर्षा पैटर्न की सुनिश्चितता के अलावा कुछ भी नहीं है.

## **इनपुट**

चाय, कॉफी, रबर, काली मिर्च, नारियल इत्यादि में सुधार की गई किस्में उपलब्ध हैं. रोपण फसलों के लिए उर्वरक की आवश्यकता पर जोर नहीं दिया जाता है. रोपण फसलों में रोग और कीट बागवानी उद्यान की तरह ही मौजूद रहते हैं और उचित स्तर पर उपयुक्त पौध संरक्षण उपायों को अपनाकर इन्हें नियंत्रित किया जाना है.

### फ़ील्ड ऑपरेशन

इसमें मुख्य रूप से निराई, खुदाई, छंटाई और अन्य सामान्य कार्य किए जाते हैं। रोपण फसल की एक महत्वपूर्ण विशेषता मिश्रित फसल है, उदा. कॉफी में छाया वाले पेड़ों का उपयोग काली मिर्च की बेल उगाने के लिए किया जा सकता है।

### उपज का अनुमान

फल फसलों के विपरीत, उपज के विश्वसनीय अनुमान प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं है क्योंकि संबंधित कमोडिटी बोर्ड द्वारा वर्ष दर वर्ष इसकी गणना की जाती है। औसत उत्पादन के आंकड़े कमोडिटी विकास निदेशालय के पास उपलब्ध हैं।

### विपणन और अन्य संरचनात्मक आवश्यकताएं

- इसमें उत्पादन की प्रवृत्ति फलों की फसलों के समान होती है। शुरुआत में पैदावार आने तक गेस्टेशन अवधि होती है। यह पहली फसल बोनो के 4-7 वर्ष के भीतर हो सकती है और उसके बाद उत्पादन 10 वें से 13 वें वर्ष तक स्थिर होने तक बढ़ता रहता है।
- कुछ अपवाद के साथ अधिकांश बागान फसलों से उत्पादित फसल हल्की छंटाई के उपरांत बेच दी जाती है। इस संबंध में सबसे सरल विधि धूप में सुखाना है जैसा कि काली मिर्च की स्थिति में किया जाता है जबकि इलायची को विशेष रूप से निर्मित चैंबरों में, जहाँ गर्मी दी जाती है, सुखाया जाता है।
- कुल मिलाकर, छोटे कृषक शायद ही कभी कच्चे माल को उचित तरीके से संसाधित करने में सक्षम होते हैं क्योंकि आमतौर पर आवश्यक साधन से वे परे होते हैं। इसके अलावा, उसका प्रसंस्करण केवल कुटीर उद्योगों तक ही सीमित है। उपज से पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए, छोटे कृषक को अधिमानतः सहकारी क्षेत्रों में मॉडेम कारखानों की स्थापना के द्वारा अपनी उपज के वैज्ञानिक प्रसंस्करण के लिए पूर्ण सहयोग दिए जाने की आवश्यकता है।



### अनुवर्तन कार्य

विकासात्मक कार्य शुरू करने के परिणामस्वरूप लाभों को किस हद तक अर्जित किया गया है, यह जानने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई आवश्यक है. इसी तरह, कार्य में सुधार, प्रगति के अवलोकन और अड़चनों को दूर करने के लिए विभिन्न स्तरों पर मूल्यांकन वांछनीय होगा.

### (बी) बागवानी फसलों के लिए वित्तपोषण

देश के प्राकृतिक संसाधन जैसे जलवायु और मिट्टी के कारक विभिन्न प्रकार के फलों जैसे उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण की खेती के लिए एक अच्छा आधार प्रदान करते हैं- जो निम्नानुसार हैं.

उष्णकटिबंधीय	उप-उष्णकटिबंधीय	शीतोष्ण
आम	लीची	सेब
साइट्रस	लोक्यूट	नाशपाती
केला	अनार	आड़ू
अमरूद	अंगूर	बेर
पपीता	अंजीर	खुबानी
अनानास	चेरी	चीकू
खुरमा	कटहल	स्ट्रॉबेरी
शरीफा	बेर (ज़ायफस)	जामुन
एवोकाडो	माइङ्गोस्टीन	आंवला

बागवानी फसलों के अधिकांश वर्तमान में विकास को प्राकृतिक विकास कहा जा सकता है. दूसरे और बाद की पंचवर्षीय योजनाओं के शुभारंभ तक योजनाबद्ध विकास की कल्पना नहीं की गई थी.

प्रति यूनिट पैदावार के स्तर में सुधार दो तरह से अर्थात मौजूदा बागों का कायाकल्प करके और नए बागवानी बागान के तहत अतिरिक्त एकड़ की योजनाबद्ध कवरेज से किया जा सकता है.

### इंटरक्रॉप्स

बागवानी की अधिकांश फसलों की प्रकृति बारहमासी होती हैं, जहां शुरुआती 2-3 वर्षों में वानस्पतिक अवस्था में आर्थिक पैदावार की उम्मीद नहीं की जाती है. इसलिए किसान बागवानी फसलों की वानस्पतिक अवस्था में इंटरक्रॉप्स खेती कर सकते हैं, जिसकी बिक्री से ब्याज का भुगतान किया जा सकता है.

### विकास के लिए परियोजना का दृष्टिकोण

अब तक फल उद्योगों की प्रगति सीमित वित्तीय और अन्य आवश्यकताओं के साथ व्यक्तिगत उद्यमियों के प्रयासों के कारण हासिल की गई है, लेकिन इस तरह की गतिविधि के लिए परियोजना दृष्टिकोण व्यापक दृष्टिकोण बनाने में मदद करेगा जिसका उद्देश्य बाधाओं को दूर करना और सामान्य रूप से अवसंरचनात्मक आधार पर आवश्यक जानकारी और सेवा प्रदान करना है. यह परियोजनाएँ संबंधित क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के उत्थान में भी मदद करेंगी.

### तकनीकी विचार

#### अनुकूल क्षेत्र

जब परियोजना एक पारंपरिक क्षेत्र के लिए प्रायोजित होती है, जहां फसल वर्तमान में व्यावसायिक दृष्टिकोण से उगाई जा रही है, तो आम तौर पर यह अपने मूल्यांकन में कठिनाइयों को प्रस्तुत नहीं करेगा. गैर-पारंपरिक क्षेत्र में हालांकि इसे सफलतापूर्वक उगाने के

लिए फसल की विभिन्न आवश्यकताओं का अध्ययन करना और यह पुष्टि करना आवश्यक है कि जलवायु, मिट्टी इत्यादि जैसी सभी आवश्यकताएं फसल के लिए उपलब्ध हैं।

हालांकि, संबंधित क्षेत्र कृषि-जलवायु के अनुकूल हो सकते हैं, पर उपज के बाजार की दृष्टि से क्षेत्र की उपयुक्तता को भी समझा जाना चाहिए।

### भूमि की तैयारी, बाड़ लगाना इत्यादि

यदि भूमि अविरल है, तो मिट्टी के संरक्षण के उपाय आवश्यक हैं। इसी प्रकार जल निकासी सुविधाओं को विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है। प्रथम बार उपयोग की जा रही भूमि से जंगल पेड़ों और झाड़ियों को साफ करने की आवश्यकता है। रोपण करने से पहले, मिट्टी को जुताई, हैरोइंग आदि द्वारा एक बढ़िया स्थिति में लाना होगा। क्षेत्र परिधि के आसपास किसी प्रकार की बाड़ लगाकर बागों की सुरक्षा करना आवश्यक है।

### लेआउट

भूमि तैयार होते ही पेड़ों को लगाने के लिए कतार के मध्य दूरी सहित लेआउट के विभिन्न रूपों पर विचार किया जाता है। विभिन्न रूप जैसे वर्ग प्रणाली, त्रिकोणीय प्रणाली, षट्कोणीय प्रणाली और भराव प्रणाली हैं। समतल क्षेत्रों में वर्ग प्रणाली अपनाई जाती है जिससे क्रॉस-वार खेती की सुविधा मिलती है। त्रिकोणीय / हेक्सागोनल प्रणाली उन क्षेत्रों के लिए बेहतर है जहां मिट्टी के कटाव के डर से खेती नहीं की जाती। लेआउट की भराव प्रणाली के मामले में, जिसमें एक फीलर पौधा होता है (जो मुख्य वृक्षारोपण में इस्तेमाल किए जाने वाले पौधों से अलग किस्म का होता है) ऐसे पौधे का आम तौर पर बहुत ही छोटी गेस्टेशन अवधि के साथ-साथ लघु आर्थिक जीवनकाल होता है।

### फ्रील्ड ऑपरेशन

इसमें मिट्टी की खेती, निराई, मध्य फसलें आदि शामिल हैं, जिसके लिए श्रम और / या बैल की शक्ति की आवश्यकता हो सकती है।

### विपणन और अन्य बुनियादी ढांचे की आवश्यकताएं

फल की प्रकृति खराब होने की होती हैं और उन्हें तोड़ने से उपभोक्ता तक पहुँचने तक सावधानीपूर्वक संभाला जाना चाहिए. वर्तमान में पिकिंग, पैकिंग, स्टोरेज, ट्रांसपोर्ट आदि की सुविधाएँ अपर्याप्त हैं. कोल्ड स्टोरेज, वेयरहाउस, ग्रेडिंग / पैकेजिंग केंटर और त्वरित परिवहन व्यवस्था की स्थापना आज की जरूरत है. विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में अन्य बुनियादी सुविधाओं जैसे पहुँच की सड़क की आवश्यकता हो सकती है, जिसे परियोजना का एक अभिन्न हिस्सा बनाया जा सकता है. इस तथ्य के बावजूद कि फलों के प्रसंस्करण को निपटान के वैज्ञानिक साधनों में से एक माना गया है, तथापि तथ्य यह है कि फल प्रसंस्करण उद्योग अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है और उत्पादित फल की बहुत कम मात्रा का ही उपभोग कर रहा है.

### अनुवर्ती कार्रवाई

परियोजना के क्रियान्वयन के दौरान कार्य के शुभारंभ के परिणामस्वरूप किस हद तक लाभ हुआ है, इसका आकलन करने के लिए अनुवर्ती कार्रवाई आवश्यक होगी. उपयुक्त स्तरों पर मूल्यांकन का अध्ययन उपयोगी होगा.

### वृक्षारोपण और बागवानी प्रस्तावों के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश: -

#### पात्रता

लाभार्थी को संबंधित बोर्ड से बागान की फसल जैसे चाय, कॉफी, रबड़ आदि की खेती के लिए लाइसेंस प्राप्त करना चाहिए या ऐसे बोर्ड के पास पंजीकरण होना चाहिए. शाखा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छोटे किसानों आदि की पहचान के लिए निर्धारित मापदंड देखे जाएं और योजना के तहत आवंटित धन कुशलता से प्रशासित किया जाए. शाखा को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि शुरुआती चरणों में, संबंधित बोर्ड संभावित उधारकर्ताओं से ऋण आवेदनों के संग्रहण हेतु आवश्यक संगठनात्मक सहयोग प्रदान करेगा एवं समर्थन संग्रह का विस्तार करेगा और बोर्ड के विस्तार कर्मचारियों के माध्यम से आवश्यक सहायता प्रदान करने के अलावा बैंक को प्रसंस्करण में मदद करेगा.



मूल्यांकन के मानक के रूप में, शाखा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लाभार्थी के पास अन्य फसलों के तहत भूमि का पर्याप्त क्षेत्र है या उसके पास गेस्टेशन अवधि के दौरान अपने परिवार के रखरखाव के लिए आय के अन्य संसाधन हैं।

### वित्तीय आवश्यकता

वृद्धिशील प्रत्याय के संदर्भ में सभी निवेशों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और बैंक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ऋण की मंजूरी सहमत ऋण मानदंड के अनुरूप हो, जैसा कि नाबार्ड द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया गया है। पहले वर्ष में पौधों को उगाने के लिए निवेश के संबंध में ऋण पर विचार किया जाना चाहिए और बाद के वर्षों में रखरखाव हेतु निवेश पर विचार किया जाना चाहिए जब तक पौधे कि पौधे उपजाने के स्तर पर नहीं आते हैं। वित्तीय आवश्यकता का गणन संबंधित बोर्ड से प्राप्त होने वाली सब्सिडी को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए और सब्सिडी को उनके मार्जिन के रूप में लेना चाहिए। इस योजना के तहत लाभार्थी पहले 3-5 वर्षों के दौरान इंटरक्रॉप अधिमानतः लेग्युमिनस फसलों को लगाएंगे ताकि निवेश से प्रत्याय में सुधार हो। इंटरक्रॉप्स लगाने के लिए लघु अवधि के ऋण पर विचार करना चाहिए।

### सब्सिडी

बैंक यह सुनिश्चित करेगा कि चाय / कॉफी बोर्ड लाभार्थियों को ऋण जारी करने की तारीख पर या इससे पहले सब्सिडी जारी करें, जहां किसी भी योजना के तहत पूंजी सब्सिडी स्वीकार्य है और इस तरह की सब्सिडी को बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से परिचालित किया जाना चाहिए। रोपण फसलों के मामले में लाभार्थियों को उपलब्ध सीमा तक ब्याज सब्सिडी को संबंधित बोर्ड से उधारकर्ता के ब्याज खाते में समायोजित किया जाना चाहिए।

### चुकौती अवधि

बागवानी और वृक्षारोपण फसल की चुकौती अवधि फसल और इसके उगाए जाने के प्रकार पर निर्भर करती है। अब जैव प्रौद्योगिकी के प्रभाव के कारण, उच्च और आरंभ से उपज देने वाली किस्में विकसित हो गई हैं। इसलिए पुनर्भुगतान की अवधि को उक्त बिन्दुओं के आधार पर तय किया जाए। आमतौर पर बागवानी और रोपण फसलों के लिए पुनर्भुगतान अवधि

उपयुक्त अधिस्थगन अवधि के साथ 9-15 वर्ष होती है. उदाहरण के लिए, कॉफी के मामले में, नए वृक्षारोपण के स्थिति में 7 वर्ष की गेस्टेशन अवधि के साथ 15 वर्ष की चुकौती अवधि जबकि पुनर्पौष्टिकरण की स्थिति में 3 वर्ष की गेस्टेशन अवधि के साथ 9 वर्ष की पुनर्भुगतान अवधि अनुमत है.

आम, नारियल, सपोटा, अंगूर जैसी बागवानी फसलों के मामले में ऋण को 2-4 वर्ष की गेस्टेशन अवधि को शामिल करते हुए 7 से 9 वर्ष में चुकाना चाहिए. ब्याज की वसूली उस आय से की जानी चाहिए जो कि गेस्टेशन अवधि के दौरान या अन्य संसाधनों से प्राप्त होता है. शाखा को संबंधित बोर्ड या किसी भी विपणन एजेंसी से देय विक्री आय से सीधे ऋण किस्तों के संग्रहण हेतु लाभार्थियों से आवश्यक समझौते प्राप्त करने चाहिए.

### अन्य

शाखा को संतुष्ट होना चाहिए कि आवश्यक मात्रा और गुणवत्ता की रोपण सामग्री विश्वसनीय स्रोतों जैसे विश्वविद्यालयों या राज्य सरकार या संबंधित कमोडिटी बोर्ड की नर्सरी से लाभार्थियों द्वारा खरीदी जाती है.

### उधार देने के नियम और शर्तें

उधार की अन्य नियम और शर्तें जैसे ब्याज दर, मार्जिन, प्रतिभूति आदि केंद्रीय कार्यालय द्वारा समय-समय पर जारी निर्देशों के अनुसार हो सकती हैं.

### वृक्षारोपण / बागवानी योजनाओं के लिए जांच सूची

#### 1. प्रस्तावित विकास

क) क्या नया रोपण, पुनररोपण, पुनर्वास, अंतर-रोपण या घुसपैठ है?

ख) प्रस्तावित वर्षवार हेक्टेरेज (चरणबद्ध).

ग) क्या अलग-अलग प्लांटर है या प्लांटर्स का समूह है.

घ) लगाए जाने के लिए प्रति हेक्टेयर (वर्ष-वार) के साथ धारा / सर्वेक्षण संख्या.

## 2. कृषि वातावरण

- क्या रोपण के लिए प्रस्तावित भूमि पर खेती प्रथमवार हो रही हो या पहले से खेती की गई हो. यदि खेती की जाती है तो वर्तमान में फसल कैसी है?
- औसत ढाल (प्रतिशत ढलान) के साथ भूमि की स्थलाकृति.
- समुद्र तल से ऊपर साइट की स्थिति
- पिछले 3 वर्षों का अधिकतम और न्यूनतम मासिक तापमान डेटा.
- मिट्टी की भौतिक और रासायनिक प्रकृति, मिट्टी की गहराई, बनावट, जल निकासी क्षमता. पीएच मान, कार्बनिक पदार्थ, नाइट्रोजन, फॉस्फेट और पोटैश मात्रा.

## 3. सिंचाई

ए. क्या प्रस्ताव वर्षा, पूरक सिंचाई या नियमित सिंचाई के तहत है

ख. पूरक / नियमित सिंचाई के लिए मौजूदा / प्रस्तावित व्यवस्था.

सी. पानी का स्रोत (कुंवा, बोरवेल, पानी का बहता स्रोत आदि)

डी प्रस्तावित कुंवा / ट्यूबवेल के संबंध में भूजल डेटा.

ई. उपलब्ध स्रोतों के संबंध में उपलब्ध पानी की मात्रा (क्यूसेक में) के बारे में डेटा.

च. पानी पंपिंग और वितरण की व्यवस्था, क्या स्पिंकरलर सेट प्रस्तावित किया गया है. तो विवरण डिजाइन, कवर किया जाने वाला क्षेत्र और लागत अनुमान.

#### 4. बाड़

परिधि की लंबाई और विस्तृत लागत अनुमान के साथ बाड़ का प्रकार.

1. भूमि का विकास और तैयारी
2. मिट्टी संरक्षण और जल निकासी के लिए भूमि विकास का विवरण.
3. भूमि की सफाई और उसके पुनर्वास के लिए प्रस्ताव.
4. भूमि पर खेती और तालाब.

#### 5. लेआउट, अंतर, रोपण और किस्मों का घनत्व

- लेआउट वर्ग, त्रिकोणीय / षटकोणीय, आयताकार / हेज (एकल, डबल या ट्रिपल) क्यूंकीकुना / भराव.
- अंतर - पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे तक का प्रस्तावित अंतर. प्रति हेक्टेयर पौधों की कुल संख्या. अंतर / रोपण के मामले में विद्यमान के संदर्भ में प्रस्तावित अंतर और पौधों की संख्या.
- किस्म / क्लोन, कली स्टंप या बीज का नाम.
- रोपण सामग्री के लिए स्वयं की नर्सरी या बाहरी स्रोत खरीदने की व्यवस्था.
- छाया वृक्षों की रोपाई की व्यवस्था करना.

#### 6. रखरखाव

- खाद की अवधि,- गेस्टेशन अवधि के दौरान वर्षवार. खाद और उर्वरकों की उपलब्धता.
- वर्ष-वार पौधा संरक्षण अनुसूची (गेस्टेशन अवधि के दौरान). छिड़काव के लिए कीटनाशकों और उपकरणों की पर्याप्तता.
- अपनाया जाने वाली प्रस्तावित प्रूनिंग प्रणाली
- खरपतवार नियंत्रण के उपाय-प्रत्येक वर्ष कितने चरण (मैनुअल / रासायनिक)
- छाया नियंत्रण
- अन्य खेती / रखरखाव कार्य



## 7. उत्पादन

- विद्यमान परिपक्व वृक्षारोपण का पिछले तीन वर्षों का प्रति हेक्टेयर के साथ वास्तविक उत्पादन.
- उच्च उपज देने वाले भाग का (प्रति हेक्टेयर) अपनाई गई प्रौद्योगिकी जैसे किस्म, अंतर आदि के साथ उत्पादन
- यदि पहली बार रोपण किया जा रहा है तो पड़ोस के रोपण में प्रति हेक्टेयर के साथ वास्तविक उत्पादन क्या है?
- क्षेत्र के विश्वविद्यालय के खेतों पर सरकार द्वारा रिकॉर्ड किया गया उत्पादन डेटा
- योजना में अनुमानित उपज (पहली फसल से अब तक वर्ष वार)
- मिश्रित फसलों / अंतर-पौधों की अनुमानित उपज

## 8. मध्य फसलें

ए) गेस्टेशन अवधि के दौरान मध्य फसलों का विवरण. मध्य फसलों के प्रकार, फसल वाले क्षेत्र और क्या मौसमी या बारहमासी है.

ख) मध्य फसलों की अनुमानित पैदावार (वर्ष-वार)

## 9. प्रसंस्करण

क) प्रस्तावित प्रसंस्करण की प्रक्रिया क्या है, क्या पंपिंग/ डाईंग /स्मोकिंग आदि उपकरण उपलब्ध है या ईकाई की क्षमता के साथ आवश्यक है? विनिर्देशों, आउटपुट और प्रभावी जीवनकाल के साथ मशीनरी के प्रत्येक मद के बारे में पूरा विवरण. विद्यमान मशीनरी की खरीद की तिथि, प्रत्येक प्रस्तावित वस्तु की अनुमानित लागत.

ख) अपेक्षित सहायक सुविधाएं, यदि कोई हो, जैसे वर्कशाप विद्युतीकरण के विद्युतीकरण, परिवहन आदि की स्थापना और इनकी कार्य लागत

## 10. उपज का निपटान

ए) विद्यमान / प्रस्तावित के विपणन की व्यवस्था.

बी) पिछले 3 वर्षों के दौरान जारी की गई कीमत

सी) परियोजना क्षेत्र से उत्पादन का प्रस्तावित मूल्य

### **11. भवन**

- क) प्रसंस्करण इकाई के लिए भवन, आवास का निर्माण / विस्तार, विस्तृत विवरण, तल क्षेत्र का प्लान और निर्माण लागत.
- बी) प्रस्तावित खाद / उर्वरक गोदामों या किसी अन्य सहायक भवन का विवरण, तल क्षेत्र का प्लान और निर्माण लागत.
- ग) श्रमिक के घर/ पर्यवेक्षक के घरों का विवरण, तल क्षेत्र का प्लान और निर्माण लागत

### **12. फार्म सड़कें**

- क) खेत पर सड़क निर्माण का पूरा विवरण (यदि कोई हो) जैसे कि लंबाई, चौड़ाई और निर्माण हेतु उपयोग की जाने वाली सामग्रियों का लागत अनुमान के साथ विवरण.
- ख) विस्तृत डिज़ाइन और लागत अनुमान के साथ पुल निर्माण का विवरण

### **13. तकनीकी पर्यवेक्षण के लिए व्यवस्था**

- क) उपलब्ध और प्रस्तावित पर्यवेक्षीय / विस्तार कर्मचारी.
- ख) क्षेत्र में प्रगति की निगरानी के लिए व्यवस्था.

### **14. गेस्टेशन अवधि के दौरान रोपण को बढ़ाने की लागत**

प्रति वर्ष प्रति हेक्टेयर अनुमानित लागत का आकलन किया जाना है.

### **15. वर्ग मॉड्यूल में ऋण प्रस्तावों का प्रसंस्करण**

इस गतिविधि के तहत प्रस्तावों को संसाधित करने की सुविधा क्लास मॉड्यूल में उपलब्ध है. इसलिए, शाखाओं को बागवानी और रोपण फसलों के ऋण प्रस्तावों को केवल क्लास मॉड्यूल में ही संसाधित करना चाहिए.

## **लिफ्ट सिंचाई योजना**

कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए लिफ्ट सिंचाई योजना महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। यह फसल के पैटर्न में विविधता लाने, भूमि संसाधनों के गहन उपयोग में मदद करती है और साथ ही खाद, उन्नत बीजों के अधिक लाभदायक और कुशल उपयोग के साथ-साथ संयंत्रिकृत खेती में भी मदद करती है। कृषि के विकास में इसकी महत्वपूर्ण स्थिति को देखते हुए, नदियों पर बड़े और मध्यम सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण के द्वारा सतही जल के दोहन के लिए योजना संसाधनों के आवंटन पर ज़ोर दिया गया है।

हालांकि, इस तरह की परियोजनाओं की खासियत यह है कि इसमें अधिक पूंजी लगती हैं और सिंचाई के वास्तविक लाभों को समाप्त करने में लंबा वक्त लगता है। तदनुसार, लघु सिंचाई स्रोतों में कुंवा / बोरवेल, टैंक और नदियों पर निर्मित लिफ्ट सिंचाई योजनाएं शामिल हैं। सिंचित क्षेत्र के बड़े कवरेज, निवेश के बीच कम समय अंतराल और लाभों की वास्तविक अभिवृद्धि के संदर्भ में टैंक और नहरों को महत्वपूर्ण माना जाता है, जो फसल आवश्यकताओं के अनुसार सिंचाई की सुविधा प्रदान करता है। इस स्रोत की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसका क्षेत्र निकटवर्ती भूखंडों तक फैला हुआ होता है, जिससे न्यूनतम सीपेज द्वारा पानी के नुकसान को बचाया जा सकता है।

लिफ्ट सिंचाई / कृषि सिंचाई परियोजनाएं जो इस श्रेणी में आती हैं, विशेष रूप से अल्प वर्षा वाले क्षेत्रों में और पतली मिट्टी की सतह वाले क्षेत्रों में बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। उन क्षेत्रों में जहां नदियों और उपजाऊ भूमि के रूप में प्रचुर मात्रा में पानी के स्रोत मौजूद हैं, लिफ्ट सिंचाई परियोजनाएं न केवल पानी की आपूर्ति के सुनिश्चित स्रोत को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से हैं, बल्कि भूमि के गहन उपयोग के माध्यम से कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए भी हैं।

इस खंड में, लिफ्ट सिंचाई परियोजनाओं के तकनीकी, आर्थिक, प्रक्रियात्मक और अन्य पहलुओं, जिन्हें इस तरह की परियोजनाओं के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता को मंजूरी देने से पहले पूरी तरह से जांच की आवश्यकता के बारे में बताया गया है। लिफ्ट सिंचाई योजनाएं

पानी के मौसमी / बारहमासी स्रोतों पर या तो व्यक्तियों या किसानों के समूह द्वारा स्थापित की जाती हैं, जो संगठन के रूप में सहकारी समिति, साझेदारी या सक्षम प्राधिकारी के साथ पंजीकृत / पंजीकृत होते हैं। महाराष्ट्र की तरह, इन निगमों ने लिफ्ट परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए एक लचीला दृष्टिकोण अपनाया है, जहां लाभार्थियों को पानी के वितरण, जल शुल्क के संग्रहण, इनपुट एवं उत्पादन वित्त की आपूर्ति, लाभार्थियों की उपज का विपणन तथा योजनाओं के सुचारू संचालन के लिए अन्य दैनिक कार्यों में भाग लेने के उद्देश्य से सहकारी लिफ्ट सिंचाई समितियों के गठन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

### लिफ्ट सिंचाई योजना में विचार किए जाने वाले बुनियादी पहलू

1. परियोजना का कार्यान्वयन समयबद्ध होना चाहिए और निर्धारित समय के भीतर पूरा होना चाहिए. पंप, पाइप आदि की कीमतों के भविष्य में वृद्धि से बचने के लिए समय-समय पर अतिरिक्त सीमा की स्वीकृति आवश्यक है.
2. शाखाओं को जहां तक संभव हो लगभग 100 एकड़ जमीन और 10 से 15 लाभार्थी को लाभान्वित करने के लिए योजना बनाने के प्रयास करना चाहिए इसके लिए बेहतर समन्वय, और योजना को समय पर पूरा करना बहुत आवश्यक है .
3. निष्पादन एजेंसी को योजना के पूरा होने के बाद कार्यनिष्पादन की गारंटी देनी चाहिए. योजना को निष्पादित करने वाले प्राधिकरण से एक उपयुक्त कार्यनिष्पादन गारंटी दस्तावेज प्राप्त किया जाना चाहिए.
4. योजना के प्रबंधन का कार्य पेशेवर पर छोड़ दिया जाना चाहिए और प्रवर्तक की पर्याप्त भागीदारी होनी चाहिए. शाखा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परियोजना में निर्दिष्ट क्षेत्र, सिंचाई के तहत लाया गया है. शाखा को बैंक की देयता को कम करने के लिए योजना के लिए सरकार से जहाँ भी पात्रता हो, योग्य सब्सिडी प्राप्त करने की संभावना तलाशनी चाहिए.



## पानी का स्रोत

लिफ्ट परियोजनाओं के वित्तपोषण में पहला और सबसे महत्वपूर्ण विचार यह सुनिश्चित करना है कि पानी का स्रोत विश्वसनीय है और इस पर निर्भर रहा जा सकता है. तदनुसार यह पता लगाया जाएगा कि पानी का स्रोत मौसमी है या बारहमासी और परियोजना को डिजाइन करने वाले परामर्शदाता ने इस पहलू को ध्यान में रखा है और तदनुसार उपयुक्त फसल पैटर्न का सुझाव दिया है, जिसे लाभार्थी को योजना के तहत अपनाना चाहिए.

यह संतुष्टि करनी होगी कि जहां पानी का स्रोत मौसमी है, वहाँ लाभार्थियों ने बारहमासी फसलों पर खेती का प्रस्ताव नहीं किया है अन्यथा खराब उपज के कारण ऋण की अदायगी प्रभावित होगी. गैर-अधिसूचित नदियों के मामले में जो राजस्व विभाग के दायरे में आती है, पानी की उपलब्धता के बारे में जानकारी प्राप्त करना मुश्किल होता है. तदनुसार, मौसमी स्रोतों पर प्रस्तावित लिफ्ट परियोजनाओं के मामले में, नदी में पानी के प्रवाह की अवधि और स्तर के बारे में स्थानीय लोगों से पूछताछ करना उचित है. इस जानकारी के आधार पर यह संतोष करना होगा कि लाभार्थी खरीफ और रबी दोनों मौसमों के दौरान फसलों की सिंचाई की आवश्यक संख्या देने की स्थिति में होंगे. इसी प्रकार, बारहमासी लिफ्ट परियोजनाओं के मामले में, यह संतुष्ट होने की आवश्यकता है कि गर्मी के दौरान भी नदी में पर्याप्त पानी होगा और यह भी पता लगाना होगा कि जलाशय / बांध से पानी की रिहाई की स्थिति में जल स्तर को बनाए रखने के लिए कोई व्यवस्था मौजूद है या नहीं..यह भी देखना आवश्यक है कि आयोजकों ने ऋण अवधि तक संबंधित प्राधिकरण से पानी लेने की अनुमति ली है.

## लिफ्ट परियोजना का डिजाइन

लिफ्ट परियोजना का डिजाइन निम्नलिखित मदों पर निवेश की परिकल्पना करता है.

- i) जैक वेल और पंप-हाउस.
- ii) इंटेक-वेल और इनलेट पाइप.
- iii) मुख्य और सहायक पाइपलाइन.
- iv) वितरण और वितरण कक्ष.
- v) पंपिंग मशीनरी.
- vi) कमांड क्षेत्र का विकास.

लिफ्ट परियोजना के पूर्ण परिचालन में प्रत्येक वस्तु को समझने या इसका महत्व जानने के लिए आवश्यक विशेषताओं को विस्तार से बताया गया है ताकि बैंक की वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाली लिफ्ट परियोजनाओं की जांच के समय आवश्यक सावधानी बरती जाए.

### **i) जैक वेल और पंप-हाउस**

जल स्तर बढ़ने या घटाने पर पंपिंग इकाइयों को विभिन्न स्तरों पर स्थानांतरित करने की व्यवस्था विशुद्ध रूप से अस्थायी योजनाओं के लिए अनुशंसित है. स्थायी योजनाओं के मामले में, नदी तट पर एक जैक कुएं का निर्माण सबसे अच्छी व्यवस्था माना जाता है और इसकी ऐसी सभी योजनाओं के लिए अनुशंसा की जाती है. हालांकि, यह देखना होगा कि जैक कुएं के लिए साइट को या तो कमांड क्षेत्र के मध्य या ऊपर की तरफ चुना जाए ताकि सभी के प्रभावी कवरेज की सुविधा के लिए मुख्य पाइपलाइन को कमांड में दो हिस्सों में विभाजित किया जा सके. यह आवश्यक है कि ध्यान रखा जाए कि पंपिंग यूनिट बाढ़ से सुरक्षित हैं और तदनुसार, यह सुनिश्चित करना होगा कि लिफ्ट योजना के डिजाइन में एक पंप हाउस प्रदान किया जाना है. यह देखा जाए कि पंप हाउस में जैक कुएं के शीर्ष पर मोटी सागौन की लकड़ी

के आधार के साथ सभी पंपिंग इकाइयों, स्विच बोर्ड और स्टार्टर्स का प्रावधान किया गया है। यह भी देखना होगा कि जैक कुएं से पानी के पाइप को अलग करने के लिए आवश्यक व्यवस्था की गई है।

### ii) इनटेक कुंआ और इनलेट पाइप

जैक कुएं में पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए, नदी के तल में शीर्ष पर खुलने के वाले इनटेक कुएं/ कक्ष का निर्माण किया गया है। जहां पंपिंग मशीनरी स्थापित की जाती है वहाँ जैक कुएं में पानी के निरंतर प्रवाह को बनाए रखने के लिए इनलेट पाइप इस कुएं के साथ लगाया जाता है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए, कि इनटेक कुँए का निर्माण बहते पानी के ठीक पास किया गया है और जैक कुँए से ज्यादा दूर नहीं है, ताकि जरूरत पड़ने पर मिट्टी निकालने में सुविधा हो और इनलेट पाइप की लंबाई न्यूनतम रखी जा सके। अधिकतर इनटेक कुएं में मिट्टी जमा हो जाती है अतः यह सुनिश्चित करना होगा कि बरसात के मौसम के बाद मिट्टी हटाने की आवश्यक व्यवस्था की जाए।

### iii) मुख्य और सहायक पाइपलाइन

जैक कुएं के निर्माण के लिए उचित स्थान का चयन मुख्य पाइप लाइन की लंबाई एवं इसकी लागत को कम करने में मदद करता है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सीमेंट कंक्रीट या हल्के स्टील के पाइप चुने गए हैं ताकि वे पानी के दबाव का सामना कर सकें और इस प्रकार लाभार्थियों को निर्विरोध सिंचाई सुविधा सुनिश्चित कर सकें। उन परियोजनाओं में जहां कमांड क्षेत्र लंबी दूरी पर स्थित है वहाँ मुख्य और सहायक पाइपलाइन पर निवेश अपेक्षाकृत अधिक होता है और तदनुसार यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि इन पाइपों को सुरक्षित करने के लिए स्थानीय स्तर पर व्यवस्था की गई है। पूरे कमांड क्षेत्र के प्रभावी कवरेज के लिए, यह देखना आवश्यक है कि परियोजना का डिज़ाइन मुख्य और सहायक पाइपलाइनों के उचित लेआउट को प्रदर्शित करता है।

### iv) वितरण और वितरण चैंबर्स

डिलीवरी चैंबर अधिक ऊंचाई पर बनाया गया है जो गुरुत्वाकर्षण द्वारा मध्य स्थानों पर पानी के प्रवाह की सुविधा प्रदान करता है जहां कमांड क्षेत्र के विभिन्न वर्गों को कवर करने

वाले वितरण कक्ष बनाए गए हैं। कमांड क्षेत्र के स्वरूप के अनुरूप स्थान निर्धारित किया जाता है।

#### **v) पंपिंग मशीनरी**

लाभार्थियों द्वारा प्रस्तावित फसलों के प्रकार एवं कमांड क्षेत्र की विधिवत अनुमत घर्षण नुकसान के आकलन के उपरांत हॉर्स पावर और पंपिंग इकाइयों की संख्या को निर्धारित किया जाता है। स्टैंडबाय इकाइयों का भी प्रावधान किया जाता है ताकि इन इकाइयों का उपयोग ब्रेक डाउन की स्थिति में किया जा सके। उच्चतर एच.पी. पंप आमतौर पर आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं। तदनुसार यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आयोजक आपूर्तिकर्ता / प्रतिष्ठित निर्माताओं से आवश्यक प्रकार के पंपों को प्राप्त करने के लिए अग्रिम में आवश्यक व्यवस्था करें।

#### **vi) कमांड क्षेत्र का विकास**

आसान प्रवाह और यहां तक कि कमांड क्षेत्रों में पानी के वितरण के लिए, परियोजना निवेश में भूमि को आकार देने का प्रावधान किया जाना चाहिए, कमांड क्षेत्र में जहां भूमि समतल है और लाभान्वित किसानों द्वारा भूमि विकास का प्रबंधन किया जा सकता है, वहां यह देखना आवश्यक है कि, लाभार्थी परियोजना के चालू होने से पहले अपने भूखंड के विकास को अंजाम दें। जहां भी विकास की लागत पर्याप्त है और भावी लाभार्थी खर्चों को पूरा करने में समर्थ नहीं हैं, तो इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक प्रावधान किया जाए। जहां भी परियोजनाओं का उद्देश्य किसानों के समूह को लाभ पहुंचाना है, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि परियोजनाओं के तहत प्रदान की जाने वाली सहकारी लिफ्ट सिंचाई सोसायटी / अन्य संस्थाएं, कमांड क्षेत्र में आने वाली व्यक्तिगत भूमि के विकास की व्यवस्था करें। विकास की सामान्य वस्तुओं पर होने वाले खर्च को प्रो-राटा के आधार पर साझा किया जाना चाहिए और जहां तक भूमि के आंतरिक विकास का प्रश्न है, इसे संबंधित लाभार्थियों से वसूल किया जाए।



## **लागत अनुमानों का आकलन**

लागत अनुमानों के संबंध में, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ये अनुमान क्षेत्र में प्रतिष्ठित किसी सक्षम व्यक्ति / एजेंसी द्वारा किए गए हैं और एक लिफ्ट योजना के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री की प्रचलित बाजार दरों पर आधारित हैं। हालाँकि, यह सलाह दी जाती है कि जब भी आवश्यक हो, अनुमानों को स्वतंत्र एजेंसी से सत्यापित किया जाना चाहिए, विशेष रूप से तब, जब परियोजना के तहत शामिल व्यय अधिक हो। विकास की कुछ अन्य वस्तुओं जैसे पाइप, पम्पिंग मशीनरी आदि की लागत का सत्यापन इस सामग्री में डील करने वाली विभिन्न एजेंसियों द्वारा ली जा रही दरों के आधार पर किया जा सकता है। आयोजकों से लागत के सत्यापन हेतु विभिन्न मदों के कोटेशन अग्रिम रूप से प्रस्तुत करने के लिए कहा जाना चाहिए।

## **आर्थिक व्यवहार्यता**

लिफ्ट परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहार्यता निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर निर्धारित की जाती है: लागत-लाभ अनुपात धनात्मक और एक से अधिक होना चाहिए। इस अनुपात को सिंचाई के कारण वार्षिक अतिरिक्त लाभ को इन लाभों को प्रदान करने की वार्षिक लागत से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है। अतिरिक्त लाभ, सिंचाई के बाद और सिंचाई के पूर्व कृषि उपज के शुद्ध मूल्य के बीच का अंतर है। वार्षिक लागत योजना को चलाने की लागत दर्शाती है जिसमें स्थायी और परिवर्तनीय शुल्क शामिल होते हैं। इन लागतों का ब्रेक-अप निम्नानुसार है:

### **ए) स्थायी शुल्क:**

मूल्यहास का प्रावधान

- i) सिविल कार्य
- ii) यांत्रिक भाग

मूल्यहास की दर परिसंपत्ति के जीवनकाल के आधार पर निर्धारित की जाती है। नागरिक संपत्ति का जीवन आमतौर पर 30 साल और पंपिंग मशीनरी का 20 साल में माना जाता है।

**बी) परिवर्तनीय शुल्क: -**

- i) इसमें ऊर्जा शुल्क, मीटर-किराया और बिजली शुल्क शामिल हैं। मौसमी परियोजनाओं के मामले में, ऊर्जा प्रभागों में खरीफ और रबी मौसमों में उगाई गई फसलों की सिंचाई के लिए बिजली की खपत के संबंध में भुगतान शामिल होगा, जबकि बारहमासी योजनाओं के मामले में, खर्चों में बारहमासी फसलों की सिंचाई के लिए बिजली का भुगतान भी शामिल होगा.
- ii) जब ऋण बड़े पैमाने पर हो तो किस्तों के भुगतान या पूंजी निवेश पर ब्याज का प्रावधान.
- iii) सिविल और मैकेनिकल हिस्से के रखरखाव के लिए प्रावधान जो आम तौर पर संबंधित वस्तुओं की लागत का 1.5% और 3% पर लिए जाते हैं.
- iv) योजना चलाने के लिए नियुक्त कर्मचारियों का वेतन.

लाभ लागत अनुपात का कार्य निम्नलिखित समीकरण के रूप में किया जा सकता है.

लाभ: लागत अनुपात = वृद्धिशील आय / योजना को चलाने की लागत

वृद्धिशील आय, जैसा कि ऊपर बताया गया है, वह अतिरिक्त शुद्ध आय है जो सिंचाई से पहले लाभार्थियों द्वारा प्राप्त की जा रही शुद्ध आय के ऊपर है. इसी प्रकार लागत उक्तानुसार स्थायी और परिवर्तनीय शुल्क से तय की गई है.

**क्रॉपिंग पैटर्न को अपनाना**

क्रॉपिंग पैटर्न की प्रकृति सिंचाई के स्रोत से निर्धारित होती है जो या तो मौसमी या बारहमासी हो सकती है. बारहमासी लिफ्ट परियोजनाओं के मामले में, बारहमासी फसलों के तहत लाए जाने वाले क्षेत्र को प्रतिबंधित किया गया है जैसे गन्ने की फसल के मामले में यह 25% (पानी उठाने की अनुमति में निर्धारित शर्तों के अनुसार) है. मौसमी लिफ्ट योजनाओं के लिए जहां कुओं के रूप में सिंचाई का अतिरिक्त स्रोत उपलब्ध है, लाभार्थियों को बारहमासी फसलों को उठाने की सलाह दी जा सकती है, जिसके तहत पानी की उपलब्धता के आधार पर

क्षेत्र निर्धारित किया जाएगा. उत्पादन में वृद्धि के संदर्भ में लाभार्थियों का कार्य निष्पादन उनकी जानकारी और नए फसल पैटर्न को स्वीकार करने की उनकी इच्छा से संबंधित है. हालांकि, यह हमेशा सलाह दी जाती है कि लाभार्थियों को अचानक से नए फसल पैटर्न को अपनाने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए. तदनुसार, जहां भी सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वहां खेती की स्थानीय फसलों का पता लगाना आवश्यक है. सामान्य रूप से उत्पादन में वृद्धि और विशेष रूप से प्रति एकड़ उपज के संदर्भ में वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि परियोजना के तहत उर्वरकों की आपूर्ति, उन्नत बीज और अन्य इनपुट की व्यवस्था की जाए. इस उद्देश्य के लिए आवश्यक वित्त भी बैंक द्वारा प्रदान किया गया है. उपर्युक्त व्यवस्थाओं के अलावा, यह सुनिश्चित करना होगा कि परियोजना अन्य इन्फ्रा-स्ट्रक्चरल सुविधाओं को भी प्रदान करती है जो कि संक्षेप में निम्नानुसार हैं:

### उपज के विपणन की व्यवस्था

संयुक्त लिफ्ट योजनाओं के मामले में जहां सहकारी लिफ्ट सिंचाई आयोजित की जाती हैं, इन एजेंसियों को लाभार्थियों के उपज के विपणन के लिए जवाबदेह बनाया जाना चाहिए. क्षेत्र में जहां भी चीनी कारखाने के रूप में कोई भी प्रसंस्करण सुविधा उपलब्ध है, बिक्री आगम से पुनर्भुगतान प्राप्त करने हेतु लाभार्थियों के

गन्ने की आपूर्ति चीनी कारखाने को की जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए. इसके अलावा, यदि कोई अन्य संगठित विपणन व्यवस्था उपलब्ध है, जैसे कि महाराष्ट्र में जहां कपास को एकाधिकार कपास खरीद योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा खरीदा जाता है, किस्तों की वसूली को अधिकृत क्रय एजेंसियों के साथ जोड़ा जाएगा. तालुका खरीद एंड बिक्री यूनियनों ने भी कृषि उपज की मार्केटिंग का काम किया है और तदनुसार, इस स्रोत को वसूली से जोड़ने के प्रयास किया जाना चाहिए.

### इनपुट्स की आपूर्ति

जैसा कि पहले ही बताया गया है, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि आयोजकों द्वारा लाभार्थियों को आवश्यक इनपुट्स की आपूर्ति के लिए व्यवस्था की जाती है. योजना के तहत

जहां सहकारी लिफ्ट सिंचाई समितियों का गठन किया जाता है, वहां इनपुट आपूर्ति के लिए समिति को जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए. योजना के अंतर्गत व्यक्तिगत किसानों के लाभ के लिए यह पता लगाया जाना चाहिए कि उर्वरकों की आपूर्ति में सुधार करने वाली एजेंसियों ने बीज में सुधार किया है और अन्य इनपुट योजना क्षेत्र में उपलब्ध हैं. इसी प्रकार, ऐसी योजना के तहत जहां संगठन साझेदारी या कंपनी है, प्रायोजक एजेंसी को लाभार्थियों को इनपुट की आपूर्ति की व्यवस्था करनी चाहिए. यह भी देखा जाना चाहिए कि बुवाई के मौसम की शुरुआत से पहले आवश्यक मात्रा और प्रकार के इनपुट की अच्छी तरह से खरीद की जाती है और समय पर सभी लाभार्थियों को इनपुट की आपूर्ति की जाती है.

### सर्विसिंग और तकनीकी मार्गदर्शन की व्यवस्था

यह पता लगाने के लिए आवश्यक है कि लाभार्थियों के लिए सिंचाई की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए सर्विसिंग सुविधाएं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हैं. बड़ी संख्या में लाभार्थियों वाली और बड़े कवरेज की योजनाओं में, यह सलाह दी जाती है कि एक सक्षम व्यक्ति की दिन-प्रतिदिन के यांत्रिक कार्यों की निगरानी के लिए स्थायी व्यवस्था की जाए. जहां भी, इस क्षेत्र में विशेष एजेंसियां उपलब्ध हैं, लाभार्थियों को मार्गदर्शन लेने और ऐसी एजेंसियों को पर्यवेक्षण कार्य सौंपने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जब तक आयोजक आवश्यक क्षमता विकसित नहीं करते हैं या आवश्यक अनुभवी कर्मचारियों को शामिल नहीं करते हैं.

### फील्ड स्टाफ द्वारा पर्यवेक्षण और अनुवर्ती कार्रवाई

परियोजना की लागत का अनुमान लिफ्ट के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री की प्रचलित बाजार दरों के आधार पर तैयार करना आवश्यक है. परियोजना रिपोर्ट में परियोजना में शामिल विभिन्न मदों को पूरा करने के लिए एक निर्धारित समयसूची रखी जाए. परियोजना रिपोर्ट में निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार परियोजना को लागू नहीं किए जाने पर आवश्यक सामग्रियों की कीमतों में वृद्धि के कारण लागत में वृद्धि का जोखिम हमेशा बना रहता है. तदनुसार, यह आवश्यक है कि लाभार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों के समाधान के लिए और परियोजना के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाए. फील्ड स्टाफ का उपयोग फसल योजनाओं की तैयारी के लिए और लाभार्थियों को आवश्यक उत्पादन वित्त का आकलन करने के लिए भी किया जाना चाहिए.



उपरोक्त मानदंडों के आधार पर एक बार परियोजना की व्यवहार्यता और व्यवहार्यता स्थापित की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि आवश्यक ढांचागत सुविधाएं उपलब्ध हैं, लिफ्ट परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाना चाहिए.

### लिफ्ट सिंचाई समितियों का प्रबंधन

लिफ्ट सिंचाई समितियों का प्रबंधन आमतौर पर समिति की प्रबंध समिति में निहित होता है. इसलिए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि समिति दैनिक संचालन के पर्यवेक्षण के लिए सक्षम कर्मियों की नियुक्ति करती है. प्रस्ताव पर विचार करने से पहले समिति से इस आशय का वचन लेना चाहिए. शाखा को इस संबंध में समिति की व्यवस्था से भी संतुष्ट होना चाहिए.

### संगठन

किसानों के समूह को लाभान्वित करने वाली योजनाओं के मामले में, यह देखा जाना चाहिए कि आयोजकों ने प्रचलित वैधानिक प्रावधानों के तहत एक सहकारी लिफ्ट सिंचाई सोसायटी, साझेदारी, कंपनी, एसएचजी या जेएलजी का गठन किया है. समय पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने और प्रभावी नियंत्रण करने के लिए लिफ्ट सिंचाई परियोजना के कमांड क्षेत्र के लगभग 100 एकड़ होने की पुष्टि की जानी चाहिए. शाखाओं को, इसलिए जहां तक संभव हो सीमित संख्या में लाभार्थियों के लिए लिफ्ट सिंचाई परियोजनाएं तैयार करनी चाहिए.

एसोसिएशन के उप-कानूनों / लेखों में, परियोजना के कार्यान्वयन के लिए बैंक से ऋण लेने के लिए प्रायोजक एजेंसी को अधिकृत करने के लिए आवश्यक प्रावधान किए जाने की आवश्यकता है. राज्य निगमों के मामले में, यह देखना आवश्यक है कि संबंधित राज्य सरकार ने इस आशय का एक प्रस्ताव पारित करके बैंक ऋण बढ़ाने के लिए निगम को सहमति दे दी है. संकल्प में वित्त पोषण एजेंसी का नाम और लिफ्ट सिंचाई परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए निगम को दी गई सीमा का उल्लेख होना चाहिए.

## **ऋण के लिए सुरक्षा**

- i) व्यक्तिगत भूमि का बंधक / कृषि भूमि पर प्रभार –प्रत्यक्ष या असाइनमेंट के द्वारा उप-बंधक से, जहां व्यक्तिगत भूमि को सहकारी समिति, साझेदारी या कंपनी के पास गिरवी रखा जाता है. लाभार्थियों द्वारा भूमि को गिरवी किए जाने से पहले सर्व रिपोर्ट बनानी चाहिए.
- ii) व्यक्तिगत योजनाओं के तहत और संयुक्त लिफ्ट सिंचाई योजनाओं के तहत स्थापित संगठन के माध्यम से लाभार्थियों द्वारा सीधे पंपिंग मशीनरी, पाइपलाइनों और अन्य सामानों का दृष्टिबंधक.
- iii) राज्य सरकार की गारंटी अगर राज्य उपक्रम को ऋण स्वीकृत किया गया है.
- iv) कंपनी के शेयरधारकों की गारंटी जब शेयरधारकों को लाभ देने वाली परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए कंपनी को ऋण स्वीकृत किया जाता है.
- v) फसली ऋणों के विरुद्ध लाभार्थियों की फसलों का दृष्टिबंधक.

## **संवितरण**

कार्य की प्रगति के अनुसार ऋण जारी किया जाना चाहिए और जहां भी सहकारी लिफ्ट सिंचाई समितियों का गठन किया जाता है, अंशदान के आधार पर निर्धारित उधार की सीमा तक ऋण जारी किया जाना चाहिए. पाइप, पंपिंग मशीनरी और अन्य सामग्रियों की खरीद के लिए निर्धारित राशि को लाभार्थियों / प्रायोजन एजेंसी के सत्यापन उचित प्राधिकार पर आपूर्तिकर्ताओं को जारी किया जाना चाहिए. बाद की किस्तों को जारी करने से पहले जारी किए गए ऋण के अंतिम उपयोग को सत्यापित किया जाना चाहिए. यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि लाभार्थी ऋण के संवितरण के लिए अपने हिस्से का योगदान करें. व्यक्तिगत लाभार्थियों को मंजूर किए गए फसली ऋण को ऐसी किस्तों में जारी किया जाना चाहिए जो प्रमुख कल्चरल कार्यों के साथ तालमेल बिठाते हों. उर्वरकों और अन्य निविष्टियों के लिए निर्धारित राशि का भुगतान संबंधित लाभार्थियों के उचित प्राधिकार के तहत आपूर्तिकर्ताओं को किया जाना चाहिए. ऐसे भुगतानों के बिल और प्राप्तियां रिकॉर्ड के लिए प्राप्त की जानी चाहिए.

### पुनर्भुगतान

चूंकि लिफ्ट सिंचाई परियोजना से तुरंत आय नहीं होती है, ऋण की चुकौती से पहले एक उपयुक्त गेस्टेशन अवधि की अनुमति दी जानी चाहिए। पुनर्भुगतान अवधि 2 फसल के मौसम के बाद सिंचाई योजना के पूरा होने पर शुरू होनी चाहिए। एक सहकारी लिफ्ट सिंचाई सोसायटी या परियोजना के तहत स्थापित ऐसे किसी भी संगठन को किस्तों की वसूली के लिए जिम्मेदार बनाया जाना चाहिए। संयुक्त लिफ्ट योजनाओं के मामले में, प्रायोजक संगठन ऐसी पानी की दरों को तय करेगा, जिनमें से आय आवर्ती लागत और ऋण किस्तों को पूरा करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए। जहाँ भी वसूली, क्रय / विपणन या एक प्रोसेसिंग एजेंसी से जुड़ी हो, लाभार्थियों से उचित प्राधिकार पत्र प्राप्त किया जाना चाहिए। ऋण की चुकौती की अधिकतम अवधि अवकाश अवधि को मिलाकर 9 वर्ष निर्धारित की जानी चाहिए। नाबार्ड द्वारा निर्दिष्ट और अनुमोदित योजनाओं के मामलों में पुनर्भुगतान अवधि एवं उनके द्वारा निर्धारित अन्य नियमों और शर्तों को निर्दिष्ट शाखाओं द्वारा पालन करना होगा।

### ऋण की अवधि

लोन प्रोजेक्ट पूरा होने की अवधि लिफ्ट योजना के आकार के अनुसार और साथ ही कवर किए जाने वाले कमांड क्षेत्र के आधार पर 6 महीने से लेकर 2 साल तक हो सकती है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि लागत में वृद्धि से बचने के लिए परियोजना निर्दिष्ट समय के भीतर पूरी हो गई है।

### पर्यवेक्षण और अनुवर्ती कार्रवाई

बैंक के फील्ड कर्मचारियों को परियोजना के कार्यान्वयन में प्रगति सुनिश्चित करने के लिए नियमित पर्यवेक्षण, परियोजना के चालू होने के बाद किसानों की फसल ऋण आवश्यकताओं के आकलन तथा योजना आरंभ होते ही वसूली के लिए नियुक्त किया जाना चाहिए। नामित शाखा, क्षेत्रीय / आंचलिक कार्यालयों को योजना के कार्यान्वयन में प्रगति और किस्तों की वसूली से अवगत कराएगी, तत्पश्चात् जिसे केंद्रीय कार्यालय को प्रस्तुत किया जाएगा।

### लिफ्ट सिंचाई परियोजनाओं के लिए चेक-लिस्ट

**(ए) पानी की उपलब्धता**

- i) पानी का स्रोत विश्वसनीय और भरोसेमंद होना चाहिए.
- ii) लाभार्थियों द्वारा प्राप्त पानी लेने की अनुमति ऋण की अवधि तक होनी चाहिए.
- iii) कुओं के रूप में सिंचाई के अतिरिक्त स्रोत का पता लगाया जाना चाहिए.

**(बी) लिफ्ट परियोजना का डिजाइन**

- i) यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि परियोजना एक सक्षम व्यक्ति/एजेंसी द्वारा डिजाइन की गई है और उचित क्षेत्र के चयन के उद्देश्य से सर्वेक्षण किया गया है.
- ii) यह योजना पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नदी के तल में जैक कुओं और इनटेक कुओं के निर्माण के लिए है. यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पंपिंग मशीनरी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जैक वेल उच्च बाढ़ स्तर से ऊपर निर्मित किया गया है.
- iii) मुख्य / सहायक पाइपलाइनों का लेआउट इस तरह रखा गया है कि यह पूरे कमांड क्षेत्र की सिंचाई को कवर करेगा.
- iv) यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि लाभार्थियों द्वारा सिंचाई सुविधा के प्रभावी उपयोग के लिए फील्ड चैनलों के निर्माण और भूमि समतलन की व्यवस्था की गई है.
- v) लाभार्थियों को निर्विरोध सिंचाई सुनिश्चित करने के लिए पंपिंग इकाइयों द्वारा स्टैंड के लिए प्रावधान किया जाना चाहिए.
- vi) सभी किसानों की भूमि को सिंचित करने के लिए मध्यस्थ दूरी पर वितरण कक्षों की आवश्यक संख्या होनी चाहिए.



**(सी) लागत का आकलन**

- i) लागत का अनुमान एक सक्षम व्यक्ति / एजेंसी द्वारा तैयार किया जाना चाहिए और वो बाजार की प्रचलित दरों के आधार पर होना चाहिए.
- ii) जहां भी इसे आवश्यक समझा जाए प्राक्कलन को एक स्वतंत्र सक्षम व्यक्ति/एजेंसी से सत्यापित किया जाए.
- iii) प्राक्कलन की विश्वसनीयता की पुष्टि के लिए परियोजना के लिए आवश्यक सामग्री में डील करने वाली विभिन्न एजेंसियों की दरों को प्राप्त किया जाना चाहिए.

**(डी) आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन**

- i) प्रति एकड़ लागत संबंधित राज्य सरकार द्वारा तय सीमा के भीतर होनी चाहिए.
- ii) लाभ / लागत अनुपात सकारात्मक होना चाहिए और एक से अधिक होना चाहिए.

**(ई) फसल पैटर्न**

- i) पानी की उपलब्धता के आधार पर लाभार्थियों द्वारा फसल पैटर्न अपनाया जाना चाहिए.
- ii) यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इनपुट की आपूर्ति के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाती है जिसके लिए लाभार्थियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए.

**(एफ) तकनीकी मार्गदर्शन और सर्विसिंग की व्यवस्था**

- i) यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि लाभार्थी मैकेनिकल ऑपरेशन के पर्यवेक्षण कार्य को एक सक्षम एजेंसी को सौंपते हैं या इस उद्देश्य के लिए आवश्यक अनुभवी कर्मचारियों को शामिल करते हैं.
- ii) पुर्जों की सर्विसिंग / क्रय की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होनी चाहिए.

**(जी) उत्पादों का विपणन**

- i) एक संगठित एजेंसी के माध्यम से उपज के विपणन के लिए व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए.
- ii) जहां भी संभव हो, वसूली को क्रय / विपणन एजेंसी के साथ जोड़ा जाना चाहिए.

**(एच) संगठन**

- i) किसानों के समूह को लाभान्वित करने के लिए योजना के तहत, सिंचाई समिति की स्थापना को सबसे अच्छा संगठन के रूप में अनुशंसित किया गया है.
- ii) योजना के निर्माण के लिए साझेदारी या कंपनी को भी वित्तपोषित किया जा सकता है.
- iii) सरकार की गारंटी के समक्ष लिफ्ट के निर्माण के लिए विशेष राज्य उपक्रम को वित्तपोषित किया जा सकता है.

**(आई) ऋण जारी करना**

संवितरण, उधार सीमा तक ही सीमित होना चाहिए जो संगठन द्वारा पंजीकृत प्राधिकरण द्वारा तय किया गया हो और यह लाभार्थियों के अंशदान के अनुरूप भी होना चाहिए.

## **भाग (पांच) - जोखिम प्रबंधन**

बैंकों और वित्तीय संस्थानों के निवेश पर प्रतिलाभ को साकार करने के उद्देश्य से व्यवसाय संचालित करने के दौरान जोखिम का होना माना जाता है. यह स्पष्ट है कि ये जोखिम संभावित प्रतिलाभ को समाप्त कर सकते हैं और इस प्रकार इन संस्थानों के लिए घाटे को बढ़ा सकते हैं. कुछ मामलों में यह प्रत्याशित है जबकि अन्य मामलों में ये जोखिम अप्रत्याशित हो सकते हैं. बैंकों और संस्थानों के पास आम तौर पर अपेक्षित नुकसान के लिए संचित भंडार होता है, लेकिन अप्रत्याशित घटनाएं जैसे कि आर्थिक संकट या गिरती ब्याज दरें संस्थानों को संबंधित नुकसान को कम करने के लिए उनकी पूंजी पर विश्वास करने का कारण बनती हैं.

वास्तविक रूप में बैंकों और वित्तीय संस्थानों में प्रभावी जोखिम प्रबंधन ढांचे की आवश्यकता उनके अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है. कुशल जोखिम प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग करके, ये संस्थान अपने जोखिम वापसी व्यापार को अनुकूलित करने में सक्षम होंगे.

### **जोखिम का महत्व**

चूंकि जोखिम लेना बैंकिंग व्यवसाय का एक अभिन्न हिस्सा है, इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि बैंक जब से बैंक व्यवसाय कर रहे हैं, तब से जोखिम प्रबंधन का अभ्यास कर रहे हैं - उद्योग भी जोखिम के बिना जीवित नहीं रह सकता था. एकमात्र वास्तविक परिवर्तन परिष्कार की डिग्री है जो अब अधिक जटिल और तेज़ गति वाले वातावरण को प्रतिबिंबित करने के लिए आवश्यक है.

1997 का एशियाई वित्तीय संकट बताता है कि बुनियादी जोखिम प्रबंधन की अनदेखी भी अर्थव्यवस्था की व्यापक कठिनाइयों में योगदान कर सकती है। एशिया में उल्लेखनीय आर्थिक विकास और समृद्धि की लंबी अवधि ने कई वित्तीय संस्थानों में जोखिम प्रबंधन में कमजोरियों को कई एशियाई बैंकों ने ऋण का विस्तार करने से .का सामना किया पहले जोखिम का आकलन नहीं किया या नकदी प्रवाह का विश्लेषण नहीं किया, बल्कि उधारकर्ता और संपार्श्विक की उपलब्धता के साथ अपने संबंधों के आधार पर उधार दिया.

इसका नतीजा यह हुआ कि उधारकर्ताओं की ऋण अदा करने की क्षमता की तुलना ऋण, जिसमें विदेशी बैंकों द्वारा ऋण भी शामिल था, प्रदान करने में तेजी से विस्तार किया गया . इसके अतिरिक्त चूंकि कई बैंकों ने व्यक्तिगत फर्मों या व्यावसायिक क्षेत्रों को ऋण देने की समय सीमा का पालन नहीं किया था तो ये बैंक सबसे कमजोर हो गए थे .

हालाँकि, विफलता से बचने के जोखिम का प्रबंधन करने के लिए एक प्रमुख कारण है, वैश्विक वित्तीय संस्थानों का भी पूंजी या RAROC पर उनकी जोखिम-समायोजित दर को अधिकतम करना. इसका मतलब यह है कि न केवल अत्यधिक जोखिम से बचा जाए, बल्कि प्रतिलाभ और पूंजी के सापेक्ष जोखिम को मापना और प्रबंधित भी किया जाए.

पूंजी पर जोखिम-समायोजित रिटर्न पर ध्यान केंद्रित करने से, वैश्विक संस्थान उन गतिविधियों और निवेशों पर बहुत अधिक जोर देने से बचते हैं जिनमें उच्च प्रत्याशित रिटर्न होता है. इससे प्रबंधन के फैसले बेहतर होते हैं और पूंजी और अन्य संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग किया जा सकता है.

वास्तव में, बैंक शेयरधारकों और लेनदारों को वापसी का एक उचित जोखिम-समायोजित दर प्राप्त होने का विश्वास होता है, जिसके परिणामस्वरूप बैंक जो जोखिम-समायोजित रिटर्न पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं, उन्हें बाजार द्वारा लाभ प्राप्त नहीं होता है. यह ऐसा तंत्र प्रदान करता है जो संसाधनों को आवंटित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है.

सबसे अधिक जोखिम समायोजित अपेक्षित लाभप्रदता वाली परियोजनाएं वित्तपोषित होने और सफल होने की सबसे अधिक संभावना होती है. जोखिम प्रबंधन से अंतिम लाभ उच्च आर्थिक विकास है. दृढ़ जोखिम प्रबंधन के बिना, कोई भी अर्थव्यवस्था अपनी क्षमता तक नहीं बढ़ सकती है. स्थिरता और अधिक आर्थिक विकास, बदले में, अधिक निजी बचत, उस बचत का अधिक प्रतिधारण, अधिक पूंजी आयात और अधिक वास्तविक निवेश का नेतृत्व करते हैं.

इसके बिना, न केवल हम इन लाभों को खो देते हैं, बल्कि हम बैंक व्यवधानों और असफलताओं की काफी लागत भी उठाते हैं, जो अप्रत्याशित, अवांछित और अप्रबंधित जोखिम उठाने से होती हैं.



### जोखिम प्रबंधन सिद्धांत

- प्रभावी रूप से जोखिम को मापने और प्रबंधित करने की क्षमता विकसित करने के लिए बैंकों के लिए आवश्यक शर्तें हैं .
- सबसे पहले, जोखिम को मापने के लिए, देश में ठोस लेखांकन और प्रकटीकरण मानक होने चाहिए जो सटीक, प्रासंगिक, व्यापक और समय पर जानकारी प्रदान करें ताकि बैंक उधारकर्ताओं और समकक्षों की स्थिति और प्रदर्शन का आकलन कर सकें .
- सटीकता सुनिश्चित करने के लिए, लेखा प्रणालियों को ऑडिटिंग सिस्टम द्वारा पूरक किया जाना चाहिए और सरकारी एजेंसियों और बाहरी लोगों को धोखाधड़ी या भ्रामक जानकारी प्रदान करने के लिए लागू कानूनी दंड द्वारा समर्थित होना चाहिए .
- बैंकों को संभावित उधारकर्ताओं के क्रेडिट इतिहास और मैक्रोइकॉनॉमिक और वित्तीय चर पर विश्वसनीय जानकारी की आवश्यकता होती है जो क्रेडिट और अन्य जोखिमों को प्रभावित कर सकते हैं .
- इसके अतिरिक्त, बैंकों को जोखिम की पहचान करने और मूल्यांकन करने के लिए जोखिम प्रबंधन में पर्याप्त विशेषज्ञता वाले कर्मचारियों की आवश्यकता होती है .
- क्रेडिट जोखिम के मूल्यांकन के अधिकांश तरीकों में निहितार्थ यह धारणा है कि पुनर्भुगतान की संभावना उधारकर्ता की चुकौती की क्षमता पर निर्भर करती है . यदि पुनर्भुगतान इच्छा पर निर्भर करता है, तो इसकी संभावना मुश्किल है .
- इस प्रकार, एक पर्याप्त कानूनी प्रणाली और "क्रेडिट कल्चर", जिसमें उधारकर्ताओं से चुकाने की उम्मीद की जाती है और यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो उन्हें दंडित किया जाता है. यदि बैंकों को जोखिम कम करने के लिए वसूली किए जाने की क्षमता हो तो डिफॉल्ट रूप से उधारकर्ताओं की संपार्श्विक को जब्त करने की शक्ति आवश्यक है .
- अंत में, जोखिम प्रबंधन में हितों के टकराव की संभावना सीमित होनी चाहिए . विशेष रूप से, उन विनियमों की आवश्यकता होती है जो बैंक मालिकों, शेयरधारकों या प्रबंधन से जुड़े उधार के प्रकटीकरण को प्रतिबंधित और आवश्यक करते हैं .
- इस तरह के नियमों के बिना, व्यक्तिगत लाभ की इच्छा बैंक मालिकों और प्रबंधकों के प्रोत्साहन को उचित रूप से जोखिम का प्रबंधन करने के लिए विकृत कर सकती है.

### जोखिम प्रबंधन के प्रमुख सिद्धांत

निम्नलिखित सिद्धांतों को विकास के किसी भी चरण और किसी भी अधिकार क्षेत्र में कार्यरत किसी भी बैंक या वित्तीय संस्थान में लागू किया जा सकता है. प्रत्येक बैंक या संस्थान को इन सिद्धांतों के पालन के अपने स्वयं के व्यावहारिक साधनों को लागू करना चाहिए और उनकी प्रभावशीलता के संदर्भ में उन्हें बाहर के समीक्षकों को प्रदर्शित करने में सक्षम होना चाहिए :

### **जोखिम आंतरिक बल का निर्धारण :**

वित्तीय संस्थानों को विभिन्न प्रकार के जोखिमों का प्रबंधन करने के लिए संगठनात्मक क्षमता को ध्यान में रखते हुए अपनी सीमा का निर्धारण करने की आवश्यकता होती है. एक संगठन के विभिन्न स्तरों में उस जोखिम की सीमा की व्यापकता को समझ कर ही पूंजी का आवंटन और उत्पाद मूल्य निर्धारण के साथ ही कर्मचारियों, प्रबंधन और बोर्ड के सदस्यों के लिए प्रोत्साहन और पारिश्रमिक संरचनाओं को चलाना चाहिए. राजस्व गतिविधियों की रीढ़ के रूप में व्यावसायिक रणनीति को विकसित करने और लगातार उस जोखिम की सीमा के अनुरूप लाने की आवश्यकता है.

### **जोखिम :आधारित प्रोत्साहन और मुआवजा-**

वित्तीय संस्थानों को संगठन के लिए जोड़े गए दीर्घकालिक, जोखिम-समायोजित मूल्य के आधार पर कर्मचारियों और प्रबंधन को पुनर्मूल्यांकन और प्रोत्साहन देना चाहिए. व्यापार इकाइयों की लाभप्रदता और वित्तीय जोखिमों के किसी भी उपाय को संबंधित जोखिमों के उपायों को प्रतिबिंबित करने के लिए समायोजित किया जाना चाहिए. पारिश्रमिक और प्रोत्साहन का प्रभाव कम दिखाई देता है लेकिन जोखिम कार्यों सहित नियंत्रण कार्यों के स्तर पर उतना ही महत्वपूर्ण है.

वहां व्याप्त मुख्य समस्या उन कार्यों के योगदान को "निचली रेखा" तक मापने के लिए व्यापक रूप से स्वीकृत और पारदर्शी कार्यप्रणाली की कमी के कारण होती है. इस समस्या के बावजूद, जोखिम प्रबंधन सहित कार्यों को नियंत्रित करने के लिए उचित प्रोत्साहन देना, यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से आवश्यक है कि वे अपने कार्यों को अपनी क्षमता के अनुसार और संस्था के सर्वोत्तम हित में करें.

### ब्याज उन्मूलन का संघर्ष :

हितों के टकराव के किसी भी रूप तरह रोकना ही एक मजबूत जोखिम प्रबंधन की एक परम आवश्यकता होती है. किसी एक नए बोर्ड के सदस्यों, अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हितों के टकराव की संभावित स्थितियों को खत्म करने की एक अच्छी तरह से विकसित प्रक्रिया होनी चाहिए. कर्तव्यों का अलगाव, राजस्व सृजन कार्यों से नियंत्रण कार्यों की स्वतंत्रता, और संगठन के सभी स्तरों पर उचित जांच और संतुलन स्थापित और लगातार बनाए रखा जाना चाहिए. निर्णय-निर्माताओं को प्रभावित करने वाले प्रोत्साहनों से निकटता ही हितों के टकराव का मुद्दा होता है, या एक साथ विभिन्न दलों के लिए जनादेश का आयोजन है जहां एक के हित दूसरे के हितों के विपरीत हैं.

ऐसी स्थिति से निपटने के लिए एक प्रक्रिया मौजूद होनी चाहिए और यह पता चलने पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता है - इसमें शामिल व्यक्ति को सभी कर्तव्यों से छुटकारा दिया जाना चाहिए, कम से कम जब तक संघर्ष हल नहीं हो जाता है. आचार संहिता और संबंधित पार्टी लेन-देन के नियमों को सावधानीपूर्वक विकसित और सख्ती से लागू किया जाना चाहिए.

### व्यापक जोखिम संस्कृति :

सही नीतियों और संरचना को स्थापित करने से परे, जोखिम संस्कृति अपने जोखिम प्रबंधन में एक संगठन की सफलता के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाती है. जोखिम-जागरूक संस्कृति के निर्माण के लिए सभी स्तरों पर और व्यक्तिगत रूप से और जोखिम की पहचान और प्रबंधन में जवाबदेही सहित एक संगठन के सभी सदस्यों द्वारा मान्यता की आवश्यकता होती है. इसमें व्यावसायिक उद्देश्यों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और कर्मचारी प्रोत्साहनों की निरंतर प्रतिक्रिया और प्राप्ति की आवश्यकता होती है. यह एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है लेकिन इसका असर लंबे समय तक चलने वाला और दूर तक फैलने वाला होता है. जैसा कि जोखिम की प्रवृत्ति को निर्धारित करने और औपचारिक जोखिम मूल्यांकन करने के साथ, जोखिम संस्कृति को संगठन की सभी इकाइयों और व्यावसायिक लाइनों में भी विस्तार करना चाहिए और सभी प्रासंगिक जोखिमों यथा वित्तीय और गैर-वित्तीय (जैसे प्रतिष्ठित जोखिम) को शामिल करना चाहिए.



### प्रभावी संचार:

दृढ़ जोखिम प्रबंधन के लिए अत्यधिक प्रभावी संचार की आवश्यकता होती है, जिसमें शिक्षित करना, प्रतिक्रिया एकत्र करना, रिपोर्ट करना और जोखिम के बारे में रचनात्मक संवाद में संलग्न होना शामिल है। दृढ़ जोखिम प्रबंधन के लिए जोखिमों का संचार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उन्हें मापना और नियंत्रित करना। जोखिम प्रबंधकों की भूमिका और जोखिम प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों को संगठन में जोखिम की जानकारी को संप्रेषित करने के लिए एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी शामिल होनी चाहिए। संचार में शिक्षित करना, प्रतिक्रिया एकत्र करना, रिपोर्टिंग करना और जोखिम के बारे में रचनात्मक संवाद में संलग्न होना शामिल है। दृढ़ जोखिम प्रबंधन के लिए जोखिमों का संचार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उन्हें मापना और नियंत्रित करना। जोखिम प्रबंधक की भूमिका और जोखिम प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों को संगठन में जोखिम की जानकारी को संप्रेषित करने के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र जिम्मेदारी शामिल होनी चाहिए।

### मजबूत मुख्य जोखिम अधिकारी और जोखिम कार्य:

प्रत्येक वित्तीय संस्थान में जोखिम प्रबंधन के सभी पहलुओं और आमतौर पर सीआरओ नामक सभी प्रकार के जोखिमों के लिए जिम्मेदार एक जिम्मेदार वरिष्ठ कार्यकारी होना चाहिए। संगठनात्मक पदानुक्रम और कार्यकारी शक्तियों के आवंटन को सीआरओ और जोखिम-जनन के महत्व को प्रतिबिंबित करना चाहिए जो राजस्व पैदा करने वाले कार्यों के बराबर है। हर संगठन में जोखिम प्रबंधन कार्य को पर्याप्त स्थिति, प्राधिकरण और संसाधन दिए जाने चाहिए। जोखिम कार्यों के लिए उपलब्ध वित्तीय और तकनीकी संसाधन भी जोखिम कार्य शक्ति का एक उपाय हैं और इसकी भूमिका की जटिलता और महत्व के अनुरूप होना चाहिए।

### बैंकों में जोखिम प्रबंधन की आवश्यकता-

अर्थव्यवस्था के औचित्यपूर्ण एवं दीर्घकालिक विकास हेतु बैंकों को अस्तित्व की दृष्टि से व्यवहारिक होने के साथ जोखिम प्रबंधन वाली की प्रथाओं का पालन करने तथा जोखिम की समस्याओं पर ध्यान देने की दुरगामी आवश्यकता निहितार्थ है। बैंकों के स्वस्थ परिचालन हेतु जोखिम प्रबंधन उपायों की सुदृढ़ता का योगदान महत्वपूर्ण है।



### मजबूत जोखिम क्षमता:

वित्तीय संस्थानों को पर्याप्त संख्या में जोखिम प्रबंधन पेशेवरों को नियुक्त करना चाहिए और उन्हें लगातार प्रशिक्षित करना चाहिए जिनके पास पर्याप्त व्यावसायिक अनुभव हो, अत्यधिक सक्षम संचारक हों और अर्थशास्त्र, वित्तीय सिद्धांत, गणित और सांख्यिकी, प्रौद्योगिकी, सूचना विज्ञान और सूचना सहित जोखिम सिद्धांत के सभी पहलुओं में कुशल हों। जोखिम प्रबंधन एक गतिशील और जटिल अनुप्रबंधन है, और बैंकिंग तेजी से उत्पाद विकास और नवाचार के लिए अनुकूल एक उद्योग है। उन दोनों कारणों से जोखिम प्रबंधन में शामिल लोगों को अपने कौशल और अनुभव को लगातार उन्नत करना चाहिए। संस्था को समूह प्रशिक्षण पहलू का आयोजन करना चाहिए और पाठ्यक्रम, सम्मेलनों, पत्रिकाओं, सदस्यता और अन्य चैनलों के माध्यम से अपने क्षेत्रों के विकास में निरंतरता बनाए रखने के लिए कर्मचारियों के व्यक्तिगत प्रयासों को प्रोत्साहित और वित्तीय रूप से समर्थन करना चाहिए।

### जोखिम विभाजन और नियंत्रण

अन्य बातों के अलावा दिन-प्रतिदिन कानूनी जोखिम का नियंत्रण, समय-समय पर समीक्षा और संस्था द्वारा उपयोग किए गए प्रलेखन को अद्यतन करना शामिल है। दृढ़ अभ्यास से यह लाभ मिलेगा कि प्रलेखन की समीक्षा विशिष्ट घटनाओं के जवाब में दोनों ओर से की जानी चाहिए, जिसमें संशोधन की आवश्यकता हो सकती है और यह भी नियमित रूप से सुनिश्चित करने के लिए कि संस्था बाजार अभ्यास के साथ-साथ कानूनी दखल के साथ रहती है। घर के कानूनी विभाग के संसाधनों के आधार पर, इस तरह की समीक्षा के सभी या भाग के लिए बाहरी कानूनी संसाधनों का उपयोग करना उचित हो सकता है।

लगभग सभी उद्योग क्षेत्रों के लिए इन दिनों जोखिम प्रबंधन एक उच्च प्राथमिकता है। कई उद्योगों ने वित्तीय सेवा उद्योग की तुलना में जोखिम प्रबंधन के प्रभाव को अधिक गहराई से अनुभव नहीं किया है। जैसा कि आर्थिक संकट के परिणामों के रूप में अनुभव किया जाता है, समग्र दृष्टिकोण से जोखिम को संबोधित करने में विफलता के परिणामस्वरूप बैंकों, वित्तीय संस्थानों और समग्र रूप से अर्थव्यवस्था के लिए प्रतिकूल परिणाम होंगे। अग्रणी अधिकारियों का मानना है कि जोखिम प्रबंधन पर पूरा ध्यान देने से न केवल नुकसान से बचा जा सकेगा, बल्कि यह प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का भी साधन होगा।

### भविष्य के परिणामों के लिए सिफारिशें

बैंकों और वित्तीय संस्थानों में जोखिमों के प्रबंधन के लिए अधिक विशिष्ट उपायों को परिभाषित करने के लिए अनुसंधान को आगे बढ़ाया जा सकता है। ऐसे सवाल उठेंगे जैसे कि कोई संस्थान अपने विशेष जोखिम वापसी व्यापार का निर्धारण कैसे कर सकता है? क्या यह संस्थानों में भिन्न होगा या किसी विशेष वित्तीय समूह के सदस्यों के लिए अपेक्षाकृत स्थिर रहेगा? कई अलग-अलग प्रकार के जोखिमों को देखते हुए, उन्हें कैसे एकत्र किया जा सकता है ताकि संस्था के कुल जोखिम जोखिम को मापा जा सके?

जोखिम जब भी हम इस शब्द को सुनते हैं तो यह लगता है कि यह किस प्रकार का जोखिम हो सकता है। क्या यह शारीरिक जोखिम है या वित्तीय जोखिम है। सर्वेक्षण के अनुसार आम जन जिसने हमेशा कुछ मूल्य खोने की आशंका की है जिसमें प्रमुख रूप से वित्त शामिल है। और अगर हम आज देखें तो न केवल एक व्यक्ति बल्कि संगठन भी अपने पैसे खोने के बारे में डरते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जोखिम उठाए बिना कोई भी विकसित या अधिक नहीं कमा सकता है लेकिन आधुनिकीकरण और उदारीकरण और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण, जोखिम और अनिश्चितता की दर में भी वृद्धि हुई है। इसने न केवल एक व्यक्ति बल्कि बैंकिंग क्षेत्रों और वित्तीय संस्थानों के लिए भी परेशानी खड़ी कर दी है। बाजार में बने रहने और बढ़ने के लिए, बैंकों को इन जोखिमों को कम या कम करना होगा। इस प्रकार, जोखिम प्रबंधन अवधारणा तस्वीर में आ गई है जो जोखिम कारक को कम करने के लिए दिशानिर्देश प्रदान करेगी या बैंकिंग संगठन के लिए रोडमैप के रूप में कार्य करेगी।

### **जोखिम प्रबंधन का अभिप्राय-**

बैंकों में जोखिम की पहचान, मूल्यांकन एवं प्राथमिकीकरण के साथ संसाधनों का समन्वित तथा आर्थिक प्रयोग कर दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की संभाव्यता अथवा प्रभाव को न्यूनतम करना, परखना और नियंत्रित करना है। जोखिम, बैंकों में वित्तीय अनिश्चितता, परियोजना की असफलता, वैधानिक देयताएं, ऋण जोखिम, प्राकृतिक कारणों और आपदाओं के कारण हो सकते हैं। इसके निवारण हेतु अनेक जोखिम प्रबंधन मानक विकसित किये गए हैं जिनमें परियोजना प्रबंधन संस्थान, राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तथा आईएसओ मानक शामिल हैं।

## जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया

आईएसओ 31000 मानक "जोखिम प्रबंधन - कार्यान्वयन के सिद्धांतों और दिशानिर्देश के अनुसार जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण होते हैं :

1. चुने हुए हित क्षेत्र में जोखिम की पहचान
2. प्रक्रिया के अवशेष भाग की योजना
3. निम्नलिखित को योजनाबद्ध करना
  - जोखिम प्रबंधन का सामाजिक कार्य क्षेत्र
  - हितधारकों के अस्तित्व एवं उद्देश्यों की पहचान
  - जोखिम में मूल्यांकन के आधार, अडचनें
4. क्रियाशीलता के लिए एक रूपरेखा और पहचान के लिए कार्यसूची परिभाषित करना
5. जोखिम के विश्लेषण का विकास करना
6. उपलब्ध तकनीकों, मानव एवं संगठनात्मक संसाधनों का उपयोग कर जोखिम को कम करना

## जोखिम की पहचान-

जोखिम प्रबंधन की प्रक्रिया में संभावित जोखिमों की पहचान करना है। जोखिम के खतरे उत्प्रेरित होकर समस्याएं उत्पन्न करते हैं, इसलिए जोखिम की पहचान समस्या के स्रोत से शुरू की जानी चाहिए।

- स्रोत विश्लेषण जोखिम स्रोत व्यवस्था के प्रति आंतरिक अथवा बाहरी हो सकते हैं, जो जोखिम प्रबंधन का लक्ष्य है।
- समस्या विश्लेषण जोखिम खतरों की ज्ञात चेतावनियों से संबंधित है उदाहरणार्थ रूपये खोने की आशंका, गोपनीयता की सूचना के गलत उपयोग की आशंका, अथवा दुर्घटनाओं की आशंका। ये आशंकाएं अनेक प्रकार के अस्तित्वों के साथ रह सकती हैं।
- जब स्रोत या समस्या ज्ञात हो, तो घटनाओं को उत्प्रेरित करने वाले स्रोत अथवा समस्याएं पैदा करने वाली घटनाओं की जांच की जाती है। जोखिम पहचान करने की चयनित पद्धति संस्कृति, उद्योग अभ्यास और अनुपालन पर निर्भर करती है।

**जोखिम की पहचान की आम पद्धतियां निम्नलिखित हैं:**

**उद्देश्यों पर आधारित जोखिम की पहचान** संस्थाओं एवं परियोजना दलों के उद्देश्य हो सकते हैं। किसी भी घटना की पहचान जोखिम के रूप में की जाती है जो किसी उद्देश्य को प्राप्त करने में खतरनाक है।

**परिदृश्य पर आधारित जोखिम की पहचान** में अनेक प्रकार के परिदृश्य पैदा किये जाते हैं। उद्देश्य की प्राप्ति में परिदृश्य वैकल्पिक उपाय हो सकते हैं अथवा शक्तियों की पारस्परिक क्रिया का विश्लेषण हो सकते हैं।

**वर्गीकरण विज्ञान पर आधारित जोखिम की पहचान** वर्गीकरण विज्ञान पर आधारित जोखिम की पहचान में वर्गीकरण संभावित जोखिम स्रोतों में खराबी है। वर्गीकरण और सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों के ज्ञान के आधार पर की जाती है।

**आम जोखिम की जांच** कई उद्योगों में ज्ञात जोखिमों की सूची उपलब्ध है। सूचीबद्ध हर जोखिम की जांच किसी विशेष परिस्थिति में प्रयोग के लिए की जाती है।

**जोखिम का चार्ट बनाना** यह पद्धति जोखिम में पड़े संसाधनों को सूचीबद्ध कर उपर्युक्त दृष्टिकोणों को सम्मिलित करती है। संसाधनों को संशोधित करने वाले उन कारकों के लिए खतरों से बचने की सलाह दी जाती है जो जोखिम और परिणामों को कम या बढ़ा सकते हैं। इन शीर्षकों के अंतर्गत एक मैट्रिक्स का निर्माण करना विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों को समर्थ करता है।

**आदर्श जोखिम प्रबंधन में**, प्राथमिकता की प्रक्रिया अपनाई जाती है जिसके अंतर्गत सबसे बड़ी क्षति पहुंचाने वाली जोखिम की संभावना को सर्वप्रथम निपटाया जाता है और इसके पश्चात कम क्षति पहुंचाने वाले संभावित जोखिमों को अवरोही क्रम में निपटाया जाता है।

**अमूर्त जोखिम प्रबंधन** एक नये प्रकार की जोखिम की पहचान करता है जिसमें घटना घटित होने की शत प्रतिशत संभावना होती है, परन्तु पहचानने की अक्षमता के कारण संस्था द्वारा ऐसे जोखिम पर ध्यान नहीं दिया जाता है।



कार्य-प्रणाली में निम्नलिखित तत्व हैं, जिनका निम्न क्रम में पालन किया जाता है।

- खतरों की पहचान करना और उसका आकलन करना
- खतरों के प्रति जोखिमग्रस्त परिसंपत्तियों की अतिसंवेदशीलता का आकलन करना
- जोखिम का निर्धारण कर उनको कम करने के तरीकों की पहचान करना
- जोखिम को कम करने की रणनीति पर आधारित उपायों को प्राथमिकता प्रदान करना

### जोखिम प्रबंधन के सिद्धांत-

अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संस्थान जोखिम प्रबंधन के निम्नलिखित सिद्धांतों की पहचान करते हैं-

- जोखिम प्रबंधन द्वारा मूल्य को स्थापित करना चाहिए
- इसे संगठनात्मक प्रक्रिया, निर्णय-निर्धारण करने वालों का एक अभिन्न अंग होना चाहिए
- इस पर स्पष्ट रूप से अनिश्चितता की चर्चा कर अनुकूल, जोखिम मूल्यांकन के निष्कर्षों को वित्तीय शब्दों में प्रस्तुत करने को सुव्यवस्थित एवं संरचित होना चाहिए है।
- इसको सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर आधारित निरंतर ई प्रगति एवं संवृद्धि में सक्षम होना चाहिए
- इसको पारदर्शी, समस, गतिशील, पुनरावृत्तीय एवं परिवर्तन के प्रति संवेदी होना चाहिए

### जोखिम का मूल्यांकन-

जोखिमों की एक बार पहचान हो जाने पर क्षमता, हानि की घटित होने की संभावना के संबंध में उनका न मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिए। मूल्यांकन प्रक्रिया में ना जोखिम प्रबंधन योजना कार्यान्वयन को उचित प्राथमिकता प्रदान करने के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव शिक्षित अनुमान करना जोखिमपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त संपत्ति के मूल्यांकन पर ध्यान देना आवश्यक है। जोखिम मूल्यांकन को संस्थाओं के प्रबंधन के लिए ऐसी सूचनाओं की प्रस्तुति करनी चाहिए ताकि प्राथमिक जोखिमों को आसानी से समझा जाए और जोखिम 1 प्रबंधन के फैसलों को प्राथमिकता प्रदान की जा सके। इस प्रकार, जोखिमों को परिमाणित करने के कई सिद्धांत और प्रयास हैं।

### जोखिम से बचाव-

इसमें जोखिम वाली गतिविधि का निष्पादन नहीं करना शामिल होता है। सभी जोखिमों का जवाब बचाव में दिखाई देता है किन्तु जोखिमों से बचाव का अर्थ है संभावित लाभ को खो देना जिसे जोखिम उठाकर पाया जा सकता था। हानि उठाने के जोखिम से बचने के लिए किसी कारोबार में प्रवेश नहीं करने से लाभ प्राप्त करने की सम्भावना को दूर करता है।

### खतरे की रोकथाम-

खतरे की रोकथाम का तात्पर्य आपातकाल में जोखिमों की रोकथाम करना है। खतरे की रोकथाम का सर्वप्रथम और सबसे अधिक कारगर चरण खतरों का उन्मूलन है। यदि इसमें बहुत अधिक समय लगता है और लागत बहुत अधिक होती है, या अब्यावहारिक होता है, तो दूसरा चरण इनमें कमी लाना है।

**जोखिम में कमी** में ऐसी पद्धतियों का समावेश होता है जो हानि के घटित होने की सम्भावना को कम करता है। आधुनिक सॉफ्टवेयर विकास पद्धतियां वृद्धि के आधार पर सॉफ्टवेयर विकसित कर एवं उसे प्रदान कर जोखिम कम करती हैं।

प्रारंभिक पद्धतियां इस तथ्य से प्रभावित हुई कि उन्हे विकास के मात्र अंतिम चरण में ही सॉफ्टवेयर प्रदान किये गये। पुनरावृत्ति में विकास कर, सॉफ्टवेयर परियोजनाएं एकल पुनरावृत्ति में नष्ट किये गए प्रयास को सीमित कर सकती है।

### संभावित जोखिम उपचार-

एक बार जोखिमों की पहचान और मूल्यांकन कर लेने पर जोखिम के प्रबंध की सभी तकनीकें निनांकित चार वर्गों में से किसी एक अथवा एकाधिक वर्गों में आती है।

### जोखिम का हस्तांतरण-

बीमा अनुबंध का क्रय “जोखिम का हस्तांतरण” कहलाता है। तकनीकी तौर पर, साधारणतया अनुबंध का क्रेता ही हस्तांतरित हानि के लिए कानूनी रूप से जिम्मेदार होता है। इसका अर्थ है कि बीमा की सही व्याख्या घटनोत्तर क्षतिपूरक व्यवस्था के रूप में की जा सकती है। उदाहरणार्थ, व्यक्तिगत आघातों के लिए बीमा पॉलिसी गाड़ी की दुर्घटना की जोखिम को बीमा कंपनी को हस्तांतरित नहीं करती है।

पॉलिसी धारक के पास ही जोखिम बना रहता है अर्थात वह व्यक्ति जो दुर्घटना का शिकार होता है। बीमा पॉलिसी केवल यह प्रदान कराती है कि यदि किसी दुर्घटना में पॉलिसी धारक भी शामिल होता है तो पॉलिसी धारक को कुछ में क्षतिपूर्ति देय होती है, जो कष्ट/क्षति के अनुपातिक होती है।

### जोखिम प्रबंधन की योजना-

जोखिम को मापने के लिए उचित नियंत्रणों का चुनाव अथवा प्रत्युपाय करना आवश्यक है। जोखिम कम करने के लिए प्रबंधन के उपयुक्त स्तर अनुमोदन आवश्यक है। संस्था की छवि से संबंधित जोखिम के पीछे उच्च स्तरीय प्रबंधन का निर्णय होता है, जबकि कंप्यूटर वाइरस जोखिम के निर्णय का अधिकार सूचना प्रौद्योगिकी प्रबंधन के पास रहता है।

जोखिम प्रबंधन के लिए जोखिम प्रबंधन योजना को प्रयोज्य और प्रभावकारी सुरक्षा नियंत्रणों के प्रस्ताव प्रस्तुत करने चाहिए। आईएसओ के अनुसार जोखिम विश्लेषण के बाद जोखिम उपचार योजना तैयार करना शामिल है, जिसे उन फैसलों के सम्बन्ध में दस्तावेज प्रस्तुत करना चाहिए कि पहचान किए गए प्रत्येक जोखिम का प्रबंधन किया जाना चाहिए। अक्सर जोखिमों में कमी से तात्पर्य सुरक्षा नियंत्रणों का चुनाव करना है जिससे व्यावहारिकता के वितरण दस्तावेजित, निर्धारित कर नियंत्रण का चुनाव के आधार पर किया गया है।

**क्रियान्वयन** जोखिमों के प्रभाव को कम करने के लिए सभी ना सुनियोजित पद्धतियों का अनुपालन करना चाहिये। उन जोखिमों के लिए बीमा पॉलिसियां खरीदना चाहिये जिसे किसी बीमाधारक को हस्तांतरित करने का निर्णय लिया गया हो, उन सभी जोखिमों से बचना चाहिये जिससे कंपनी के लक्ष्यों का त्याग किए बिना दूसरों को कम कर एवं शेष को रख कर बचा जा सकता है।

### योजना की समीक्षा और मूल्यांकन-

प्रारंभिक जोखिम प्रबंधन योजना कभी परिपूर्ण नहीं होगी. अभ्यास, अनुभव और वास्तविक हानि के परिणाम योजना में परिवर्तनों को अनिवार्य बना देंगे और सामना किए जा रहे जोखिमों से निपटने के लिए किए जाने वाले विभिन्न फैसलों के लिए हर संभव अनुमति प्रदान करेंगे.

जोखिम विश्लेषण के परिणाम और प्रबंधन की योजनाओं को समय-समय पर अद्यतन किया जाना चाहिए इसके दो कारण हैं:

1. यह मूल्यांकन करना कि पहले से ही चयनित सुरक्षा नियंत्रण प्रयोज्य और प्रभावी है या नहीं
2. व्यवसाय के परिवेश में जोखिम के स्तरों में संभावित परिवर्तनों का मूल्यांकन करना. सूचना संबंधी जोखिम तेजी से बदलते हुए वाणिज्यिक परिवेश के आदर्श उदाहरण हैं.

### सीमाएं-

यदि जोखिमों का अनुचित मूल्यांकन किया गया है और अनुचित प्राथमिकता प्रदान की गई है, तो असंभावित हानियों के जोखिम से निपटने में समय खराब हो सकता है. असंभावित जोखिमों का आकलन और प्रबंधन में बहुत अधिक समय व्ययतीत करने से अधिक लाभप्रद ढंग से प्रयोग किये जा सकने वाले संसाधनों का दूसरे कामों में उपयोग हो सकता है. असंभावित घटनाएं घटती ही हैं परंतु यदि जोखिम के होने की सम्भावना भी असंभावित हो तो यही बेहतर होगा कि जोखिम हानि होने पर परिणाम के साथ निपटा जाए. गुणात्मक जोखिम का मूल्यांकन व्यक्तिपरक होता है और इसमें सामंजस्य का योजना का आविष्कार अनुभूत अवशिष्ट जोखिमों के परिणाम को अपने साथ ही बरकरार रहने दिया जाए और वास्तव में अभाव होता है. जोखिम और अनिश्चितता के बीच अंतर को भी ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है.

### जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र-

कंपनी वित्त के साथ लागू होने वाला, जोखिम प्रबंधन किसी बैंक के तुलन पत्र में वित्तीय अथवा परिचालन सम्बन्धी जोखिम को मापने, देख-रेख करने और नियंत्रित करने की तकनीक है.



बॉसेल II की बनाई रूपरेखा जोखिमों को बाजार जोखिम (मूल्य जोखिम), ऋण संबंधी जोखिम और परिचालन संबंधी जोखिम में विभाजित करती है और इनमें से प्रत्येक घटक के लिए पूंजीगत आवश्यकताओं की गणना करने की पद्धति का भी विस्तृत विवरण देती है।

### जोखिम प्रबंधन और व्यवसाय की निरंतरता-

जोखिम प्रबंधन किसी संस्था के प्रति होने वाली खतरे की आशंका को कम करने के लिए लागत प्रभावी प्रस्तावों को सुव्यवस्थित ढंग से चुनने की मात्र एक कार्यप्रणाली है। सभी जोखिमों की पूरी तरह उपेक्षा अथवा न्यूनीकरण मात्र आर्थिक और व्यावहारिक सीमाओं के कारण नहीं की जा सकती है, इसलिए सभी संस्थाओं को कुछ स्तर तक अवशिष्ट जोखिमों को स्वीकार करना पड़ता है। जोखिम प्रबंधन पूर्वक्रय अभिमुखी होता है।

### जोखिम प्रबंधन के प्रयोग के आधारभूत नियम

- जनता को वैध साझेदार के रूप में स्वीकार करना
- सावधानीपूर्वक योजना बनाना और अपने प्रयासों की सतर्कता से योजना बनाकर मूल्यांकन करना
- जनता की खास चिंताओं को सुनना ईमानदार, निष्कपट और स्पष्ट होना
- अन्य विश्वसनीय सूत्रों के साथ समन्वय और सहयोग स्थापित करना
- मीडिया की जरूरतों को पूरा करना
- करुणा के साथ स्पष्टवादिता

बैंक शाखाओं का महत्व निकट भविष्य तक ही सीमित रहकर कम हो जाएगा। भविष्य में बैंक शाखाएं बहुत अलग प्रकार की भूमिका अदा करेंगी, जैसे किसी पेचीदा मामले में सलाह देना या किसी कठिन समस्या का हल निकालने में मदद करना। वे एक अलग तरह के सलाह केंद्र की तरह काम करेंगी। बैंकों को अपनी रणनीतियां बदलनी होगी और 2020 के बाद होने वाले परिवर्तनों के लिए तैयार रहना होगा।

इसके लिए निम्न बातें करना आवश्यक है:-

- ग्राहक केंद्रित मॉडल को अपना कर अपने शाखा विस्तार का अनुकूलन करना
- ग्राहकों को उत्कृष्ट बैंकिंग अनुभव देने के लिए, अपनी उद्योग पद्धतियों को आसान बनाना
- जानकारी का पूरा लाभ उठाना और आंकड़ों को आय में बदलना
- नई तकनीक को अपनाना और उसके अनुसार अपनी क्षमताएं बढ़ाना
- सक्रियता से जोखिम और पूंजी का प्रबंधन करना
- सही टेक्नोलॉजी को अविलम्ब अपनाना
- अपनी फीस को अलग - अलग भागों में विभाजित कर, ग्राहक की सुविधानुसार उसे सेवा देना. ऋण को बेहतर तरीके से वापस लेना ताकि बैंक न केवल जीवित रह सके बल्कि ऊपर भी जा सके.

ग्राहकों के लिए विशिष्ट बैंकिंग अनुभव, जोखिमों और नियमों दोनों का बेहतर प्रबंधन, अत्याधुनिक तकनीक की मदद से गैर-बैंकिंग असंगठित संस्थाओं से प्रतिस्पर्धा करना, यही बैंकों का भविष्य है और तभी बैंक जीवित रह सकेंगे.

### बैंकों में जोखिम प्रबंधन क्या है?

शब्द "जोखिम " को लैटिन शब्द "रेसकम" से जोड़ा जा सकता है, जिसका अर्थ है जोखिम एट सी. जोखिम को मूल्य के कुछ को खोने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है या ऐसा कुछ जिसे मूल्य के कुछ हासिल करने की क्षमता के खिलाफ तौला जाता है. मूल्य किसी भी प्रकार के हो सकते हैं अर्थात् स्वास्थ्य, वित्तीय, भावनात्मक कल्याण आदि. जोखिम को अनिश्चितता के साथ बातचीत के रूप में भी कहा जा सकता है. जोखिम की धारणा प्रकृति में व्यक्तिपरक है, लोग जोखिम की गंभीरता के बारे में अपना निर्णय लेते हैं और यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है. प्रत्येक मनुष्य कुछ जोखिम उठाता है और उन जोखिमों को अपने निर्णय के अनुसार परिभाषित करता है.

### जोखिम प्रबंधन क्या है?

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जोखिम क्या है? लेकिन जोखिम से कैसे निपटा जाए तब जोखिम प्रबंधन की अवधारणा जोखिम या अनिश्चित घटना के प्रबंधन के लिए निकाली जाती है. जोखिम प्रबंधन से तात्पर्य उन जोखिमों के विश्लेषण और मूल्यांकन के अभ्यास से है जो उन जोखिमों का विश्लेषण और मूल्यांकन करता है और उन जोखिमों को कम करने के लिए कुछ सुधारात्मक उपाय करता है.

आज जोखिम प्रबंधन को कई संगठनों या संस्थाओं द्वारा अभ्यास के रूप में लिया जाता है ताकि जोखिम पर अंकुश लगाया जा सके जो निकट भविष्य में संभावित हो. जब भी कोई संगठन निवेश से संबंधित कोई निर्णय लेता है, तो वे इसके साथ जुड़े वित्तीय जोखिमों की संख्या का पता लगाने की कोशिश करते हैं.

वित्तीय जोखिम उच्च मुद्रास्फीति, मंदी, पूंजी बाजार में अस्थिरता, दिवालियापन आदि के रूप में हो सकते हैं. इस तरह के जोखिमों की मात्रा वित्तीय साधनों के प्रकार पर निर्भर करती है जिसमें कोई संगठन या कोई व्यक्ति निवेश करता है. इसलिए, निवेश, फंड मैनेजर्स और निवेशकों के लिए जोखिम के ऐसे जोखिम को कम करने या रोकने के लिए जोखिम प्रबंधन का अभ्यास करना आवश्यक हो जाता है. उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति शेयर बाजार में निवेश करने की तुलना में सावधि जमा में कम जोखिम वाला निवेश करने पर विचार कर सकता है. चूंकि इक्विटी मार्केट में निवेश फिक्स्ड डिपॉजिट की तुलना में जोखिम भरा होता है, इस प्रकार जोखिम प्रबंधन के माध्यम से निवेशक विश्लेषक से सलाह लेते हैं या जोखिम कम करने के लिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाते हैं.

### बैंकों के लिए जोखिम प्रबंधन कितना महत्वपूर्ण है?

अब तक हमने देखा है कि जोखिम प्रबंधन कैसे काम करता है और जोखिम को रोकने या कम करने के लिए प्रबंधन करना कितना महत्वपूर्ण है. चूंकि जोखिम विशेष रूप से वित्तीय संस्थानों और बैंकिंग संगठनों में सामान्य रूप से निहित है, अब तक बैंकिंग क्षेत्र विनियमित वातावरण में काम कर रहे हैं और जोखिमों से बहुत अधिक नहीं जुड़े हैं, लेकिन गंभीर प्रतिस्पर्धा के बढ़ने के कारण बैंकों को विभिन्न प्रकार के जोखिमों जैसे वित्तीय जोखिमों और गैर-वित्तीय जोखिमों से अवगत कराया गया है.

बैंकों में जोखिम प्रबंधन का कार्य और प्रक्रिया जटिल है, इसलिए बैंक जोखिमों के विश्लेषण और मूल्यांकन के लिए सरलतम और परिष्कृत मॉडल का उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं. वैज्ञानिक तरीके से, एकीकरण की प्रक्रिया में शामिल जोखिमों से निपटने के लिए बैंकों के पास विशेषज्ञता और कौशल होना चाहिए. प्रभावी रूप से प्रतिस्पर्धा करने के लिए, बड़े पैमाने पर बैंकिंग संगठनों को आंतरिक जोखिम प्रबंधन मॉडल विकसित करना चाहिए. अधिक वांछित स्तर पर, प्रमुख कार्यालयों के कर्मचारियों को बैंकों में जोखिम प्रबंधन करने के लिए जोखिम मॉडलिंग और विश्लेषणात्मक उपकरणों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए.

### भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में जोखिम प्रबंधन

बैंकों में जोखिम प्रबंधन का अभ्यास भारतीय बैंकों के लिए नया है लेकिन बढ़ती प्रतिस्पर्धा, अस्थिरता और बाजारों के उतार-चढ़ाव के कारण जोखिम प्रबंधन मॉडल को महत्व मिला है. जोखिम प्रबंधन के अभ्यास के कारण, इसने भारतीय बैंकों को नियंत्रित करने की दक्षता में वृद्धि की है और कॉर्पोरेट प्रशासन के अभ्यास को भी बढ़ाया है.

जोखिम प्रबंधन मॉडल की अनिवार्य विशेषता यह है कि बैंकों द्वारा दी जाने वाली उत्पादों की विज्ञापन सेवाओं के जोखिमों को कम या कम किया जाए, इसलिए आंतरिक और बाह्य जोखिमों को कम करने के लिए कुशल जोखिम प्रबंधन ढांचे की आवश्यकता है.

भारतीय बैंकों को विदेशी बैंकों द्वारा बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा, नवीन वित्तीय उत्पादों और उपकरणों की शुरुआत और बढ़ते हुए ऋण के कारण जोखिम प्रबंधन मॉडल या ढांचा तैयार करना है. भारत के बैंकिंग क्षेत्र ने प्रौद्योगिकी, गुणवत्ता आदि के मामले में शानदार प्रगति की है और तेजी से इसकी दर में विविधता लाने और विस्तार करना शुरू कर दिया है.

हालाँकि, बढ़ते वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण और आगे बढ़ने के कारण इन बैंकों को कुछ जोखिमों का सामना करना पड़ता है. चूंकि बैंकों में जोखिम आय में एक प्रमुख भूमिका निभाता है इसलिए उच्च जोखिम, उच्चतर रिटर्न होगा. इसलिए जोखिम और वापसी के बीच समानता बनाए रखना आवश्यक है.



### बैंकिंग क्षेत्र में जोखिमों का वर्गीकरण

#### क्रेडिट जोखिम

- क्रेडिट जोखिम में उधारकर्ता जोखिम, उद्योग जोखिम और पोर्टफोलियो जोखिम शामिल हैं। चूंकि यह उद्योग, उधारकर्ता आदि की साख की जाँच करता है।
- इसे डिफॉल्ट जोखिम के रूप में भी जाना जाता है जो किसी उद्योग, काउंटर-पार्टी या किसी ग्राहक की अक्षमता की जांच करता है जो वित्तीय लेनदेन का निपटान करने की प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं।
- आंतरिक और बाह्य कारक दोनों ही बैंक पोर्टफोलियो के क्रेडिट जोखिम को प्रभावित करते हैं।
- आंतरिक कारकों में उधारकर्ता की वित्तीय स्थिति के मूल्यांकन में कमी, अपर्याप्त जोखिम मूल्य निर्धारण, ऋण सीमाएं ठीक से परिभाषित नहीं होना, पोस्ट प्रतिबंधों की निगरानी की अनुपस्थिति, उचित ऋण समझौतों या नीतियों को परिभाषित नहीं करना आदि शामिल हैं।
- जबकि बाहरी कारक में व्यापार प्रतिबंध, विनिमय दर और ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव, वस्तुओं या इक्विटी की कीमतों में उतार-चढ़ाव, कर संरचना, सरकारी नीतियां, राजनीतिक प्रणाली आदि शामिल हैं।

#### बैंक इस जोखिम का प्रबंधन कैसे करते हैं?

- क्रेडिट जोखिम का प्रबंधन करने के लिए शीर्ष प्रबंधन की सहमति या ध्यान प्राप्त किया जाना चाहिए।
- क्रेडिट जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया में शामिल हैं।
- बैंकों की ऋण नीति में, जोखिम प्रबंधन प्रक्रिया को स्पष्ट किया जाना चाहिए।
- क्रेडिट रेटिंग या स्कोरिंग के माध्यम से जोखिम की डिग्री को मापा जा सकता है।

- यह अनुमानित और अप्रत्याशित वित्तीय नुकसान का अनुमान लगाने के माध्यम से निर्धारित किया जा सकता है और यहां तक कि वैज्ञानिक बुनियादी पर भी जोखिम मूल्य निर्धारण किया जा सकता है.
- प्रत्येक बैंक में क्रेडिट पॉलिसी समिति का गठन किया जाना चाहिए जो क्रेडिट नीतियों, प्रक्रियाओं और समझौतों के बाद देख सकती है और इस प्रकार व्यापक आधार पर बैंक के क्रेडिट जोखिम का विश्लेषण, मूल्यांकन और प्रबंधन कर सकती है.
- क्रेडिट जोखिम मैनेजमेंट में कई प्रबंधन तकनीकें होती हैं जो बैंक को क्रेडिट जोखिम के प्रतिकूल प्रभाव को रोकने में मदद करती हैं .
- तकनीकों में शामिल हैं क्रेडिट अनुमोदन प्राधिकरण ;, जोखिम रेटिंग, विवेकपूर्ण सीमाएं, ऋण समीक्षा तंत्र, जोखिम मूल्य निर्धारण, पोर्टफोलियो प्रबंधन आदि.

### बाजार जोखिम

इससे पहले, प्रमुख रूप से क्रेडिट जोखिम प्रबंधन करने वाले सभी बैंकों के लिए प्राथमिक कार्य या चुनौती थी. लेकिन बैंकिंग क्षेत्र में आधुनिकीकरण और प्रगति के कारण बाजार जोखिम पैदा होने लगा जैसे:

- ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव,
- बाजार के बदलावों में बदलाव,
- कमोडिटी की कीमतों में उतार-चढ़ाव या इक्विटी की कीमतें
- विदेशी मुद्रा दरों में उतार-चढ़ाव आदि.

इसलिए, बाजार जोखिम को भी प्रबंधित करना आवश्यक हो गया. बाजार में एक मिनट के परिवर्तन के परिणामस्वरूप बैंकों के आर्थिक मूल्य में पर्याप्त परिवर्तन होता है. बाजार जोखिम में तरलता जोखिम, ब्याज दर जोखिम, विदेशी विनिमय दर जोखिम और हेजिंग जोखिम शामिल हैं.

### बैंक बाजार जोखिम का प्रबंधन कैसे करते हैं?

- बैंकों के शीर्ष प्रबंधन के लिए प्रमुख चिंता बाजार के जोखिम का प्रबंधन करना है।
- बैंकों के शीर्ष प्रबंधन को स्पष्ट रूप से बाजार जोखिम नीतियों, समझौतों, समीक्षा तंत्र, ऑडिटिंग और रिपोर्टिंग सिस्टम आदि का स्पष्ट रूप से मूल्यांकन करना चाहिए और इन नीतियों में स्पष्ट रूप से जोखिम माप प्रणालियों का उल्लेख होना चाहिए जो बैंकों से सामग्री के स्रोतों को पकड़ते हैं और इस तरह बैंकों पर प्रभाव पड़ता है।
- बैंकों को एसेट-लायबिलिटी मैनेजमेंट कमेटी का गठन करना चाहिए जिसका मुख्य कार्य जोखिम या प्रदर्शन मापदंडों के भीतर बैलेंस शीट को बनाए रखना और प्रबंधित करना है।
- वास्तविक समय के आधार पर बाजार के जोखिम को ट्रैक करने के लिए, बैंकों को एक स्वतंत्र मध्य कार्यालय स्थापित करना चाहिए।
- मध्य कार्यालय में ऐसे सदस्य शामिल होने चाहिए जो बाजार के जोखिम का विश्लेषण करने में बाजार विशेषज्ञ हों। विशेषज्ञ हो सकते हैं: अर्थशास्त्री, सांख्यिकीविद और सामान्य बैंकर।
- मध्य कार्यालय के सदस्यों को ट्रेजरी विभाग से या ट्रेजरी विभाग की दैनिक गतिविधियों से अलग किया जाना चाहिए।

### परिचालनात्मक (ऑपरेशनल) जोखिम

एक बेहतर जोखिम प्रबंधन अभ्यास के लिए, परिचालन जोखिम का प्रबंधन करना आवश्यक हो गया है। बैंकिंग क्षेत्र के आधुनिकीकरण और संरचनात्मक परिवर्तन, लेनदेन की मात्रा में वृद्धि और जटिल समर्थन प्रणाली के कारण वित्तीय बाजारों में परिचालन जोखिम पैदा होता है।

परिचालन जोखिम को बाजार जोखिम या क्रेडिट जोखिम के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि इस जोखिम को भुगतानों के निपटान, व्यावसायिक गतिविधियों में व्यवधान, कानूनी और प्रशासनिक जोखिम से संबंधित जोखिम के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

जैसा कि परिचालन जोखिम में व्यावसायिक रुकावट या समस्या से संबंधित जोखिम शामिल है ताकि यह बाजार या क्रेडिट जोखिम को ट्रिगर कर सके। इसलिए, परिचालन जोखिम में क्रेडिट या बाजार जोखिम के साथ कुछ प्रकार के संबंध हैं।

### बैंक परिचालन जोखिम का प्रबंधन कैसे करते हैं?

- बैंकों के परिचालन जोखिम को मापने में कोई समान दृष्टिकोण नहीं है। अब तक सरल और प्रायोगिक तरीकों का उपयोग किया जाता है, लेकिन विदेशी बैंकों ने परिचालन जोखिम का प्रबंधन करने के लिए कुछ अग्रिम तकनीकों की शुरुआत की है।
- परिचालन जोखिम को मापने के लिए, इसे परिचालन हानि की संभावना और नुकसान के संभावित आकार के आकलन की आवश्यकता होती है।
- बैंक परिचालन जोखिम स्तर को मापने के लिए विश्लेषणात्मक और निर्णय तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं।
- संचालन का जोखिम हो सकता है: ऑडिट रेटिंग, गुणवत्ता पर डेटा, ऐतिहासिक हानि का अनुभव, टर्नओवर या वॉल्यूम पर डेटा आदि। कुछ अंतरराष्ट्रीय बैंकों ने रेटिंग मैट्रिक्स विकसित किया है जो बांड क्रेडिट रेटिंग के समान है।
- नियमित अंतराल पर परिचालन जोखिम का आकलन और समीक्षा की जानी चाहिए।
- परिचालन जोखिम की मात्रा निर्धारित करने के लिए, भारतीय बैंकों ने कोई वैज्ञानिक तरीके विकसित नहीं किए हैं और केवल सरल बेंचमार्क प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं जो व्यावसायिक गतिविधियों को मापता है।

### तरलता (लिक्विडिटी) जोखिम

किसी संस्थान को उसके दायित्वों को पूरा करने में असमर्थता से उत्पन्न होने वाले नुकसान की संभावना है क्योंकि वे अस्वीकार्य लागत या नुकसान के बिना संपत्ति में वृद्धि के कारण या निधि में वृद्धि करते हैं। तरलता जोखिम में अनियोजित कमी या धन स्रोतों में परिवर्तन का प्रबंधन करने में असमर्थता शामिल है। तरलता जोखिम भी बाजार की स्थितियों में बदलाव को पहचानने या संबोधित करने में विफलता से उत्पन्न होता है जो परिसंपत्तियों को जल्दी से नष्ट करने और मूल्य में न्यूनतम नुकसान की क्षमता को प्रभावित करते हैं।



### **रणनीतिक जोखिम :**

रणनीतिक जोखिम वर्तमान, और खराब व्यावसायिक निर्णयों से उत्पन्न संस्था, पूंजी, प्रतिष्ठा या अच्छी स्थिति पर वर्तमान और भावी प्रभाव होता है, जो निर्णयों के अनुचित कार्यान्वयन या उद्योग, आर्थिक या तकनीकी परिवर्तनों की प्रतिक्रिया की कमी से उत्पन्न होता है. रणनीतिक जोखिम एक संगठन के रणनीतिक लक्ष्यों की अनुकूलता, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विकसित की गई व्यावसायिक रणनीतियों, इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए तैनात संसाधन और कार्यान्वयन की गुणवत्ता से भरा हुआ कार्य होता है.

### **अनुपालन जोखिम :**

अनुपालन जोखिम, आय, पूंजी और प्रतिष्ठा के उल्लंघन या कानूनों, नियमों, विनियमों, समझौतों, निर्धारित प्रथाओं, या नैतिक मानकों के साथ-साथ प्रासंगिक कानूनों की गलत व्याख्या से उत्पन्न होने वाली वर्तमान या भावी जोखिम है.

कई हितधारकों जैसे नियामकों, ग्राहकों, काउंटर पार्टियों, साथ ही कर अधिकारियों, स्थानीय अधिकारियों और अन्य अधिकृत एजेंसियों के साथ संबंधों के कारण ही कई संस्थानों में अनुपालन जोखिम देखा जाता है.

### **जोखिम और नियंत्रण ढांचे के अनुपालन और सक्रिय स्वामित्व की विस्तारित भूमिका**

ज्यादातर मामलों में बैंकों को अपने अनुपालन विभागों की भूमिका को सलाहकार होने से बदलने की आवश्यकता होती है जो सक्रिय जोखिम प्रबंधन और निगरानी पर अधिक जोर देता है. व्यवहार में इसका अर्थ है कि सांविधिक नियमों, विनियमों और कानूनों पर सलाह देना और नियंत्रण ढांचे की स्वतंत्र निगरानी प्रदान करने के लिए जोखिम का सक्रिय स्वामित्व बनना.

जोखिम और नियंत्रण ढांचे के विकास को देखते हुए, निम्नलिखित को शामिल करने के लिए अनुपालन कार्यों की जिम्मेदारियों का तेजी से विस्तार हो रहा है:

## ‘पारंपरिक और भविष्य की बैंकिंग’

- व्यवसायों और प्रक्रियाओं में कानूनों, नियमों और विनियमों की प्रयोज्यता पर व्यावहारिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना और वे परिचालन आवश्यकताओं में कैसे परिवर्तित होते हैं
- जोखिम भौतिकता के लिए मानक बनाना
- एक मजबूत जोखिम पहचान और मूल्यांकन प्रक्रिया / उपकरण किट का विकास और प्रबंधन (उदाहरण के लिए, जोखिमों की व्यापक सूची, उद्देश्य जोखिम-मूल्यांकन स्कोरकार्ड और जोखिम-माप पद्धति)
- एक प्रभावी जोखिम-मध्यस्थता प्रक्रिया (उदाहरण के लिए, मूल-कारण विश्लेषण और प्रदर्शन ट्रेकिंग) के लिए मानकों को विकसित करना और लागू करना यह सुनिश्चित करने के लिए कि केवल अनुपालन मुद्दों के मूल कारणों को संबोधित किया जाए.
- प्रत्येक प्रकार की नौकरी या कार्य वातावरण की वास्तविकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रमों और प्रोत्साहनों के लिए मानक स्थापित करना
- यह सुनिश्चित करना कि सामने की रेखा प्रभावी रूप से उन प्रक्रियाओं और उपकरणों को लागू करती है जिन्हें अनुपालन द्वारा विकसित किया गया है
- पूर्वनिर्धारित जोखिम-आधारित नियमों के आधार पर ग्राहकों, लेनदेन और उत्पादों को मंजूरी देना
- समग्र अनुपालन कार्यक्रम की स्थिति का एक नियमित मूल्यांकन करना
- बैंक की जोखिम संस्कृति और उसकी शक्तियों के साथ-साथ संभावित कमियों को समझना

जोखिम संस्कृति का अनुपालन अभिलेखों में एक विशेष स्थान है। वास्तव में, हाल के समय में वित्तीय संस्थानों में सबसे गंभीर असफलताओं का एक मूल कारण होता है, जिसके कारण विनियामक की अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं।

"मजबूत" जोखिम संस्कृति के तत्व अपेक्षाकृत स्पष्ट हैं और समय पर सूचना साझा करना, उभरते जोखिमों का तेजी से बढ़ना और प्रथाओं को चुनौती देने की इच्छा शामिल हैं; हालांकि, वे उद्देश्यपूर्ण तरीके से मापना मुश्किल होता है।

संरचित जोखिम-संस्कृति सर्वेक्षण जैसे उपकरणों का उपयोग संगठन भर में जोखिम संस्कृति की बारीकियों की गहरी समझ के लिए अनुमति दे सकता है और उनके परिणामों को महत्वपूर्ण अंतरालों को प्रकट करने के लिए सहकर्मी संस्थानों के खिलाफ बेंचमार्क किया जा सकता है। परिणामस्वरूप जोखिम संस्कृति को सक्रिय रूप से आकार दिया जा सकता है, निगरानी की जा सकती है और प्रतिबद्ध नेताओं और संगठनों द्वारा निरंतर किया जा सकता है। इन विस्तारित जिम्मेदारियों के प्रभावी निष्पादन के लिए अनुपालन द्वारा व्यावसायिक प्रक्रियाओं की बहुत गहरी समझ की आवश्यकता होती है।

इसे प्राप्त करने के कुछ व्यावहारिक तरीके हैं:

### नियमित उद्यम अनुपालन-

एक औपचारिक व्यवसाय-परिवर्तन-प्रबंधन प्रक्रिया को लागू करना, जो किसी भी महत्वपूर्ण परिचालन परिवर्तन (उदाहरण के लिए, वॉल्यूम, उत्पाद, वर्कफ्लो, फुटप्रिंट और सिस्टम) को दूसरी पंक्ति में चिन्हित करता है। उद्देश्यपूर्ण रूप से जोखिम को मापने के लिए एक मजबूत टूल किट विकसित करना (उदाहरण के लिए, मापने योग्य जोखिमों के लिए मात्रात्मक माप, जोखिमों के लिए जोखिम मार्केटों को निर्धारित करना कठिन है, जोखिम वाले परिणामों की सामान्य सूची, और परिदृश्य विश्लेषण और दूरदेशी आकलन)

अंत में, अनुपालन फ्रंक्शन के परिचालन मॉडल का डिज़ाइन तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है. इस प्रकार, यह बिजनेस-यूनिट-आधारित कवरेज से एक मॉडल की ओर परिवर्तन की मांग करता है, जहां व्यवसाय इकाई कवरेज को प्रमुख अनुपालन क्षेत्रों जैसे बीएसए/एएमएल, अनुचित, भ्रामक, या अपमानजनक कार्य या व्यवहार; बंधक (सभी बंधक व्यवसायों के पार); तृतीय-पक्ष और अन्य के आसपास क्षैतिज विशेषज्ञता के साथ जोड़ा जाता है.

### अवशिष्ट जोखिम और नियंत्रण प्रभावशीलता में पारदर्शिता

- व्यवसाय के साथ दूसरी पंक्ति के जुड़ाव के लिए पारंपरिक उद्योग प्रथाओं में से एक "उच्च-जोखिम प्रक्रियाओं" की पहचान करना और फिर उनमें से प्रत्येक से संबंधित "सभी जोखिम" और "सभी नियंत्रण" की पहचान करना है.
- यह दृष्टिकोण, हालांकि, सामग्री जोखिम जोखिम में एक वास्तविक और व्यापक पारदर्शिता बनाने से कम हो जाता है और अक्सर एक यांत्रिक अभ्यास बन जाता है.
- सबसे पहले, एक "उच्च-जोखिम प्रक्रिया" के उद्देश्य और स्पष्ट परिभाषा का अभाव, इस निर्णय को अक्सर व्यापार लाइनों के विवेक पर छोड़ देता है, जो उन जोखिमों के उत्सर्जन को जन्म दे सकता है जो अनुपालन-जोखिम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं लेकिन कम महत्वपूर्ण माना जाता है.
- एक व्यवसाय के दृष्टिकोण से (उदाहरण के लिए, एक कम-मात्रा संग्रह प्रक्रिया समग्र व्यापार पोर्टफोलियो का एक महत्वपूर्ण हिस्सा लग सकता है लेकिन नियामक अनुपालन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है) यह दृष्टिकोण भी विसंगतियों से भी ग्रस्त है. एक उदाहरण के रूप में, इसे एक खाता खोलने की प्रक्रिया को कुछ खुदरा इकाइयों में उच्च जोखिम समझा जा सकता है.
- वस्तुतः "सभी जोखिमों" और "सभी नियंत्रणों" का दस्तावेजीकरण करने का मतलब है कि वास्तव में उन मुद्दों पर गहरी सोच जाने की पहली पंक्ति की क्षमता



को सीमित करता है जो मायने रखते हैं तथा सामग्री की पहचान के बजाय जोखिम और नियंत्रण के लंबे गुणात्मक आविष्कार करते हैं.

- जोखिम, इसी प्रक्रिया का विश्लेषण करता है और ब्रेकप्वाइंट और मूल कारणों को नियंत्रित करता है.
- अवशिष्ट जोखिम और महत्वपूर्ण प्रक्रिया विराम बिंदुओं पर केंद्रित नया दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी भौतिक जोखिम नहीं छोड़ा गया है और वास्तव में यह जोखिम आधारित, कुशल निरीक्षण और उपचारात्मक गतिविधियों के लिए आधार प्रदान करता है.
- यह प्रक्रियाओं और नियंत्रणों के लिए विनियामक आवश्यकताओं को सीधे बांधने से इन चुनौतियों को संबोधित करता है (जो कि उत्पादों और प्रक्रियाओं के लिए जोखिमों की मैपिंग के माध्यम से), एक व्यवस्थित और सही मायने में जोखिम-आधारित तरीके से सामने की रेखा के नीचे सामग्री जोखिमों को कम करके और परिभाषित करके.
- उद्देश्य (और जब भी संभव मात्रात्मक) प्रमुख जोखिम संकेतक (केआरआई) उन क्षेत्रों में जहां प्रक्रिया "टूट जाती है" और एक विशेष जोखिम के संपर्क में आती है.
- इस प्रकार, आम तौर पर किसी दिए गए व्यापार प्रक्रिया के दौरान हर नियामक आवश्यकता से जुड़े कई नियंत्रण होते हैं. इन सभी नियंत्रणों के परीक्षण से संगठनात्मक समय और संसाधनों की जबरदस्त खपत होती है.
- प्रत्येक नियंत्रण को प्रलेखित किया जाता है और इसके प्रभावशीलता के स्तर का गुणात्मक रूप से मूल्यांकन किया जाता है (हालांकि "प्रभावशीलता" की परिभाषा अक्सर अस्पष्ट होती है और व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती है).
- दुर्भाग्य से, इस अभ्यास से उत्पन्न समग्र नियंत्रण-प्रभावशीलता स्कोर केवल परिणाम के साथ ही सहसंबद्ध है - यह उन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण ऑडिट निष्कर्षों को देखने के लिए असामान्य नहीं है जहां अधिकांश नियंत्रणों को प्रभावी माना गया है.
- इसके विपरीत, नया दृष्टिकोण यह निर्धारित करने से शुरू होता है कि किसी दी गई व्यावसायिक प्रक्रिया में कौन से जोखिम लागू होते हैं और यह पहचानने में कि वास्तव में वे किस प्रक्रिया में होते हैं.
- प्रक्रिया ब्रेकपाइंट्स द्वारा यह जानकारी मिलती है कि एक केआरआई को किस प्रकार डिज़ाइन किया जाए जो सीधे अवशिष्ट जोखिम को मापे. यह दृष्टिकोण बहुत

कम वस्तुओं को परीक्षण करने के लिए किया जाता है और प्रमुख मुद्दे क्या हैं, इसमें अधिक मजबूत अंतर्दृष्टि. इसके अलावा, यह आवश्यक तथ्य आधार प्रदान करता है ताकि बचाव और संसाधन आवंटन और संसाधन आवंटन में तेजी आए.

- समग्र जोखिम-प्रबंधन प्रशासन, नियामक मामलों और मुद्दा-प्रबंधन प्रक्रिया के साथ एकीकरण
- अनुपालन जोखिम उसी अंतर्निहित कारकों द्वारा संचालित होते हैं जो अन्य बैंकिंग जोखिमों को चलाते हैं, लेकिन उनके दांव प्रतिकूल परिणामों (उदाहरण के लिए, विनियामक क्रियाएं जो व्यावसायिक गतिविधियों और बड़े जुर्माना के परिणामस्वरूप हो सकते हैं) के मामले में अधिक हैं.
- इसलिए, यह एकमात्र फिटिंग है कि एक आधुनिक अनुपालन ढांचे को दुनिया के बैंक के परिचालन-जोखिम के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह से एकीकृत करने की आवश्यकता है.
- इन जोखिमों के प्रबंधन का एकीकरण मूर्त लाभ प्रदान करता है. सबसे पहले, यह सुनिश्चित करता है कि उद्यम किसी भी प्रणालीगत मुद्दों (उदाहरण के लिए, क्रॉस-उत्पाद, क्रॉस-प्रोसेस) में जोखिमों और दृश्यता के अपने पोर्टफोलियो के बारे में व्यापक दृष्टिकोण रखता है, और यह कि कोई भी भौतिक जोखिम नहीं छोड़ा गया है.
- यह व्यवसाय के साथ ही नियंत्रण कार्यों पर बोझ को भी कम करता है (उदाहरण के लिए, कोई अलग या डुप्लिकेटिव रिपोर्टिंग, प्रशिक्षण और संचार गतिविधियों).
- यह जोखिम निवारण और क्रॉस-कटिंग नियंत्रण में निवेश पर उद्यम संसाधनों और प्रबंधन कार्यों के जोखिम-आधारित आवंटन की सुविधा देता है.
- व्यावहारिक क्रियाएं बैंक को समग्र जोखिम-प्रबंधन प्रशासन, नियामक मामलों और समस्या-प्रबंधन प्रक्रिया में अनुपालन को दृढ़ता से एकीकृत करने में मदद कर सकती हैं.
- परिचालन और अनुपालन जोखिमों की एकल एकीकृत सूची विकसित करना

- विकसित और केन्द्रित मानकीकृत जोखिम, प्रक्रिया, उत्पाद, और नियंत्रण वर्गीकरणों को बनाए रखने के लिए जोखिम मूल्यांकन, उपचार, और रिपोर्टिंग के तरीके और कैलेंडर का समन्वय करना
- व्यक्तिगत जोखिम स्तर पर जोखिम और नियंत्रण कार्यों के बीच स्पष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को परिभाषित करना ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई अंतराल या ओवरलैप्स नहीं हैं, विशेष रूप से "ग्रे क्षेत्रों" में
- एकीकृत प्रशिक्षण और संचार कार्यक्रमों का विकास और संयुक्त रूप से प्रबंधन
- स्पष्ट शासन प्रक्रियाओं और संरचनाओं की स्थापना करें, जो जोखिम और समर्थन कार्यों (उदाहरण के लिए, प्रौद्योगिकी) के दौरान होने वाले जनादेश के साथ हों, और जो सभी हितधारकों से पर्याप्त जवाबदेही, स्वामित्व और भागीदारी सुनिश्चित करें.
- कार्य योजना, लक्ष्य समाप्ति तिथियां और मुद्दों और मामलों की प्राथमिकता तय करने में वरिष्ठ अनुपालन हितधारकों को लगातार शामिल करना और समय पर शामिल करना
- सरकारी मामलों के साथ एक औपचारिक लिंक और समन्वय प्रक्रिया स्थापित करें
- इस एकीकरण को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए, वित्तीय संस्थान संगठनात्मक संरचना में परिवर्तन और अनुपालन कार्यों की नियुक्ति पर भी विचार किया जाना चाहिए.
- बैंकों में अनुपालन संगठनों के तीन आद्यरूपों को प्रदर्शित किया जाता है. जोखिम संगठन के अनुपालन का माइग्रेशन वैश्विक बैंकों के बीच एक हालिया रुझान है, जिसमें पहले कानूनी के अनुपालन की रिपोर्टिंग थी.

- यह नई संरचना परिचालन जोखिम के समान जोखिम के अनुपालन के दृष्टिकोण को मजबूत करती है और सलाहकार फ़ंक्शन के बजाय एक नियंत्रण के रूप में, और सभी जोखिम प्रकारों में एक एकीकृत दृश्य को सुविधाजनक बनाने के लिए है।
- कुछ बैंकिंग संस्थानों ने एक स्टैंड-अलोन कार्य का अनुपालन बढ़ा दिया है, इसे आंतरिक ऑडिट के समान स्थिति प्रदान की जाती है, व्यापार से स्पष्ट अलगाव के साथ, इस प्रकार इसकी प्रोफ़ाइल को काफी बढ़ाता है, लेकिन परिचालन के साथ मजबूत समन्वय की आवश्यकता भी पैदा करता है।

### आईटी व्यवधान

जब लकवाग्रस्त साइबर हमले या महत्वपूर्ण आईटी प्रणालियों की विफलता के कारण ग्राहक अचानक अपने पैसे का उपयोग करने में असमर्थ होते हैं, तो बैंक की लाभप्रदता और प्रतिष्ठा के परिणाम स्पष्ट होते हैं। इस वर्ष के शीर्ष जोखिमों के सर्वेक्षण के उत्तरदाताओं ने सिस्टम और आईटी कार्यों के लिए दो.आयामी जोखिम की रिपोर्ट की-

सबसे पहले, शत्रुतापूर्ण हैकिंग समूहों और यहां तक कि राष्ट्रों द्वारा बैंकों के बचाव के लिए घेराबंदी तथा केवल एक बार अतिक्रमण का प्रयास कर व्यापक रूप से अराजकता पैदा किया जाना आदि का खतरा मंडराता है।

दूसरा, बैंकों को प्रतिस्पर्धात्मक बने रहने के लिए आईटी सिस्टम को अपग्रेड या पैच करना चाहिए, और ऐसा करने पर, वे खुद को साइबर हमलों या पुराने जमाने के बहिरंशों को उजागर कर सकते हैं।

बैंकों को पारंपरिक रूप से साइबर खतरों के बारे में जानकारी साझा करने के बारे में घबराहट है और सूत्रों से जानकारी लीक कर यह स्थिति गंभीर हो सकती है। एक और लक्ष्य व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय बाजार अवसंरचना प्रदाता हो सकता है (एफएमआई) र निपटान प्रदाता जैसे क्लियरिंग हाउस औ, जिस पर कई बाजारों का कामकाज निर्भर करता है।



सबसे बड़े वित्तीय बाजार संरचना प्रदाता में से एक का मुख्य जोखिम अधिकारी जोखिम नेट को बताता है कि वह अपना अधिकांश समय गैरडिफॉल्ट जोखिमों के बारे में चिंता करने में - बिताता है, और साइबर हमलों से होने वाले जोखिमों के बारे में वह "विशेष रूप से चिंतित" है. है इस वर्ष के सर्वेक्षण में, आईटी व्यवधान के साथसाथ आईटी विफलता को माना गया है-, जहां पिछले साल श्रेणियों को इसे अलग से माना गया था. हालांकि जोखिम चालकों और मुद्दों के जोखिम प्रबंधन बहुत अलग हैं, इसका दुष्परिणाम यह होता है कि महत्वपूर्ण सेवाओं या संगठन के सभी कार्य करने में असमर्थ हो जाना है. दोनों चिंताएं जोखिम में भी शामिल हैं . आईटी विफलता विशेष रूप से व्यापार करने में विफलता की अवसर लागत और परिणामों को संबोधित करती है, जिसमें एक फर्म की प्रतिष्ठा को स्थायी नुकसान भी शामिल है .

### डेटा समझौता

व्यक्तिगत डेटा की एक टुकड़ी के साथ बैठकर, बैंक हैकर्स शरारत करने के लिए लुभाने वाले लक्ष्य बनाते हैं अपराधी नकदी के लिए कॉलर के लिए रिंग करते हैं ., यहां तक कि साइबर आतंकवादी बैंकों को फिरौती के लिए संपर्क करते हैं. हालांकि किसी भी बैंक के संचालन और प्रतिष्ठा सटीक और सुरक्षित डेटा पर टिका है, तथापि जानकारी के उल्लंघन, प्रकटीकरण या विनाश की संभावना बढ़ रही है. पिछले एक साल में साइबर हमलावरों ने बैंक साइबर डिफेंस में चिंगारी लगाने के लिए लगातार प्रयास किए हैं.

यद्यपि साइबर अपराध के कारण और रोकथाम अलग-किसी को बाहरी - अलग हैं- य फर्म के डेटा की रक्षा करने की आवश्यकता होती है दुर्भावनापूर्ण हमले से एक वित्ती, अन्य डेटा के गलत तरीके से या गलत तरीके से उपयोग करने के जोखिम वित् -तीय और प्रतिष्ठित नुकसान समान हो सकते हैं.

### चोरी और धोखाधड़ी

सभी प्रकार के वित्तीय संस्थानों के लिए इसकी सर्वव्यापकता का संकेत, सबसे बड़ा वैश्विक ऋणदाता से लेकर आठ व्यक्ति हेज फंड तक-के परिचालन जोखिम में कमी आई है. पिछले साल रिपोर्ट किए गए कई गंभीर धोखाधड़ी में, विशेष रूप से उभरते बाजारों में, एक बैंक के लिए आंतरिक प्रदाताओं की मदद ही सबसे बड़ा सवाल पैदा करता है इसे सामान्यतः : "इन्साइडर"जोखिम "के नाम से भी जाना जाता है.

चोरी और धोखाधड़ी से होने वाले नुकसान भी प्रक्रियाओं और प्रणालियों को स्वचालित करने के लिए प्रदाता से निकटता से जुड़े हुए हैं. एक वैश्विक बैंक में एक वरिष्ठ जोखिम प्रबंधक बताते हैं कि ग्राहक प्रमाणीकरण का स्वचालन, उदाहरण के लिए, अपराधियों को रोबोट गेटकीपर्स को बेवकूफ बनाने के लिए चोरी किए गए डेटा का उपयोग करने का मौका देता है.

### आउटसोर्सिंग और तीसरे पक्ष के जोखिम

बड़े बैंकों का निर्णय है कि सुरक्षा के ऐसे अनेक अवसर होते हैं जो आंतरिक रूप से करने के लिए उनके लायक नहीं हैंइसलिए उन्हें बाहरी तौर पर करने के लिए दिया जाता है और . तीसरे पक्ष के जोखिम :इसने पूरी तरह से नई चिंता पैदा कर दी है, या एक विक्रेता पर समस्याओं जैसे साइबर घुसपैठियों, बिजली विफलताओं और सबसे आम के बीच विवादित व्यवहार की संभावना बनती है.

इस बिंदु पर तृतीयपक्ष जोखिम चौथे-, पांचवें, आदि, पक्षीय जोखिम में विभाजित होता है . पक्ष जोखिम प्रबंधकों का मानना है कि उनके विक्रेताओं का व्यांघन विशेष रूप से साइबर - गंभीर मामला हैसुरक्षा, इस वर्ष के सर्वेक्षण में एक प्रतिवादी ने उन्हें संगठन में सबसे " चौथे और पाँचवें दलों द्वारा लगाए गए जोखिम पर पिछले साल .कहा "कमजोर कड़ी साथ ही साथ महत्वपूर्ण सेवाओं .जोखिम प्रबंधकों द्वारा बहुत चर्चा की गई थीं के अपने आपूर्तिकर्ताओं को भी इसके लिए दोषी पाया गया.

### लचीलापन जोखिम

जब एक सिस्टम मेल्टडाउन के कारण कोई ब्रोकर किसी ट्रेड को निष्पादित नहीं कर पाता है या एक ग्राहक को कैश मशीन से पैसा नहीं मिल पाता है, तो वे इस बात पर विचार नहीं करते हैं कि क्या बैंक ने प्रारंभ में इस जोखिम की सीमा को सही तरीके से निर्धारित किया है . वे बस यह जानना चाहते हैं कि वे अपना व्यापार कब कर सकते हैं, या अपने नकदी को हाथ में ले सकते हैं .

लचीलापन, एक व्यवधान जैसे आईटी स्लैफस, साइबर हमला, तीसरे पक्ष की आपूर्ति, प्रलयात्मक मौसम या किसी भी अन्य खतरे में फंसना आदि के बाद संचालन और सेवाओं को प्राप्त करने और चलाने की क्षमता शीर्ष जोखिमों के लिए एक नया प्रवेशद्वार है बैंकिंग की . बढ़ती जटिलता और वित्तीय प्रणाली की अंतर्मुखी प्रकृति, जो अब तकनीक में निहित है, ने लचीलापन को बोर्डरूम चर्चा का विषय बनाने के लिए संयुक्त किया है .

बैंकिंग की दुनिया में डर पैदा हो गया है कि एक समाशोधन घर पर साइबर हमला पूरे उद्योग को राख में बदल सकता है इसलिए बैंकिंग नियामक नजदीक से इसकी जानकारी ले रहे हैं बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बेसल समिति ने परिचालन जोखिम पर अपन े सिद्धांतों के एक अद्यतन में लचीलापन मैट्रिक्स की चर्चा कर .में एक कार्य समूह की स्थापना की 2018

### संगठनात्मक परिवर्तन

पश्चिमी देशों में इसे कुंचन को संदर्भित यह उस व्या .भी कहा जाता है "परिवर्तन जोखिम" करता है जो बैंक के रूप में उत्पन्न हो सकता है या किसी भी कारण से फर्म अपने परिचालन का फेरबदल करती है इस वर्ष ., ऐसे बैंकों में सबसे बड़ी तकनीक की अस्थिर गति के साथ बनाए रखने की आवश्यकता है इस तरह के रूपांतरण ., नई परियोजनाएं और प्रक्रियाओं के लंबे समय से अधिक उपयोग और नए उद्यमों की हैचिंग का मतलब अक्सर उन कर्मचारियों के लिए अधिक काम होता है जो पहले से ही दबाव में कार्य करते हैं एक अंतरराष्ट्रीय बैंक के . एक ऑप जोखिम हेड का कहना है, "बैंक कई प्रमुख प्रक्रियाओं की रीडिजीनियरिंग कर रहे हैं - और फिनटेक सॉल्यूशंस का लाभ उठा रहे हैं, लेकिन बाजार में समय कम है जब कोई ". बैंक विस्तार करने के बजाय सिकुड़ता है, तो उस पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है इससे .

हाल ही .बैंकिंग कार्मिकों का मनोबल खोखला होता हैं और अपने डेस्क पर कार्यभार बढ़ता है में, एचएसबीसी ने घोषणा की कि वह अपने वैश्विक कर्मचारियों की संख्या में 15% की कमी करेगा। जूश बैंक ने अपने पुनर्गठन के प्रयास में ., 2022 तक 18,000 नौकरियों में कटौती करने की घोषणा की है.

### आचरण जोखिम

इस वर्ष के शीर्ष श्रेणी के जोखिम के दो प्रमुख समुच्चय का एक एकत्रीकरण है गलत बिक्री - और अनधिकृत ट्रेडिंग, जो पिछले वर्षों में बार बार-दिखाई दिए हैं। वित्तीय उद्योग के बारे में . एक अनुभवी कहते हैं“अपनी प्रकृति से आचरण पहचानने में कुछ समय लेता है, और फिर अक्सर जुर्माना या बहाली से खुद को प्रकट करने में लंबा समय लगता है.” आचरण जोखिम के माध्यम से समस्या के पैमाने को पकड़ना बेहद कठिन है। बड़े : आचरण के नुकसान की प्रतीत होती छिटपुट प्रकृति, पहनने के योग्य नुकसान के निम्न स्तर के साथ, जो कि अत्यधिक गलत खर्चों के चरम उदाहरणों के कारण होता है, यह विश्वसनीय आचरण मूल्य को वितरित करने के लिए जोखिम के आंकड़ों को ठीक करना कठिन होता है.

### विनियामक जोखिम

विनियामक जोखिम इस साल के शीर्ष स्थान पर है प्रशासन के प्रिंटिंग - एक ऐसा निर्णय - . संकट जिसने बाद के वित्तीय परिदृश्य को बदल दिया है। न्नेप्रेस में मंदी के कारण उत्प हालांकि, डेरिवेटिव्स मार्केट्स, फाइनेंशियल अकाउंटिंग प्रैक्टिस, रेग्युलेटरी रिपोर्टिंग और स्ट्रेसलित है जिसका अनुपालन आसान टेस्टिंग रिक्वायरमेंट्स में सुधारों की लिस्ट आदि सम्मि- नियमों की मात्रा को देखते हुए . नहीं है, गलत कदम और गलत व्याख्या की क्षमता प्रकट होती है .

एक वैश्विक बैंक के जोखिम प्रमुख का कथन हैं, "नियामक और अनुपालन आवश्यकताओं में वृद्धि साथ गहन नियामक जांच दोनों -नए नियमों और मौजूदा नियमों में संशोधन के साथ - कृत्रिम बुद्धि में अग्रिम नियामक जोखिम के एक अन्य स्रोत का प्रतिनिधित्व करते ". के रूप में जोखिम प्रबंधकों ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण महत्व पर प्रकाश डाला . हैं . क्योंकि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है .



जबकि निर्णय लेने में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की भागीदारी बढ़ जाती है, चाहे वह व्यापार के लिए हो या ग्राहकों के सामने आने वाली भूमिकाओं में अथवा सॉफ्टवेयर के रूप में यह साबित करने का दबाव और अधिक हो जाता है कि उसके निर्णय निष्पक्ष और अच्छी तरह से स्थापित हैं.

### प्रतिभा का जोखिम

बैंकों और अन्य वित्तीय फर्मों के लिए अवांछित सबूत, भर्ती करने और कर्मचारियों के सही दक्षता को बनाए रखना और उन्हें तैनात करने के लिए जहां वे आवश्यक हैं आदि आसान कार्य नहीं हैजैसा कि बैंकों ने नौकरियों को बढ़ाया है ., यह उन्हें सोचने के लिए मजबूर करता है कि वे प्रतिभा जोखिम का प्रबंधन कैसे करते हैंएक बैंक के जोखिम प्रमुख कहते हैं कि एक . के दुबले व्यवसाय मॉडल के साथ संचालन करने से उनकी फर्म को अधिक तेज़ी से पहचानने लिए मजबूर होना पड़ता है कि उसके पास विशिष्ट कौशल सेट और बाजीगरी के संसाधन हैं या नहींइसी समय ., इसके व्यावसायिक मिश्रण में बदलाव या नियामक प्राथमिकताओं में बदलाव से फर्म को नुकसान हो सकता हैएक जोखिम के भीतर ही ., डिजिटलकरण के साथ रखने के लिए आईटी कौशल कम आपूर्ति में हैं .

बैंकों के लिए जोखिम का बढ़ता स्वरूप के चलने एक वैश्विक बैंक के जोखिम प्रमुख का कथन है“परिचालन जोखिम के प्रबंधन के पारंपरिक तरीकों को बदलने की जरूरत है” ., और डिजिटल जोखिम को पहचानने और प्रबंधित करने के कौशल अभी भी विकासशील अवस्था में हैंलेकिन बैंकिंग व्यापार एक तीव्र गति से डिजिटल हो रहा है ., उनका यह भी कथन है कि बासेल III ने नियमलेखन से पूर्ण कार्यान्वयन पर कदम रखा है-, बैंक अपने प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए अनुभवी प्रतिभाओं का शिकार कर रहे हैं.

### भूराजनीतिक जोखिम-

भू राजनीतिक जोखिम की श्रेणी में कोरोनावायरस का संकट सम्मिलित किया जा सकता है. इसके साथ ही सरकारों ने एक प्रतिक्रियात्मक कार्ययोजना तैयार की. प्रारंभ में जब जनवरी के शुरू में सर्वेक्षण किया गया था, तो वायरस के संबंध में अनेक प्रकार के उल्लेख सामने आए, जिसमें से कुछ ने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में इसे रडार पर एक महामारी के रूप में चिह्नित किया. वायरस के वैश्विक आर्थिक मंदी में योगदान करने की संभावना के साथ इस वायरस ने व्यापक परिचालन जोखिमों को ट्रिगर किया. भू-राजनीतिक जोखिम बहुत से अन्य तरीकों से भी प्रकट होता है, जैसे नियामक अनिश्चितता तथा अन्य. सर्वेक्षण में शामिल अनुपालन के साथ प्रतिबंधों से बचने वाले लेनदेन की संभावना को बोझ बताया गया. जलवायु परिवर्तन, उभरते वैश्विक खतरों की सूची में, शीर्ष परिचालन जोखिमों की सूची में प्रकट नहीं होता है, लेकिन कई संस्थानों के लिए रणनीतिक जोखिम बड़ी मात्रा में पाया गया है. कई सर्वेक्षण करने वालों ने जलवायु परिवर्तन विरोधों और विरासत के रूप में विरासत जीवाश्म-ईंधन उद्योग के साथ क्रेडिट और प्रतिष्ठित जोखिम चिंताओं के रूप में विघटन का हवाला दिया. जलवायु संबंधी आपदाओं जैसे बाढ़ और जंगल की आग से उत्पन्न जोखिम भी बैंकों के लिए एक चिंता का विषय है.

कोविड-19 महामारी एक वैश्विक घटना है जो सभी व्यवसायों के वित्तीय, परिचालन और वाणिज्यिक लचीलेपन का परीक्षण कर रही है. इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, वित्तीय सेवा क्षेत्र को मौजूदा बाधाओं और बाजार की स्थितियों के पैमाने पर और तेजी से अनुकूलित करना है. आज तक, फर्मों ने तत्काल वित्तीय और परिचालन उपायों को प्राथमिकता दी है जैसे कि तरलता और नकदी प्रवाह की रक्षा करना, और यह सुनिश्चित करना कि वे मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों को चालू रखने में सक्षम हैं.

फर्मों द्वारा सामना किए जाने वाले संसाधनों पर उत्पन्न तनाव को स्वीकार करते हुए, वित्तीय नियामकों ने दबाव को कम करने, तनाव परीक्षण जैसे उच्च प्रभाव गतिविधियों को स्थगित करने, पूंजीगत बफर को कम करने, कार्यान्वयन की तारीखों को बाहर करने और गैर-महत्वपूर्ण पर्यवेक्षी समीक्षाओं में देरी करने के लिए कदम उठाए हैं. जैसे ही सामान्य स्थिति विकसित होती है, हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव और परिचालन और संचालन के जोखिम को फिर से प्राथमिकता देने की उम्मीद रखना चाहिए.

### धोखा

वित्तीय सेवा उद्योग को धोखाधड़ी के बढ़े हुए स्तरों से खतरा है, जिसमें साइबर धोखाधड़ी भी शामिल है, क्योंकि अपराधी कोविड-19 महामारी का फायदा उठाने का प्रयास करते हैं।

नेशनल क्राइम एजेंसी (NCA) ने कोविड-19 से संबंधित घोटालों पर एक अपडेट जारी किया है। विशेष रूप से यह अधिकृत पुश भुगतान (एपीपी) धोखाधड़ी में वृद्धि होने की आशंका है जिसे कभी-कभी बैंक हस्तांतरण धोखाधड़ी भी कहा जाता है। एपीपी धोखाधड़ी में वृद्धि से लड़ने के लिए क्रॉस-सेक्टर को-ऑपरेशन का आह्वान किया है, और बैंकों और भुगतान प्रदाताओं को इस प्रकार की गतिविधि के साथ समझौता करके अपने ब्रांडों के प्रतिष्ठित जोखिमों के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता पर विशेष सावधान किया गया है। यह देखते हुए कि घोटाले जैसे बीमा पॉलिसियों, पेंशन हस्तांतरण, या उच्च-वापसी निवेश के अवसरों से संबंधित कई रूप ले सकते हैं, एफसीए ने कोविड-19 से संबंधित घोटालों पर उपभोक्ताओं के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। अन्य प्रकार के खतरों में सम्मिलित हैं क्रिप्टो परिसंपत्तियों में निवेश जिससे अवसरवादियों द्वारा कमजोर लोगों को लक्षित करने की बहुत संभावना रहती है।

### डेटा और सुरक्षा

जैसे-जैसे रिमोट काम करना आदर्श बन जाता है, डेटा एक्सेस किया जाता है और डेटा सुरक्षा प्रोफाइल के आसपास अतिरिक्त विचार की आवश्यकता होती है। उपरोक्त संदर्भित साइबर सुरक्षा मुद्दों के साथ, कर्मचारी अब कम सुरक्षित घर-आधारित वातावरण में संवेदनशील डेटा के साथ काम कर रहे हैं। डेटा को एक कॉर्पोरेट फ़ायरवॉल के पीछे सुरक्षित रूप से लॉक करने और कर्मचारियों और व्यावसायिक भागीदारों के लिए इसे अधिक खुला और आसानी से सुलभ बनाने के बीच संतुलन काम करने के नए तरीकों का समर्थन करने और मौजूदा व्यावसायिक प्रक्रियाओं और संचालन को चालू रखने के लिए स्थानांतरित करने के लिए है।

हमने उन फर्मों के उदाहरण पहले ही देख लिए हैं, जिनके पास प्रौद्योगिकी प्राप्त करने और कार्यान्वित करने में तेज़ी से निवेश करने की महत्वपूर्ण दूरस्थ कार्य क्षमता नहीं थी। अनिवार्य रूप से इस तरह के रैपिड रोल-आउट, बुनियादी ढांचे में बदलाव और लंबी अवधि में परीक्षण की तुलना में कम मजबूत होने की संभावना है। जीडीपीआर जैसे विनियम अभी भी लागू होते हैं, इसलिए जोखिम और अनुपालन प्रमुखों को तदनुसार संबंधित जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन करना होगा और संभावित रूप से वैकल्पिक शमन उपायों को तैनात करना होगा।



### एएमएल और सीडीडी

- दूर से या साइट पर एएमएल और सीडीडी गतिविधियों को चलाने में फर्मों के लिए नई चुनौतियां हो सकती हैं, लेकिन सामाजिक रूप से दूर करने के उपायों के कारण काफी कम टीमों के साथ.
- सामान्य जाँच और शेष कई कारणों से संचालित नहीं हो सकते हैं.
- नियंत्रण असंतुष्ट प्रक्रियाओं और दूरदराज के हैंडओवर द्वारा कमजोर किया जा सकता है.
- जहां साइन-ऑफ की आवश्यकता होती है, वहाँ तकनीकी बाधाओं या लेखकों की उपलब्धता के कारण देरी हो सकती है.
- कॉल सेंटर के साथ अभिभूत और अक्सर धन की आवश्यकता होती है, फर्मों को समर्थन पैकेजों के लिए तेजी से बदलते मार्गदर्शन के माध्यम से काम करना पड़ रहा है जैसे कि एसएमई और बड़े व्यवसायों के लिए - इन शर्तों के तहत वीएयू की स्थितियों में समान चेक चलाने के लिए व्यावहारिक नहीं हो सकता .
- बाजार की अखंडता और बाजार का दुरुपयोग
- अस्थिरता का मतलब है कि निगरानी टीमों को पहले से ही अलर्ट से भरा हुआ है, लेकिन निगरानी बढ़ाने और नए परिदृश्यों पर विचार करने के लिए कहा जा रहा है.
- एफसीए ने बाजार की ट्रेडिंग करने और वैकल्पिक साइटों या घर से रिपोर्टिंग करने वाले फर्मों और कर्मचारियों को मार्गदर्शन जारी किया है, जिससे उन्हें व्यापक नियंत्रण पर्यावरण पर विचार करने और उचित उपाय करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके.
- पहले से ही कई ट्रेडिंग फर्मों को नए वेब-आधारित संचार प्लेटफार्मों के लिए तेजी से आगे बढ़ना पड़ा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रिंट ऑफिस ट्रेडिंग क्षमता अस्थिर बाजारों में संचार करना जारी रख सके.
- कर्मचारी इलेक्ट्रॉनिक ऑडियो संचार को रिकॉर्ड और मॉनिटर करने की क्षमता को इलेक्ट्रॉनिक संचार डेटा की बड़ी हुई मात्रा के साथ पकड़ने की आवश्यकता होगी.
- नियामक सामान्य आवश्यकताओं (उदाहरण के लिए, कॉल की रिकॉर्डिंग और नियामक डेटा प्रस्तुत करना) के रूप में व्यापार के लिए कुछ अस्थायी रियायतें दे रहा है.
- हालांकि, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "कंपनियों को बाजार के दुरुपयोग के जोखिमों को रोकने के लिए सभी कदम उठाने चाहिए." वर्तमान स्थिति के हल होने के बाद यह बड़ी हुई निगरानी और पूर्वव्यापी समीक्षा की संभावना को भी संदर्भित करता है.



### भाग (छह) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डाटा एल्गोरिथम

अतीत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता { आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस} को विज्ञान कथाओं का एक उत्पाद माना जा सकता था, आज अधिकांश व्यावसायिक यह समझते हैं कि स्मार्ट तकनीक को अपनाने से कार्य प्रक्रियाओं में निरंतर परिवर्तन आ रहा है. लगभग हर व्यवसाय और उद्योग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग हो रहा है, और मानव संसाधन में यह अपवाद नहीं है.

ओरेकल और फ्यूचर वर्कप्लेस द्वारा किए गए एक हालिया सर्वेक्षण में पाया गया कि मानव संसाधन व्यावसायिक का यह मानना है कि नए कौशल में महारत हासिल करने और अधिक खाली समय प्राप्त करने के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अवसर प्रस्तुत करता है, जिससे एचआर व्यावसायिकों को अपने संगठन के भीतर और अधिक रणनीतिक होने के लिए अपनी वर्तमान भूमिकाओं का विस्तार करने का अवसर प्राप्त होता है.

#### आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है?

- उच्च स्तर पर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ) एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटरों को पहले से एकत्रित आंकड़ों के आधार पर कार्यों से सीखने और बनाने या अनुशंसा करने की अनुमति देती है. मानव संसाधन प्रबंधन के संदर्भ में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्रक्रियाओं को कारगर बनाने और दक्षता में सुधार करने के लिए कई अलग-अलग तरीकों से लागू किया जा सकता है.
- नॉर्थस्टर्न के मास्टर ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज इन एनालिटिक्स प्रोग्राम के लीड फैकल्टी उवे होहग्रेव बताते हैं कि “जैसे हम इंसान हमारे सामने जानकारी देखते हैं और निष्कर्ष निकालने के लिए अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हैं. मशीनें बुद्धिमान नहीं हैं, लेकिन हम उन्हें सही जानकारी और तकनीक से समाहित कर बुद्धिमान बना सकते हैं.”
- जबकि संगठन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अलग-अलग प्रकार से मानव संसाधन प्रक्रियाओं में अपना रहे हैं, पर यह स्पष्ट है कि प्रौद्योगिकी का इस क्षेत्र पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा क्योंकि यह व्यापक रूप से स्वीकृत है. यह महत्वपूर्ण है कि मानव संसाधन व्यावसायिक खुद को इन परिवर्तनों के लिए तैयार करें कि यह तकनीक क्या है और इसे विभिन्न कार्यों में कैसे लागू किया जाता है.

- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ) एक ऐसे कार्य को करने के लिए प्रयुक्त तकनीक को संदर्भित करता है जिसे पूरा करने के लिए कुछ स्तर की बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है. दूसरे शब्दों में, एक उपकरण को ऐसे कार्य करने हेतु बनाया जाता है जिन कार्यों को मानव कर सकता है. तीन मुख्य घटक - उच्च गति संगणना, गुणवत्ता डेटा की एक बड़ी मात्रा और उन्नत एल्गोरिदम साधारण सॉफ्टवेयर से आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को अलग बनाते हैं. कोर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस प्रौद्योगिकियाँ एक एल्गोरिथम का उपयोग करते हुए रोजमर्रा की प्रक्रियाओं को बेहतर सटीकता और स्थिरता प्रदान करती हैं जो कि तीव्र गणन के साथ गुणवत्ता डेटा को जोड़ती हैं.
- आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस प्रौद्योगिकियां मानव संसाधन कार्यों को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं, जैसे कि स्वतः लेनदेन, भर्ती और प्रतिभा अधिग्रहण, पेरोल, रिपोर्टिंग, पहुंच नीतियां और प्रक्रियाएं. हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस क्षमताएं नई ऊंचाइयों पर पहुंच रही हैं और हम अपने व्यवसाय को कैसे संचालित करते हैं, इस पर व्यापक प्रभाव हुआ है.
- मानव संसाधन अधिकारियों को विश्वास है कि मानव संसाधन के प्रशासन कार्यों में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को विलय करने से समग्र कर्मचारी अनुभव में लाभ और सुधार होगा. यह अधिक क्षमता, अधिक समय और बजट, और निर्णय लेने योग्य लोगों के प्रबंधन के लिए अधिक सटीक जानकारी प्रदान करेगा.
- संग्रह हेतु मानव संसाधन डेटा की बढ़ती मात्रा का उत्पादन करने के लिए मनुष्य और सीखने की मशीन एक साथ काम कर रहे हैं, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता विश्लेषण का उपयोग निष्पादन और संचालन करने के तरीके में बेहतर अंतर्दृष्टि प्रदान कर रहा है.
- किसी भी संगठन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह लोगों को प्रभावी ढंग से अनुकूलित लागत पर परिवर्तनकारी मूल्य प्रदान करने के लिए लोगों, प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी को कैसे प्रभावी ढंग से जोड़ती है. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस विश्वसनीय एचआर लेनदेन और सेवा वितरण के लिए कई बैक-ऑफिस कार्यों को कुशलतापूर्वक स्वचालित करने में मदद करेगा.

### आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व्यवसाय आयोजना

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बिज़नेस प्लान उन उद्यमियों के लिए है जो तकनीक को पसंद करते हैं कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक बढ़ता हुआ बाजार है क्योंकि ज़्यादातर व्यवसाय और कंपनियां अपनी निर्माण और ग्राहक सेवा की प्रक्रियाओं में इसे धीरे-धीरे शामिल कर रही हैं.

आजकल, अलग-अलग तरह के गैजेट हैं जो आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए स्मार्टफ़ोन और स्मार्ट टीवी वर्चुअल सॉफ़्टवेयर का उपयोग करते हैं जो आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के साथ काम करता है और इन उपकरणों का उपयोग लोगों द्वारा अपने दैनिक जीवन को अधिक कुशल और आसान बनाने के लिए किया जाता है. इसलिए यदि आप इस बदलती और विकसित दुनिया का हिस्सा बनना चाहते हैं तो यह आपके लिए व्यवसाय की ही एक योजना है.

### व्यापार मॉडल

एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यवसाय, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को अपनी व्यावसायिक प्रक्रियाओं में एकीकृत करने के लिए कंपनियों और व्यवसाय को सहायता करता है. प्रौद्योगिकी का एकीकरण काम के घंटे और खर्च को कम करके, उन्हें और अधिक कुशल बनने में मदद करेगा.

एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व्यवसाय किसी भी कंपनी या व्यवसाय को अपनी सेवाओं को किराए पर लेने की तकनीक और प्रशिक्षण प्रदान करेगा. योजना के इस भाग में आपको कंपनी और उसके सबसे आवश्यक घटकों के लिए बिज़नेस मॉडल का विवरण मिलेगा.

### बाजार की स्थिति

व्यवसाय योजना के इस खंड में आपको विभिन्न बाजारों का वर्णन मिलेगा, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंपनी का हिस्सा होगा, उदाहरण के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) उत्पादों, सेवाओं और मशीन सीखने के अनुभव आदि.

आजकल दुनिया में हर जगह तकनीक व्यापार को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता है, यह कंपनी के पक्ष में काम करेगा क्योंकि आपके लिए कार्य करने हेतु एक बड़ा बाजार होगा. अपनी कंपनी को अपने वर्तमान प्रतिद्वंद्वियों से ऊपर रखने की रणनीति भी इसमें शामिल है. यहाँ उल्लिखित है.

### संचालन योजना

व्यवसाय योजना के इस भाग में व्यवसायों को दी जाने वाली सहायता की व्याख्या है और इसे कैसे वितरित किया जाएगा. योजना का यह हिस्सा मशीनरी, सॉफ्टवेयर या सेवाओं के स्रोत का वर्णन करता है जो कंपनी प्रस्तुत करेगी; उन्हें कैसे प्रस्तुत किया जाएगा.

आपूर्तिकर्ताओं का स्थान और प्रभावी सेवा प्रदान करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश और प्रोटोकॉल. इसमें प्रशिक्षण के बारे में जानकारी भी शामिल है और कर्मचारियों को प्रभावी ढंग से सेवाएं देने के लिए ज्ञान होना चाहिए.

### विपणन योजना

यह एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यवसाय विकसित करने की रणनीति प्रस्तुत करता है. यहां आपको विभिन्न उपकरण और विचार मिलेंगे जिनका व्यवसाय को जागरूकता पैदा करके इस बढ़ते बाजार में अपनी सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए उपयोग करना चाहिए.

### बाजार विभाजन

व्यवसाय योजना के इस खंड में बताया गया है कि लक्ष्य बाजार ऐसी कंपनियां हैं जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) को अपने व्यवसायों में एकीकृत करने की कोशिश कर रही हैं, या कंपनियां जो पहले से ही आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग करती हैं, लेकिन उन्हें अपने कर्मचारियों को एकीकृत करने और उपयोग करने में मदद करने के लिए तकनीकी सहायता और कार्यशालाओं की आवश्यकता होती है.

### प्रचार की रणनीतियाँ

तकनीक का उपयोग करके कृत्रिम बुद्धि के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए सबसे अच्छी रणनीति है. कंपनी को बढ़ावा देने के लिए, व्यवसाय योजना एक वेब साइट, एक ई-न्यूज़लेटर, प्रेस विज्ञप्ति और लेख, सोशल मीडिया विज्ञापन और अन्य डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों के निर्माण का सुझाव देगी.

व्यवसाय योजना के भाग का मुख्य विचार कंपनियों को यह बताना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता उनके संबंधित व्यवसायों के प्रदर्शन को कैसे बेहतर बनाएगी.



### वित्तीय अनुमान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निवेश करना प्रौद्योगिकी के भविष्य में एक शर्त है। इसमें संभावित राजस्व और खर्चों की एक सूची है, जो कि कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के आधार पर व्यवसाय उत्पन्न कर सकती है। यहां आपको अपनी पूंजी की जरूरतों को पूरा करने का सबसे अच्छा रास्ता भी मिलेगा।

### राजस्व मान

यहां आपको कृत्रिम बुद्धिमत्ता के व्यापार के लिए राजस्व के मुख्य स्रोत मिलेंगे, जो इस सेवा की पेशकश के माध्यम से और व्यापार की महत्वपूर्ण वित्तीय धारणाएं ऐसे अनुमानों पर पहुंचने के लिए कर रही हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव कर्मचारियों को भुगतान किए गए घंटों को कम करके ग्राहक के राजस्व में वृद्धि करता है। इसलिए, राजस्व का मुख्य स्रोत तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण कार्यशालाओं के साथ ग्राहक की आवश्यकता के आधार पर समाधान से आता है।

### प्रोजेक्टिंग खर्च

योजना के इस भाग में आपको एक लाभदायक कृत्रिम बुद्धिमत्ता व्यवसाय चलाने के लिए आवश्यक खर्चों की आवश्यकता होगी, जैसे कि सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म का रखरखाव, कर्मचारी, प्रशिक्षण और कार्यालय का किराया।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रौद्योगिकी को अपनाने में क्या बाधाएं हैं?

इस क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की धीमी गति के कारण क्या है? मानव संसाधन कार्यों में सहायता के लिए वित्तीय बाधाओं को दोषी ठहराया जा सकता है। अन्य महत्वपूर्ण बाधाओं में शामिल हैं:

**प्रतिभा का अंतर:** ठीक से शिक्षित या कुशल लोगों को ढूंढना महंगा और कठिन हो सकता है।

**गोपनीयता पर चिंता:** गोपनीय एचआर डेटा को सुरक्षित रूप से और केवल अधिकृत व्यक्ति के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

**चल रहे रखरखाव:** अन्य नवीन तकनीकों के साथ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को गहन सीखने और नियमित समीक्षा और अपडेट की आवश्यकता होती है।

**एकीकरण क्षमताएं:** SAAS की ओर HR प्रवृत्ति (सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर) के कारण डेटा उपलब्धता सीमित है।

**सीमित सिद्ध अनुप्रयोग:** कई उत्पाद और सेवाएँ केवल अवधारणा के प्रमाण के आधार पर संभव हैं।

हालांकि, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का उपयोग करने की लागत को निम्नलिखित मानव संसाधन कार्यों के लिए उचित ठहराया जा सकता है:

- मानव संसाधन पेशेवरों को प्रशासनिक कार्यों पर खर्च करने की मात्रा को कम करना
- साझा सेवा केंद्रों के बोझ को कम करना और एचआर लेनदेन को निष्पादित करके और नियमित प्रश्नों के उत्तर प्रदान करने में सहायता करना
- भर्ती और प्रतिधारण
- निवेश पर रिटर्न को मापना
- एचआर निर्णय लेने में पूर्वाग्रह को कम करना

यदि संगठन आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धी बने रहना चाहते हैं, तो उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में एचआर लेनदेन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को शामिल करने के तरीकों पर गौर करना होगा। संगठनों को प्रशासनिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर भरोसा करना चाहिए ताकि एचआर विभाग अधिक कुशल बन सके। एचआर पेशेवर संगठनात्मक स्तर पर रणनीतिक योजना पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सक्षम होंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस औसत मानव की तुलना में अधिक तेजी से डेटा को संसाधित करता है। यह एक व्यापक नेट कास्ट करने में भी सक्षम है, ऐसे लोगों की ओर ध्यान दिलाता है जिन्हें नियोक्ता ने नहीं माना होगा या जो काम की तलाश में भी नहीं आ सकते हैं।

शुरुआत से अधिक योग्य उम्मीदवारों के पास प्रक्रिया को छोटा करता है, प्रबंधकों को एचआर डेटा का विश्लेषण करने और रणनीतिक योजना में सुधार करने के लिए अधिक समय समर्पित करने में सक्षम बनाता है।

### व्यक्तिगत कर्मचारी अनुभव

कम लागत के साथ, कम समय में और सुरक्षित तरीके से सही जानकारी प्राप्त करना, भर्ती प्रक्रिया के साथ शुरुआत करके, कदम से कदम बढ़ाने में मदद करता है। वहां से, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को प्रभावी ढंग से एक कर्मचारी के ऑनबोर्डिंग कार्यक्रम में बुना जा सकता है। नए कर्मचारी जो दूसरों के साथ जुड़ना चाहते हैं और अधिक संस्थागत जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, वे नहीं जानते कि कहां जाना है। मानव संसाधन प्रणाली के लिए संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस नए कर्मचारियों के सबसे महत्वपूर्ण सवालों के जवाब देने में मदद करेगा ताकि उन्हें तेजी से गति मिल सके। उदाहरण के लिए, एक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस - संचालित कार्यक्रम उन लोगों के नाम, स्थान और संपर्क जानकारी प्रदान कर सकता है जिन्हें उन्हें अपने पहले सप्ताह के दौरान जुड़ना चाहिए।

नए कर्मचारियों को आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस इंजनों द्वारा सलाह दी जा सकती है कि वे प्रशिक्षण मॉड्यूल और व्यापार-आचरण दिशानिर्देशों सहित उपयोगी जानकारी वाले एक नए भाड़े के वेब पेज की जांच करें।

इसके अलावा, संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस लेनदेन कर्मचारी की ओर से व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित तरीके से अपडेट करने में मदद कर सकता है। एक प्रबंधक अपनी प्रत्यक्ष रिपोर्ट की जानकारी को चैटबॉट के माध्यम से एक्सेस कर सकता है और कोर एचआर एप्लिकेशन को एक्सेस किए बिना एचआर व्यापार लेनदेन कर सकता है।

चैटबॉट एक कर्मचारी को प्रमाणित करते हैं और केवल अधिकृत जानकारी प्रदान करते हैं जिसके साथ कर्मचारी पहुंच और लेनदेन कर सकता है। एचआर लेनदेन के लिए संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस में एक अनुमोदन-श्रृंखला प्रक्रिया के माध्यम से रूट किए गए कुछ लेनदेन करने की एक मजबूत क्षमता है।

केपीआई और विश्लेषणात्मक डेटा प्राप्त करने के लिए प्रबंधकों या एचआर पेशेवरों को कोर एचआर सिस्टम तक नहीं पहुंचना होगा। संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस समाधान मशीन-सीखने की क्षमता - प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) का उपयोग करता है - यह जानने के लिए कि कर्मचारी, प्रबंधक या मानव संसाधन पेशेवर क्या जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

ध्यान दें कि संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस को अनुकूलन की आवश्यकता है; इसे मानकीकृत करना आसान नहीं है। आप कुछ शब्दों को सकारात्मक या नकारात्मक के रूप में नामित कर सकते हैं, लेकिन एप्लिकेशन सबसे अच्छा काम करता है जब वह सही संदर्भ और उपयोगकर्ता के इरादों को निर्धारित कर सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहे मानव संसाधन कार्य:

HRast समाधान सक्सेसफैक्टर (SF), रीकास्ट.

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से संवादात्मक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस क्षमताओं के साथ, SAP लियोनार्डो ML फाउंडेशन, आईबीएम वाटसन, ServiceNow और Microsoft Azure/Skype, ने साबित किया है कि संज्ञानात्मक इंजन कर्मचारियों को दिन में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं. एचआर टीम के सदस्यों, कर्मचारियों या प्रबंधकों को इन कार्यों को संभालना होगा.

### कर्मचारी की जानकारी देखना और अपडेट करना

एक कर्मचारी अपनी व्यक्तिगत जानकारी, जैसे, पते, आपातकालीन संपर्क, संगठन के विवरण, उपलब्ध छुट्टी के दिन, अवकाश अनुरोधों की स्वीकृति स्थिति और एचआर व्यापार डेटा को अधिकृत कर सकता है.

### टीम प्रशिक्षण टीम प्रबंधक कौशल-

अंतराल आकलन के आधार पर अपनी टीम के लिए डिजिटल प्रशिक्षण अवसरों की योजना बना सकते हैं. संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कर्मचारियों और प्रबंधकों को उनके प्रशिक्षण प्रगति को ट्रैक करने में मदद कर सकता है.

### भर्ती प्रक्रिया

संज्ञानात्मक समाधान संगठनों को कई डेटा स्रोतों में टैप करने और बेहतर उम्मीदवार प्रोफाइल के लिए नई अंतर्दृष्टि प्रकट करने में मदद कर सकते हैं, भर्ती और भर्ती प्रक्रिया में सुधार कर सकते हैं.

### एचआर व्यापार लेनदेन डेटा तक पहुंच

प्रबंधक या मानव संसाधन सदस्य प्रति प्राधिकरण कर्मचारी डेटा का उपयोग कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, एक कर्मचारी की नौकरी का इतिहास, टीम की जानकारी या प्रदर्शन रेटिंग. संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस विश्लेषणात्मक और प्रमुख प्रदर्शन संकेतक जानकारी भी ला सकता है.



### दोहराव, कम-मूल्य वाले कार्यों का स्वचालन

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मानव संसाधन के लिए दोहराव, कम-मूल्य वाले कार्यों को स्वचालित करने और अधिक रणनीतिक कार्य पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर प्रस्तुत करता है। सामान्य रूप से मानव संसाधन सेवाओं में नए कर्मचारियों के लिए मानक ऑनबोर्डिंग प्रक्रियाओं पर सामान्य खर्च और कर्मचारियों के अनुरोधों और बुनियादी लाभ प्रबंधन के लिए बड़ी मात्रा में खर्च किया जाता है। उन क्षेत्रों में समय की बचत कंपनी की सफलता के लिए मानव संसाधन टीमों को अधिक रचनात्मक और रणनीतिक कार्य करने में मदद कर सकती है।

### स्मार्ट लोग एनालिटिक्स

वर्षों से, संगठन भविष्य के व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए डेटा एकत्र कर रहे हैं। इन लोगों को एनालिटिक्स का लाभ उठाने के लिए एचआर टीमों को बहुत कुछ करना है - ट्रैक, विश्लेषण, प्रबंधन और सुरक्षा के लिए डेटा। शीर्ष प्रतिभागों को आकर्षित करने के लिए नए तरीके से स्मार्ट लोगों को एनालिटिक्स का समर्थन करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एचआर के भीतर एक बड़ी भूमिका निभाएगा। उम्मीदवार अनुभव को बढ़ाने और अपेक्षाओं को पूरा करने वाली प्रौद्योगिकियां अन्य सभी संगठनों से अलग पहचान बनाने में मदद करेंगी।

### चैटबॉट-अज्ञेय समाधान के साथ तकनीकी परिदृश्य

परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रौद्योगिकी-अज्ञेय समाधान के साथ कुंजी डेटा को कभी भी, कहीं भी और किसी भी माध्यम (आवाज, पाठ, वार्तालाप) में सुलभ बनाना है। संवादी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का एक प्रमुख माध्यम चैटबोट है। यह उत्पाद सहज निर्देश प्रदान करता है और एक स्मार्ट और कुशल सहायक के रूप में कार्य करने के लिए पैटर्न अध्ययन करता है। बॉट उपयोगकर्ता पूछताछ का निर्धारण करने और वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए एंटरप्राइज़ सिस्टम से जुड़ने के लिए तर्क का उपयोग करता है। पैटर्न के साथ काम करना और डेटा के क्वीनर सेट का उपयोग करने में मशीन लर्निंग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस प्रौद्योगिकी परिदृश्य के लिए प्रमुख निर्माण खंड निम्नलिखित हैं:

### **क्लाउड समाधान:**

तैनाती, परीक्षण, सुधार और गुणवत्ता आश्वासन के लिए भंडारण के साथ एक पूर्व-प्रशिक्षित मॉडल सक्षम करता है.

### **भाषा और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण:**

प्रासंगिक और कथा मुद्दों को हल करने के लिए एक मानकीकृत प्रोग्रामिंग भाषा और उपकरणों का उपयोग करता है.

### **डिजिटल सहायता:**

कई उपकरणों में व्यक्तिगत प्रश्नों का समर्थन करता है, जैसे, Google सहायक, एलेक्सा.

### **स्वचालित मशीन लर्निंग:**

खोजपूर्ण डेटा विश्लेषण, एल्गोरिथ्म चयन और डायग्नोस्टिक्स प्रदान करता है; गुणवत्ता डेटा और उन्नत एल्गोरिदम की मदद से समस्या-समाधान के लिए सबसे उपयोगी है.

### **बॉट:**

एक आम प्लग-इन के माध्यम से बैंक-ऑफिस और उद्यम संचालन को स्वचालित करता है.

### **आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और व्यावसायिक कार्यक्षमता के लिए एपीआई:**

मशीन सीखने, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और मुख्य व्यावसायिक कार्यों का समर्थन करता है; चैटबोट-अज्ञेय प्रौद्योगिकी द्वारा उपभोग किए जाने के लिए डिज़ाइन किया गया है और कई दूतों, जैसे, गूगल, स्काइप, सर्विसनाँ, आईबीएम चैटबॉट, सोशल मीडिया मैसेंजर, एसएपी जैम और कस्टम बॉट्स के साथ जुड़ने के लिए एक पाठ-आधारित संवादी इंटरफ़ेस प्रदान करता है.

### **व्यवसाय में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के अपनाने पर सामान्य दिक्कतें**

दुनिया नई तकनीकों के साथ तेजी से आगे बढ़ रही है, और संगठनों के लिए गलत करना आसान है. हम आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सेवाओं को तैनात करते समय उचित सावधानी बरतने की सलाह देते हैं. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सिस्टम को प्रभावी ढंग से और कुशलता से प्रबंधित करने के लिए उचित अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है.

- विश्वसनीय और पर्याप्त सीखने के डेटा सेट का पता लगाएं.

डेटा की गुणवत्ता और मात्रा के साथ-साथ वास्तविक जीवन डेटा, अत्यंत महत्वपूर्ण है. यह पूर्वाग्रह और सभी संभावित परिदृश्यों के प्रतिनिधि से मुक्त होना चाहिए. सबसे पहले, डेटा का सही सेट प्राप्त करें, फिर सर्वश्रेष्ठ आउटपुट प्रदान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस प्राप्त करें.

- सही कार्यान्वयन दृष्टिकोण का उपयोग करें.

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर्यावरण अन्य आईटी वातावरण की तुलना में काफी अलग है. ज्यादातर समय, विकास डेटा स्रोतों की पहचान करने और फिर सामग्री इकट्ठा करने, इसे साफ करने और इसे क्यूरेट करने के बारे में है. इस तरह के दृष्टिकोण के लिए अलग-अलग कौशल और मानसिकता की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ अलग-अलग तरीके भी.

- स्पष्टता की तलाश करें.

पीढ़ी की अंतर्दृष्टि के बारे में स्पष्टता की कमी गलतियों को जन्म दे सकती है. व्यवसायों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि मशीनें नियोजित, सुरक्षित और कुशलता से प्रदर्शन करें. सिस्टम में पैटर्न सीखने, पता लगाने और सही करने के लिए एक उचित प्रशिक्षण चरण होना चाहिए, और तदनुसार कार्य करना चाहिए.

- पूर्वाग्रह को खत्म करना.

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एप्लिकेशन गति को संसाधित करने में सक्षम हैं, लेकिन वे पक्षपाती लर्निंग इनपुट के कारण गलत हो सकते हैं. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस समाधान सकारात्मक परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक हो सकता है अगर इसका सही तरीके से उपयोग किया गया हो.

- अनपेक्षित परिणामों पर विचार करें.

एक अच्छा आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस डिजाइनर अनपेक्षित मुद्दों से बचने के लिए कई संभावित परिदृश्यों, पूर्व-शिक्षण और मशीन सेल्फ-लर्निंग तंत्र के रूप में इनपुट करके अनपेक्षित परिणामों से बचने की रणनीति का सुझाव देने में सक्षम होना चाहिए.

## डाटा एल्गोरिथम प्रणाली

### एल्गोरिदम का सिस्टम में महत्व

- "अल्गोरिथम" एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग अतीत की तुलना में वर्तमान में बहुत अधिक बार किया जाता है. कुछ सरल निर्देश दिए जाने पर कंप्यूटर स्वयं नियम के अनुसार कार्य करते हैं.
- वास्तव में सभी एल्गोरिदम गणितीय निर्देश हैं. विकिपीडिया बताता है कि एक एल्गोरिथम "गणना के लिए एक कदम-दर-चरण प्रक्रिया है.
- एल्गोरिदम का उपयोग गणना, डेटा प्रसंस्करण और स्वचालित तर्क के लिए किया जाता है. एल्गोरिदम हमारे जीवन का एक सर्वव्यापी हिस्सा बन रहे हैं. कंप्यूटर को कुछ भी करने के लिए, आपको कंप्यूटर प्रोग्राम लिखना होगा.
- कंप्यूटर प्रोग्राम लिखने के लिए, आपको कंप्यूटर को, चरण दर चरण बताना होगा, जैसा आप चाहते हैं वैसा ही करें. कंप्यूटर तब अंतिम चरण को पूरा करने के लिए, प्रत्येक चरण का यंत्रवत रूप से अनुसरण करते हुए कार्यक्रम को कार्यान्वित करता है.
- जब आप कंप्यूटर को बता रहे हैं कि क्या करना है, तो आपको यह भी चुनना है कि यह कैसे करना है. यही वह जगह है जहाँ कंप्यूटर एल्गोरिदम आते हैं. एल्गोरिथम काम करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मूल तकनीक है. "
- आपको कंप्यूटर को चरण दर चरण बताना होगा "वास्तव में आप इससे क्या करना चाहते हैं". स्पष्ट रूप से क्रमादेशित निर्देशों के अलावा, कुछ कंप्यूटर एल्गोरिदम को कंप्यूटर को अपने दम पर सीखने के अनुसार डिज़ाइन किया गया है (अर्थात, मशीन लर्निंग की सुविधा).
- मशीन लर्निंग के उपयोग में डेटा माइनिंग और पैटर्न रिकॉग्निशन शामिल हैं. क्लिंट फ्रिनले की रिपोर्ट के अनुसार "आज के इंटरनेट को एल्गोरिदम द्वारा शासित किया गया है.
- ये गणितीय रचनाएं निर्धारित करती हैं कि आप अपने फेसबुक फ्रीड में क्या देखते हैं, नेटफ्लिक्स आपको किन फिल्मों की सलाह देता है और आप अपने जीमेल में कौन से विज्ञापन देखते हैं. "



- गणितीय समीकरणों के अनुसार, एल्गोरिदम स्पष्ट रूप से, न तो अच्छे हैं और न ही बुरे हैं। हालांकि, अच्छे और बुरे दोनों इरादों वाले लोगों ने एल्गोरिदम का उपयोग किया है।
- फिलहाल एल्गोरिदम के बारे में उठाए जा रहे प्रश्न एल्गोरिदम प्रति सेगमेंट के बारे में नहीं हैं, लेकिन डेटा उपयोग और डेटा गोपनीयता के संबंध में जिस तरह से समाज संरचित है।
- यह इस बात के बारे में भी है कि भविष्य का अनुमान लगाने के लिए मॉडल का उपयोग कैसे किया जा रहा है। वर्तमान में डेटा और एल्गोरिदम के बीच एक अजीब गठबंधन है।
- जैसे-जैसे तकनीक विकसित होगी, गलतियाँ होंगी, लेकिन यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वे सिर्फ एक उपकरण हैं। हमें अपने उपकरणों को दोष नहीं देना चाहिए। ”

### डाटा एल्गोरिदम:

डाटा अल्गोरिथम शब्द का अर्थ है, "डाटा गणना या अन्य समस्या-समाधान संचालन में पालन की जाने वाली नियमों की एक प्रक्रिया या सेट"। इसलिए एल्गोरिथम नियमों / निर्देशों के एक सेट को संदर्भित करता है जो चरण-दर-चरण यह परिभाषित करते हैं कि अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए किसी कार्य को कैसे निष्पादित किया जाना है।

इसे एक नई रेसिपी पकाने के उदाहरण से समझा जा सकता है। एक नया नुस्खा पकाने के लिए, व्यक्ति निर्देशों और चरणों को पढ़ता है और दिए गए अनुक्रम में उन्हें एक-एक करके निष्पादित करता है। इस प्रकार प्राप्त परिणाम पूरी तरह से पकाया गया नया व्यंजन है। इसी तरह, एल्गोरिदम अपेक्षित आउटपुट प्राप्त करने के लिए प्रोग्रामिंग में एक कार्य करने में मदद करता है।

### **डाटा एल्गोरिदम के गुण**

जैसा कि एक नुस्खा पकाने के लिए सभी लिखित निर्देशों का पालन नहीं होता. इसी तरह, प्रोग्रामिंग के लिए सभी लिखित निर्देश एक एल्गोरिथ्म नहीं है. एल्गोरिदम होने के लिए कुछ निर्देशों के लिए, इसमें निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए:

#### **स्पष्ट और असंदिग्ध:**

एल्गोरिथ्म स्पष्ट और असंदिग्ध होना चाहिए. इसके प्रत्येक चरण को सभी पहलुओं में स्पष्ट होना चाहिए और इसका केवल एक ही अर्थ होना चाहिए.

#### **वेल-डिफाइंड इनपुट्स:**

अगर कोई एल्गोरिदम इनपुट्स लेने के लिए कहता है, तो यह अच्छी तरह से परिभाषित इनपुट होना चाहिए.

#### **अच्छी तरह से परिभाषित आउटपुट:**

एल्गोरिथ्म को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना चाहिए कि आउटपुट क्या होगा और इसे अच्छी तरह से परिभाषित किया जाना चाहिए.

#### **सीमा के भीतर :**

एल्गोरिथ्म सीमा के भीतर होना चाहिए, अर्थात यह अनंत या असीमित नहीं होना चाहिए.

#### **संभव:**

एल्गोरिथ्म सरल, सामान्य और व्यावहारिक होना चाहिए, जैसे कि यह उपलब्ध संसाधनों को निष्पादित किया जा सकता है. इसमें कुछ भविष्य की तकनीक, या कुछ भी शामिल नहीं होना चाहिए.

### भाग (सात) भविष्य की बैंकिंग में मानव संसाधन विकास

मानव संसाधन किसी भी संगठन की अत्यधिक महत्वपूर्ण संपत्ति होती है. किसी भी संगठन की क्षमता एवं प्रभाविकता उसके मानव संसाधन के प्रभावी उपयोग पर अधिक निर्भर करता है. इस संसाधन की महता को ध्यान मे रखते हुए, यह अत्यावश्यक है कि इसके विकास के लिए पर्याप्त ध्यान देना होगा.

मानव संसाधन विकास के सभी पहलुओं का केंद्र बिन्दु, अत्यधिक बेहतर कार्यबल को विकसित करना है ताकि संगठन एवं व्यक्तिगत कर्मचारी अपने कार्य लक्ष्यों को सुयोजित एवं निष्पादित कर सकें.

#### **संसाधन :-**

संसाधन एक ऐसा स्रोत है जिसका उपयोग मनुष्य अपने लाभ के लिये करता है. कोई वस्तु प्रकृति में हमेशा से मौजूद रह सकती है, लेकिन वह संसाधन तब बनती है जब मनुष्य को उसके लाभप्रद उपयोग के बारे में ज्ञात होता है और वह लाभ प्राप्त करना शुरू करता है.

#### **मानव संसाधन प्रबंधन क्या है?**

मानव संसाधन प्रबंधन (Human Resource Management); मानव संसाधन प्रबंधन (HRM) प्रबंधन में "लोगों" आयाम से संबंधित है. चूंकि प्रत्येक संगठन लोगों से बना होता है, उनकी सेवाओं को प्राप्त करना, उनके कौशल को विकसित करना, उन्हें उच्च स्तर के प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना और यह सुनिश्चित करना कि वे संगठन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखना जारी रखते हैं, संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं.

यह संगठन सरकार, व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन या सामाजिक कार्रवाई के प्रकार की परवाह किए बिना सच है. जो संगठन उत्कृष्ट श्रमिकों को प्राप्त करने, विकसित करने, प्रोत्साहित करने और रखने में सक्षम हैं, वे दोनों प्रभावी होंगे, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे, और कुशल (आवश्यक संसाधनों की कम से कम राशि का विस्तार). वे संगठन जो अक्षम और अप्रभावी हैं, वे व्यापार को रोकने या बाहर जाने के खतरों का जोखिम उठाते हैं.

### मानव संसाधन प्रबंधन की परिभाषा:

मानव संसाधन प्रबंधन की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नानुसार है :

‘मानव संसाधन प्रबंधन काम पर व्यक्तियों को व्यवस्थित करने और उनका इलाज करने के तरीकों का एक कोड है, ताकि उन्हें अपनी आंतरिक क्षमताओं का सबसे बड़ा संभव अहसास हो, इस प्रकार वह अपने और अपने समूह के लिए अधिकतम दक्षता प्राप्त कर सके और इस तरह उद्यम को दे जिनमें से वे प्रतिस्पर्धात्मक लाभ और इसके इष्टतम परिणामों का एक हिस्सा है.’

इन प्रक्रियाओं में शामिल हैं:

- मानव संसाधन योजना.
- नौकरी और काम का डिज़ाइन. स्टाफिंग. प्रशिक्षण और विकास.
- प्रदर्शन मूल्यांकन और समीक्षा.
- मुआवजा और इनाम.
- कर्मचारी सुरक्षा और प्रतिनिधित्व और
- संगठन में सुधार.

एक अन्य दृष्टिकोण के अनुसार, मानव संसाधन प्रबंधन उन प्रथाओं और नीतियों को संदर्भित करता है जिन्हें आपको अपने प्रबंधन कार्य के लोगों के पहलुओं को पूरा करने की आवश्यकता होती है. इनमें शामिल हैं:

- नौकरी विश्लेषण का संचालन करना.
- श्रम जरूरतों की योजना बनाना और उम्मीदवारों की भर्ती करना.
- नौकरी के उम्मीदवारों का चयन करना.
- नए कर्मचारियों को प्रेरणा और प्रशिक्षण.
- वेतन और वेतन का प्रबंध करना.
- प्रोत्साहन और लाभ प्रदान करना.
- प्रदर्शन का मूल्यांकन.
- संचार.
- प्रशिक्षण और विकास और
- भवन कर्मचारियों की प्रतिबद्धता.



इन प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए, मानव संसाधन प्रणालियों को सभी प्रबंधकों और मानव संसाधन विशेषज्ञों के संयुक्त प्रयासों के माध्यम से योजनाबद्ध, विकसित और कार्यान्वित किया जाता है - और अक्सर सभी कर्मचारियों को - एक संगठन में. कुल मिलाकर, सिस्टम का उद्देश्य संगठन के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करना और संगठनात्मक प्रभावशीलता और उत्पादकता में योगदान करना है.

### मानव संसाधन प्रबन्ध में उभरते आयाम :

निरन्तर बदलती सामाजिक-आर्थिक प्रौद्योगिकी तथा राजनैतिक परिस्थितियों के कारण भविष्य के मानव संसाधन या कार्मिक प्रबन्धकों को श्रम के प्रबन्ध में अनेक कठिनाइयों का सामना करना होगा. आज का मानव संसाधन प्रबन्धक स्वयं को वातावरण में आ रहे परिवर्तनों के कारण अप्रचलित हुआ सा अनुभव कर सकता है यदि वह आज के उद्योगों एवं व्यवसायों के सामने आ रही ऐसी कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों के प्रति स्वयं को अद्यतन नहीं कर लेता:

- (i) श्रम शक्ति का बढ़ता आकार
- (ii) शिक्षा के स्तर में वृद्धि
- (iii) प्रौद्योगिकी विकास
- (iv) राजनैतिक वातावरण में परिवर्तन
- (v) कर्मचारियों की बढ़ती महत्वाकांक्षाएँ
- (vi) बदलता मनोवैज्ञानिक तंत्र
- (vii) कम्प्यूटरीकृत सूचनातंत्र
- (viii) पेशेवर कर्मियों की गतिशीलता
- (ix) वैधानिक परिदृश्य में बदलाव
- (x) मानवीय सम्बन्धों का प्रबन्ध

### मानव संसाधन प्रबंधन के तत्व:

- मानव संसाधन प्रबंधन का लक्ष्य कर्मचारियों को सर्वश्रेष्ठ परिणाम दिलाना है। दूसरे शब्दों में, यह व्यवसाय में मानव कारक से इष्टतम योगदान हासिल करने का समग्र लक्ष्य है।
- अच्छा मानव संसाधन प्रबंधन कर्मचारियों को अपनी क्षमताओं को पूर्ण विकसित करने में मदद करता है और अपने काम से सबसे बड़ी संतुष्टि प्राप्त करता है। इस प्रकार, उनकी आवश्यकताओं, आराम, और शिकायतों को देखता है।
- अच्छा HRM का उद्देश्य समूह की संतुष्टि को बढ़ावा देना है, जिसे टीम भावना के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यह एक संयुक्त प्रयास है।
- मानव संसाधन से संबंधित कार्य निरंतर प्रकृति का है। इसे मानवीय संबंधों की निरंतर सतर्कता और जागरूकता की आवश्यकता है और रोजमर्रा के कार्यों में उनका महत्व है, इस प्रकार, दृष्टिकोण का एक तरीका, सोचने की तकनीक, प्रबंधन का एक दर्शन जिसे हर समय और विभिन्न स्तरों पर ध्यान में रखना होता है।

इस प्रकार, मानव संसाधन प्रबंधन दोनों कर्मचारियों और साथ ही संगठनात्मक प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए डिज़ाइन किए गए कार्यक्रमों, कार्यों और गतिविधियों के सेट को संदर्भित करता है।

### मानव संसाधन प्रबंध के प्रबन्धकीय कार्य:

प्रबन्ध एक बहुअर्थी शब्द है जिसके अन्तर्गत तीन प्रमुख कार्य सम्मिलित हैं:

- (i) व्यवसाय का प्रबन्ध
- (ii) प्रबन्धकों का प्रबन्ध तथा
- (iii) कार्य तथा कार्यकर्ताओं का प्रबन्ध।

इसमें से अन्तिम दो कार्य सेविवर्गीय प्रबन्ध से सम्बन्धित हैं। मूलतः प्रबन्ध का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का उपयोग निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है अर्थात् उस प्रक्रिया के अन्तर्गत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नियोजन, संगठन, नियन्त्रण व समन्वय के कार्य सम्मिलित किये जाते हैं।

**(1) नियोजन:**

नियोजन एक आधारभूत एवं निरन्तर चलने वाला प्रबन्धकीय कार्य है क्योंकि इसके द्वारा ही पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य पथ (Work Path) का चयन किया जाता है. नियोजन यह स्पष्ट करता है कि क्या करना है, कब करना है क्यों करना है और कौन व्यक्ति किस कार्य को करेगा.

यह एक जटिल एवं कठिन कार्य है क्योंकि सामान्यतः योजनाएँ एक अनिश्चित एवं गतिशील वातावरण में तैयार की जाती हैं और लागू की जाती हैं जिनका ठीक प्रकार से पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता.

अतः नियोजन में दो आधारभूत तत्व सम्मिलित हैं:

(i) शोध एवं

(ii) पूर्वानुमान

ये दोनों तत्व परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं क्योंकि पूर्वानुमान तभी सम्भव है जबकि शोध कार्य पूर्ण कर लिया गया हो और निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक दशाएँ उपलब्ध हों. नियोजन के लिए प्रचलित मजदूरी की दरें श्रम-बाजार श्रम-संघों की शक्ति, प्रचलित सेविवर्गीय नीतियों तथा कार्यक्रमों, आदि की जानकारी होना आवश्यक है.

मानव संसाधन के पूर्वानुमान के लिए प्रबन्धक को उत्पादन में अथवा सामाजिक माँग परिवर्तन और उनमें समन्वय स्थापित करने हेतु आवश्यक ज्ञान होना चाहिए अन्यथा श्रम की पूर्ति आवश्यकता अधिक होने पर या उसके आवश्यकता से कम होने पर (दोनों ही दशाओं में) हानि होने की संभावना रहती है.

वस्तुतः नियोजन अथवा नीति निर्धारण कार्य, आरम्भ में ही कर लिया जाना चाहिए जिससे कि संभावित समस्याओं और घटनाओं का पूर्वानुमान लगाया जा सके और जिससे होने वाली हानियों को कम किया जा सके और यदि संभव हो तो उनसे पूर्णतः मुक्ति पायी जा सके.

**(2) संगठन :**

एक कार्य-प्रणाली निश्चित होने के पश्चात् लक्ष्यों की प्राप्ति केवल उचित संगठन द्वारा ही संभव है. यह तभी संभव है जबकि कार्य कर्मचारियों उत्पादन विधियों तथा भौतिक साधनों के बीच क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित किया जा चुका हो.

संगठन तथा प्रबन्ध में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि प्रबन्धक कार्यों के करने के लिए विभिन्न कर्मचारियों को उनके पद के अनुरूप अधिकार हस्तान्तरित करते हैं और उन्हें कार्य विशेष के लिए उत्तरदायी ठहराते हैं. प्रत्येक कर्मचारी अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए उद्देश्यों की प्राप्ति में योगदान देता है.

**(3) निर्देशन :**

उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करना व उन्हें गति प्रदान करना अत्यन्त आवश्यक है. निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रबन्धक कर्मचारियों को उचित नेतृत्व एवं अभिप्रेरण प्रदान कर अनुकूलन संगठनात्मक व्यवहार प्राप्त करते हैं जो कि अधिकतम उत्पादन का आधार है.

**(4) समन्वय :**

समन्वय द्वारा विभिन्न विभागों के कार्य में सन्तुलन स्थापित किया जाता है जिससे संगठन में एकता बनी रहे और उद्देश्य प्राप्त किये जा सकें. यह कार्य सभी स्तर पर किया जाता है. इस हेतु सेविवर्गीय विभाग विकास सम्बन्धी क्रियाओं सेविवर्गीय नीतियों तथा अन्य कार्यक्रमों में समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है जैसे सुरक्षात्मक कार्य, कर्मचारियों को लाभान्वित करने का कार्य, कार्य-मूल्यांकन कार्य, प्रशिक्षण एवं विकास तथा सन्देशवाहन कार्य, आदि.

**(5) नियन्त्रण :**

नियन्त्रण यह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत इस तथ्य का सत्यापन किया जाता है कि नियोजित एवं स्थापित कार्यक्रम स्वीकृत सिद्धान्तों एवं दिये गये निर्देशानुसार कार्य हो रहा है अथवा नहीं, त्रुटियाँ कहाँ उत्पन्न होती हैं व कैसे इन्हें दूर किया जा सकता है.

निर्वचन, नियन्त्रण तथा पुनःमूल्यांकन द्वारा ही सेविवर्गीय विभाग उचित जानकारी प्राप्त कर सकता है. नियन्त्रण हेतु सेविवर्गीय प्रबन्ध के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का निरीक्षण, श्रम-बदली विवरणों की जाँच-पड़ताल एवं निर्वचन, नैतिक सर्वेक्षण कार्य करना, विभाजन,



साक्षात्कार, नए कर्मचारियों का कुछ कालान्तर में साक्षात्कार आदि उपकरण के रूप में कार्य करते हैं .

### मानव संसाधन प्रबन्ध की नई भूमिका

बीसवीं सदी के अंत के दशक में मानव संसाधन प्रबन्ध व्यापक क्रांति के दौर से गुजरा जिसने स्वीकृत व्यवहारों के प्रति प्रश्न उठाये हैं तथा संगठनों एवं संरचनाओं का पुनः आविष्कार किया है. अनेक परम्परागत व्यवहार दरकिनार किये जा चुके हैं. उदाहरण के तौर पर यह देखा जा सकता है कि क्रम-व्यवस्थाएँ समाप्त हो रही हैं तथा फ्लैटर संघ को अधिक महत्व दिया जा रहा है.

इसका अर्थ है कि विशिष्टिकरण तथा चातुर्य सामने आ रहे हैं. साथ ही कार्य तथा निष्पत्ति के मानदण्ड तथा पैमानों को भी अपग्रेड किया जा रहा है. उसी संयंत्र में आज 20 वर्ष पहले के प्रति प्रबन्धक 20 श्रमिकों की तुलना में 50 श्रमिक प्रति प्रबन्धक रखा जा रहा है. संख्या भविष्य में 100 तक बढ़ सकती है. यह मानव शक्तिकरण की नई भूमिका प्रतीत होती है.

जॉन पायने के शब्दों में- "एक काम करने के लिए तथा उनके व्यवधान के बिना परिणाम पाने के लिए लोगों पर भरोसा करने हेतु प्रत्यार्पण को तैयार किया जा रहा है. यह करने से कहना कहीं आसान है. ऐसे प्रबन्धक जो उनके लिए प्रत्यार्पण का काम करते हैं वे जो डर मिटा चुके हैं. वे प्रत्यार्पण नहीं करते तथा फिर चिन्तित रहते हैं कि काम सुचारु ढंग से नहीं हो पायेगा तथा उनको दोषारोपित किया जायेगा या बाहर का रास्ता दिखाया जायेगा. उनका अपनी निजी स्थिति में भरोसा है तथा वे डरे हुए भी नहीं हैं कि व्यक्ति एक अच्छा काम करेगा तथा उनकी स्थिति तथा अधिसत्ता को बौना बना देगा. साथ ही, वे उचित तौर पर प्रत्यार्पण करने के लिए समय बनाते हैं. प्रारम्भ में, प्रत्यार्पण में समय वचनबद्धता का समावेश तो होता है लेकिन निकट भविष्य में यथार्थ समय बचतें होती हैं."

मानवीय संसाधन प्रबन्ध की नई भूमिका स्टूअर्ट क्रेनर ने निम्न प्रकार समझाई है:

- परिवर्तन अग्रदूत
- प्रबन्ध के प्रति एक समेकित व्यवस्था
- एक मध्यस्थ

निष्पत्ति में सुधार लाकर तथा लागतों को कम करके जो परिवर्तन लाये जा रहे हैं वे लोगों के विकास के प्रति संगठन की ओर अधिक वचनबद्धता का समावेश करते हैं.

फलस्वरूप, अवधि की लम्बाई, जो परम्परागत तौर पर लम्बी होती थी अब सीमित हो गई है, भविष्य कम निश्चित हो गया है, प्रबन्धकीय अवसर स्वतः निर्धारित हुए हैं तथा अभिप्रेरक

तत्व कम्पनी के प्रति स्वामीभक्ति की अपेक्षा भावी रोजगारशीलता को बढ़ाने से अधिक सम्बन्ध रखते हैं तथा साथ ही अधिक वेतन के रूप में प्रतिफल बढ़ रहे हैं।

जैसा कि पी ए कन्सलटिंग समूह द्वारा परिचयांकित किया गया, भावी सृजनात्मक करीयर्स को करियर विकास के प्रति और अधिक सन्निहिता की अपेक्षा होगी।

(1) आन्तरिक दौरों के स्थान पर व्यूहरचनात्मक साझेदार संगठनों (ग्राहकों या सप्लायर्स) के साथ कर्मचारियों को भागीदारी करना।

(2) करियर विकास के लिए स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करने हेतु कर्मचारी अन्यत्र जा सकते हैं, संभवतः कुछ वर्षों में लौटने के लिए।

(3) संगठन के बाहर सप्लायर्स की तरह कर्मचारियों के फन्ड-गुप्त स्थापित किये जायें।

(4) अपने आप कर्मचारियों को यह सोचने के लिए प्रेरित करना कि वे ग्राहकों की तरह संगठन के एक व्यवसाय में हैं तथा विभिन्न विभागों में हैं।

(5) कर्मचारियों को संगठन के बाहर ग्राहक विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना।

(6) अपने स्वयं के लिए तथा संगठन के लिए दोनों ही दृष्टियों से नये अवसर पैदा करने या पहचानने की खोज में उनको समर्थ बनाने के लिए उनके Self-Marketing, Networking तथा परामर्शदात्री चातुर्यों को विकसित करने में सहायता करना।

(7) अन्य संगठनों के निपुण कर्मचारियों की पहचान करना तो अंशकालिक तौर पर या अस्थायी रूप से योगदान दे सकते हैं।

(8) आविष्कारों को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों को नियमित तौर से नये-नये व्यक्तियों तथा नये विचारों के सम्पर्क में लाना।

(9) खुली प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा देने के लिए आन्तरिक पदोन्नति के विपरीत सभी स्तरों पर बाहरी भर्तियों का सन्तुलन बनाये रखना।

(10) आत्म-विकास के लिए और अधिक अन्तः क्रियात्मक टीमवर्क को विकसित करना।

(11) अपेक्षाकृत बड़ी परियोजनाओं, अभिप्राप्तियों तथा सीखे गये नये चातुर्यों की क्रमबद्धता के तौर पर एक भविष्य के प्रदर्शन के पक्ष में भविष्य उद्देश्यों के रूप में पद-स्थितियों का मूल्यांकन करने की संस्कृति को मिटाना।

(12) आन्तरिक ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षणों के आधार पर आत्म-आकलन के पक्ष में अधोगामी निष्पत्ति मूल्यांकन को त्यागना।

(13) आत्म-आकलन तकनीकों के द्वारा अधोगामी निर्धारण प्रक्रियाओं को प्रतिस्थापित करना तथा परिणामों के रूप में निष्पत्ति को मापना.

स्पष्ट है कि मानव संसाधन प्रबंधन मानव संसाधन उपयोग में सुधार के माध्यम से किसी संगठन के रणनीति लक्ष्यों को पाने की प्रक्रिया में तेजी से विकास कर रहा है. भविष्य में मानव संसाधन प्रबंधन संगठनों को परिवर्तित करने में और अधिक सृजन का समावेश करेगा.

संगठनों को समझना लोचदार बनेगा तथा प्रत्येक संगठन में व्यक्तियों की क्षमताएँ तथा दक्षताएँ बदल रही हैं तथा बढ़ रही हैं. अतः मानव संसाधन प्रबंधन के विशेषज्ञों को संगठनात्मक प्रभावोत्पादकता के प्रति इन इनपुटों को समृद्ध बनाना है.

कल के मानव संसाधन प्रबंधकों को अनेक चुनौतियों का सामना करना होगा जो उनकी बहुआयामी प्रतिभाओं और विकास हेतु क्षेत्र प्रदान करेंगी. कार्मिक कार्य की प्रकृति अस्पष्ट तथा भ्रमित जान पड़ती है. कार्मिक प्रबंधकों को उच्च तथा ज्ञात स्तर गतिविधियों में लगना होगा. यद्यपि सेवावर्गीय कार्य एक पृथक् विशिष्टता है तो भी यह प्रत्येक प्रबंधकीय कार्य का आधार है. अन्तः उनको व्यक्तियों के उन पहलुओं के बीच संतुलन बनाये रखना होगा जो रेखीय प्रबंधकों द्वारा देखे जाने चाहिए तथा जिनको स्टॉफ विशेषज्ञों द्वारा संभाला जाना चाहिये.

निरन्तर बदल रही प्रौद्योगिकी तथा अर्थव्यवस्था में विकास की तीव्र गति कार्मिक प्रबंधकों से अत्यधिक योगदान की माँग करेगी. यह संगठनात्मक ढाँचे में तथा प्रौद्योगिकी में अनेक परिवर्तनों के प्रशासन की अपेक्षा करेगा. इन परिवर्तनों का प्रशासन करने में कार्मिक प्रबंधकों को एक सुचारु तरीके से ऐसे परिवर्तनों के लिए मानवीय संसाधनों को तैयार करके एक अहम् भूमिका निभानी होगी तथा साथ ही संगठनात्मक उद्देश्यों की अभिप्राप्ति तथा व्यक्तियों की प्रगति तथा विकास को भी सुनिश्चित करना होगा.

### नेतृत्व तथा अभिप्रेरणा

कल के मानव संसाधन प्रबंधकों को न केवल कार्मिक कार्यों में ही देखना होगा वरन् सम्पूर्ण संगठन के नेतृत्व तथा अभिप्रेरणा में भी शामिल होना होगा. इसी तरह से, मानवीय संसाधन प्रबंधन एकमात्र मानव संसाधन प्रबंधक का काम नहीं होगा वरन् संगठन का प्रत्येक अधिकारी अपनी-अपनी यूनिट में लोगों के प्रभावी प्रबंध हेतु उत्तरदायी बनाया जायेगा.

अतः मानवीय संसाधनों का प्रबंध ऊपर नीचे तक सभी प्रबंधकों का और अधिक ध्यान आकृष्ट करेगा. मानवीय संसाधन प्रबंधक संगठन की नीतियों, कार्यक्रमों, योजनाओं तथा रणनीतियों में अहम् भूमिका निभायेगा जबकि अन्य क्रियात्मक अधिकारी कार्मिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे.



प्रत्येक मानव संसाधन प्रबन्ध कार्यक्रम अन्य क्रियात्मक प्रबन्धकों से परामर्श करके मानव संसाधन प्रबन्धक द्वारा भली प्रकार नियोजित तथा निर्देशित करना होगा।

### परिवर्तन के अग्रदूत :

मानव संसाधन प्रबन्धकों से अपेक्षा की जायेगी कि वातावरणीय खोजबीन तथा विकास नियोजन में और अधिक भागीदारी के माध्यम से परिवर्तन वाहकों की भूमिका निभायें। मानव संसाधन कार्य कहीं अधिक सृजनात्मक तथा कम यांत्रिक हो जायेगा। यह स्वरूप की अपेक्षा सारतत्व, गतिविधियों की अपेक्षा अभिप्रातियों तथा सिद्धान्त की अपेक्षा व्यवहार से अधिक सम्बद्ध होगा।

कार्मिक कार्य संगठन को बनाये रखने मात्र से सम्बन्धित न होकर उसको आगे बढ़ाने के लिए उत्तरदायी होगा। मानव संसाधन प्रबन्धकों को यथास्थिति बनाये रखने की अपेक्षा परिवर्तनों को लागू कराने में और अधिक समय लगाना होगा।

### और अधिक व्यवसायीकरण:

भविष्य के मानव संसाधन प्रबन्धकों को व्यावहारात्मक विषयों में विशेषज्ञ होना होगा। वे एक सृजनात्मक तथा विकासात्मक भूमिका निभायेंगे। मानव संसाधन प्रबन्ध अपने आप में एक संकाय के तौर पर उभर चुका है तथा मानव संसाधन प्रबन्धक एक पेशेवर बन चुका है।

पेशेवर गतिविज्ञान उसकी प्रतिष्ठा तथा सेवा की गुणवत्ता में वृद्धि लायेगा। लेकिन भविष्य में इसकी सफलता तथा अस्तित्व उपलब्ध ज्ञान तथा चातुर्यों के विवेकपूर्ण उपयोग पर निर्भर करेंगे।

कार्मिक प्रबन्ध अन्य स्थापित पेशों के समान एक सुस्थापित, सम्मानजनक तथा भली प्रकार पुरस्कृत पेशे के रूप में उभरेगा बशर्ते कि उसके विकास हेतु चुनौतियों तथा अवसरों को सफलतापूर्वक अवशोषित कर लिया जाये।

### नई कार्य संस्कृति:

मानव संसाधन प्रबन्धकों को एक नई संस्कृति को गतिशील करना होगा ताकि अच्छे गुणवत्ता मानदण्डों की स्थापना तथा क्रियान्वयन में रेखीय प्रबन्धकों की सहायता हो सके। समूह संक्षिप्तता पाने के लिए और अधिक प्रयासों की आवश्यकता होगी क्योंकि श्रमिकों की समूह के प्रति स्पष्टतः वचनबद्धता होगी। बदलती कार्य संस्कृति व्यक्तियों पर बढ़ते दबाव की अपेक्षा करती है अतः कार्यों की पुनः अभिकल्पना करनी होगी ताकि चुनौतियों की व्यवस्था हो सके। कर्मचारियों का लोचदार आगमन तथा प्रस्थान समय (फ्लैक्सी समय) आवश्यक हो सकता है।



बाहर से आन्तरिक अभिप्रेरणा को और अधिक केन्द्रित करना होगा। भविष्य में, परिवर्तनों को लागू तथा प्रबन्धित करना होगा ताकि संगठनात्मक प्रभावोत्पादकता सुधारी जा सके। प्रौद्योगिकी, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में बदलावों के अवशोषण के प्रति उपादेय एक कार्य संस्कृति मानव संसाधन/कार्मिक प्रशासकों द्वारा पल्लवित करनी होगी यदि वे उद्योग तथा समाज में ऊँचा स्थान पाना चाहते हैं। उनको वातावरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए तथा संगठनात्मक प्रभावोत्पादकता बढ़ाने के लिए मानवीय संसाधनों के विकास में उच्च प्रबन्ध को भी और अधिक सक्रिय तौर पर भागीदार बनाना होगा।

### वर्तमान में मानव संसाधन प्रबन्ध के कार्य :

मानव संसाधन प्रबन्ध के अभ्यास में विगत के अभ्यास के साथ समानताएँ तथा असमानताएँ दोनों ही हैं। सम्पूर्ण रोजगार सम्बन्धों पर मानव संसाधन प्रबंधन का निरन्तर संकेन्द्रण समानताओं में शामिल हैं। आज का मानव संसाधन प्रबन्ध अभ्यास अनेक तरीकों से विगत से भिन्न है।

- प्रथम, मानव संसाधन प्रबंधन को परम्परागत कार्मिक प्रबन्ध गतिविधियों तथा साथ ही सर्वांगीण संगठनात्मक नियोजन तथा परिवर्तन में HRM की भागीदारी के एकीकरण पर जोर देकर लक्षित किया जाता है।
- द्वितीय, आज का मानव संसाधन प्रबंधन संगठनात्मक परिवर्तन में एक साझेदार संगठनात्मक संस्कृति का निर्माता तथा संगठनात्मक वचनबद्धता का अग्रदूत माना जाता है।
- तीसरे, मानव संसाधन प्रबंधन को कार्मिक विशेषज्ञों से वरिष्ठ रेखीय प्रबन्ध तक परम्परागत मानव संसाधन प्रबंधन गतिविधियों में अनेक विकेन्द्रीकरण द्वारा व्यक्त किया जाता है।
- चौथे, चालू मानव संसाधन प्रबंधन सामूहिक प्रबन्ध-श्रम संघ सम्बन्धों की अपेक्षा व्यक्तिगत कर्मचारियों पर फोकस द्वारा व्यक्त किया जाता है।

सामान्यतः आज का मानव संसाधन प्रबंधन कार्य कर्मचारी की आवश्यकताओं से निपटने तथा संगठनात्मक निष्पत्ति को बढ़ाने के उद्देश्यों के साथ उसके उत्तरदायित्वों में गतिमान होकर,

एकल सर्वाधिक महत्वपूर्ण संगठनात्मक सम्पत्ति के रूप में कर्मचारियों के सम्बन्ध में सभी प्रबन्धकीय कार्मिकों का समावेश करते हुए, एक व्यापक तथा व्यूहरचनात्मक कार्य के रूप में माना जाता है।

साथ ही, मानव संसाधन प्रबंधन अन्य प्रबन्ध कार्यों के साथ एक साझेदार बन चुका है तथा अपेक्षित संस्कृति को पल्लवित करने के लिए उत्तरदायी हो चुका है। मानव संसाधन पेशेवर अब विगत के IR तथा PM कार्यों में दक्ष मात्र साधारण तकनीशिन नहीं रहे हैं।

वरन् उनको प्रतिस्पर्द्धी संगठनात्मक सामाजिक तंत्रों के विकास में आर्किटेक्ट तथा लीडर्स होना चाहिये। आज का मानव संसाधन प्रबंधन कार्य न केवल मात्र समेकित कार्य है वरन् साथ ही आदर्शमूलक है। आज के मानव संसाधन अश्यासकर्त्ता अपने कार्मिक कार्यों के क्षेत्र में संकीर्णतः विशेषज्ञ नहीं हैं।

इसके स्थान पर उसको प्रभावी मानव संसाधन प्रबंधन तंत्र बनाने में समर्थ होना चाहिये जिनमें गतिविधियों जैसे भर्ती, चयन, प्रशिक्षण तथा विकास, निष्पत्ति, निष्पत्ति मूल्यांकन तथा क्षतिपूर्ति एक रणनीतिगत फोकस के साथ संश्लिष्ट तौर पर एक साथ काम करें।

मानव संसाधन प्रबन्ध के अनेक आलोचक हैं तथा साथ ही साथ अनेक समर्थक भी हैं। आलोचना का मेरुदण्ड है कि मानव संसाधन प्रबंधन वास्तविकता की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल है तथा उसके समर्थकों ने काफी अतिशयोक्ति उत्पन्न कर दी है।

साक्ष्य का इसको कम ही समर्थन मिला है तथा बाजार दबावों द्वारा लाये गये रोजगार सम्बन्धों में एक विचाराधारा परिवर्तन के समर्थन हेतु विवेकीकरण का एक सुविधाजनक डस्टबिन रहा है। मानव संसाधन प्रबंधन न केवल अपने अर्थ में वरन् साथ ही व्यवहार में भी अनेक विरोधाभास हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन’अपने आप में आलोचना का विषय रहा है। मानव संसाधन प्रबंधन शब्द में एक बुद्धिमानी भरी अस्पष्टता छिपी है। इस शब्द का वही अर्थ है जो कोई समझना चाहे। मान लेते हैं कि मद मानव संसाधन प्रबंधन द्वारा स्वीकार कर ली जाती है तो भी औद्योगिक सम्बन्धों तथा कार्मिक प्रबन्ध के पुराने मॉडल्स को बदलने या प्रतिस्थापित करने के लिए इसमें क्षमता की कमी है।

अन्य आलोचकों ने देखा है कि अनेक संगठनों को मानव संसाधन प्रबंधन की अपेक्षा दृढ़ उद्देश्यों द्वारा चलाया जाता है. कम्पनियों के वित्तीय आयाम अमूल्य मानवीय संसाधन व्यवहारों पर वर्चस्व लेते हैं. साथ ही यह विश्वास कि प्रश्लाधीन रहा है मानव संसाधन प्रबंधन राष्ट्रीय संस्कृतियों को बदल सकता है.

आलोचकों के तर्कों को निरस्त करने के लिए यह कहा जा सकता है कि सुझाव, नीति तथा समीक्षा का एक दृश्य व्यवस्था रही है जो एक परिप्रेक्ष्य के तौर पर मानव संसाधन प्रबंधन की विचारधारा पर निर्देशित होती है जो रोजगार सम्बन्ध के प्रति अहम् होता है.

ये मान्यताएँ हैं कि :

- (i) यह प्रबन्धकीय नीति के सर्वोच्च स्तरों के प्रति योगदान करने तथा उनसे आहरण करने में समर्थ होता है;
- (ii) यह व्यूहरचनात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्यों दोनों द्वारा चालित होता है;
- (iii) यह एक ऐसे वातावरण के रूप में संगठन की कल्पना करता है जिसमें प्रबन्धकीय विवेक एक अधिक परम्परागत रोजगार सम्बन्ध में अपेक्षाकृत स्वतंत्र चलन की आज्ञा देता है, तथा
- (iv) संगठन में कर्मचारी आसक्ति तथा संलग्नता को महत्वपूर्ण प्रबन्धकीय उत्तरदायित्वों के रूप में देखा तथा स्वीकार किया जाता है जिनको बाहरी संस्थाओं जैसे ट्रेड यूनियनों द्वारा मॉडरेट नहीं किया जाता है.

मानव संसाधन व्यवहार भी संगठनों में अत्यधिक दृश्य होते जा रहे हैं. प्रबन्धकों की पदस्थितियों को परम्परागत कार्मिक प्रबन्धकों से मानव संसाधन प्रबन्धकों के रूप में बदला जा चुका है तथा विभागों का नामकरण भी ‘मानव संसाधन विभाग’ परिवर्तित हो चुका है.

संगठन व्यक्तियों का एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में सम्मान करना शुरू कर चुके हैं तथा अपने कर्मचारियों को मौद्रिक मूल्य दे रहे हैं. एक संगठन के मानव संसाधनों का मूल्य निरन्तर स्पष्ट हो जाता है जब उपक्रम को बेचा जाता है.

बहुधा क्रय प्रतिफल भौतिक तथा वित्तीय सम्पत्तियों के कुल मूल्य की अपेक्षा अधिक है. यह अन्तर लोकप्रिय तौर पर ख्याति माना जाता है जो अंशतः संगठन के मानवीय संसाधनों के मूल्य को प्रदर्शित करता है. अतः मानव संसाधन प्रबन्ध को बहुत आगे तक जाना है.

### तकनीकी एवं मार्केटिंग में दक्ष स्टाफ की भूमिका

इन दिनों किसी भी व्यवसाय में तकनीक का उपयोग यहाँ तक कि अनुप्रयोग विकास में भाग लेना न केवल तकनीकी टीम के लिए बल्कि सभी कर्मचारियों के नौकरी विवरण का हिस्सा बन गया है - विशेष रूप से, संचार और विपणन टीमों का काम अधिक तकनीक-केंद्रित होता जा रहा है, जिसमें बैंके भी शामिल है. एक साथ काम करते हुए तकनीक और विपणन / संचार दल अपनी कंपनी के संचालन में क्रांति ला सकते हैं और कंपनी के लाभ को अधिकतम कर सकते हैं. अतः आज के दिनों में किसी भी संस्था में निम्नलिखित कारणों से तकनीकी एवं विपणन में दक्ष स्टाफ का होना बहुत आवश्यक है.

#### 1. संस्था का एक आधार स्थापित करने के लिए

संस्था का विकास और विभागों के बीच तालमेल सभी सम्प्रेषण पर आधारित है. टेक टीम एवं मार्केटिंग टीम का समन्वय संस्था को गति प्रदान करता है. स्टाफ अगर तकनीकी एवं मार्केटिंग में दक्ष हो तो संस्था अपना आधार स्थापित करती है जो संस्था के विकास में अभूतपूर्व भूमिका का निर्वहन करता है.

#### 2. डेटा प्रबंधन रणनीति पर ध्यान देने के लिए

संस्थाएं अपने ग्राहकों को उच्च वैयक्तिक अनुभव, सूचना और उत्पाद देने के लिए प्रयासरत हैं, और मार्केटिंग टीम को ग्राहक डेटा प्रबंधन के लिए सही प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों की स्थापना के लिए नियुक्त किया जाता है. मार्केटिंग और तकनीक टीमों का समन्वयन डेटा रणनीति पर काम करते हुए आधुनिक डेटा प्रबंधन तकनीकों अपनाकर अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा कर सकते हैं.

#### 3. विपणन तकनीकी संरचना के पुनर्निर्धारण के लिए

विपणन अधिकारियों को अपने तकनीकी ज्ञान में निरंतर वृद्धि करना है. उन्हें अपने तकनीकी बुनियादी ढांचे का पुनर्मूल्यांकन और पुनः डिज़ाइन करना होगा. तकनीकी एवं मार्केटिंग की यह साझेदारी सुनिश्चित करती है कि संस्था के पास व्यापक और अच्छी तरह से एकीकृत प्रणाली है जो ग्राहकों के अनुभव, क्षमता रहित कर्मचारियों को निजीकृत करती है और विपणक को ग्राहकों को आकर्षित करने, प्रसन्न करने और बनाए रखने के लिए आकर्षक विचार बनाने में सक्षम बनाती है.



### 4. उत्पाद को बाजार के अनुकूल रखना

हालांकि तकनीकी टीम उत्पाद बना सकती है, लेकिन उन्हें बाजार को समझने और उत्पाद-बाजार में फिट होने के लिए विपणन के साथ काम करने की आवश्यकता है। मार्केटिंग टीम, टेक टीम को लक्षित ग्राहकों की जरूरतों को समझने में मदद कर सकती है।

इसलिए टेक टीम ऐसे उत्पादों का निर्माण कर सकती है जिनकी उपभोक्ताओं को वास्तव में आवश्यकता है और यदि कर्मचारी विपणन एवं तकनीकी दक्ष हो तो यह समन्वय संस्था को ऊंचाएयो पर ले जा सकता है।

### 5. मशीन इंटेलेजेंस तकनीक पर सहयोग करने के लिए

हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहाँ डेटा- और मॉडल-संचालित विपणन और बिक्री कंपनी की वृद्धि के लिए आधारशिला बन गए हैं। व्यक्तिगत संदेश और समाधान देने में सहायता के लिए मशीन इंटेलेजेंस तकनीकों का आज व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

लाभ की परिकल्पना के लिए, लीडर को प्रक्रियाओं, संस्कृति और अपने स्टाफ (तकनीक बनाम गैरतकनीकी ) को संरेखित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ताकि उनका उद्यम प्रौद्योगिकी का सबसे अच्छा जवाब दे सके।

### 6. क्षमता को अधिकतम करना

जब तकनीक विपणन के साथ सहयोग करती है, तो वह तंत्र जो विपणन प्रयासों की सहायता करते हैं, उनका उपयोग किया जा सकता है। जब स्टाफ तकनीकी के साथ मार्केटिंग में भी दक्ष हो तो कंपनी की क्षमता निश्चित: बढ़ती है।

### 7. क्लाउंट साइबर सुरक्षा पर विशेष ध्यान

यह एक ज्ञात तथ्य है कि सुरक्षा का उल्लंघन किसी भी व्यापार के लिए हानि कारक हैं। ग्राहक हमेशा चाहते हैं कि उनका वैयक्तिक जानकारी सुरक्षित रहे। वे ऐसी संस्थाओं के साथ व्यापार करना चाहते हैं जो साइबर सुरक्षा में निवेश करती हैं और अपने ग्राहकों की

व्यक्तिगत रूप से पहचान योग्य जानकारी को सुरक्षित करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करती हैं.

विपणन सह तकनीकी विभाग को पता होना चाहिए कि अपने ग्राहकों को कैसे सूचित किया जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाते हैं.

### 8. ग्राहक पर ध्यान बनाए रखने के लिए

तकनीकी एवं विपणन दक्ष स्टाफ अपने ग्राहकों पर पूरा ध्यान बनाए रखते हैं.

### 9. डेटा-सूचित निर्णय लेने के लिए

एक मजबूत प्रौद्योगिकी टीम पूरे संगठन में सुदृढ़ता और वैज्ञानिक कार्यप्रणाली ला सकती है. विपणन के साथ इसका गठजोड़ डेटा आधारित कारगर निर्णय लेने में सहायक होता है.

### 10. ग्राहक उपयोग मामलों का पता लगाने के लिए

खरीदार का ध्यान आकर्षित करने के लिए डिजिटल मार्केटिंग सही शब्दों और वाक्यांशों की पहचान करने पर बहुत निर्भर करता है. बहुदा विपणन अधिकारी ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझे बिना उद्योग के चिरस्थापित शब्दों को प्रस्तुत करता है जो कि संस्था हेतु अब उतने लाभदायी नहीं है.

### 11. स्वचालन उपकरण को अनुकूलित करने के लिए

मार्केटिंग तेजी से डिजिटल होती जा रही है, और विपणन अधिकारी तकनीकी के माध्यम से अपने दर्शकों तक पहुंच रहे हैं. रिपोर्ट ऑटोमेशन और स्लैक इंटीग्रेशन जैसे डेवलपर स्टेपल इनबाउंड लीड और आउटबाउंड / आउटरीच के साथ मदद करते हुए मार्केटिंग को एक ऑपरेशनल दृष्टिकोण से बदल सकते हैं.

कई स्वचालन उपकरण उपलब्ध हैं, लेकिन अनुकूलन की आवश्यकता अक्सर होती है - जहां तकनीकी प्रतिभा सहयोग और मदद कर सकती है. अतः आज के तकनीकी युग में मानव संसाधन का प्रमुख रोल अपनी संस्था में तकनीकी एवं विपणन दक्ष स्टाफ की भर्ती करना है.

### **मानव संसाधन प्रबंध के क्रियात्मक कार्य :**

क्रियात्मक कार्य के अन्तर्गत उन कार्यों का समावेश किया जाता है जो कर्मचारियों की भर्ती और उनके विकास से लेकर क्षतिपूर्ति तथा उनके कार्य स्थापन से सम्बन्धित है.

इन कार्यों के अन्तर्गत निम्न प्रमुख कार्य सम्मिलित किये जाते हैं:

#### **(1) कर्मचारियों की प्राप्ति:**

कर्मचारियों की प्राप्ति का अर्थ संगठन के लिए पर्याप्त मात्रा में योग्य कर्मचारी प्राप्त करने से है, जिससे संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति सरलता से की जा सके. इसके अन्तर्गत मानव शक्ति का अनुमान कर्मचारियों की भर्ती चयन तथा स्थापन आदि कार्य सम्मिलित किये जाते हैं.

उपर्युक्त कार्यों के लिए आवश्यक आवेदन पत्र तैयार करना साक्षात्कार एवं लिखित परीक्षा का आयोजन करना, स्थानान्तरण, कार्य-मुक्ति, कार्य-पृथकता आदि से सम्बन्धित कार्य हैं.

#### **(2) विकास कार्य:**

कर्मचारी की कार्यकुशलता तथा निपुणता में वृद्धि करने के लिए सामान्यतः प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिससे कि कम समय में अधिक उत्पादन किया जा सके. प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए योजनाएँ बनाना निर्धारित कार्यक्रमों को लागू करना विचार गोष्ठियाँ आयोजित करना तथा शैक्षणिक व कार्य सम्बन्धी प्रशिक्षण की सुविधाएँ प्रदान करना आदि

#### **(3) क्षतिपूर्ति कार्य:**

इस कार्य में कर्मचारियों को कार्य के अनुसार सम्मान एवं उचित रूप से पुरस्कृत किया जाता है. अतः इसके अन्तर्गत विभिन्न मजदूरी-सर्वेक्षण, कार्य-विभाजन करना, कार्य-विक्षेपण, योग्यतानुसार वर्गीकरण, मजदूरी दर निर्धारण, मजदूरी योजनाएँ तथा नीतियाँ स्पष्ट करना, भुगतान की विधियाँ निश्चित करना, अधिक कार्य के लिए पुरस्कार का प्रावधान, लाभ विभाजन योजनाएँ बनाना, आदि कार्य सम्मिलित किये जाते हैं.

**(4) श्रमिकों को संगठन में बनाये रखने के लिए कार्य करना:**

इन कार्यों के अन्तर्गत कर्मचारियों के लिए कार्य की उत्तम भौतिक दशाएँ बनाये रखने का कार्य आता है, जैसे- स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाएँ बनाना, सुरक्षात्मक उपाय तथा सेवा कार्यक्रमों का निर्धारण करना.

फिलिप्पो के अनुसार- "समस्त क्रियाओं का उद्देश्य संगठन के मूलभूत उद्देश्यों की प्राप्त करना है. इस कारण अन्य सभी प्रबन्ध की भाँति सेविवर्गीय प्रबन्ध का प्रारम्भ बिन्दु भी कर्मचारियों के कार्यकलाप का निर्धारण करना तथा उसके निहित, मूल एवं गौण उद्देश्यों की पूर्ति के प्रयास करना है. सेविवर्गीय विभाग पर व्यय की गयी समस्त राशि का औचित्य तभी सिद्ध हो सकता है जब यह विभाग संगठन के उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हो. "

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि सेवा-वर्गीय प्रबन्ध कार्य के दोनों पहलुओं में सन्तुलन बनाये रखकर ही सफल हो सकता है. यदि वह केवल क्रियात्मक पक्ष को देखता रहे तथा प्रबन्धकीय पक्ष की उपेक्षा करें तो समुचित नियन्त्रण के अभाव में संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकती. दूसरी ओर यदि वह केवल प्रबन्धकीय पक्ष को ध्यान में रखें तो कर्मचारी असन्तुष्ट हो सकते हैं जिससे संगठन के उद्देश्यों को क्षति पहुँच सकती है.